हिन्दी-वाक्य-विन्यास

हिन्दी-वाक्य-विन्यास

आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि
के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध

सुधा कालरा
एम० ए०, पी एच० डी०
हिन्दी विभाग मॉडर्न कालिज फॉर विमैन
दिल्ली विश्वविद्यालय

लोकभारती प्रकाशन
१५-ए महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

लोकभारती प्रकाशन
१५ ए, महात्मा गांधी मार्ग
इलाहाबाद १ द्वारा प्रकाशित

मूल्य ४० ००

प्रथम संस्करण १९७१

रूपक प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा दिल्ली ३२
द्वारा मुद्रित

परम पूजनीया मा
एवं
श्रद्धेय पिताजीको
सादर समर्पित

स्वानुभूति

इस पुस्तकका प्रारम्भ फरवरी १९६२ मे शोध प्रबन्धके रूपमे हुआ। किसी भी प्रकारके भाषा विषयक अध्ययनकी प्रत्येक अवस्थामे कई प्रकारकी कठिनाइया आती हैं। हिन्दीमे स्थिति और भी गभीर है क्योकि भाषा अध्ययनमे वैज्ञानिक दृष्टिकोणका अभाव रहा है। प्रस्तुत प्रयासको अन्तिम रूप देनेमे बहुतसे लोगोंका सहयोग मिला जिनका उल्लेख करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ।

स्वर्गीय डॉ० यदुवशीकी मैं हृदयसे आभारी हूँ जिन्होंने ६१ ६२ मे ही यह चुनौती भरा विषय सुझाया, जिसकेलिए उस समय न कोई परम्परा थी और न रूपरेखा। यहा तक कि ६५ ६६ मे (जबकि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध स्वीकृत हो चुका था) अमेरिकामे इसी विषयपर हुए शोध कार्यकी लेखिकाने लिखा कि हिन्दीमे इस प्रकारके वैज्ञानिक अध्ययनका अभाव है। डॉ० यदुवशीकी असामयिक मृत्युसे आज भी मैं अपने-आपको उनके अमूल्य दिशा निर्देशसे वचित पाती हूँ। मैंने दिवगत डा० यदुवशीकी अन्त दृष्टिको यथासम्भव इस पुस्तकमे साकार करनेका प्रयास किया है।

डॉ० हरदेव बाहरीने वाक्य विवेचनकी अनेक पद्धतियाको स्पष्ट करके इस शोध-कार्यमे सहयोग दिया।

डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्याकी मैं विशेष रूपसे आभारी हूँ जिन्होने विवेच्य विषयके महत्त्व, कार्यकी दिशाओ और रूपरेखाको सुलझाकर शोध प्रबन्धको वैज्ञानिक रूप देनेमे अपना समय और अमूल्य मत दिया।

दिल्ली विश्वविद्यालयके तत्कालीन विभागाध्यक्ष डॉ० नगेन्द्रके आद्यन्त पथ प्रदर्शन और अनेक प्रकारकी सहायतासे ही यह कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सका।

परम स्नेहमयी डॉ० निर्मला जैनकी सतत प्रेरणा इस शोध प्रबन्धकी रचना और इस रूपमे प्रस्तुत करनेमे सदैव सक्रिय रही।

जहाँ एक ओर अधिकाश प्रकाशक सामा य विषयाकी पुस्तकें ही छापना चाहते है वहा लोकभारती प्रकाशनका इस पुस्तकको छापनेका साहस निश्चय ही श्लाघनीय है। पुस्तकके सफल और सुचारु मुद्रणम रूपक प्रिटसके सभी काय कर्ताओके अथक परिश्रम एव धयका बहुत बडा हाथ है। इस कायको सम्पन्न करनम मुझे अपने पति श्री अशोककुमार कालरासे अनवरत प्रेरणा और सहयोग मिला जिससे पुस्तक अल्प अवधिम ही इतन सुदर रूपम छप पाई।

जनवरी १९७१ सुधा कालरा

संक्षिप्त-रूप तालिका

अ०	अकारान्त	गौ० कर्म	गौण कर्म
अक्रिधा०	अकर्मक क्रिया धातु	जिज्ञा०	जिज्ञासार्थक
अभूत०	अपूर्ण भूत	निषेध०	निषेधार्थक
अधि०	अधिकरण	प्रश्न०	प्रश्नार्थक
अन्य०	अन्यपुरुष	प्रेक्रिधा०	प्रेरणार्थक क्रिया धातु
अपा०	अपादान	पू०	पूरक
अवि०	अविकारी	पूभूत०	पूर्णभूत
आ०	आकारान्त	बहु०	बहुवचन
आदर०	आदरार्थक	भवि०	भविष्यत् काल
आज्ञा०	आज्ञार्थक	भाव०	भाववाच्य
इ०	इकारान्त	भूत०	भूतकाल
इच्छा०	इच्छार्थक	भूत० कृ०	भूतकालिक कृदन्त
ई०	ईकारान्त	वर्त०	वर्तमानकाल
उ०	उकारान्त	वर्त० कृ०	वर्तमानकालिक कृदन्त
उ०	उद्देश्य	कर्तृ०	कर्तृवाच्य
उ० विस्तार	उद्देश्यविस्तार	कर्तृ कर्म०	कर्तृ कर्मवाच्य
उभय०	उभयलिंग	कर्म०	कर्मवाच्य
उत्तम०	उत्तमपुरुष	कर्मपू०	कर्मपूरक
ऊ०	ऊकारान्त	क्रि०	क्रिया
एक०	एकवचन	क्रि० वि०	क्रियाविशेषण
ओ०	ओकारान्त	क्रिवाश	क्रियावाक्यांश
औ०	औकारान्त	क्रियार्थक सं०	क्रियार्थक संज्ञा
कर्तावि०	कर्ताविस्तार	कृ०	कृदन्त

वि०	विशेषण
विका०	विकारी
विधा०	विधानार्थक
विबो०	विस्मयबोधक
सनिघा०	सकर्मक क्रिया धातु
समा०	समानाधिकरण
समु०	समुच्चयबोधक
सव०	सर्वनाम
सहाक्रि०	सहायक क्रिया
स्त्री०	स्त्रीलिंग
स०	संज्ञा
संकेत०	संकेतार्थक
संदेह०	संदेहार्थक
संभा०	संभावनार्थ
सवाश	संज्ञावाक्यांश
सम्॰वि०	सम्बन्धसूचक विशेषण
संयुक्रि०	संयुक्त क्रिया

उपस्थापन

वाक्य मनुष्यकी भाषागत अभिव्यक्तिका सबसे महत्त्वपूर्ण उपादान है। मनुष्य वाक्यमे ही सोचता है और अपनी मानसिक प्रक्रियाको इच्छा और आवश्यकताके अनुसार वाक्यके रूपमे ही अभिव्यक्त करता है। आधुनिक भाषा विज्ञानमे अभी तक किए गए अनुसधानसे इस तथ्यकी पुष्टि होती है कि भाषाकी न्यूनतम सार्थक इकाई वाक्य ही है। अनुभूतिकी अभिव्यक्तिमूलक आकाक्षासे भाषाका जन्म हुआ। सामान्यत भावो, विचारो और इच्छाओके अभिव्यक्ति-मूलक सकेतसमूहको भाषा कहा जा सकता है। भाषा अभिव्यक्तिका प्रधान माध्यम तो है किन्तु एकमात्र साधन नही क्योकि विभिन्न ध्वनियो, सकेतो, मुद्राओ और आगिक चेष्टाओके द्वारा भी मनुष्य अपना अभिप्राय व्यक्त कर सकता है। व्यवस्थित भाषाके अभावमे प्रारम्भिक मानवने भी भाषासे इतर इन्ही माध्यमो द्वारा अपनी बात समझानेका प्रयास किया होगा। इनमसे कुछ ध्वनिया विशिष्ट अर्थोमे रूढ हुई होगी जिनसे भाषाकी रूपरेखा निश्चित हुई। सभ्यताके विकासके साथ साथ भाषाका स्वरूप भी विकसित हुआ।

भारतीय और पाश्चात्य विद्वानोने भाषाकी व्याख्या करते हुए इसके सक्रिय पक्षको अधिक महत्त्व दिया है। भर्तृहरिने 'वाक्यपदीय' मे कहा है कि शब्द व्यापार या भाषण प्रक्रिया दो बुद्धियोके बीच आदान प्रदानका एक माध्यम है।[1] वन्द्रेय भाषाको उन सकेतोकी व्यवस्था मानते हैं जो पारस्परिक विचार विनि-

---

1 भर्तृहरि— वाक्यपदीय'

शब्द कारणमर्थस्य स हि तेनोपजन्यते
तथा च बुद्धिविषयादर्थाच्छब्द प्रतीयते — २ ३ ३२
तथा — बुद्ध्यर्थादेव बुद्ध्यर्थे जाते तदपि दृश्यते — २ ३ ३३

वि०	विशेषण	स्त्री०	स्त्रीलिंग
विका०	विकारी	स०	सना
विधा०	विधानाथक	सकेत०	सकेताथक
विबो०	विस्मयबोधक	सदेह०	सदेहाथक
सक्रिधा०	सकमक क्रिया धातु	सभा०	सभावनाथ
समा०	समानाधिकरण	सवाश	सज्ञावाक्याश
समु०	समुच्चयबोधक	सबं०वि०	सम्बधसूचक विशेषण
सव०	सवनाम	सयुक्रि०	सयुक्त क्रिया
सहाक्रि०	सहायक क्रिया		

उपस्थापन

वाक्य मनुष्यकी भाषागत अभिव्यक्तिका सबसे महत्त्वपूर्ण उपादान है। मनुष्य वाक्योंमें ही सोचता है और अपनी मानसिक प्रक्रियाका इच्छा और आवश्यकताके अनुसार वाक्यके रूपमें ही अभिव्यक्त करता है। आधुनिक भाषा विज्ञानमें अभी तक किए गए अनुसंधानसे इस तथ्यकी पुष्टि होती है कि भाषाकी न्यूनतम सार्थक इकाई वाक्य ही है। अनुभूतिकी अभिव्यक्तिमूलक आकांक्षासे भाषाका जन्म हुआ। सामान्यतः भावों, विचारों और इच्छाओंके अभिव्यक्तिमूलक संकेतसमूहको भाषा कहा जा सकता है। भाषा अभिव्यक्तिका प्रधान माध्यम तो है किन्तु एकमात्र साधन नहीं क्योंकि विभिन्न ध्वनियों, संकेतों, मुद्राओं और आंगिक चेष्टाओंके द्वारा भी मनुष्य अपना अभिप्राय व्यक्त कर सकता है। व्यवस्थित भाषाके अभावमें प्रारम्भिक मानवने भी भाषासे इतर इन्हीं माध्यमों द्वारा अपना भाव समझानेका प्रयास किया होगा। इनमेंसे कुछ ध्वनियाँ विशिष्ट अर्थोंमें रूढ़ हुई होंगी जिनसे भाषाकी रूपरेखा निश्चित हुई। सभ्यताके विकासके साथ-साथ भाषाका स्वरूप भी विकसित हुआ।

भारतीय और पाश्चात्य विद्वानोंने भाषाकी व्याख्या करते हुए इसके सक्रिय पक्षको अधिक महत्त्व दिया है। भर्तृहरिने 'वाक्यपदीय' में कहा है कि शब्द व्यापार या भाषण प्रक्रिया दो बुद्धियोंके बीच आदान प्रदानका एक माध्यम है।[1] स्टर्टेवेंट भाषाको उन संकेतोंकी व्यवस्था मानते हैं जो पारस्परिक विचार विनि

---

१ भर्तृहरि—'वाक्यपदीय'

शब्दः कारणमर्थस्य स हि तेनोपजन्यते
तथा च बुद्धिविषयादर्थाच्छब्दः प्रतीयते ३ ३ ३२

माध्यम समझा है।[1] गार्डिनर तो भाषाको सामाजिक क्रिया ही मानते हैं।[2] येस्पर्सन इसे मानवीय सक्रियता कहते हैं।[3] ब्लाक एवं ट्रेगर भाषाको मौखिक प्रतीकोंकी यादृच्छिक व्यवस्था मानते हैं जिसके द्वारा समाज परस्पर सम्बद्ध रहता है।[4] अतः उच्चारण अवयवों द्वारा निःसृत निरर्थक वर्णात्मक ध्वनि समूहके माध्यमसे मानव समाज अपनी अनुभूतियोंका आदान प्रदान करते हैं उसे भाषा कह सकते हैं।

भाषा विवेचनके दो मुख्य अंग हैं—व्याकरण और अभिधान। व्याकरणके अन्तर्गत ध्वनिविचार, रूपविचार और वाक्यविचार आता है। अभिधानका सम्बन्ध अर्थ-तत्त्वकी व्याख्या, पद संग्रह तथा व्याकरणिक अनुशासनसे अधिक है। इन दोनोंका परस्पर सम्बन्ध भाषाविज्ञानके क्षेत्रमें विवादका विषय रहा है। किन्तु इस अध्ययनकी सीमित परिधिमें यह विवेचन सम्भव नहीं है। इन दोनों वर्गोंका पारस्परिक सम्बन्ध चाहे जो भी हो उद्देश्य एक ही है अभिधेयकी अभिव्यक्ति और इस अभिव्यक्तिका चरम अवयव वाक्य है।

भारतीय और पाश्चात्य विद्वान् वाक्यको भाषाकी एक अविभाज्य और सतत पूर्ण इकाई स्वीकार करते हैं। इस मान्यताके मूलमें यह तर्क है कि मनमें भाव और विचार एक वाक्यके रूपमें ही उत्पन्न होते हैं और इसी रूपमें इनका आदान प्रदान होता है। वन्द्रेयका मत है कि मानव विचार प्रक्रिया एक आन्त

---

1 *Vendreys J — Language A Linguistic Introduction to History* Page 7
The most general definition of language that can be given is that it is a system of signs By signs we understand all those symbols capable of serving as a means of communication between men

2 *Gardiner—Speech and Language* Page 64
That the act of speech is a social act seeing that it necessarily involves two persons and may possibly involve more if there is a number of listeners

3 *Jesperson Otto—Philosophy of Grammar* Page 77
The essence of language is human activity—activity on the part fo one individual to make himself understood by another and activity on the part of that other to understand what was in the mind of the first

4 *Bloch & Trager—Outline of Linguistic Analysis* Page 5
A language is a system of arbitrary vocal symbols by means of which a social group co-operates

कि भाषाके समान है जिसमें व्यक्त भाषाके समान ही वाक्य परस्पर सम्बद्ध रहते हैं। हमारे सोचनेका और वार्त्तालापका माध्यम वाक्य ही है।[1]

इस सम्बन्धमें भाषा विषयक विवेचनमें कई प्रकारके मत मिलते हैं। यास्क जैमिनी और अन्य भाषाविदोंकी रचनाओंमें परस्पर विरोधी मत पाए जाते हैं। एक मत यह है कि प्रत्येक वर्णमें निश्चित अर्थ होता है और शब्द वर्णोंका समूह होता है अतः शब्दका अर्थ वर्णोंके संघातपर आधारित रहता है। दूसरे मतानुसार शब्दों या पदोंका अर्थ पृथक् पृथक् होता है और ये स्वतन्त्र इकाइयाँ हैं जिनके संयोगसे वाक्यकी रचना होती है। इस मान्यताके आधारपर शब्दोंको परस्पर स्वतन्त्र और स्वतः महत्त्वपूर्ण वर्गोंमें विभाजित कर दिया गया। एक अन्य मत है कि शब्दका कोई निश्चित अर्थ नहीं होता। शब्द केवल अपनी निषेधात्मक और प्रतीकात्मक शक्तियोंके द्वारा कार्य करते हैं। वाणीकी इकाई वाक्य ही हो सकती है क्योंकि केवल अर्थवत्ता मात्रसे ही वाणीकी इकाई सिद्ध नहीं की जा सकती। इस प्रकार वर्ण, शब्द और वाक्य तीनों ही वाणीकी इकाई सिद्ध किए जाते रहे। इस सम्बन्धमें भर्तृहरिके आठ वादोंके विश्लेषणसे यह स्पष्ट हो जाता है कि यद्यपि वाक्य शब्दसंघातसे बनता है, शब्दोंकी स्वतन्त्र सत्ता नहीं है अपितु वाक्य शब्द समूहसे उत्पन्न एकात्मक और समग्र प्रतीति है। वाक्यान्तर्गत प्रयुक्त होनेवाले पद स्वतन्त्र अर्थात्मक महत्त्व होनेपर भी एक दूसरेके बिना अधूरे प्रतीत होते हैं। अभिव्यक्तिकी आकांक्षा जितने पदोंसे निवृत्त हो जाए उसीका नाम वाक्य है। वाक्य एक अविभाज्य अक्रम और अपद इकाई है जिसमें क्रमिक ध्वनियाँ और शब्द केवल एक दूसरेके उपकारक हैं तथा वाक्य एक उपचीयमान अथवा द्योतक है। शब्द और शब्दसमूह केवल बाह्य आकार हैं। वाणीका जन्म और ग्रहण बुद्धि की विषयगत एकाग्रतासे होता है। अतः जो बुद्धिगत एकता प्रदान कर सके वही वाक्य है। भर्तृहरिके अतिरिक्त कुछ अन्य भारतीय मनीषियोंकी धारणाएँ भी इस मतकी पुष्टि करती हैं। जैमिनी (मीमांसा) विश्वनाथ (साहित्यदर्पण) रुद्रट (काव्यालंकार) केशवमिश्र (तर्कभाषा) और पतंजलि (महाभाष्य)

---

1 *Vendreys J —Language* Page 68
But thinking is really an inner language in which the sentences are linked together just as in articulate speech
Like the verbal image the sentence is a basic element in language Two people talking to each other exchange sentences We learn to speak in sentences and think in sentences

भी वाक्यकी महत्ताको स्वीकार करते हैं।¹ इससे पाश्चात्य भाषावैज्ञानिक भी प्राचीन भारतीय मतकी पुष्टि करते हैं कि वाक्य अभिव्यक्तिकी एक स्वतन्त्र इकाई है जिसकी व्याख्या अपूर्ण एवं परस्पर आश्रित अर्थोंमें की जाती है।²

वाक्यकी रचनाका मूल आधार आन्तरिक भावना या प्रयास माना है। इस वर्णोच्चारण और शब्दस्थितिका महत्त्व गौण है किन्तु यह वाक्यम अन्तर्निहित

---

१ जैमिनी—'मीमांसा'
'अर्थैकत्वादेकं वाक्यं साकांक्षं चेद्विभागे स्यात्' २ २ ४६
विश्वनाथ—'साहित्यदर्पण'
'वाक्यंस्याद् योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः
रुद्रट—'काव्यालंकार'
वाक्यं तत्राभिमतं परस्परं सम्बन्धोपवृत्तीनाम्
समुदाय शब्दानामेव पराणामनाकाङ्क्ष २।७
केशवमिश्र—'तर्कभाषा
वाक्यंत्वाकांक्षा योग्यतासन्निधिमतां पदानां समूह पृष्ठ ८७
पतञ्जलि—'महाभाष्य
आख्यात साऽव्ययकारकविशेषणं वाक्य
सक्रिय विशेषण च आख्यात सविशेषणम एकतिङ ।

2 *Gardiner A H—Speech & Language* Page 88
A sentence is a word or set of words revealing an intelligible purpose
Vendreys J—Language A Linguistic Introduction to History Page 68
We can then define the sentence as the form in which the verbal image is expressed and understood through the medium of sounds
Long Ralph B—The Sentence and its Parts Page 9
Sentences are linguistic units of a certain magnitude
Curme George O—English Grammar Page 97
A sentence is an expression of a thought or feeling by means of a word or words used in such form and manner as to convey the meaning intended
Stokoe H R—The Understanding of Syntax Page 37
A sentence is a word group which expresses a complete thought
Jesperson Otto—Philosophy of Grammar Page 87
A sentence is a (relatively) complete and independent human utterance—the completeness and independence shows by its standing alone

नही हैं। इसलिए भत हरि वाक्यको स्फोटात्मक स्वीकार करते हैं। आभ्यन्तर स्फोटके फलस्वरूप उच्चरित वाक्य अर्थ ग्रहण करनेकेलिए अन्वय-व्यतिरेकका आश्रय नही लेता। अर्थ प्रतीति पहले ही क्षणमे आपातत हो जाती है। वाक्यार्थ अविभाज्य है किन्तु लोक-व्यवहारकेलिए इसे शब्दोंके रूपमे विभक्त किया जाता है। पदो और उनके अर्थोंकी सत्ता केवल लाक्षणिक है वास्तविक नही। वाक्य रचनाका अध्ययन वाक्य विन्यास (Syntax) कहलाता है।[1]

उपयु क्त विवेचनसे स्पष्ट हो जाता है कि किसी एक भाषाके अध्ययन और अध्यापनकेलिए उस भाषाकी सबसे महत्त्वपूर्ण इकाई—वाक्यका ज्ञान अनिवार्य है। प्रत्येक भाषाके मूल ढाचेमें कुछ बीजवाक्य पाए जाते हैं जिनके आधारपर भाषाके सभी मानक वाक्य निश्चित नियमोंके विस्तार और रूपान्तरणके द्वारा बनाए जा सकते हैं। कोषगत शब्दावली भाषामे तभी स्थान है जब वे वाक्यमे सक्रिय इकाई पदके रूपमे आकर भाषाका उद्देश्य पूर्ण करनेमे सहायक होते हैं। किन्तु उपलब्ध व्याकरणोमे वाक्यका अत्यल्प परिचय रहता है। सारा ध्यान इस बातपर रहता है कि वाक्यके भिन्न भिन्न पद क्या हैं उनकी परिभाषाएँ और नियम क्या हैं। ऐसे व्याकरणोसे भाषाका स्वरूप सामने नही आता। अत भाषा ज्ञानमे इस प्रकारके व्याकरण सहायक होनेके स्थानपर बाधक हो जाते हैं क्योकि भाषा जिज्ञासु उस भाषाके स्वरूपसे परिचित होनेके स्थानपर रूढ पदो उनकी परिभाषाओ और कुछ सीमा तक अनर्थक नियमोंकी कुहेलिकामे उलझकर रह जाता है। भाषाका ज्ञान बढनेके साथ साथ भाषा जिज्ञासु आवश्यकतानुसार शब्दावली ग्रहण करता जाता है। किन्तु उसकी प्रधान आवश्यकता भाषाके बीज-वाक्योंका

---

1 *Gune P D—An Introduction to Comparative Philology* Page 86
Syntax is the arrangement of words in a sentence according to mutual relationships as determined by their usages Consideration of syntax is mainly the consideration of the different parts of speech their geresis and function

Potter Simeon—Modern Linguistics Page 104
The study of these sentence patterns is called syntax (ordering together systematic arrangement)

Stokoe H R—The Understanding of Syntax Page 15
Syntax then is the term applied to that part of grammar which deals with the construction of sentences and with the functions of words and groups of words in speech

Chomsky Noam—Syntactic Structures Page 11
Syntax is the study of the principles and processes by which sentences are constructed in particular languages

गत वाक्यांश रचना और रूपान्तरणकी प्रक्रियाको समझना है। अतः ऐसे व्याकरणकी आवश्यकता है जो सीमित नियमों द्वारा भाषाके असंख्य संभव वाक्यों की व्याख्या कर सके जो उस भाषामें सर्वथा मान्य हों। किसी भी भाषाके व्याकरणकी सफलताके लिए अनिवार्य है कि वह भाषाके वाक्योंकी जटिल व्यवस्था को स्पष्ट कर सके और भाषाके सक्रिय प्रयोगोंपर समग्र रूपसे एक विहंगम दृष्टि डाल सके। इस प्रकारका व्याकरण तभी संभव है जब भाषामें प्रयुक्त हो चुके वाक्योंका विश्लेषण करके भाषाकी प्रवृत्तियोंपर बल दिया जाए। इसीलिए प्रथम अध्यायमें हिन्दीके उद्भव कालसे लेकर अब तककी मान्य कृतियोंमेंसे उदाहरणों का चयन किया है जो हिन्दीकी रचनामूलक प्रवृत्तिको स्पष्ट कर सकें। पुस्तकमें अन्य स्थानोंपर भी उदाहरणार्थ वाक्योंका चयन सर्वमान्य साहित्यकारोंकी प्रमुख रचनाओं एवं मुख्य समसामयिक पत्र पत्रिकाओंमेंसे किया गया है।

इस अध्ययनका एक लक्ष्य यह है कि अन्य भाषाओंमें हुए सफल भाषा वैज्ञानिक प्रयोगोंके आधारपर हिन्दीमें रूढ़िवादी व्याकरणके स्थानपर एक सुव्यवस्थित वैज्ञानिक आधार तैयार किया जा सके। यह एक विडम्बना ही है कि हिन्दी एक समर्थ और समृद्ध भाषा होते हुए भी (यह तथ्य पुस्तकमें अनेक स्थानों पर स्पष्ट किया गया है) वैज्ञानिक दृष्टिसे वंचित है। फलस्वरूप आज भी हिन्दी भाषी प्रदेशोंमें प्रायः इसका अध्यापन पुराने ढर्रेपर हो रहा है। राष्ट्रभाषा होने के नाते अहिन्दी भाषी प्रदेशोंमें हिन्दीका वैज्ञानिक ढंगसे अध्यापन न केवल वांछित है अपितु सहज बोध और ग्राह्यताके लिए अनिवार्य भी है। इसलिए भाषा का सक्रिय रूपमें अध्यापन करनेके लिए व्याकरणकी आधारभूमि प्रस्तुत करनेका प्रयत्न किया गया है।

हिन्दीमें अब वैज्ञानिक अध्ययनकी कोई परिपाटी [illegible] सामने नहीं आई इसलिए इस दिशामें अग्रसर होनेके लिए अधिकांशमें पाश्चात्य अनुसंधानोंका ही आश्रय लेना पड़ा।

निश्चय ही इस प्रकारके प्रयोगमें कई कमियाँ रह गई होंगी जो इस क्षेत्रके सजग पाठकोंको आलोचनात्मक दृष्टिसे ही स्पष्ट हो पाएँगी। इस दिशामें किसी भी प्रकारके रचनात्मक सुझावों और समालोचनाका हार्दिक स्वागत करूँगा क्योंकि लेखकका और पाठकोंका ध्येय एक ही है—हिन्दी भाषाका वैज्ञानिक दृष्टिसे सहज बोधगम्य अध्ययन और अध्यापन।

विषय-सूची

विस्तार बीजवाक्य—बीजपद (कर्ता+गौणकर्म+मुख्यकर्म+क्रिया) मुख्यकर्मविस्तार गौणकर्मविस्तार।

१

हिन्दी सक्षिप्त इतिहास

(वाक्य-रचनामूलक)

१ १ आदिम मानवने अपने मनोभावाको गद्यके माध्यमसे व्यक्त किया होगा क्योंकि भावोद्रेककी अपेक्षा आवश्यक कार्य व्यापार प्रधान है। अत वैज्ञानिक दृष्टिसे पद्यकी अपेक्षा गद्यके प्रयोग अधिक प्राचीन हैं। रागात्मक अनुभूतियोकी अभिव्यक्तिका माध्यम काव्य है लेकिन गद्य-लेखक तद्वत सवदनाओसे मुक्त रहता है। इसलिये सभी प्रकारके बौद्धिक वैज्ञानिक दार्शनिक विषय गद्यके माध्यमसे ही स्पष्ट किए जाते हैं। विभिन्न विषयोका सूक्ष्म विवेचन विश्लेषण गद्य माध्यममे ही सभव है।

सामान्यत ससारके सभी साहित्याम यह विशेषता पाई जाती है कि प्रारम्भिक साहित्य सर्वत्र पद्यात्मक है। सभ्यताके आरम्भिक युगोम जब व्यक्तित्व अपेक्षा कृत भावनामूलक रहता है तब मनुष्य पद्यका आश्रय लेता है, अत प्रारम्भिक साहित्यका सर्वत्र पद्यात्मक होना स्वाभाविक है। किन्तु सभ्यताके विकासके साथ व्यावहारिक और वैज्ञानिक जीवनमे वह भावनासे अधिक विचारणा एव चिन्तन पर बल देता है जिनकी सम्यक अभिव्यक्ति व्याख्या, विस्तार और सूक्ष्म विश्लेषण आदिके द्वारा सम्भव हो सकती है। इसके लिए गद्यका माध्यम ही समीचीन होता है। वस्तुत गद्यके उन्मुक्त और स्वच्छन्द क्षेत्रम उतरकर ही भाषा अपनी पूरी शक्ति उपादेयता और व्यावहारिकताका विकास करती है।

१ २ प्राचीन आर्योंकी भाषाका आदि रूप लिखित साहित्यके अभावम अज्ञात है। ऋग्वेद प्राचीनतम ग्रन्थ माना गया है। वेदोकी भाषा देश एव कालान्तरके कारण परिवर्तित होती गई। भाषागत वभिन्नयम ऐक्य स्थापन हेतु आर्योने भाषाका सस्कार किया जिसके परिणामस्वरूप भाषा प्रादेशिक राष्ट्रीय बन गई। प्राकृताका मूल प्राचीन वैदिक भाषाम है। कालान्तरम इन प्राकृताका सस्कार

परक संस्कृत भाषाका रूप निर्धारण किया गया। प्राकृतका प्राचीन रूप अशोक
के शिलालेखों तथा प्राचीन बौद्ध और जैन ग्रंथोंमें मिलता है। कालान्तरमें प्राकृत
भी व्याकरणके नियमोंमें बंधकर साहित्यिक भाषा बन गई। इन साहित्यिक
प्राकृतोंके सामने व्याकरणोंने जनताकी बोलचालकी भाषाको अपभ्रंश—भ्रष्ट
हुई भाषा कहा। भामह और दण्डीके उल्लेख तथा वलभी नरेश धारसेन द्वितीय
के छठी शताब्दीके शिलालेखोंसे यह मालूम होता है कि उनके पिता गुहसेन संस्कृत
प्राकृत और अपभ्रंशके कवि थे। इससे अपभ्रंशके अस्तित्वका बोध होता है।
प्रारम्भमें अपभ्रंश शब्द भाषाके लिए प्रयुक्त नहीं होता था। शिक्षित समुदाय
निरक्षर जनसाधारणकी भाषाको अपभ्रंश अपभाषा और अपशब्द कहकर
तिरस्कृत करता था। किन्तु कालान्तरमें यही भ्रष्ट भाषा साहित्यका माध्यम
बन गई और इसमें भी पर्याप्त साहित्यकी रचना हुई। मार्कण्डेयने प्राकृत-सर्वस्व
में तीन प्रकारकी अपभ्रंश मानी है— शौरसेनी व्राचड और उपनागर। अपभ्रंश
कालकी समाप्ति और आधुनिक भाषाओंके स्वरूप ग्रहणके बीचका समय स्पष्ट
नहीं है। कब तक अपभ्रंश साहित्यिक भाषा बनी रही और कब आधुनिक भाषाएं
अस्तित्वमें आई यह निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता। बोलचालकी भाषा
न रहनेपर भी प्राचीन रचनाओंमें अपभ्रंशके प्रयोग होते रहे। मध्य देशकी
भाषा शौरसेनी अपभ्रंश अन्तर्प्रान्तीय भाषाके रूपमें प्रयुक्त हो रही थी। डा०
सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या इसी मतकी पुष्टि करते हुए कहते है— वह एक महान
साहित्यिक भाषा के रूप में ठेठ महाराष्ट्र से बंगाल तक प्रचलित थी।[1]
अपभ्रंश समस्त उत्तरापथमें प्रचलित थी और राष्ट्रभाषाके पदपर प्रति
ष्ठित थी। कालान्तरमें अपभ्रंश भी व्याकरणके नियमोंमें जकड दी गई और
बोलचालकी भाषा एक पग आगे बढ गई। सम्भवतः आचार्य हेमचन्द्रके शब्दानु
शासनमें ग्राम्यापभ्रंश इसी बोलचालकी भाषाको कहा गया है। अपभ्रंश
के अन्त और पुरानी हिन्दीके आरम्भका निश्चय नहीं किया जा सकता फिर
भी यह तो स्पष्ट ही है कि आठवीं शतीसे ही पुरानी हिन्दीके तत्त्व अपभ्रंश
साहित्यमें मिलने लगे थे। पुरानी हिन्दी अपभ्रंश और आधुनिक हिन्दीके बीच
की कडी है। सक्रान्तिकालीन भाषाके अध्ययनकी सामग्री बहुत कम है और जो
है उसपर भी शौरसेनी अपभ्रंशका पर्याप्त प्रभाव है। फिर भी इस साहित्यमें
अस्थिरता और नवीनताकी ओर उन्मुख होनेके लक्षण मिल जाते हैं। सन्नहरासय
प्राकृतपैंगलम पुरातन प्रबन्ध संग्रह उक्ति व्यक्ति प्रकरण वर्णरत्नाकर कीर्ति

---

१ डॉ॰ शान्तिकुमार मिश्र ख्वाबोंकी का आन्दोलन पृष्ठ ८

लता, चर्यापद तथा ज्ञानेश्वरी आदिमे इस भाषाके उदाहरण मिलते हैं।

पन्द्रहवी शताब्दी तक आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ स्वरूप प्राप्त कर चुकी थी। विभिन्न अपभ्रंशोसे हिंदी, राजस्थानी, पजाबी गुजराती पहाडी भाषाएँ, बिहारी, बगला, आसामी उडिया, पूर्वी हिंदी और मराठीका विकास हुआ।

१ ३ पश्चिमी हिंदी मनुस्मृतिके मध्यदेश या अन्तर्वेदकी भाषा रही है। मेरठ और बिजनौरके निकट बोली जानेवाली पश्चिमी हिंदीके खडीबोली रूपसे ही वर्तमान साहित्यिक हिंदी और उर्दू की उत्पत्ति हुई है। डॉ० ग्रियर्सन, डा० चाटुर्ज्या आदि विद्वानोने हिंदी शब्दका प्रयोग पश्चिमी हिन्दीके अर्थमे किया है। हिंदी शौरसेनी अपभ्रंशसे उद्भूत पश्चिमी हिंदीसे निकली है। शौरसेनी अपभ्रंशमे वे सभी प्रवृत्तिया अधिकांश मिल जाती है जो हिंदीमे विकसित हुई। आधुनिक आर्यभाषाओंके विकासकी पृष्ठभूमि अपभ्रंशके नये नये शब्दो और धातु रूपोंके प्रयोगोमे निहित है। प्राचीनयुगमे मध्यदेशकी भाषाएँ क्रमश संस्कृत पालि, शौरसेनी अपभ्रंश रही। आधुनिक युगमे इनका स्थान हिंदीको मिला और सहज ही यह राष्ट्रभाषा बन गई। आज यह एक महान सम्पर्क साधक भाषा है।

> *संस्कृत (जो इसकी जननी है तथा नागरी हिंदी जिसमे बराबर अपने शब्दों का भण्डार परिपूर्ण करती रहती है) द्रविड भाषाएँ (जिनसे रूप तत्व वाक्य विन्यास एव मुहावरों की कुछ आधारभूत बात इसमे मिलती हैं) तथा अरबी एव अरबी फारसी (जिनका इसकी शब्दावली पर प्रभाव पडा है और जिससे उर्दू रूप की लिपि, बौद्धिक तथा सांस्कृतिक शब्द, साहित्यिक अग तथा आदर्श एव अभिव्यक्ति के साधन, सब इन्हीं से आये हैं) सब एकत्रित होकर हिंदुस्थानी मे एक जगह मिल जाती है।*[1]

डा० चाटुर्ज्याके उपर्युक्त कथनसे इस तथ्यकी पुष्टि होती है कि हिंदीमे वे सभी तत्त्व विद्यमान हैं जो एक राष्ट्रभाषाके लिए अपेक्षित हैं। इसके अतिरिक्त यह भी उल्लेख है कि इसपर अंग्रेजी शब्दावली एव वाक्य विन्यासका भी पर्याप्त प्रभाव पडा है। जो हिंदीकी जीवन्तताका ही प्रमाण है।

१ ४ डा० गुणे डा० ग्रियर्सन डा० चाटुर्ज्या बाबू श्यामसुन्दरदास डा० धीरेन्द्र वर्मा डा० उदयनारायण तिवारी आदिने खडी बोली हिंदीका क्षेत्र निर्धारित किया है किन्तु आज यह साहित्यिक प्रचार और अन्य परिवर्तनोंके कारण उस सकुचित क्षेत्रसे निकलकर सभी दिशाओमे फैल रही है। डॉ० चाटुर्ज्याका मत

---

१ डॉ सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या—भारतीय आर्य भाषा और हिंदी पृ १५०

है कि आजकल समस्त उत्तर प्रदेश (जिसमे मध्यवर्ती तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश भी सम्मिलित है) के बहुत से हिन्दुओं ने नागरी हिन्दी को अपने घर की तथा सामाजिक व्यवहार की भी भाषा बनाने का प्रयत्न आरम्भ किया है।'[1] निस्सन्देह, विचार विनिमय एव साहित्यकी दृष्टिसे हिन्दीका विशेष महत्त्व है।

१ ५ खडीबोली शब्द आम बालचालमे अथम प्रचलित हुआ था। भाषा विशेषके अथम खडीबोली शब्द ब्रज अवधी और राजस्थानीकी अपेक्षा बादमे प्रचलित हुआ। साहित्यिक रूपमे दिल्ली, पजाब और उत्तर प्रदेशमे खडीबोली प्रयुक्त होने लगी तथा इस भाषाने अपनी अदभुत शक्तिको व्यक्त किया। हिन्दी भाषा और साहित्यका सर्वतोमुखी विकास तो वस्तुत आधुनिक युगमे ही हुआ। भाषा विशेषकी प्रगतिमे तीन प्रधान स्रोत सहयोग प्रदान करते है—भाषागत एव साहित्यिक परम्पराए नवीन प्रभाव एव वग विशेषकी अनुभूतियाँ। ये तीनो स्रोत हिन्दीकी प्रगतिमे सहायक रहे है।

१ ६ हिन्दीका प्रारम्भिक रूप बौद्धसिद्धो, जैनाचार्यों तथा नाथपथी योगियोकी उक्तियोमे मिलता है। तत्कालिकालीन इस भाषाको मनीषियोने सधा अथवा सन्ध्या भाषा सज्ञा प्रदान की है। परवर्ती अपभ्रश साहित्यमे हिन्दी भाषाकी प्रवृत्तियाँ लक्षित की जा सकती है। राहुलजीने सरहपाको प्राचीनतम हिन्दी लेखक माना है। सरहपाका समय सन् ६३०के लगभग माना गया है।

जहि मन पवन न सचरई, रवि ससि नाहि पवेस
ताहि घट चित्त विसाम करु सरेहे कहिय उवेस

ताव स अक्खर घालिया जाव णिरक्खर होई

आशा बहुत पात फल बाहा

गविया बाँझ बलद बियायल

तुइपाका रचना-काल सन ७३०के निकट माना जाता है—

काया तरवर पच विडाल, चचल चीए पइठो काल
दिढ करिय महासुह परिमाण लुई भणइ गुरु पुच्छिअ जाण।

सन ८४०के लगभग कण्हपान लिखा—

एक्क न किज्जइ मन्त न तन्त। णिअ घरिणी लइ केलि करन्त॥
णिअ घर घरिणी जाव न मज्जइ। ताव कि पचवण्ण विहरिज्जइ॥

गोरखनाथकी रचनाएँ ८८० ई०के आस-पासकी मानी जाती है—

---

१ डॉ सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या—भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी पृष्ठ १७६

ऊँचा-ऊँचा पावत तहि बसइ सबरी बाला

सन ९३३म देवसन रचित श्रावकाचारस उद्धरण प्रस्तुत है—

जो जिण सासण भाखिउ सो मइ कहियउ सार

जो पाल सइ भाउ करि सो तरि पावइ पार।

१०१० ई०के एक अज्ञात कविकी पंक्ति द्रष्टव्य है—

दव श्रम्हारी सीष, कीजइ अवगिण्णहं नहीं।

१०५० ई०म बब्बर कविकी रचनाका एक उदाहरण इस प्रकार है—

भौंहा कविला, उच्चा निश्रला, मज्झा पिश्रला, नत्ता जुश्रला

रक्खा बश्रणा, दंता विरला, कंत जिविला ताका पश्रला

आचार्य हेमचन्द्रके (१०८७-११७३) शब्दानुशासनका निम्नलिखित दोहा प्रसिद्ध है—

भल्ला हुआ जु मारिया, बहिणि ! म्हारा कंतु।

लज्जेज्ज तु वयंसिअहु, जई भग्गा घरु एंतु

मुंजकी अपभ्रंश रचनाएँ पुरानी हिंदीके बहुत निकट हैं—

मुंज भणइ मिणालवइ, गउ जुव्वण मण भूरि

जई सक्कर सयखण्ड किय, तोइ स मिटठी चूरि

सन्धिकालीन भाषाके उदाहरण सन्देशरासक, प्राकृतपैंगलम, उक्ति व्यक्ति प्रकरण, वर्णरत्नाकर कीर्तिलता आदि कृतियोंमे सुरक्षित हैं—

पश्रोहर मुट्ठिया तहश्र हत्थ एक्का दिश्रा

पुणवि तह सठिश्रा तहश्र गध सज्जा किश्रा।

को मैं भाजन मागव

हत्थी जूहा साजा हुआ

जब जब धर्मु बाढ, तब तब पापु ओहट

जस जस धमु जाम तस तस पापु पाम (क्षाम)

बिडरा घोड उलाल

डा० चाटुर्ज्याने इस प्राचीन कोशली कहा है। इस भाषाक जब जब तब तब, मैं, जसे जस आदि हिन्दीमे आज भी इसी रूपम प्रयुक्त होते हैं। किआ (किया), सज्जा (सजा) हुआ (हुआ) आदि हिन्दीके प्राचीन रूप हैं। जैन साहित्यकी भाषाको गुलेरीजीने पुरानी हिन्दी कहा है। इसम पंजाबी ब्रज

गुजराती हिन्दी सभीके प्रयोग मिलते हैं।

नाथपथी जोगियोंकी भाषाका ढाँचा हिन्दीका है। लगभग ग्यारहवीं शतीसे चौदहवीं शती तक गोरखनाथ और उनके अनुयायियोंने काव्य रचना की—

खाए भी मरिए अनखाए भी मरिए
गोरख कहै पूता संजमि ही तरिए

गगन मडल म तारी लागा
जोग पथ है एसा
अवधू मन चगा तो कठौती ही गगा

जोग न जाग्या भोग न भोग्या पहिला गया जमार
आम गन्हा राम सुकर, फिरि फिरि ल अवतार

उठा अवधू लाज की पूगी, चरता अवधू पत की मेठा
सोवता अवधू जीवता मूवा बोलता अवधू प्यजर सूवा

चर्पटनाथ, चौरंगीनाथ आदिकी भाषा प्राचीनता लिए हिन्दी ही है—

किसका बेटा किसकी बहू आप सवारथ मिलिया सहू
जेता फूला तेता झाल चरपट कहै सब आल जजाल

शार्ङ्गधरकी शार्ङ्गधर पद्धतिमें हिन्दी प्रयोग द्रष्टव्य हैं—

कूठ गवभरा मथालि सहसा र कत मरे कहे
कठ पास निवेशजाह शरण रथी मल्लदप विभुम

हम्मीररासोके कुछ अंश इस प्रकार हैं—

ढोला मारिया ढिल्ली मह मुच्छिउ मेच्छ सरीर
पुर जज्जल्ला मतिवर चलिअ वीर हम्मीर

पअभर दरभर धरणि, तरणि रह धुल्लिअ झपिअ
कमठ पिट्ठ टप्परिअ, मेरु मदर सिर कपिअ

जलधरके उपदेशोंमें हिन्दीका बाहुल्य है —

यह ससार, कुबधि का खेत जब लग जीवै तब लग देख
आँख्यों देख काना सुण, जैसा बाहै तैसा लुण

बालानाथ एव देवलनाथकी भाषा चलती हिन्दी है—

पहिले किए लडका लडकी अबही पथ म पैठा
बूढ चमड भसम लगाई अज जता ह्व बैठा

दवल भए न्मितरी सब जग दख्या जाइ
नान्ी वन्ी वहु मिले भन्ी मिला न काइ

१ ७ आदिकालीन वीरगाथा काव्यम भी हिन्दी उपलब्ध है।
नरपतिनाल्हके वीमलदेवरासाकी भाषा पश्चिमी हिन्दी है।

रुप अपूरव पपिग्रट । इमी अस्तो नहिं सयल समार
अति रग स्वामी सू मिली रानि । वटी राजा भाज की
टुप्ट वचन वारया तिरिए ढाइ । ल चीठी आयी तएी राई

पृथ्वीराजरासाम हिन्दीका बाहुल्य है—

सुनि करि वचन आल्ह घर आय। छडयौ राम पयान कराय।
साहन वाहन सब ही लीनौ। कनवज न्मिा पयानौ कीनौ।

जगनिकने ११७३ म परमालरासाकी रचना की। इमकी भाषामे हिन्दीकी भावी वाक्य रचनाके रुप सुरक्षित है।

वारह वग्सि ल कूकर जीए औ तरह ल जिए सियार
वरिस अठारह छत्री जीए, आग जीवन को धिक्कार

कटि भुजदड रजपूतन की चेहरा कट सिपाहिन क्यार
कट भुशडी जव हाथिन क भुइ मे गिरे भरहरा खाय

वीरगाथाकान्य प्राय अप्रामाणिक है किन्तु उपलब्ध रचनाओम हिन्दीके रुप मिल जाते हैं।

१ ८ सामान्यत अमीर खुसरो हिन्दीके आदि कवि माने जाते हैं। यद्यपि इनके पूर्ववर्ती साहित्यम हिन्दीके रुप मिलते ह तथापि हिन्दीम पहलिया, कहमुरिया आदि सबसे पहले इन्होंने ही कही। इनका कोई प्रामाणिक सग्रह प्राप्त नही है। मुहम्मद वाहिद मिर्जाने अपने शोध प्रबन्ध लाइफ एण्ड वक्स ऑफ अमीर खुसरो, म यह सिद्ध किया है कि परवर्ती सम्पादकोन ही इनके काव्यका सग्रह किया है। इनकी सुव्यवस्थित भाषाभी इस सन्दिग्ध ही प्रमाणित करती है। अमीर खुसरो फ़ारसीके शायर थे तथा हिन्दीमे भी रचना करते थ। मुहम्मद वाहिद मिर्जा और डॉ० चाटुर्ज्या जस विद्वानोंने इन रचनाओका सर्वथा अप्रामाणिक नही माना है। भाषा विकासकी दृष्टिसे इन साहित्यका बहुत महत्त्व है—

एक थाल मोता स भरा सबके सिर पर औंधा धरा
चारों ओर वह थाली फिर, मोती उसस एक न गिर

रोटी जली क्यों? घोडा अडा क्यों? पान सडा क्यों?
फरा न था।

मरा मास सिंगार करावत। आग बठ क मान बढावत
वास चिक्कन न कोऊ दीसा। ए सखि साजन ? ना सखि सीसा।

इनका वाक्य विन्यास सरल और सक्षिप्त है—

टूटी टूट के धूप म पडी जों जों सूखी हुई बडी
सर पर जाली पेट स खाली पसली देख एक एक निराला

खुसराके बाद इस भाषाके उदाहरण उत्तर भारतमे विरल है।

१ ६ बारहवी शतीसे ही यह भाषा बीजापुर गोलकुडा, हैदराबाद मसूर, महाराष्ट्र आदिम प्रचलित हो गई थी। दक्खिनी हिन्दीका मूल ढाचा पश्चिमी हिन्दीका था। हिन्दू मुसलमान दोनो कवियोने इस भाषाम रचना की।

सत की चाकरी कर रे बाबा
इस तन का क्या भरासा कब ज्यावगा मर

—केशव स्वामी

खाक लान स गर खुदा पाए
गाय बला भी वासलाँ हो जाए
गोश गीरी म गर खुदा मिलता
गोश चायाँ कोई न वासिल था
इश्क का रमूज न्यारा है
जुज महर पार क न चारा है।

—शख फरीदुद्दीन शकरगजी

गवासी, वजही, इब्नुनिशाती बुर्हानुद्दीन जानिम रानाती नुसरती आदिक प्रबन्ध और फुटकर काव्योमें स्थान-स्थानपर हिन्दी प्रयोग मिल जात है—

झनक झनक माती खाँ की तात गाजा
यों ता ताल मदग भ सा नौरस बाजा

—गमून्राज बन्दानवाज

वह शाह मा-बाप कू फिर यो बात
क मैं न्दिल क हात म ना न्दिन मर हात

—वजही

अजब रात निमल थी उग न्दिन की रात
झमकत थ नूरा म लर घात घात

—गवासी

किसे चित्त बुलावे, किसे र जगावे
किस दिल तपावे किसे मन रिझावे

—सुलतान कुली कुतुबशाह

सजन सत्तारे जायगा और नैन मरेंगे राय
विधना ऐसी रैन कर भोर कधी न हाय

—शाह

विरागी जो कहाते है उसे घरबार करना क्या
हुई जोगिन जो काई पी की उसे ससार करना क्या

—वली

मत गुस्से क शोले सों जलते को जलाती जा
टुक महर के पानी सों यह आग बुझाती जा

—कुली कुतुबशाह

१ १० महाराष्ट्रमें बारहवी शतीमें महानुभाव पथका प्रवतन हुआ। इन सतो ने सवसामान्य भाषामें अपने मतका प्रचार किया। दामोदर पण्डितकी भाषा उल्लेख्य है—

सब घट देखों माणिक मोला
कस कहूँ मै काला धवला
पचरंग स न्यारा होय
लेना एक और देना दोय

उमाम्बावी कुछ चौपदिया गुजराती मिश्रित हिन्दीमें ह—

नगर द्वार हो भिच्छा करा हो बापुरे मोरी अवस्था लो
जहा जावे तिहा आप सरीखा कोउ न करी मोरी चिंता लो

महाराष्ट्रका दूसरा प्रभावशाली पथ वारकरियोका था। नामदव, काहोबा, एकनाथ, तुकाराम, नानदव आदि इसी पथके समथ उदभावक थे—

लोभी के चीत धन बठा
कामीन के चीत काम
माता के चीत पुत्र बठा
तुका के चीत राम

—काहोबा

चुरा चुराकर माखन खाया ग्वालिन का नन्दकुमार कन्हैया
और बात सुन अरबल सो गला बाँध लिया तुन अपना गोपाल
फिरता बन बन गाय चरावत यही तुक्या वधु लकरा ले ले हाथ

—बाहोबा

निर्गुण ब्रह्म भुवन स न्यारा। पाथी पुस्तक भय अपारा
कोरा कागद पढकर पाई। लना एर और दना दाई

—ज्ञानदेव

मसजिद ही म जो अल्ला खुदा ता और स्थान क्या खाली पडा
चारों वक्त नमाजो करता और वक्त क्या चोरों का

—एकनाथ

पाड तुम्हारी गायत्री
लोध का खेत खाती थी
लेकर टगा-टकरी तेरा
लाँगत लाँगत जाती थी
पाड तुम्हारा महादेव
धौल बलद चढ्या आवत देखा था
मोदी के घर खाना पाया
वाका लडका मारया था

चंद न होता सूर न होता पानी पवन मिलाया
शास्त्र न होता, वेद न होता करम कहाँ म आया

—नामदेव

१ ११ रामानन्दकी (१३०० १४१७) रचनाओमे हिन्दीका पर्याप्त पुट मिलता है—

सतों बन्दगी दीदार सहज उतरो सागर पार
सौहे शब्द सो कर प्रीत अनुभव अखड घर जीत
अब उल्टा चढना दूर जहा मगर बसता है पूर
तन कर फिकिर कर भाई जिसम राम रासनाई।

१ १२ कबीर आदि सतोकी भाषाम हिन्दीका प्रयोग विशद रूपसे हुआ है—

नारी तो हम भी करी कीया नहीं विचार
जब जानी तब परिहरी नारी बडा विकार

आऊँगा न जाऊँगा जीऊँगा न मरूँगा
गुर के सबद म रम रम रहूँगा।

मरी नजर म मोती आया है
कोई कह हलका कोई कह भारी
दानों भूल भुलाया है।

—कबीर

तसवी फरों प्रम की, दिल मे करों निमाज
फिरौं सगल दीदार का उसी सनम क काज

—रदास

इस दम दा मनू की ब भरासा, आया आया न आया न आया
यह समार रन दा सुपना कहीं दखा कहीं नाहि दिखाया
सोच विचार करे मत मन म जिसने ढूढा उसन पाया
नानक भक्तन द पद परम निसिदिन राम चरन चित लाया

—नानक

दादू विरह अगनि म जलि गये, मन के मल विकार
दादू विरही पीव का दखगा दीदार

—दादू

आया था एक आया था खबरि उहा की लाया था
आदि अत की जान था पूरण ब्रह्म बखान था

—बपनाजी

जन सुदर अलमस्त दीवाना, सबद सुनाया घूस स
मानू ता मरजाद रहेगी, नहिं मानू तो घूस स

—सुदरदास

किसा स न कर स्वाल, उनका कुछ और ख्याल
फिरते अलमस्त वजूद भी बिसारा ह।

—मलूकदास

प्रम धगा यह टूटत ना
गर टटि कठ फिर बांधना क्या

यह तिलक सतनाम छापा करूँ,
और विविध है साधना क्या।

—दरिया साहब

नित चार है बसरा जग में नहीं कोई तेरा
सब ही बटाऊ लोग हैं, उठ जाएँगे सबेरा

—तुलसी साहब

गुरुगोविन्दसिंहकी प्रसिद्ध आज्ञा हिन्दीमें है।

आज्ञा भई अकाल तभी चलायो पंथ
सब सिक्खन को हुकुम है गुरु मानिए ग्रंथ।

१ १३ सूफी कवियोंने अवधी भाषामें काव्य रचना की है। कहीं कहीं इनकी कृतियोंमें भी हिन्दीका पुट मिल जाता है—

रुक्मिनी पुनि वैसहिं मरि गई। कुलवंती सत सों सति भई
बाहर वह भीतर वह होई। घर बाहर को रहै न जोई।

—कुतबन

बिन बन्दगी इस आलम में खाना तुझे हराम है रे।
बन्दा करे सोई बन्दगी, खिदमत में आठों जाम है रे।

—यारी साहब

चमक महताब की मुख में, लचक जुलफों की अंधियारी
मुकुट तारे भये लेकिन न आओ यह गिलायत है।

मौजों के घर को जो दिले गर बूझता
जब सिंध के भँवर में परी, तब समझ परी

—प्रेमी

उपर्युक्त पंक्तियोंमें अरबी फारसी शब्दोंका प्राचुर्य है लेकिन वाक्य विन्यास हिन्दीका है।

१ १४ सगुण भक्ति-काव्यकी रचनाएँ ब्रज और अवधीमें लिखी गईं किन्तु उनमें भी कहीं-कहीं हिन्दी वाक्य रचना मिल जाती है—

जगन्नाथ जगत में न्यारा है
सुन्दर मन्दिर रतन सिंघासन जगमग जोति उजियारा है

—माधोदास

एक झोंपड़ी की छाया करि लीजिये
एक नई पाथी मैं बनाऊँ मन कीजिये

—नाभादास

हे दया मतवाला योगी, द्वार तेरे आया है
देखो मया तेरा बालक, जिन मोय चटक लगाया है

—सूरदास

यह सूरत खलत ननन म यही हृदय म ध्यान
चरन रेनू चाहत मन मगो, यही दीजिए दान

—कृष्णदास

देखो री यह कसा बालक, रानी जसुमति जाया है
सुन्दर बदन कमल दल लोचन देखत चन्द्र लजाया है
पूरन ब्रह्म अलख अविनाशी प्रगट नन्द घर आया है
परमानन्द कृष्ण मनमोहन, चरन कमल चित लाया है

—परमानन्ददास

मित्र कलत्र सुबन्धु सुत इनम सहज सनह
शुद्ध प्रम इनम नहीं, अकथ कथा सविसेह

—रसखान

आऊँ आऊँ कर गया साजरा, कर गया कौल अनक
गिणते गिणते घिस गई अँगुली, घिस गई अँगुली की रेख

काई दिन याद कराग रमता राम अतीत
आसण मार अडिग होय बठो याही भजन की रीत

—मीरा

कलित ललित बाला वा जवाहर जडा था
चपल चखन बाला चाँदनी म खडा था
पकरि परम प्यारे साँवरे का मिलाओ
अमल अमत प्याला क्यों न मुझको पिलाओ।

—रहीम

कही बात ये ही सही ब्राह्मणों की
अछी मो भी है राहनी उन्हीं की,

तुम्हारा हमारा गुन गन भाई
कहे देवनाम नहीं है जुदाई
—देवनाम

याग रँगीला महल बना है। महल म बीच म भूलना पडा है
इस भूलन पर भूला र भाई। जनम मरन की याद न आई
स्वामी क्या कह गुरु भया न। मुभको भलाया सो ही भलाव
—स्याबाई

१ १५ शिवाजीके दरबारके गोविन्द और मानसिंह कवियोका काव्य भी हिन्दी वाक्य विन्यासकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण है—

भली करी यह दानों बहिनें परम्परा स पाई रे
नाथ जलन्दर मुद्रापाल। मानसिंह जस गाई र
—मानसिंह

महादाजीसिंधिया स्वय हिन्दीके एक अच्छे कवि थे—

अवधूत। नहीं गरज तेरी हम बपरवा फकीरी
तू है राजा हम हैं जोगी पथक पथ है न्यारा
छत्रपती सब तेरे सरीखे पायन परत हमारे

बरार निवासी देवनाथने १७०० मे पर्याप्त हिन्दी रचना की—

रमते राम फकीर कोई दिन याद करोगे।
कोई दिन खावे मवा मिठाई, कोई दिन पीवे नीर
कोई दिन हाथी काइ दिन घाडा काई दिन पाँव जजीर

१८वी शतीमे सिन्धके प्रसिद्ध सन्त रूहलने मनचित परबोधमे सुन्दर हिन्दीका प्रयोग किया है—

प्रभु जा मैं शरण तुम्हारी आया
मन म ममता रहे न कोई दद मिटा सुख पाया

सन् १७८०मे उडीसामे ब्रजनाथ बडजनाने समर तरगकी रचना की जिसका चौथा अध्याय हिन्दीमे है।

अब सब सरदार विचारो। एक डा रगड हाथ न आया
भल भले तुम यारो।
दाल ढाल भर पस लेके कोई अब मार दो किल्ला
घाडा गन्द टूक लडन नाही क्या कर्रूँ जाके बगाला

१ १६ रीतिकालके कुछ कवियो जटमल, ग्वाल, गिरिधर आदिके काव्यमे कहीं-कहीं हिंदीके प्रयोग मिल जाते हैं—

पान लिये पद्मावती गई बादल के पास
ए बालक बादल तुही जो है जीवन मेरा
ऐ बानक बादल तू मुझ आसरा तेरा

—जटमल

अपनी अपनी ठौर पर सब को लाग दाव
जल मे गाडी नाव पर थल गाडी पर नाव

—वृंद

साई सब ससार मे मतलब का व्यवहार
जब लग पैसा गाठ मे, तब लग ताको यार।

—गिरिधर

गफलत टोपी पडा दिवाना, क्यों गफलत मे पडा
कमकट मे जान गँवाया चाम दाम मे चित्त न पाया

हरदम कृष्ण कह श्री कृष्ण कह तू जबा मेरी
यनी मतलब के खातर करता हूँ मैं खुशामद तेरी

—दयाराम

ऐसी जिन्दगानी के भरोसे पे गुमान ऐसे
दस देस घूमि घूमि मन बहलाना है।
आए परवाना पर चले न बहाना यहा
नेकी कर जाना फेर आना है न जाना है।

—ग्वाल

देवने अपनी रचनामे हिंदी शब्दो और वाक्याशोका प्रयोग किया है।

पाइए प्रगट परमेसर प्रतीति मे

एरे मन मेरे हाथ पाव तेरे तोर तो

बिहारीने भी हिंदी प्रयोग किए हैं—

चत चाँद की चाँदनी डारति किए अचेत

ललन चलन सुन चुप रही बोली आप न ईठ

भूधरदासके पदसग्रहसे उद्धत निम्नलिखित पक्तियोमे हिंदीका पुट है—

तुम्हारा हमारा गुन गन भाई
यह देवदास नहीं है गुमाई
—देवदास

बाग रँगीला मन्दर बना है। महल के बीच म झूलना पड़ा है
इस भजन पर भला र भाई। जनम मरन की याद न भाई
दासी क्या कहे गुरु भया न। सबको भगाया सो ही भुगावे
—श्यामाबाई

§ १५ शिवाजीके दरबारके गोविन्द और मानसिंह कवियोंका काव्य भी हिन्दी वाक्य विन्यासकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण है—

भला बुरी यह दोनों बहिनें परम्परा स आई रे
नाथ जलन्दर मुद्रावाल। मानसिंह जस गाई रे
—मानसिंह

महादाजी सिंधिया स्वय हिन्दीके एक अच्छे कवि थे—

अवधूत। नहीं गरज तेरी हम बपरवा फकीरी
तू है राजा हम हैं जोगी पथक पथ है न्यारा
छत्रपता सब तेरे सराख पायन पन्त हमारे

बरार निवासी देवनाथने १७०० म पर्याप्त हिन्दी रचना की—

रमने राम फकीर कोई दिन याद करोग।
कोई दिन खावे मवा मिठाई कोई दिन पीवे नीर
कोई दिन हाथी कोई दिन घोड़ा कोई दिन पाँव जंजीर

१८वीं शतीमे सिंधके प्रसिद्ध सन्त म्हलने मनचित परबोधमें सुन्दर हिन्दीका प्रयोग किया है—

प्रभु जी मैं शरण तुम्हारी आया
मन म ममता रहे न कोई दद मिटा सुख पाया

सन् १७८०म उड़ीसामें ब्रजनाथ बडजनाने समर तरंगकी रचना की जिसका चौथा अध्याय हिन्दीमें है।

अब सब सरदार विचारो। एक दो रगड़ हाथ न आया
भले भले तुम मारो।

ताल ढाल भर पस लके कोई अब मार ना निकला
घोड़ा गए टूक लड़न नाहीं क्या करूँ जाके बंगाला

चरखा चलता नाहीं, चरखा हुआ पुराना
पग खूटे डग हालन लाग, उर मन्ना खखराना
छीनी हुई पाखडी पसली फिर नहीं मन माना।

१ १६ १ रीतिकालके बहुतसे कवियोने हिन्दीमे स्फुट रचनाएँ की हैं। हिन्दू कवियो मे कुलपति सूदन भूषण, आलम शख, नागरीदास, रसिकगोविन्द, ग्वाल, ललितकिशोरी ललितमाधुरी आदि और मुसलमान कवियोमे रसरग कादे खाँ तुराब तालिबअली, जफर तथा अख्तर उल्लेखनीय है—

अफजल खान को जिन्होंने मयदान मारा
बीजापुर गोलकुडा मारा जिन आज है।

बोल वाम ते जानिय हस चमली फूल

गन सम सजिक सब सन सिगार को आलमगीर सिधाये

पच हजारिन बीच खडा किया,
मैं उसका कुछ भेद न पाया

अब कहा पानी मुक्तों म पाती है।
खुन की कसम खाई है

—भूषण

मेरे ही लायक जो था कहना जो कहा मैंने
रघुनाथ मेरी मति न्याय ही को गावगी
वह मुमताज आपकी है आप उसके न
आप क्यों चलाग। वह आप पास आवेगी।

—रघुनाथ

निमि कन्त मनसूर स यों कहि भिजवाया
जाना अपन मुलक को हजरत फुरमाया
फरि साही मनसूर को अहदी लगवाया
माहि जिहानाबाद ते तब ही कढवाया

—सूदन

रम उरभी निमि श्याम सौ आरस उरभे बन
तेरी उरभी अलक म मेरे उरभे नन

—नागरीदास

सुनो ल्लिजानी मरे दिल की कहानी
तु इस्म ही विकानी बदनामी भी सहूँगी मैं
नन्द के कुमार कुरबान ताएी सूरत प
ताए नाल प्यारे हिंदुवानी ह्व रहूँगी मैं

—ताज

तब क्या कहा था अब सफराज आप हुए
जब की अरजकी सुनी चिडीमार स्वार की
कारे के कसर माह क्यों जी दिलदार हुए
एरे नन्दलाल क्यों हमारी बार बार की

—बारवेग फकीर

महबूब बागे सुहाने बने हैं,
सुमोहन गरे माल फूलों हिये हैं।
महारग माते अमाते मदन के,
विलोकत वन्न खौर चन्न दिये हैं।

—ग़ालिबशाह

आमाढ म विनती करें, खराशाह अधीन
तुम बिन व्याकुल नन हैं, जल बिन जसे मीन

—खराशाह

जब तक है परदा स्वार ग़फलत का आखों पर
तभी तक लज्जत बादशाही और वजीरी है।

—जयकवि भाट

सोम नाम एक ब्राह्मण था वो ऊजन नगरी का वासी
गह त्यागि क गया वा वन को, वन के सन्यासी
प्राणायाम चढाय समाधी खच गया वो तो खासी
देख तपस्या हो गये, उस प अविनासी

—गगाराम माध

नयनों ने यह दिल स कहा, कि तुम हो बडे हुशियार
तुम तो पहले याद म उनकी, हमी रह बरार

श्राइ म हम ता वठ किसन बरा भला बतलाया
तुमन पहल छीन लिया तब तो हमन चाहा

—मिर्जा बाला बन्द्र साहिब

जहाँ ब्रजराज वल पाये चलो सखी श्राज वा वन म,
जिना वा रूप क देख विरह की लौ लगी तन म
न वल परती है बक्ल वा न जा लगता है बिन जानो
भई फिरता हू जोगन सी सरे बाजार गलियन मे

—नारायण स्वामी

न खोल घूघट के पट तू प्यारी
चलग नाराव चितवानी के
सरोज सकुचग चन्द्रदनी,
ये तेरे लखते ही चान्नी के
है चौथ तू मत महल पर चढ़ियो
समय अधरा य भामिनी के

—रूपकिशोरी

१ १६ २ कुछ रीतिकालीन कवियोकी कुछ रचनाए पूणतया हिन्दामे है। आलम कृत मुन्नामावलि घनानन्दकी वियोगवलि, नागरीदासका इश्क चमन रघुनाथका इश्क महात्सव शाहआलम मानाकी नान्रिगनेशाही पद्माकर भट्ट रचित कलियुग पच्चासी व्रजनिधिका रास का रेखता विरह की सलिला शीतलदास प्रणीत गुलजार चमन आनन्द चमन और विहार चमन वन्दावन जनके वन्दावन विलासमे सकलित पद्य नगारके स्फुट पद महताबका नखसिख ललितकिशोरीके भजन रेखते और लावनियाँ आदि। इन रीतिकालीन, हिन्दीमे लिखित रचनाओ के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

तर महबूब बाँक न चसम की चोट मारी है
खडा है मामन हा मैं जरा नन्दी पलक टारी है

—रसरग

जो तू कहता रहता है तो जाना मुझ जरूर भया है
। दरगाह वह मान्य की बिना भेंट कछ कौन गया है।

—आलम

मलौन प्रान प्यारे क्यों न आवो
दरस प्यासी मर तिनको जिवावो
कहा हो जू कहा हो जू कहा हो
लग ये प्रान तुमस हैं जहा हो।

—घनानन्द

बरसे बरस घनघोर घटा
तरसे पी दखन को अब नन हमारे
चपला चमक जीयरा लरज,
सखी कस पड सुख चन हमारे।

—शाहआलम

जिन पास चार पस वही है यहा अमीर
और जिनके पास कुछ नहीं वह है बड फकीर

इस राजा हिमाचल के घर म इक बाली सुन्दर बटी थी
मुख उसका चन्द्र गगन का था नाम उसका गौरा पारवती

—नजीर

नहीं जपन राम को नाम जु रक्षक जिहि तारी मुनि जाया है।
अब वचन विचारि कहत पदमाकर यह ईश्वर की माया है।

—पद्माकर भट्ट

चन्द्रमा सी चपला सी, चम्पक चिराग सी है।
चाँन्दनी सी खिल रही खुशबोह मे सनी है।

—ब्रजनिधि

शीतल कुछ तुझ नजर आया तज यार दुख अर द्वन्द नहीं
वारिज की ललित पालकी म जानी यह बठा चन्द कहीं

—शीतल

कहो कभी उस मजलिस म मरी भी याद होती है।
जिसम राधाकृष्ण विराज सखियन जगमग जाती है।

—ललितकिशोरी

दुनिया म हाथ पर हिलाना नहीं अच्छा
मर जाना पर उठ के रहीं जाना नहीं अच्छा

—बेनी

गुलगुली गिल म गलीचा है गुणीजन है
चाँन्दनी है चिक है चिरागन की माला है
कहे पदमाकर त्यों गजक गिजा है सजी
सज है सुराही है सुरा है और प्याला है।
सिसिर के पाला को न व्यापत कसाला तिन्ह
जिनके अधीन एते उदित मसाला है।
तान तुकताला है विनोद क रसाला है,
सुबाला है दुशाला है बिसाला चित्रसाला है।

—पद्माकर

उपयु क्त उदाहरणासे हिन्दीकी दीघकालीन परम्पराका प्रामाणिक परिचय मिलता है। विकासक्रमकी स्वाभाविक्ताको ध्यानमे रखनेपर आधुनिक हिन्दी के बीज इन रचनाओम सुरक्षित दिखाइ पडते है।

१ १७　यद्यपि सस्कृतम अत्यधिक प्रौढ और परिमार्जित गद्यका प्रणयन हो चुका था तथापि आधुनिक भारतीय आय भाषाओको सस्कृत प्राकृत और अपभ्र श से रिक्थ रूपम काव्य परम्परा ही प्राप्त हुई। इस कारण इन भाषाओम गद्यका महत्व नही रहा। आधुनिक भाषाओ गुजराती पजाबी ब्रज, मथिली, आसामी हिन्दी आदिके प्राचीन उदाहरणोके अनुशीलनसे स्पष्ट हो जाता है कि गद्यका उपयोग सीधे साधे कलात्मक रूपमे हुआ, वज्ञानिक और दाशनिक विश्लेषणके लिए नही। प्रारम्भिक गद्यकी शली सरल थी तथा गहन गम्भीर विचारोकी व्यजनाम भाषा समथ नही थी। अत प्राचीन हिन्दी गद्यक उदाहरण कथा आख्यायिकाओम ही मिलत है।

१ १८　प्राचीन अपभ्र शकी अपेक्षा परवर्ती अपभ्र शम गद्यकी रचनाएँ अधिक दिखाई पडती है। कुवलयमाला कथामें गद्यका कुछ अश मिलता है।

राय राणि सधि विग्गह पडुए बहु जपिता पयती ए।
तरे मरे आज ति जपिर मज्भुन्स य।

श्रीयुत अगरचन्द नाहटाके मतानुसार सम्भवत यही हिन्दी गद्यका प्राचीनतम

उदाहरण है।

१ १९ हिन्दी गद्यका विधिवत प्रयोग नाथपंथी योगियों द्वारा हुआ। हठ योग, ब्रह्मज्ञान, आध्यात्मिक विवेचन आदिसे सम्बद्ध गोरखपंथियोंका एक ग्रन्थ गद्यमें मिलता है, जिसकी रचना सन १३५० के लगभग हुई। यह वार्त्तालाप रूपमें है—

> श्री गुरु परमानन्द तिनको दंडवत है। हैं कैसे परमानन्द आनन्द स्वरूप हैं सरीर जिन्हि को, जिन्हि के नित्य गाए त शरीर चेतनि अर आनन्दमय होतु है। मैं जु हों गोरिष सो मछन्दरनाथ को दंडवत करत हों। हैं कैसे वे मछन्दरनाथ? आत्मज्योति निश्चल है अंतहकरन जिनके अर मूलद्वार ते छह चक्र जिनि नीकि तरह जाने।

इसे शुक्लजीने ब्रजभाषा गद्य माना है किन्तु इसकी वाक्य रचनामें निहित कतिपय तत्त्व हिन्दीकी प्रकृतिके अनुरूप हैं।

१ २० उत्तर भारतमें साहित्यिक भाषा ब्रज और अवधी बन चुकी थी किन्तु चौदहवी शतीमें दक्षिण भारतमें हिन्दीमें गद्य रचना होती रही। दक्खिनीमें गद्यका प्रणयन सर्वप्रथम ख्वाजा बन्दानवाज गेसूदराजने (१३१८ १४२२ ई०) किया। आपकी अधिकतर रचनाएँ फारसीमें हैं, किन्तु तीन रिसाले मीराजुल आशकीन हिदायतनामा और रिसाला सहवारा दक्खिनीमें हैं। मीराजुल आशकीनके १९ पष्ठामें फारसी मिश्रित हिन्दी गद्य द्रष्टव्य है—

> ईमान के झाडा (जड़) क्या और ईमान की डालियाँ क्या और ईमान के पात क्या और ईमान का वतन क्या और ईमान का बीज क्या और ईमान का पोष्ट क्या और ईमान का सर क्या और ईमान का जीउ क्या।

१ २१ अकबरके समयमें लगभग सन् १५८० में गंग कवि गद्यकी रचना चन्द छन्द बरनन की महिमा उपलब्ध है। इस ग्रन्थसे यह तथ्य स्पष्ट होता है कि उस समय हिन्दी शिष्ट बोलचालकी भाषा थी। यद्यपि साहित्यकी भाषा ब्रज और अवधी ही रही है—

> सिद्धि श्री १०८ श्री श्री पातसाहिजी श्री दलपतिजी अकबरसाहजी आमखास में तखत ऊपर विराजमान हो रहे। और आमखास भरने लगा है जिसमें तमाम उमराव आय आय कुर्निश बजाय जुहार करके अपनी अपनी बैठक पर बैठ जाया करें अपनी अपनी मिसल से। जिनकी बैठक

नहीं सो रेसम क रसम म रेसम की लूम पकड पकड क खड ताजीम म रह।

इतना सुनक पातसाहिजी श्री ग्रस्तग्यासिजी श्राप सर सोना नरहरदास चारन का दिया। इनर डड सर साना हो गया। रास वचना पूरन भया। ग्रामखास बरखास हुग्रा।

१२२ दक्खिनी हिन्दीका मुख्य ग्रथ मुल्ला वजहीरा सबरस है, जिसका रचनाकाल सन १६३५ है—

एक रात बात म बात ग्रफता हौर दिल कलन्दर का किस्सा काडी, ग्रपन राज का पर्दा फाडी। काँटे का जख्म घाव दद कहीं। ग्रपन हमदद पास दद कहीं कि हमना हौर दिल म ग्राशिक हौर माशूकी की निस्बत दर्मियान है दो तन हैं वले दो तन को एक जान है।

बात ग्रजब है उसके भगवन को एक सबब है यहाँ कुछ हम न, इसका कुछ गम न। बन झगडा इताल ग्रवल सौं ग्रा पडया है किस्सा मुश्किल खडया है। हुस्नधन मनमोहन जगजीवन की बात हुस्न की हम दाल सुन सब खातिर लिया विचारी कहा खुदा है डर न को ग्रवल क्या ग्रछ बिचारी।

ग्रसील पका (पसौ) पर नजर नहीं करता ग्रसील ग्रपनी शम कौं मरता ग्रपन नम धम कौं मरता। जा कुछ हाता खुदा का भाता। बुरा वक्त क्या पूछ कर ग्राता।

१२३ सन १७४१ मे रामप्रसाद निरजनी कृत भाषायोगवाशिष्ठका गद्य सुष्ठु और परिमार्जित है। इसलिय निरजनीको ही प्रथम प्रौढ गद्य लेखक कहा गया है।

ग्रगस्त्यजी के शिष्य सुतीक्षण क मन मे एक सदह पदा हुग्रा तब वह उसके दूर करन के कारण ग्रगस्त मुनि के ग्राश्रम म जा विधिसहित प्रणाम कर के बैठ ग्रौर बिनती कर प्रश्न किया कि हे भगवन आप सब तत्वों ग्रौर शास्त्रों के जाननहारे हो मेरे एक सदेह को दूर करो। मोक्ष का कारण कम है कि ज्ञान है ग्रथवा दोनों है समभाय के कहो।

मलीन वासना जन्मों का कारण है ऐसी वासना को छाडकर जब तुम स्थित होग तब तुम कर्ता हुए भी निर्लेप रहोग ग्रौर हष शोक ग्रादि विकारों स जब तुम ग्रलग ग्रलग होग तब वीतराग, भय क्रोध स रहित रहोग।

जिनने आत्मतत्त्व पाया है वह जस स्थित हो वस हो तुम भी स्थित हो। इसी दृष्टि को पाकर आत्मतत्व का देखो तब विगतज्वर होगे और आत्मपद को पाकर फिर जनम मरण के बंधन में न आवोगे।

१२४ सन १७६१ में बागवानिवासी प० दौलतरामने हरिषेणाचार्य कृत जैन पद्मपुराणका हिन्दीमे अच्छा अनुवाद किया—

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्रविषे मगधनामा देश अति सुन्दर है जहा पुण्याधिकारी बसे हैं इन्द्र के लोक समान सदा भोगोपभोग करे हैं और भूमिविषे साठिन के वाड शोभायमान हैं। जहा नाना प्रकार के अन्नों के समूह पर्वत समान ढेर हो रहे हैं।

ये दोनो रचनाएँ हिन्दीकी शिष्ट जनताकी भाषा प्रमाणित करती है। ब्रजका जो कुछ प्रभाव परिलक्षित है वह ब्रजकी तात्कालिक महत्ताके कारण है।

१२५ इसके उपरान्त १७७० १७८० के बीच रचित किसी राजस्थानी लेखकका मडोवर का वर्णन मिलता है।

अवल में यहाँ माडव्य रिसी का आश्रम था। इस सबब से इस जगे का नाम माडव्याश्रम हुवा। इस लफ्ज का बिगड के मडोवर हुवा है।

१२६ सन् १७९९ में फोर्टविलियम कॉलेजकी स्थापना हुई जहा फारसी और हिन्दुस्तानीकी शिक्षापर विशेष बल दिया गया। अप्रैल १८०१ मे डा० जान गिलक्राइस्ट हिन्दुस्तानीके प्राफेसरके रूपमें नियुक्त हुए जिनकी देखरेखमे हिन्दी व्याकरण और शब्द कोषका निर्माण कार्य हुआ। किन्तु इसी समय (१८००) मथुरानाथ शुक्लने पचाग दर्शनकी, मुशी सदासुखलालने विष्णुपुराणपर आधृत ज्ञानोपदेशकी पुस्तक सुखसागरकी और इशाअल्लाखाने रानी केतकी की कहानीकी रचना की। मुशीजीने शिष्ट बोलचालकी भाषाका प्रयोग किया है—

स्वभाव करके वे दैत्य कहलाये। बहुत जाना चूक हुई। उन्हीं लोगों से बन आवे है जो बात सत्य होय। जो बात सत्य होय उसे कहना चाहिये कोई बुरा माने कि भला माने। विद्या इस हेतु पढते हैं कि तात्पर्य इसका (जो) सतोवृत्ति है वह प्राप्त हो और उससे निज स्वरूप में लय हूजिए। इस हेतु नहीं पढते हैं कि चतुराई की बाते कहके लोगों को बहकाइए और फुसलाइए और सत्य छिपाइये व्यभिचार कीजिए और सुरापान कीजिए और धन द्रव्य इकठौर कीजिए और मन को कि तमोवृत्ति से भर रहा है निर्मल न कीजिए। तोता है सो नारायण का नाम लेता है परन्तु उसे ज्ञान

तो नहीं है ।

इन्होने सन् १७९८ और १८०३मे वीरभानचरित या रानी केतकी की कहानीका प्रणयन किया। उनका उद्देश्य ठेठ हिन्दी लिखना था—

जिसम हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले । बाहर की बोली ग्रौर गँवारी कुछ उसके बीच न हो ।

किन्तु इस प्रतिज्ञाके उपरान्त भी कहीं-कहीं फारसी वाक्य विन्यास लक्षित किया जा सकता है—

यह चिट्ठी जो पीकभरी कुवर तक जा पहुँची ।

सिर झुकाकर नाक रगडता हू ग्रपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सबको बनाया ।

इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस ग्रपने दाता के भेजे हुए प्यारे को ।

इनकी भाषामे मुहावरोका प्राचुर्य है तथा सानुप्रासविरामका बाहुल्य है—

जब दोनों महाराजों मे लडाई होने लगी रानी केतकी सावन भादों के रूप रोने लगी ग्रौर दोनों के जी मे यह ग्रा गई यह कैसी चाहत जिसमे लहू बरसने लगा ग्रौर ग्रच्छी बातों को जी तरसने लगा ।

ग्रातियाँ जातियाँ जो साँस हैं। उसके बिना ध्यान यह सब फाँस है ।

तुम ग्रभी ग्रल्हड हो, तुमने ग्रभी कुछ देखा नहीं । जो ऐसी बात पर सचमुच ढलाव देखूगी तो तुम्हारे बाप से कहकर वह भभूत जो वह मुग्रा निगोडा, भूत मुछन्दर का पूत ग्रवधूत दे गया है हाथ मुरकवाकर छिनवा लूँगी ।

१२७ इन रचनाओको दृष्टिपथमे रखकर कहा जा सकता है कि हिंदी गद्यका प्रादुर्भाव अंग्रेजोकी प्रेरणासे नही हुआ, उसका स्वतन्त्र अस्तित्व पहले से ही था। अंग्रेजो द्वारा स्थापित विभिन्न सस्थाओ, शिक्षा-केन्द्रो, शासनकी आवश्यकता ईसाई धर्म प्रचार प्रेस आदिसे हिंदी गद्यको विकसित होनेका अवसर मिला । स्वय गिलक्राइस्टने हिंदुस्तानीको द ग्रैंड पापुलर स्पीच आफ हिंदुस्तान कहा है। कली द्वारा प्रस्तुत निबन्धका एक अश इस प्रकार है—

हिंदुस्तान मे कारवाई के लिए हिंदी जबान ग्रौर जबानों से जियादे दरकार है ।

हिंदुस्तानी जबान कि जिसका जिक मर दाव म है उसको हिन्दी, उदू और रेखता भी कहते हैं और यह मुरक्कब अरबी और फारसी जो सस्कृत या भाषा से है और यह पिछली अगले जमाने म तमाम हिंद म राएज थी।

प्रस्तुत अशम अरबी फारसी शब्दोका बाहुल्य है। इस सम्बन्धम सन १८०२ म डब्ल्यू० चपलिन द्वारा प्रस्तुत निबन्धका एक अश द्रष्टव्य है—

हे महाराजों जो मरे बचन का ध्यान देकर सुनो ता आप क मन की दुविधा जाय। सच है जो इस भयानक चाल का सार जिस ग्रथ मैं सौंपता हूँ जब धीरज की दृष्टि से देखियेगा तब इसकी अनीति और कठोरी और कुरीति को जानियेगा तो आपकी भी मति मरी ही मति क समान हो जाएगी।

इन पक्तियाकी भाषा शुद्ध हिन्दी है।

१२७१ लल्लूजीलालने सन १८०३ मे जॉन गिलक्राइस्टकी आज्ञासे प्रमसागरकी रचना की। इनकी भाषा व्रजरजित हिन्दी है। इसम इन्होने अरबी फारसी शब्दोको बचानेका प्रयास किया है। ध्यान देनेपर इनकी भाषा एकदम पडिताऊ जान पडती है। कही कही तुकबन्दी भी है। वाक्य प्राय बडे-बडे है—

तिस समय घन जो गरजता था सोई तौ धौंसा बजता था और वरण वरण की घटा जो घिर आई थी सोई शूरवीर रावत थे, जिनके बीच बिजली की दमक शस्त्र की सी चमक थी, बगपात ठौर ठौर ध्वजा सी फहराय रही थी, दादुर मोर, कडखतों की सी भाति यश बखानते थे और बडी बडी बूँदों की झडी बाणों की झडी लगी थी।

इतना कह महादेवजी गिरिजा को साथ ले गगा तीर पर जाय, नीर में न्हाय हिलाय, अति लाड प्यार से लगे पार्वतीजी को वस्त्र आभूषण पहिरान। निदान अति आनन्द म मग्न हो डमरू बजाय बजाय, ताडव नाच नाच सगीत शास्त्र की रीति से गाय गाय लगे रिझाने।

—प्रमसागर

फिर बैताल बोला ए राजा धर्मपुर नाम एक नगर है। वहाँ का राजा धर्मशील और उसके मत्री का नाम अन्धक उसन एक दिन राजा स कहा महाराज एक मन्दिर बना उसमें देवी को बिठा चित पूजा कीजिए कि इसका शास्त्र में बडा पुण्य लिखता है।

—बैतालपचीसी

लल्लूजीलालने *सिंहासन बत्तीसी बैतालपचीसी शकुन्तला नाटक, माधोनल राजनीति प्रेमसागर, लालचन्द्रिका सभाविलास* आदि अनेक हिन्दी ग्रन्थोंकी रचना की।

१२७२ सन्लमिश्रकी मुख्य रचना *नासिकेतोपाख्यान* या *चन्द्रावती* है। इसका गद्य व्यावहारिक भाषाका है किन्तु प्राय ब्रजभाषा और पूर्वीके प्रयोग आ गए हैं—

> *इस प्रकार स नासिकेत मुनि यम की पुरी सहित नरक का बणन कर फिर जौन जौन कम किए स जो भोग होना है सो सब ऋषियों को सुनान लग कि गौ ब्राह्मण माता पिता मित्र बालक, स्त्री स्वामी, वद्ध गुरु इनका जो वध करते हैं तो भूठी साक्षी भरत भूठ ही कम म दिन रात लग रहते हैं अपनी भार्या को त्याग दूसरे की स्त्री को व्याहत औरों की पीडा देख प्रसन्न होत हैं और जो अपन धम स हीन पाप ही म गड रहते है वो मातापिता की हित की बात को नहीं सुनते सबस बर करते है, एस जो पापी जन है सो महा डरावन दक्षिण द्वार स जा नरकों में पडत हैं।*

१२८ सन १८२४ म विलियम प्राइस डो० रडल और लाड एमहस्टकी भाषा-सम्बन्धी विवेचनासे स्पष्ट हो गया कि हिन्दी उदू और हिन्दुस्तानीसे भिन्न है तथा वह गौण और उपेक्षित भाषा नही है। किन्तु प्राइस न तो किसी गद्य ग्रन्थकी रचना कर सके और न ही कोई पुस्तक लिखवा सके।

१२९ सन १६२३ म रचित जटमल कविकी *गोराबादल री बातका* किसी अज्ञात लेखकने सन १८२४ म गद्यम अनुवाद किया—

> *गोरे की आवरत आवे सो वचन सुनकर अपन पावद की पगडी हाथ म लकर वाहा सती हुई सा सिवपुर म जाके वाहा दोनों मते हुए। गोराबादल की कथा गुरु के बस सरस्वती के महरबानगी स पूरन भई तिस वास्ते गुरु कू व सरस्वती कू नमस्कार करता हूँ। ये कथा साल स आसी के साल म फागुन सुदी पूनम क रोज बनाई। ये कथा म दो रस हैं वीरा रस व सीनगार रस है सो क्या। मोर छडो नाँव गाँव का रहन वाला कवेसर जगहा उस उस गाव क लोग भाहोत सुखी है, घर घर म आनन्द होना है कोई घर म फकीर दीखना नहीं।*

१३० सन १८४३ के निकट श्रद्धाराम फुल्लौरीने अनेक पुस्तकोंकी रचना की। इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यामृतप्रवाहकी भाषा प्रौढ थी। हिन्दी गद्यम इन्होंने बहुत कुछ लिखा और निरन्तर हिन्दी भाषाका प्रचार करत रहे।

१ ३१ फोट विलियम कालजकी प्रेरणासे रचित ग्रन्थोके अतिरिक्त प्रायमिक पाठयपुस्तकें गणित, क्षेत्रविज्ञान इतिहास, भूगाल, विज्ञान चिकित्सा राजनीति, अथशास्त्र धम-दशन, कला आदि अनक विषयोपर पुस्तकें लिखी गइ। इनका गद्य शिथिल और अपरिमार्जित हानेपर भी है हिन्दीका ही।

जब सारी यूरप मे नपालियन बोनापाट क अधीन होन शात हो गई तब ग्रलजियम वाल हालण्ड देश म इस आशय स इखट्ट हुए कि हमारे साथी हान स नान्दरलण्ड के राज्य म आग क लिए फ स वालों को सम्पूण रूप से रोक होय परतु इस सयोग के न हान को कितने ही कारण हो गए क्योंकि उस देश की भाषा प्रकृति और धम भिन भिन थे। उनके मनोरथ परस्पर विपरीत थे और व आपस मे द्वष रखत थ।

जवाहरलाल—इतिहासचन्द्रिका'

इसी जगत म कोटि २ मनुष्य है, उन सबों क लिए एसी बहु खाद्य द्रव्य प्रस्तुत हैं कि ग्रभाव हागा यह शका कभी नहीं है परमश्वर न मनुष्यों के प्राण रक्षा क लिए जिन वस्तुओं की सष्टि की है उनमे विचार करन स हमारा बडा आश्चय बोध होता है।

—कलकत्ता स्कूल बुक सोसायटी द्वारा प्रकाशित पदार्थ विद्यासागर

उनकी दृष्टि बरामदे का ओर जा पडी तो क्या देखते है वह अनाथ बालक चटाई पर बठा हुआ इजील पढ रहा है और उसका अथ अपन कहार को समझाता जाता है। साहिब की ओर पीठ थी इसलिए उसन उनका नहीं देखा पहल ता स्मिथ साहिब को निश्चय न हुआ जाना मैं स्वप्न देखता हूँ।

प्रियनाथ—हैनरी और उसका मेहरा

१ ३२ ईसाई धमप्रचारकोने हिन्दी गद्यको अपने प्रचारका माध्यम बनाया। विलियम करन बाइबिलका अनुवाद कराया। इस धम पुस्तककी भाषा बोलचालकी हिन्दी है। अनुवाद होनेके कारण कही कही शली और वाक्य-विन्यास हिन्दीकी प्रकृति और प्रवृत्तिसे मेल न खानेके कारण विचित्र प्रतीत होता है।

यीशु बपतिस्मा लके तुरत जल के ऊपर आया और दखा उसके लिए स्वग खुल गया और उसन ईश्वर के आत्मा को कपात की नाई उतरते और अपने ऊपर आते देखा और देखो यह आकाशवाणी हुई कि मेरा प्रिय पुत्र है जिसस मैं अति प्रसन्न हूँ।

१ ३३ करने बाद इस क्षेत्रमे मार्टिनके प्रयत्न सराहनीय हैं। पूरा न्यू टस्टामट १८२६ म जगतारक प्रभु ईसामसीह का नया नियम मगलसमाचारके नामसे छपा। इसके अतिरिक्त दाऊद के गीत, गीत सग्रह प्रभु ईसामसीह की जीवनी, ईश्वरोक्त शास्त्रधारा तथा इंजील की तफसीर आदि अनेक पुस्तकें छपी। किन्तु इन प्रचारात्मक पुस्तकोंके गद्यसे व्यावहारिक लाभ नही हुआ।

१ ३४ साहित्य रचनाम पत्रोका भी योगदान रहा। सवप्रथम ३० मई १८२६ को प० जुगलकिशार शुक्लके सम्पादकत्वम उदन्त मातण्ड प्रकाशित हुआ।

> *यह उदतमातण्ड अब पहिले हिंदुस्तानियों क हित के हेत जो आज तक किसी न नहीं चलाया पर अगरेजी ओ पारसी ओ बगले म जो कागज छपता है उसका सुख उन बोलियों क जानन ओ पढनवालों को ही होता है। इससे सत्य समाचार हिंदुस्तानी लोग देखकर आप पढ ओ समझ लेय ओ पराई अपेक्षा न कर ओ अपन भाप की उपज न छोड इसलिए—श्रीमान गवरनर जनरल बहादुर की आयस से एसे साहस मे चित लगाय क एक प्रकार से यह नया ठाट ठाटा।*

किन्तु यह पत्र एक वर्ष बाद ही बन्द हो गया। इसम प्रयुक्त हिन्दीके उदाहरण इस प्रकार हैं—

> *एक यशी वकील वकालत का काम करते करत बुड्ढा होकर अपन दामाद को वह काम सौंप के आप सुचित हुआ।*
>
> *यह सुनकर वकील पछता करके बोला तुमन सत्यानाश किया। उस मौकद्दम से हमारे बाप बड थे तिस पीछ हमारे बाप मरती समय हम हाथ उठाके दे गये ओ हमन भी उसको बना रखा जो अब तक भली भाँति अपना दिन काटा ओ वही मुकद्दमा तुमको सौंपकर समझा था कि तुम भी अपने बट पोते परोतों तक पलोगे पर तुम थोड स दिनों म उस खो बठे।*

१ ३४ १ उसके बाद ६ मई १८२६ को बगदूत निकला। राजा राममोहन रायकी भाषाम कहीं-कहीं बगलापनकी झलक है जिसे किसी प्रकार भी समीचीन नही कहा जा सकता—

> *जो सब ब्राह्मण साग वद अध्ययन नहीं करत सो सब व्रात्य हैं यह प्रमाण करन की इच्छा करके ब्राह्मण धम परायण श्री सुब्रह्मण्य शास्त्रीजी न जो पत्र साग-वेदाध्ययन भनक दश के ब्राह्मणों क समीर पठाया है उसमें देखा जो उन्होंन लिखा—वेदाध्ययनहीन—मनुष्यों को*

स्वर्ग और मोक्ष होने शक्ता नहीं।

१ ३४ २ १८४४ मे राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्दका बनारस अखबार तारामोहन मित्रके सम्पादकत्वम प्रकाशित हुआ। इसकी भाषा मूलत उर्दू है परन्तु कहीं-कहीं हिन्दीका पुट भी मिलता है—

> यहा जो नया पाठशाला कई साल से जनाब कप्तान किट साहब बहादुर के इहतिमाम और धर्मात्माओं के मदद से बनता है उसका हाल कई दफा जाहिर हो चुका है।

१ ३४ ३ सन १८५० मे सुधाकर निकला और १८५२ म मुशी सदासुख लालके सम्पादकत्वम बुद्धिप्रकाश। बुद्धिप्रकाशकी भाषा स्वच्छ और व्यवस्थित थी—

> स्त्रियों म सन्तोष और नम्रता और प्रीत यह सब गुण कर्ता न उत्पन्न किए हैं, केवल विद्या की न्यूनता है, जो यह भी हो तो स्त्रिया अपन सारे ऋण से चुक सकती हैं और लडकों को सिखाना पढाना जसे उनसे बन सक्ता है वसा दूसरों स नहीं।

१ ३५ उस समय उर्दू-फारसी कचहरी और सरकारी व्यवहारकी भाषा बनी हुई थी और उर्दू हिन्दीका सघर्ष चल रहा था। सरकारी क्षेत्रसे बहिष्कृत होनेपर भी हिन्दी जनसाधारणका प्रतिनिधित्व करती रही। उन्नीसवी शती पूर्वार्द्धम आधुनिक हिन्दी गद्यका सूत्रपात हो चुका था परन्तु कुछ समय तक विशृखलित सी रही तथा इस अवधिम रचनाका परिमाण अत्यल्प रहा। सन १८४६ म रायमक्खनलालने श्रीमदभागवतका सुखसागर नामसे अनुवाद किया। सन १८५१ मे मीरमुशी लक्ष्मीदासकी हातिमताई १८५६ म शुकबहत्तरी, १८६० म दाऊजी अग्निहोत्री कृत नल प्रसग आदिका उल्लेख किया जा सकता है।

१ ३६ प्रारम्भिक अवस्थाका हिन्दी गद्य अपरिपक्व था। स्थायी गद्य साहित्य और साहित्यिक रूपोका विकास नही हो पाया था। उन्नीसवी शती उत्तरार्द्धम अनेक कारणोस हिन्दी गद्यका अभूतपूर्व विकास हुआ। इस समय राजा शिव प्रसादने हिन्दीकी रक्षामे प्रत्यक्ष एव परोक्ष रूपसे उल्लेखनीय सहयोग किया। राजा भोज का सपना, वीरसिह का वृत्तात आलसियों को कोडा, इतिहास तिमिरनाशक मानवधर्मसार आदि राजासाहबकी प्रमुख रचनाएँ हैं। प्रारम्भिक पुस्तकें सामान्य प्रयोगकी सरल हिन्दीम हैं—

> बडे बडे महिपाल उसका नाम सुनते ही काप उठते और बडे-बडे भूपति उसके पाँव पर अपना सिर नवाते। सेना उसकी समुद्र के तरगों का नमूना और खजाना उसका सोने चाँदी और रत्नों की खान से भी दूना।

उर्दू के प्रचलित होने से देशवासियों को कोई लाभ न होगा क्योंकि वह भाषा खास मुसलमानों की है।

हिंदुओं का यह कर्तव्य है कि वे अपनी परम्परागत भाषा की उन्नति करते चलें। उर्दू में आशिकी कविता के अतिरिक्त किसी गम्भीर विषय को व्यक्त करने की शक्ति ही नहीं है।

१४० स्वामी दयानंदने सन १८७५ में सत्यार्थप्रकाश हिंदीमें लिखा और पंजाबमें हिंदीका प्रचार किया।

पुरुषों और कन्याओं का ब्रह्मचर्याश्रम और विद्या जब पूर्ण हो जाय तब जो देश का राजा होय और जितने विद्वान लोग वे सब उनकी परीक्षा यथावत करें।

१४१ राजा लक्ष्मणसिंहकी भाषा-नीतिके कारण हिंदी गद्यके विकासके लिए एक नई परम्परा मिली। उनकी भाषा हिंदीके भावी रूपका आभास दे चुकी थी। ऐसे समयमें (१८५०-१८८५) भारतेंदुका उदय हुआ तथा उन्होंने अनेक प्रकारसे हिंदीके विकासमें योग दिया। हिंदी नयी चाल में ढली की घोषणा हुई। भारतेंदुने जनभाषाको प्रश्रय दिया। उनके समयमें उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना, प्रहसन सभी विधाओंमें साहित्य निर्माण हुआ।

१४२ भारतेंदु युगके गद्यलेखकोंमें बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, श्री निवासदास, केशवदास भट्ट, कार्तिक प्रसाद खत्री, ठाकुर जगमोहनसिंह, राधाचरण गोस्वामी, अम्बिकादत्त व्यास, दुर्गाप्रसाद मिश्र आदि प्रमुख हैं।

झूठ झूठ झूठ। झूठे ही नहीं विश्वासघातक। क्यों इतना छाती ठोंक और हाथ उठाकर लोगों को विश्वास दिया? आप ही सब मरते चाहे जहन्नुम में पड़ते।

भारतेन्दु—चन्द्रावली नाटिका

मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं भारतवर्ष के गौरवस्वरूप प्रसिद्ध व्यक्तियों के चरित्र किसी का नाटक, किसी का उपन्यास, किसी को इतिहास स्वरूप में यथावकाश अपने पाठकों को भेंट करूँ।

राधाकृष्णदास—महाराणाप्रताप

परन्तु आज व्रजकिशोर की वह सफाई और सच्चाई कहाँ है? हरिकिशोर का कहना इस समय क्या झूठ है। इसके आचरण से इसको धर्मात्मा कौन बता सकता है? और जब हम खतल मनुष्य को अंत में यह

उगरे ्गा न राजा करण को लोगो क जो स भुनाया और उगर ्पाय न विक्रम को भी लजाया।

—राजा भोज का सपना

मानवधमसारकी भापा संस्कृतनिष्ठ है—

मनुस्मति हि-दुओ का मुख्य धमशास्त्र है। उससे कोई भी हिन्दू अप्रामाणिक नही कह सकता।

किन्तु धीरे धीरे व उदू की आर भुकने गए। उन्ह हिन्दी गँवार जचने लगी और उस फशनेबुल कनात-कनात उ-होन उदू का मातृभापा कह दिया। इतिहासतिमिरनाशककी कुछ पक्तियाँ द्रष्टव्य है—

तुगलक का भाई मगऊन्याँ निहायत हसीन था बगावत का मुनहा हुआ पूछन पर उक्वत और सियासत क डर स भूठा इकरार कर दिया।

सिक्खो का उन्य और अस्तम अरबी फारसी श-दोके प्राधान्यके साथ गलीकी ्प्टिस भी भापा उदू हो गई है—

जियान्ती स निहायत तग और खक्वार हो रहे थे मिल जान के एसी फाहिश शिकस्त उसन खाई वसवव बीमारी के तुक्मा मौत का हुआ।

७ राजा शिवप्रसादकी इस भापाकी कडी आलोचना हुई और प्रतिक्रयास्वरूप राजा लक्ष्मणसिहन कहा कि हमारे मतम हि-्दी और उदू दो बोली -यारी-्यारी है। उनके द्वारा अनुवादित शकुन्तला और मघदूत नाटकोकी सराहना हुई। किन्तु इनकी भापापर ब्रजका प्रभाव है—

सखी मैं भी इसी सोचविचार म हूँ। अब इसस कुछ पूछूगी। (प्रगट) महात्मा। तुम्हारे मधुर वचनो के विश्वास मे आकर मरा जी यह पूछन को चाहता है कि तुम किस राजवश के भूपण हो और किस देश की प्रजा को विरह मे याकुल छोड यहाँ पधारे हो? क्या कारन है जिसस तुमन अपन कोमल गात को कठिन तपोवन मे आकर पीडित किया है?

१ ३८ फ डरिक पिकाट भारतीयाके हितपी थ और उदू पत्र आइन सौदागरीम हि-दी लख वे स्वय लिखा करत थे।

१ ३६ सन १८६३ और १८८० के बीच पजावम नवीनच-द्ररायने विभिन विपयापर हि-दी पुस्तकाकी रचना की। उदू के पक्षपाती सयद हादी हुसन खाँका खण्डन करते हुए उ-होने जोरदार शब्दामे कहा——

भेद खुला तो संसार में धर्मी का तिनको यह शक्ते हैं।

लाला श्रीनिवासदास—परीक्षागुरु

इसी से लोगों ने कहा कि मन शरीररूपी नगर का राजा है और स्वभाव उसका बड़ा चंचल है। यदि स्वच्छन्द रहे तो बहुधा कुत्सित ही मार्ग में धावमान रहता है।

प्रतापनारायण मिश्र—मनोयोग

यावतमिथ्या और दरोग की किबलेगाह इस कल्पना पिशाचिनी का कहीं ओरछोर किसी ने पाया है? अनुमान करते करते हैरान गौतम से मुनि 'गोतम' हो गए। कणाद तिनका खा खाकर किनका बीनने लग पर मन की मनभावनी कन्या कल्पना का पार न पाया।

बालकृष्ण भट्ट—कल्पना

१.४२.१ समालोचना भी इसी युग में प्रारम्भ हुई। प्रेमघनने संयोगिता स्वयंवरकी आलोचना करते हुए लिखा—

नाटक के प्रबन्ध का कुछ कहना ही नहीं, एक गँवार भी जानता होगा कि स्थान परिवर्तन के कारण गर्भांक की आवश्यकता होती है, अर्थात स्थान के बदलने में परदा बदला जाता है और इसी परदे के बदलने को दूसरा गर्भांक मानते हैं, सो आपने एक ही गर्भांक में तीन स्थान बदल डाले।

ठाकुर जगमोहनसिंह प्रणीत श्यामास्वप्न भारतेन्दुयुगकी विशिष्ट रचना है—

मैं कहाँ तक इस सुन्दर देश का वर्णन करूँ? जहाँ की निर्झरिणी—जिनके तीर वानीर से भिरे मदकल कूजित विहंगमों से शोभित हैं जिनके मूल से स्वच्छ और शीतल जलधारा बहती है और जिनके किनारे के श्याम जम्बू के निकुंज फलभार से नमित जनाते हैं—शब्दायमान होकर झरती हैं।

१.४२.२ देवकीनन्दन खत्रीके महत्वपूर्ण और लोकप्रिय उपन्यास चन्द्रकान्ताकी भाषा अत्यन्त सरल और स्वाभाविक है—

शाम का वक्त है कुछ कुछ लालिमा दिखाई दे रही है, सुनसान मैदान में एक पहाड़ी के नीचे दो शख्स वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह एक पत्थर की चट्टान पर बैठ आपुस में बातें कर रहे हैं।

१ ४२ ३ इस युगमे मौलिक रचनाओंके साथ-साथ अनुवाद कार्य भी हुआ। बंगला मराठी, गुजराती, अंग्रेजी आदिसे हुए अनुवादोंके कारण हिन्दी वाक्य विन्यासपर पर्याप्त प्रभाव पडा। भाषा विशृंखल हो गई। वाक्य रचनामे विभक्तियोके प्रयोगमे कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य क्रिया रूपोमे अशुद्धिया होने लगी। जैसे काजर की कोठरीमे देवकीनन्दन खत्री लिखते हैं—

> *पारस ने अपना सरला के पास जाना और वहा से छुच्छु बनकर वरग लौट आने का हाल बानी से बयान किया। वह प्रेम सलिल मे उसने स्वार्थ को बहा दिया।*

दो मित्रमे लोचनप्रसाद पाण्डेयकी भाषा भी त्रुटिपूर्ण है।

> *पशु पक्षियों ने रात्रि का आगमन जान अपने अपने स्वस्थान को गमन किया, थोडी देर मे अधकार फैल गया।*

बंगलासे अनुवादित ग्रन्थोमे पदावली ज्योकी त्यो रही है। आनन्दमठका अनुवाद द्रष्टव्य है—

> *मध्याह्न काल मे, कूल परिप्लाविनी, प्रसन्न सलिला, विपुल जल कल्लोलिना स्रोतस्विनी के ऊपर जैसी घनी बादलों की छाया पड जाती है, वैसी ही छाया पडी हुई थी।*

१ ४३ द्विवेदी युगमे भाषाकी शुद्धिपर विशेष ध्यान दिया गया। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदीने भाषाकी सहज शुद्धतापर विशेष बल दिया।

> *इससे स्पष्ट है कि किसी किसी मे कविता लिखने की इस्तेदाद स्वाभाविक होती है ईश्वरदत्त होती है। जो चीज ईश्वर दत्त है वह अवश्य लाभदायक होगी। वह निरर्थक नहीं हो सकती।*

बालमुकुन्द गुप्तका मनोरंजक निबन्ध-संग्रह *शिवशम्भू का चिट्ठा* उल्लेखनीय है—

> *इतने मे देखा कि बादल उमड रहे हैं। चीलें नीचे उतर रही हैं। तबीयत भुरभुरा उठी। इधर भग उधर घटा बहार मे बहार। इतने मे वायु का वेग बढा चीलें अदृश्य हुई, अंधेरा छाया बूदें गिरने लगीं, साथ ही तडतड धडधड होने लगी, देखा ओले गिर रहे हैं।*

हरिऔधजीने ठेठ हिन्दी लिखनेका प्रयत्न किया है। ठेठ हिन्दी का ठाठमें वे इस प्रकार लिखते हैं—

> *देवनन्दन धीरे धीरे उसके पास आया, धीरे धीरे अपनी आँख उठाकर उसकी ओर देखा पीछे दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ गए। कुछ घड़ी दोनों चुप रहे मन ही मन जाने क्या सोचते रहे।*

बाबू गुलाबराय बाबू श्यामसुन्दरदास एवं आचार्य रामचन्द्र शुक्लका गद्य गंभीर एवं व्यवस्थित है।

> *सुन्दर वस्तु को भी हम इस कारण सुन्दर कहते हैं कि उसमें हम अपने आदर्शों की झलक देखते हैं। आत्मा के सुविस्तृत और औदार्यपूर्ण हो जाने पर सुन्दर और असुन्दर दोनों ही समान प्रिय बन जाते हैं*
>
> —गुलाबराय

> *आनन्द और विषाद आकर्षण और विकर्षण, अनुराग और विराग ये क्रमश आत्मा और अनात्मा के विषय हैं और ये साहित्य के विषय भी हैं।*
>
> —श्यामसुन्दरदास

> *इस पुस्तक में मेरी अन्तर्यात्रा में पड़नेवाले कुछ प्रदेश हैं। यात्रा के लिये निकलती रही है बुद्धि पर हृदय को भी साथ लेकर। अपना रास्ता निकालती हुई बुद्धि जहाँ कहीं मार्मिक या भावाकर्षक स्थलों पर पहुँचती है वहाँ हृदय थोड़ा बहुत रमता और अपनी प्रवृत्ति के अनुसार कुछ कहता गया है।*
>
> —रामचन्द्र शुक्ल

१४४ हिन्दीके परिमार्जन एवं परिष्करणमें छायावादी कवियोंके गद्यका विशेष महत्त्व है। पल्लवकी भूमिकामें सुमित्रानन्दन पन्त लिखते हैं—

> *जिस प्रकार उस युग के स्वर्ण स्तम्भ में भौतिक सुख शान्ति के स्थापक प्रसून हुए उसी प्रकार मानसिक सुख शान्ति के प्रसारक भी जो प्रातःस्मरणीय पुण्य व्यक्तित्व के पृष्ठों पर रामानुज रामानन्द कबीर महाप्रभु वल्लभाचार्य नानक दयानन्द नामों में स्वर्णांकित हैं व्यक्तित्व के ही नन्दन के हृदयस्थ पर उनकी भ ... अन्तर्ध्यान, उनकी सभ्यता के पथ पर अक्षय चिह्न अमिट और अमर हैं।*

कहानी हो, नाटक हो, उपन्यास हो, सवत्र जयशकर प्रसादकी भाषा काव्य मय है।

> "मैं अपन अदष्ट को अनिर्दिष्ट ही रहने दूगी। वह जहाँ ले जाय।" —चम्पा की आँखें निस्सीम प्रदेश मे निरुद्देश्य थीं। किसी आकाक्षा के लाल डोरे उसम न थे। धवल अपाग मे बालकों के सदश विश्वास था। हत्या व्यवसायी दस्यु भी उस देखकर काप गया।
>
> —आकाशदीप

> अकस्मात जीवन कानन म, एक राका रजनी की छाया म छिपकर मधुर वसन्त घुस आता है। शरीर की सब क्यारिया हरी भरी हो जाती हैं। सौदय का कोकिल—'कौन'? कहकर सबको रोकन टोकन लगता है पुकारन लगता है। राजकुमारी! फिर उसी म प्रम का मुकुल लग जाता है। आसू भरी स्मनिया मकरन्द भी उसम छिपी रहती हैं।
>
> —स्कन्दगुप्त

महादवीका गद्य रेखाचित्राम काव्यमय है किन्तु सामाजिक विवेचनम गम्भीर हो उठा है—

> वास्तव म जीवन सौन्दय की आत्मा है पर वह सामजस्य की रखाओं म जितनी मूर्तिमत्ता पाता है उतनी विषमता मे नहीं। जसे जसे हम वाह्यरूपों की विविधता में उलझते जाते हैं वस वस उनके मूलगत जीवन को भूलते जाते हैं। बालक स्थूल विविधता से विशष परिचित नहीं होता, इसीसे वह केवल जीवन का पहचानता है। जहाँ उस जीवन स स्नह सदभाव की किरणें फूटती जान पडती हैं, वहाँ वह व्यक्त विषम रेखाओं की उपेक्षा कर डालता है।
>
> —अतीत के चलचित्र

> उसम कथा का सारा मम बँध नहीं पाता था पर जो कथाएँ हृदय का बांध तोडकर, दूसरों को अपना परिचय देन क लिए वह निकलती हैं वे प्राय करुण होती हैं और करुणा की भाषा शब्दहीन रहकर भी बालन में समथ है।
>
> —स्मृति की रेखाए

शताब्दियाँ की शताब्दियाँ आती जाती रहीं, परन्तु स्त्री की स्थिति

की एकरसता में कोई परिवत्तन न हो सका। किसी भी स्मतिकार न उसके जीवन की विपमता पर ध्यान देन का अवकाश न पाया किसी भी शास्त्रकार न पुरुप न भिन करके उसकी समस्या को नहीं देखा।

—शृ खला की कडियां

१४४१ उपयु क्त उदाहरणासे यह स्पष्ट है कि पन्त प्रसाद और महादेवीकी गद्य भापाम एकरसता है। यद्यपि हिन्दीकी समृद्धिम सभी छायावादी कवियाका योगदान अभूतपूव रहा है तथापि कविध्यकी दष्टिसे निराला का गद्य ही उल्लेख्य है। उनकी गद्यात्मक कृतियाकी भापाम वडा प्रभावशाली कविध्य दिखाई पडता है जो हिन्दीकी अन्तर्निहित शक्तिका परिचायक है—

यह स्थान जहाँ मौनिकता का मूल साम्य स्थिति है यथाथ स्वतत्रता है। उसी की वाहरी प्ररणा वाहर मनुष्यों को अधिकारवाद म स्वतत्र करती है। यहीं अधिकाधिक सख्या मे टहरकर मनुष्य देश समाज तथा ससार के लिए वड स-वड काय कर सक हैं। यही स्थान हमारे समाज के अत करण म आज नहीं पाया जाता। इसीलिये उसके मनुष्य मौलिक विचारों स रहित जड अधिकारों की रक्षा के लिए व्यस्त हो रहे हैं।

—अधिकार समस्या

जाति की भापा के भीतर स भी देख सकते हैं। वाहरी दष्टि से देखन क मुकावल इसका साहित्य के भीतर स देखने का महत्त्व अधिक होगा। भापा-साहित्य क भीतर हमारी जाति टूटी हुई निर्जीव हो रही है। वाहर स ज्याद यहीं भीतर उसक पराजय क प्रमाण मिलेंग। जब भापा का शरीर दुरुस्त उसकी सूक्ष्मातिसूक्ष्म नाडियाँ तयार हो जाती हैं नसों म रक्त का प्रवाह और हृदय म जीवन-स्पन्द पैदा हो जाता है तब वह यौवन के पत्र-पुष्प-मधुर वगन म नवीन कल्पनाएँ करता हुआ नई-नई सष्टि करता है।

—प्रबन्ध प्रतिमा (भापा विज्ञान)

इस पद म कवि क हृदय की गहरी व्याकुलता का सत्य वरन का विपय है। उन्होंने उस सत्यता का जो रूप वर्न किया है वह उनकी पक्तियों म कल्पना का इतना गुरुभार लकर पाठकों क सामने आता है कि

कवि के साथ पाठकों की पूरी सहानुभूति हो जाती है, वे उस वेदनायुक्त उच्छृंखलता को प्यार करने लगते हैं। कवि की गणना में ऐसी ही शक्ति प्रकट हुई है।

—चयन (महाकवि रवीन्द्र की कविता)

ओज की मात्रा पिताजी में उनसे अधिक थी। फिर मुखिया ने ये बातें डाँट के साथ कही थीं। व्यक्तिगत बात को व्यक्तिगत रूप देते हुए उन्होंने कहा—"तू हमारा पानी बन्द करेगा? तू पासी का है गाँव में जा और पूछ तेरी लड़की पटने में एक-दो तीन चार फिर एक दो-तीन चार कर रही है—हम अपनी आँखों देख आए हैं। माना कि चौधरी भगवान दीन का काम बजा था, लेकिन उनके सामने कहते।

—कुल्लीभाट

मुझे आशा है, हिन्दी के पाठक, साहित्यिक और आलोचक 'अलका' को अलकों के अन्धकार में न छिपाकर उसकी आँखों का प्रकाश देखेंगे कि हिन्दी के नवीन पथ से वह कितनी दूर तक परिचय प्राप्त कर सकी है।

—अलका (प्रस्तावना)

हे जमुना! सब ढोंग है। रामनाथ—नामनाथ जितने हैं—सब किसके घर का नहीं खाते? बसन के लड्डू में चना नहीं है? जजमान परसते हैं सब खाते हैं और जजमान खाते वक्त छू छूकर परसते हैं। हलवाई की बनी पूड़ी नहीं खाते? अब छूत कुछ सरग से आती है? एक लोग दिखावा है।

—प्रभावती

१४५ प्रेमचन्द की भाषा में यथार्थवादी परम्परा का रूप मिलता है—

होरी की आँखें आर्द्र हो गईं। धनिया का यह मातृ स्नेह उस अँधेरे में भी जैसे दीपक के समान उसकी चिन्ता जर्जर आकृति को शोभा देने लगा। दोनों ही के हृदय में जैसे अतीत यौवन सचेत हो उठा।

प्रकाश की धुंधली सी झलक में कितनी आशा, कितना बल, कितना आश्वासन है, यह उस मनुष्य से पूछो जिसे अँधेरे ने एक घने वन में घेर लिया था। प्रकाश की यह प्रभा उसके लड़खड़ाते पैरों को

शीघ्रगामी बना देती है, उसके शिथिल शरीर में जान डाल देती है।

—गोदान

१४५.१ चतुरसेन शास्त्री कलात्मक गद्य गढ़ने में सर्वोत्तम लेखक हैं। उनकी शैलीकी चुस्ती सराहनीय है। वाक्य प्राय छोटे छोटे हैं।

आशा! आशा! अरी भलीमानस! ज़रा ठहर तो सही, सुन तो सही, कितनी दूर है? मंजिल कहाँ है? ओर छोर किधर है? कहीं कुछ भी तो नहीं दिखता। क्या कहा? छोड़, मुझे छोड़। इस उत्कंठा से मैं बाज आया। पड़ा रहने दे, घर और छोर नहीं जाना।

—आशा (अन्तस्तल)

गीत खतम करके माधवी ने देखा, ननमा बेसुध पड़ी है। शराब की तेज़ी से उसके गाल एकदम सुर्ख हो गए हैं और ताम्बूल राग रंजित होंठ रह रहकर फड़क रहे हैं। साँस की सुगन्ध से कमरा महक रहा है।

—दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी

१४५.२ पाण्डेय बेचन शर्मा उग्रकी शैलीमें व्यंजना और स्वाभाविकता भरी हुई है।

प्रकृति की उस शोभा को यदि कोई कवि देखता तो उसकी कल्पना का स्रोत मारे प्रसन्नता के फूट पड़ता। चित्रकार देखता तो उसकी तूलिका आनन्दमुग्ध होकर इधर उधर थिरकने लगती। मनचले 'बाबू' देखते तो वासनातरंगिणी में गोते लगाने लगते। पर अभागे भिक्खन के लिए प्रकृति की वह रूप छटा व्यर्थ थी।

—बलात्कार

१४५.३ रायकृष्णदासके छोटे छोटे वाक्योंमें हृदयस्पर्शी भावधाराका प्रवाह दिखाई देता है—

सन्ध्या हुई और सूर्य के वियोग से प्रकृति निस्तब्ध हो गई। सारे दृश्य बदल गये। मैं भी थककर सो गया। चुपकापूर्वक आये पर ममता के कारण मुझे जगाया नहीं। केवल मेरा चुम्बन किया और चल दिये।

उस कोमल चुम्बन से मेरी कठोर निद्रा भंग हुई। मैं आँखें मलकर चकित सा देखने लगा।

—साधना

१४६ सन १९३६ के बाद गद्य-लेखकों के एव नय वर्ग के दर्शन होते हैं, इस वर्ग के लेखकों की रचनाओं में सभी गद्य विधाओं का पूर्ण-परिपाक दृष्टिगोचर होता है।

नाटक के क्षेत्र में पौराणिक, ऐतिहासिक समस्यामूलक, हास्य प्रधान एकांकी आदि की रचना हुई। उदयशंकर भट्ट और सेठ गोविंददास के नाटक प्राय पौराणिक हैं। प्रसाद से ही ऐतिहासिक नाटकों की रचना शुरू हो गई थी। उदय शंकर भट्ट, हरिकृष्ण प्रेमी गोविन्द वल्लभ पंत वृन्दावनलाल वर्मा सेठ गोविंददास आदि ने ऐतिहासिक नाटक लिखे। लक्ष्मीनारायण मिश्र भगवती प्रसाद वाजपेयी आदि समस्यामूलक नाटकों के लिए प्रसिद्ध हैं। हास्य प्रधान नाटककार के रूप में जी० पी० श्रीवास्तव का महत्त्वपूर्ण स्थान है। डा० रामकुमार वर्मा भुवनेश्वर जगदीशचन्द्र माथुर, उपेन्द्रनाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर, भगवतीचरण वर्मा मुख्य एकांकीकार हैं—

देवन—कलह रूप कलि के सन्निपात से जिस प्रकार द्वापर का अन्त हुआ उसी प्रकार भारत कालिक विक्रम रूप सूर्य पर सोमेश्वर रूप चन्द्र की दृष्टि संयोग से उत्पन्न प्रवाह उल्का रूपी कूटनीति की प्रज्वलित अग्नि से महापातक उत्पन्न करेगा। इस महापापग्रह योग से शत्रुनाश होगा किन्तु विक्रम पर भी उसका प्रभाव पड़ेगा।

हरिकृष्ण प्रेमी—विक्रमादित्य

पटू—अरे! चार लुटेरे गिरहकट या डाकू भी अपने को बताते तो हम वखटके मान लेते? मगर पढ़े लिखों को तुम कैसे धोखा देते हो।

भाई? तुम तो कुछ भी पढ़े नहीं हो। खत तक लिखना नहीं जानते हो।

वण्टा०—तभी तो सम्पादक बन गए। लेखक बनते तो लेख लिखना पड़ता। कवि बनते तो कविता करनी पड़ती और सम्पादक बनने में मजे से बैठे बैठे तोंद फुलानी पड़ती है। जबसे सम्पादक बने हैं तब से साढ़े सत्रह इंच तोंद बढ़ गई है। चाहे नाप के देख लो।

जी० पी श्रीवास्तव—मरदानी औरत

फिर औरत की बात? लाहौल बिला कूवत। ऐसी अजीब ऐसी बतुकी, ऐसी डावाडोल तबियत की और ऐसी आफत की कि कहे कुछ,

करे कुछ ताके इधर, देख उधर, आखों मे आंसू ओठों पर हँसी

जी० पी० श्रीवास्तव—विलायती उल्लू

इस वक्त खोपडी पर चक्करदार पगडी थी, जिसका डायमीटर दो फीट से कुछ ज्यादा ही था। शुरू शुरू मे कपडे का रग जरूर सफेद रहा होगा। मगर इस वक्त का रग था कोई न कोई जरूर बताना मुश्किल था। इसके नीचे चपटा सा गोल काला चेहरा अपनी चिमधी आखो से घोंसले में बठी हुई बुलबुल की तरह दबका हुआ झाक रहा था। सूरत गो बहुत मुनहूनी और छोटी थी तो इस पर शीतला देवी ने भूगोल के नदी, नाले पहाड वगरह के नक्श बहुत ही इतमीनान के साथ बनाये थे। नाक तो यों ही कुदरती बठी थी, मगर चेचक का काट छाँट मे इसकी नाक भी बहुत कुछ गायब हो गई थी। वह भी लिल्लाही बेग की टूटी कब्र की तरह। बदन पर खुले गले का काले रग का चुस्त कोट पीछे कमर तक आगे ठोडी के ऊपर तक।

जी पी श्रीवास्तव—भड़ामसिंह शर्मा

चन्द्रकला—पुरुष की चार हाथ की सेज में ही हमारा ससार सीमित है। पुरुष ने स्त्री की कमजोरी को उसका गुण बना दिया था। वह उसी प्रशसा मे सदव के लिए आत्मसमर्पण कर बठी। दूसरों की रक्षा मे हम अपनी रक्षा नहीं कर सकीं। शरीर और मन की इसी कमजोरी के कारण हम ससार के उन्मुक्त वातावरण से खींचकर दीवालों के घर मे डाल दी गई।

लक्ष्मीनारायण मिश्र—सिन्दूर की होली

नवीन—नारी पुरुष की प्रेरणा है साधना है अन्तरात्मा की ज्योति है। उसे न पाकर या खोकर पुरुष एक ओर जहाँ पागल बन जाता है वहाँ दूसरी ओर वह उठता भी है उसे जागरण भी मिलता है।

भगवती प्रसाद वाजपेयी—छलना

सुजाता—(कुछ सान्त्वना पाकर) तो कब आएगा माधव?

सुलोचन—आने की कुछ न पूछो माँ! बिजली का उजाला होता है न तो वह कभी कहता है कि मैं अब चमकने वाला हूँ? काले काले बादलों के बीच में अकस्मात् चमक उठता है उसी तरह माधव पहले तो कुछ पत्र

भजगा नहीं, धक स म्रा जायेगा।

सुजाता—(प्रसन्न होकर) ठीक है वटा।

सुलोचन—माँ मैंन म्रन मुह स घुघुरु वजान का म्रच्छा म्रभ्यास कर लिया है। सुनोगी? (घुघर वजान के लिए मुह वनाता है।)

डॉ॰रामकुमार वर्मा—सत्य का स्वप्न

चन्दन—म्राह माँ, तुम ता वातें करन मे वडी म्रच्छी हो। जव मैं वडा होकर वहुत सी जागीरें जीतूगा, मा! तो मैं तुम्हारे लिए एक मदिर वनवाऊँगा। देवी के स्थान पर तुमको विठलाऊँगा। श्रौर तुम्हारी पूजा करूँगा। तुम अपनी पूजा करने दोगी।

डा॰ रामकुमार वर्मा—दीपदान

युवक—जिक्र तो शादी का था?

पुरप—हा हा शादी को ही लीजिए, श्राप मानते हैं कि हर एक ग्रादमी का जाति की जिन्दगी मे दाखिल होना जरूरी है। जसा मैं प्राय कहता हूँ कि दुनियाँ साझ की दुकान है श्रौर हर एक वालिग ग्रादमी का कत्तव्य है कि उसका साझेदार हो।

भुवनेश्वर—स्ट्राइक

छोटी भाभी—क्यों इदु वेटी क्या वात हुई—यह रजवा रो रही है काई कडी वात कह दी छोटी वहू न इसे?

इदु—मीठी वे कव कहती है जो ग्राज कडवी कहगी? छोटी वहू से झगडा हा गया है।

उपेन्द्रनाथ अश्क—सूखी डाली

नमिचन्द—हाँ हाँ जाइय, सठ न कमाया जरूर है 'लक' म?

लालचन्द—कम स कम सात ग्राठ लाख। पर अपने को क्या? ग्राड वक्त काम देता है सहायता मिलती है। पिछले दिनों लोहा इसी स लिया, ग्रब कोठी के लिए जरूरत पडगी तो—

उदयशकर भट्ट—पर्दे के पीछे

बादल—(ग्रनवूझ सा) लौटना न हो। क्या कह रहो हो तुम यानी यानी—

मनीषी—(पूवत) सच कहती हूँ। मैं यहाँ लौटना नहीं चाहती।

बाल्ल—आखिर क्यों ?

मनीषी—क्योंकि यहाँ कोई तुम्हे मुझसे छीन लेगा। सच कहती हू मुझे ऐसा लग रहा है जैसे कोई—

विष्णु प्रभाकर—माँ

माधव—अब यह भी बताना होगा ? तुम भी बुद्धू हो। क्या इसी बूते पर प्रेम करने चले थे ?

शखर—ओह! छाया ? (माधव का हाथ पकडते हुए) तुम कितने अच्छे हो ?

माधव—और सुनो। सम्राट ने देवदत्त को आज्ञा दी है कि वह तक्षशिला जाकर वहाँ के क्षत्रप वीरभद्र के विद्रोह को दबाये।

जगदीशचन्द्र माथुर—भोर का तारा

देवनारायण—मानवता! हा हा हा हा! जिसे तुम मानवता कहते हो ढकोसला है—छल है। जो मानवता है वह बडी कुरूप चीज है रामेश्वर। मानवता के माने हैं एक दूसरे को खा जाना मानवता का अर्थ है स्वय सुखी बनने के लिए दूसरे को दुखी बनाना। दूसरों पर विजय दूसरों की गुलामी—यही मानवता है।

भगवतीचरण वर्मा—मैं और केवल मैं

१४७ उपन्यासकं क्षेत्रम जैनेन्द्रकुमार इलाचन्द्र जोशी वृन्दावनलाल वर्मा भगवतीप्रसाद वाजपेयी भगवतीचरण वर्मा चतुरसेन शास्त्री सियारामशरण गुप्त यशपाल जैन, राहुल सांकृत्यायन धर्मवीर भारती नागार्जुन राजेन्द्र यादव कन्हैयालाल प्रभाकर फणीश्वरनाथ रेणु अमृतलाल नागर रांगेय राघव उल्लेखनीय हैं—

विवाह की ग्रंथि दो के बीच ग्रंथि नहीं है। वह समाज के बीच की भी है। चाहने से वह क्या टूटती है। विवाह भावुकता का प्रश्न नहीं व्यवस्था का प्रश्न है वह प्रश्न क्या यों टाल टल सकता है? वह गाँठ है बँधी कि खुल नहीं सकती, टूटे तो टूट भले ही जाए। लेकिन टूटना कब किसका श्रेयस्कर है—

जैनेन्द्रकुमार—त्यागपत्र

लीला न उपेक्षा स कहा—राजनीति म कम्युनिस्ट होना और प्रम म प्रियतमा का बहिन बताना आजकल की सबस बडी ईजाद है।

रागय राघव—घरौंदे

फिर भी मुझ लगता है कि तुम्हारे भीतर तुम्हारे अनान म प्रतिहिंसा की जो एक भयकर भावना वर्षों स घर किए बठी थी वह जमगत नहीं थी बल्कि जीवन की कुछ विशष परिस्थितियों ने और समाज क उत्पीडन न उस प्रवत्ति को तुम्हारे भीतर उकसाया।

इलाचद्र जोशी—पर्दे की रानी

पहर रात बीती थी।

आमों की झुरमुट म चितकबरी चान्दनी।

चितकबरी चादनी मे वह छाटा सा दुपलिया मकान नहा रहा था। अचार के दिन मे कच्चे आम ताड गए थे। साथ टूटकर गिरे हुए पत्तों के चिकन स्पश तलुवों को गुदगुदा रहे थे। दिल म लेकिन गुदगुदी नहीं, धडकन थी।

नागार्जुन—वरुण के बेटे

इसम उनका कोई कसूर नहीं है। इतिहास क सब राज करन वालों न यही किया है? मैं उनस यही कहता हूँ। आप जा कुछ करते हैं सब ठीक करत हैं, मगर यह मासूम ममन की खाल जा आपने ओढ रखी है इसका उतार फेंकिए।

आडर आडर का शार होता रहा। मेजें बजती रहीं। रामसिंह बालता रहा।

कहने का मतलब यह कि पवन जी की अब पाँचों उँगलियाँ घी म थीं। जिस आदमी को यों कोई टक को न पूछता वह अब ठाठ के साथ बढिया सूट बूट डाट, टाई लगाए रेबड का नफीस सुनहरी धूप का चश्मा लगाये अपनी हासपावर की रायल एनफील्ड माटर साईकिल पर धड धडाता फिरता था।

अमतराय—हाथी के दाँत

कभी, एक दिन, एक क्षण भर के आदश मान जान का सौभाग्य हर किसी को मिल जाता है पर चिरन्तन आदश काई नहीं, न हो सकता है।

बादल—आखिर क्यों ?

मनीषी—क्योंकि यहाँ कोई तुम्हें मुझसे छीन लेगा। सच कहती हूँ मुझे ऐसा लग रहा है जैसे कोई—

विष्णु प्रभाकर—माँ

माधव—अब यह भी बताना होगा ? तुम भी बुद्धू हो। क्या इसी बूते पर प्रेम करने चले थे ?

शेखर—ओह ! छाया ? (माधव का हाथ पकड़ते हुए) तुम कितने अच्छे हो ?

माधव—और सुनो। सम्राट ने देवदत्त को आज्ञा दी है कि वह तक्षशिला जाकर वहाँ के क्षत्रप वीरभद्र के विद्रोह को दबाये।

जगदीशचन्द्र माथुर—भोर का तारा

देवनारायण—मानवता ! हा हा हा हा ! जिसे तुम मानवता कहते हो ढकोसला है—छल है। जो मानवता है वह बड़ी कुरूप चीज है रामेश्वर ! मानवता के माने हैं एक दूसरे को खा जाना मानवता का अर्थ है स्वयं सुखी बनने के लिए दूसरे को दुखी बनाना। दूसरों पर विजय दूसरों की गुलामी—यही मानवता है।

भगवतीचरण वर्मा—मैं और केवल मैं

१४७ उपन्यासकार प्रेमचन्द जैनेन्द्रकुमार इलाचन्द्र जोशी वृन्दावनलाल वर्मा भगवतीप्रसाद वाजपेयी भगवतीचरण वर्मा चतुरसेन शास्त्री सियारामशरण गुप्त ऋषभचरण जैन, राहुल सांकृत्यायन धर्मवीर भारती नागार्जुन, राजेन्द्र यादव यशपाल प्रभाकर फणीश्वरनाथ रेणु अमृतलाल नागर रांगेय राघव उल्लेखनीय हैं—

विवाह की ग्रंथि दो के बीच की ग्रंथि नहीं है। वह समाज के बीच की भी है। चाहने से वह क्या टूटती है। विवाह भावुकता का प्रश्न नहीं, व्यवस्था का प्रश्न है वह प्रश्न क्या यों टाले टल सकता है ? वह गाँठ है बँधी कि खुल नहीं सकती टूटे तो टूट भले ही जाय। लेकिन टूटना कब किसका श्रेयस्कर है—

जैनेन्द्रकुमार—त्याग-पत्र

लीला न उपशा स कहा—राजनीति म कम्युनिस्ट होना और प्रम म प्रियतमा का बहिन बताना आजकल की सबस बडी ईजाद है।

रागय राघव—घरौद

फिर भी मुझ लगता है कि तुम्हारे भीतर तुम्हार अनान म प्रतिहिंसा की जो एक भयकर भावना वर्षों से घर किए बठी थी वह जन्मगत नहीं थी बल्कि जीवन की कुछ विशष परिस्थितियों न और समाज के उत्पीडन ने उस प्रवत्ति का तुम्हारे भीतर उकसाया।

इलाचद्र जोशी—पर्दे की रानी

पहर रात बीती थी।

आमों की झुरमुट म चितकबरी चान्दनी।

चितकबरी चादनी म वह छोटा सा दुपलिया मकान नहा रहा था। अचार के दिन म कच्चे आम तोड गए थे। साथ टूटकर गिरे हुए पत्तों के चिकन स्पश तलुवों को गुदगुदा रह थे। दिल मे लकिन गुदगुदी नहीं, धडकन थी।

नागाजुन—वरुण के बट

इसम उनका कोई कसूर नहीं है। इतिहास क सब राज करन वालों न यही किया है? मैं उनस यही कहता हूँ। आप जो कुछ करत हैं सब ठीक करते हैं मगर यह मासूम ममन की खाल जो आपन ओढ रखी है इसको उतार फकिए।

आडर आडर का शोर होता रहा। मेजें बजती रहीं। रामसिंह बोलता रहा।

कहन का मतलब यह कि पवन जी की अब पाँचों उँगलियाँ घी म थीं। जिस आदमी को यों कोई टके को न पूछता, वह अब ठाठ के साथ बढिया सूट बूट डाटे, टाई लगाए रेवड का नफीस सुनहरी धूप का चश्मा लगाये अपनी हासपावर की रायल एनफील्ड मोटर साईकिल पर धड धडाता फिरता था।

अमतराय—हाथी के दाँत

कभी, एक दिन, एक क्षण भर के आन्श मान जान का सौभाग्य हर किसी को मिल जाता है, पर चिरन्तन आन्श कोई नहीं, न हो सकता है।

इसलिए जो अपने प्रिय के प्रति निरन्तर सच्चा है वह अवश्य किसी आदर्श से च्युत है और जो आदर्श के प्रति निष्ठावान है वह कभी न कभी प्रिय को भटक जाने देगा।—साधारण मानव और कलाकार विद्रोही में यही अन्तर है। मैं नहीं चाहती कि तुम साधारण मानव होओ मगर किन्तु अगर तुममें उसकी क्षमता है तो उससे बड़े होने की अनुमति स्वाधीनता मैं तुम्हें सहर्ष देती हूं।

किन्तु यह स्वाधीनता यह सारा अपने अपराध को धोने के लिए नहीं है प्रायश्चित के लिए नहीं है उस प्यार में अपराध भी इतने सारे थे इतना विशाल था वह। मैं शेखर का अपराध छोटा करके नहीं दिखाता क्योंकि उसके पीछे शेखर के प्यार की तन्मयता थी उस शेखर की जो मैं हूँ—

'अज्ञेय'—शेखर एक जीवनी

उनके सामने तो जरा सा कपूर साहब हँस दिये। चार मजाक की बातें कर दीं छोटे मोटे उनके काम कर दिए मीठी-मीठी बातें कर लीं और सब समझे कपूर साहब तो बिल्कुल गुलाब के फूल हैं लेकिन कपूर साहब एक तेज तीखे काँटे हैं जो दिन रात सुधा के मन में चुभते रहते हैं यह तो दुनिया को नहीं मालूम। दुनिया क्या जाने कि सुधा कितनी परेशान रहती है चन्दर की आदतों से

डॉ० धर्मवीर भारती—गुनाहों का देवता

आचार और नैतिकता का प्रयोजन यदि मनुष्य को व्यवस्था और विकास की ओर ले जाना चाहता है तो मानना पड़ेगा कि यह उद्देश्य हमारी वर्तमान नैतिक तथा आचार सम्बन्धी धारणा से पूरा नहीं हो रहता।

यशपाल—दादा कामरेड की भूमिका

क्रांतिकारी कैदियों को प्रायः ही एक जेल में दो अढ़ाई वर्ष से अधिक नहीं रहने दिया जाता था। आशंका रहती थी कि कहीं अपने प्रभाव से चेले मूंड़कर भाग जाने का तिकड़म न कर लें। ऐसी आशंका के लिए कुछ आधार भी था ही।

यशपाल—सिंहावलोकन (तृतीय भाग)

कला पारखी चाहता है कि लेखक स्वयं तो गले तक डूबा कीचड़ से लथपथ रहे पर किनारे पर खड़े उनको उस कीचड़ का छींटा तक न

लगने दे। उनके हाथों मे चुपचाप कलम तोड तोडकर देता जाए, जिनके रग, रस और गध से सराबोर, होकर वे जीवन के रोग, शोक और पीडा को भूले रहें।

उपेन्द्रनाथ 'अश्क'—गिरती दीवारें

जवाहर लाल कहता है हम अहिंसा अपनानी पडेगी विश्वास के रूप मे नहीं, नीति के रूप म। जवाहर लाल वास्तविकता को पहचानता है। जवाहर लाल देश की आत्मा और चेतना का प्रतिनिधि है। वह गाधी की भाति देवता नहीं है। वह अतीत की फिर से स्थापना पर विश्वास नहीं करता। वह ऋषि-मुनियों की परम्परा को नहीं मानता। जो मिट गया, वह निश्चय ही असत रहा होगा, नहीं तो वह मिटता नहीं।

भगवतीचरण वर्मा—भूले बिसरे चित्र

नरवर, कला और राजसिह, मानसिह की कल्पना मे भूल गए। राजसिह नरवर को अपनी बपौती समझता है। चदेरी और देवगढ़ सहज ही हाथ नहीं लगने के। फिर भवन निमाण और कला-सजन के काय को अधूरा छाडकर कमे उतने बड काम को यकायक आरम्भ किया जा सकता हैं।

वृन्दावनलाल वर्मा—मृगनयनी

उन्हें क्या पता था कि एक दिन जब बाह्य जगत को च द्रमा सुधा सलिल स प्लावित करता रहेगा चन्न रस के अविरलस्रावी निर्झर से रसमय बना देगा अमतसागर की बाड स भुवनान्तराल को भरता होगा श्वेत गगा के सहस्र-सहस्र प्रवाहों का ढकता रहेगा, महावराह के दष्ट्रा-मण्डल की शोभा बिखरता रहेगा, उस समय गगा के प्रवाह पर गगा के ही समान पवित्र ज्योत्स्ना के ही समान स्वच्छ्न्पा एक राजबाला अपन मन स्मित से अन्तजगत को भी उसी प्रकार पवित्र, निमल और उत्फुल्ल बना देगी।

डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी—बाणभट्ट की आत्मकथा

दरोगा जी क किसी पुश्त मे दया की खेती नहीं हुई थी। उनक पिता पटवारी थे। पटवारी भी कस? गरीबों की गदन पर अपनी कलम टने वाले। उनक कलम की मार न कितनों की कमर ताड दी थी। कितने

बिना नाथा पना के हो गए थे, कितनों का देश छूट गया था कितनों के मुँह के टुकड़ छिन गए थे।

शिवपूजन सहाय—देहाती दुनिया

मैंने केवल एक अपराध किया है कि यही कि प्रेम करते समय साक्षी नहीं इकट्ठा कर लिया था और कुछ मतों से कुछ लोगों की जीभ पर उसका उल्लेख नहीं करा लिया था पर किया था प्रेम। यदि उसका यही पुरस्कार है तो मैं उसे स्वीकार करती हूँ।

जयशंकर प्रसाद—कंकाल

अम्मा के जाते ही विह्वल होकर मैंने पिताजी से कहा मैं आपके सामने बड़ा अपराधी हूँ पिताजी। घटनाओं का तारतम्य ही कुछ ऐसा होता गया कि मैं पहले से आपसे कुछ निवेदन न कर सका।

भगवतीप्रसाद वाजपेयी—सपना बिक गया

हम लोगों को बैठाकर दुनियाँ भर की बात पूछने लगीं कोशी मया किसकी बेटी है? शादी किससे हुई? ससुराल कहाँ है? अरी तुम लोग हँसते हो। पूछो सामवत्ती से। भला मैं उतना क्या जानूँ। सामवत्ती बोली उतना तो किसी को नहीं मालूम।

फणीश्वरनाथ रेणु—परती परिकथा

उन्हें देखकर क्या करेंगी? यों ही बड़ी बेवकूफी की बात लिखती रहती हैं वे झेंपकर बोले।

फिर वही लड़कियों जैसी झेंप। यह वाकई लज्जा है या लज्जा का नाट्य? न वहाँ कोई रश्मि है न अपर्णा। जब से बहकाए जा रहे हैं। मैंने अपनी कहानी के प्लाट को फिर से दुहराया।

राजेन्द्र यादव—शह और मात

पुराना पिटा हुआ तरीका इतना पिटा हुआ कि सिनेमावाले भी उसके डायलाग बना लेते हैं। देखो शीला लिखने के लिए कोई किसी लेखक को मजबूर नहीं कर सकता। कारण यह है कि लेखक या कोई भी आर्टिस्ट अपने आर्ट से खुद इतना मजबूर होता है कि जरा सी शांति पाते ही अपना काम शुरू कर देता है।

अमृतलाल नागर—बूँद और समुद्र

सुनने वाले उठकर बठ गए। उनकी आख चौडी हो गईं। आश्चय मे भरकर सबने अपनी २ बीडी सुलगाई। उन्होंने अब तक कई मच्छी मार देख थे। पर एसा नहीं सुना था कि कोई मच्छीमार मच्छी पर बठ जाए और जाल म फासकर उसे पकड लाए। एक आदमी शक म पूछने लगा तो सुनने वालों ने रोक दिया।

उदयशकर भटट—सागर लहरें और मनुष्य

ऊपर की तस्वीर निस्सदेह किसी भुखमरे, मनहूस आदमी की मालूम होती । किन्तु, क्या एसी बात है? मरजू भया मेरे गाव के चद जिदादिल लोगों म से एक हैं। बड मिलनसार, मजाकिया और हँसाड। वह दिल खोलकर जब हँसते हैं—शरीर भर म जो सबसे छोटी चीजें उन्ह मिली हैं—व उनके पक्तिबद्ध छोटे २ दात—यब बतहाशा चमक पडते हैं, अग २ हिलन डुलन लगते हैं जस हर अग हँस रहा हो।

रामवक्ष बनीपुरी—माटी की मूरतें

'मगर मालकिन!" मूगा ने दबी जबान से भूत उतारने की कोशिश की "सेंध डालकर वह कलमुही करेगी क्या? कुछ मिट्टी की दीवार तो है नहीं कि डर है। वह डडटूटी कहा तक पत्थर तोड सकेगी? गुरु महाराज पर निगाह उठाएगी, तो खुद ही जलकर खाक हो जाएगी।

राधिकारमण प्रसाद सिंह—राम रहीम

दुनिया की हर वस्तु की तरह मनुष्य जिन मन और शरीर दोनों चीजों स बना है वह भी प्रवाह है क्षण २ मरकर नए बन रहा है। जो जीवित मन शरीर है वह इहलोक है और जो दूसर क्षण तीसरे क्षण आन वाला मन शरीर है वही परलोक है। इसके अतिरिक्त परलोक वह है जिसका प्रवाह अनतकाल तक जारी रहता है वह सतान पुत्र पौत्र प्रपौत्र ।'

राहुल साकृत्यायन—जय यौधय

उसन जस बागडोर सँभालते हुए कहा—'इसलिए तो मैं कहता हू कि तुम हमेशा याद रखो कि कहानी लिखना तुम्हारे वश का रोग नहीं। तुम तो वही लिखो जो तुम लिख सकते हो अर्थात् जो तुम्हें सचमुच

लिखना चाहिए, नहीं तो ...।"

देवेन्द्र सत्यार्थी—रेखाएँ बोल उठीं

गाँव की आत्मा उसकी संस्कृति एक ऐसी मधुरता है जो कवि की माया है, फिर शापित है, किसी की दुल्हन और प्रमिका है, सन्निकट उपेक्षिता है। फिर भी इसका पथ, जीवन है मर नहीं। इसमें विश्वास, तपस्या और श्रद्धा है, मृत्यु की पराजय और शून्यता नहीं। ठीक इसके विरुद्ध दूसरी सीमा पर शहर की आत्मा और संस्कृति है—एक ऐसी स्वतन्त्र कुमारी की भाँति जो अपने व्यक्तित्व में अपने को सम्पूर्ण समझती है।

डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल—बया का घोंसला और साँप

खासकर उच्च सरकारी अफसर जो अंग्रेजी भाषा के पण्डित और अंग्रेजी सभ्यता के अभ्यस्त हैं और जिनके वक्तव्य ही नहीं, विचार तक अंग्रेजी से अनुवादित होकर उनके मस्तिष्क से बाहर निकलते हैं, कम-से कम पाव शताब्दी तक जब तक कि अंग्रेजी के माध्यम द्वारा टेबुल पर इस उपन्यास को अनिवार्य रूप में डाल रखें और तब तक निरन्तर इसे पढ़ते रहें तो उन्हें मौलिक भारतीय विचारधारा अपने रक्त में प्रवाहित करने में बहुत सहायता मिलेगी।

चतुरसेन शास्त्री—वैशाली की नगरवधू

मैं नाइट ड्यूटी पर थी और उसी दिन शाम को एक इटालियन सार्जेंट की दोनों टाँग काट डालनी पड़ी थीं। वह इतना चीखा चिल्लाया था कि बस। भयानक। मैं देखती हूँ कि व्यक्ति की स्वतन्त्रता बँधते-बँधते किस सीमा पर बँध जाती है। इसका उदाहरण मैंने उस रात आपरेशन टेबिल पर देखा।

नरेश मेहता—डूबते मस्तूल

लोगों का दिमाग सड़ गया है... नए-नए फैशन तो कर लेंगे, लेकिन दिमागी तौर पर अठारहवीं सदी में जिएँगे। ... टिन ट्रिन ... फिर इस स्टोर का फोन घनघना उठा है ... हैलो। ... हाँ जी है। अभी बुलाता हूँ ... एक मिनट होल्ड कीजिये। ... रामप्रकाश जी आपका फोन

मनहर चौहान—असन्तुलन

गाव वालों ने अस्थिया चुन एक सती स्तूप बना लिया। उसके पास ही उग आया पीपल का एक छोटा सा पेड। सती ने कहा—'दामोदर। तुम अपने इस नये रूप मे कितने सुन्दर लग रहे हो?'

पीपल ने अपनी कोपल बढाकर सती का स्तूप छू लिया। यह नये जीवन का प्रथम प्यार था।

यों ही सौ साल बीत गये।

कन्हैयालाल मिश्र—सती

आज दफ्तर मे बडे साहब आए तो जैसे ज्वालामुखी फूट पडी। बात कुछ न थी, किसी का कोई दोष भी न था। फिर भी वे बरस पडे।

एक 'एन्ट्री' को देखकर चन्द्रभान से बोले—'यह डाकखान की रकम फुटकर खर्च खाते मे क्यों चढा रखी है? और रजिस्टर उसके ऊपर दे मारा। उसने अपने को सँभाला और रजिस्टर साहब के सामने रखते हुए कहा—इसकी 'डिटेल' देख लीजिए। यह रकम असल मे

बात बीच मे ही थी कि साहब चिल्ला पडे—"रास्केल। जबान चलाता है सुअर हम हिसाब सिखायगा।"

कन्हैयालाल मिश्र—प्रश्नोत्तर

१ ४८ प्रेमचन्द प्रसाद, सुदर्शन चडीप्रसाद हृदयेश वृन्दावनलाल वर्मा, चतुरसेन शास्त्री आदि सभी उपन्यासकाराने कहानिया भी लिखी। कहानियो और उपन्यासोंके गद्यमे विशेष अन्तर नही है इसलिए उदाहरणोंकी अपेक्षा नहीं है।

१ ४९ प्रेमचन्द, वियोगीहरि, प्रसाद, रामचन्द्र शुक्ल हजारीप्रसाद द्विवेदी सियारामशरण गुप्त गुलाबराय प्रभाकर माचवे शान्तिप्रिय द्विवेदी भदन्त आनन्द कौसल्यायन डा० नगेन्द्र आदि गद्य रचना विधानकी दृष्टिसे उल्लेखनीय हैं।

अपनी बलि चढा दी और वह सारे विश्व ब्रह्माण्ड मे भर गया।
बूद से जैसे महार्णव बन गया।
मृत्यु बचारी।
उस तो केवल उसकी छाया हाथ लगी।
उमग की महिमा को उसने दिग दिगन्त मे
कितना फैला दिया।
कितना विराट बना दिया

वियोगी हरि—अदारुण

न इनके पास काम है न भीख है। भीख है भी किन्तु काम एक दम नहीं। यूं काम की भी कमी नहीं। चारों ओर काम ही काम है—किन्तु वह काम बगान म किसी को 'मुनाफा' नहीं।

और जिस काम से किसी को कुछ लाभ नहीं होता वह समाज के लिए, जनता के लिए कितना ही कल्याणकारी क्यों न हो—

तीन काल नहीं हो सकता।

वर्तमान पूँजीवादी व्यवस्था का यही आधार है।

भदन्त आनन्द कौसल्यायन—दान

प्रेम का दूसरा स्वरूप यह है जो अपना मधुर और अनुरंजनकारी प्रकाश जीवन यात्रा के नाना पथों पर फैलता है। प्रेमी जगत के बीच अपनी रमणीयता का अनुभव आप भी करता है और अपने प्रिय को भी कराना चाहता है।

रामचन्द्र शुक्ल—लोभ और प्रीति

फिर मैं सोचने लगा—अतीत क्या चला ही गया? अपने पीछे क्या हम एक विशाल शून्य मरुभूमि छोडते जा रहे हैं। आज जो कुछ हम कर रहे हैं, कल क्या वह सब लोप हो जाएगा? यह मैं किसी तरह विश्वास नहीं कर सकता कि अतीत एकदम उठ गया है।

डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी—गतिशील चिंतन

सबसे बडी मुसीबत हैं। जनतंत्र के युग के कवि।

यह कवि क्या हैं? माइक्रोफोन हैं। जहाँ देश में एक घटना हुई इनकी प्रतिभा तयार। दस्तबस्ती हाथ जोड खड़ा है। कवि क्या है टकसाल मशीन है। मँहगी बढी तो कवि जी तयार हैं और वर्ष का अन्त हुआ तो कविता तयार है।

प्रभाकर माचवे—खरगोश के सींग

ऐसा प्रमाता बिना कुछ लिखे भी काव्य का मूक आलोचक होता है। सत आलोचना का पहला सोपान यही मूक आलोचना है। अध्यापक के लिए यह सहज सुलभ है—श्रेष्ठ काव्यों का अध्ययन महान प्रतिभाओं के साथ मानसिक साहचर्य उसका नैतिक कर्म है।

डॉ० नगेन्द्र—मेरा व्यवसाय और साहित्य सर्जन

सामंतशाही के घोड़ों की निन्दा हमने भरपूर की है। उन बर्बर और असभ्य कहलाते हुए हम नहीं थके। परन्तु वे घोड़े और घुड़सवार आए और चले गए। हमारे घर, हमारे गांव रूँदकर एक बार में ही वे सब कुछ समाप्त कर देते थे। जिबह करने के लिए ही। भेड़-बकरियों की तरह वे हमें पालते नहीं थे। आज का घोड़ा और घुड़सवार वैसा नहीं है।

सियारामशरण गुप्त—घोड़ाशाही

सौन्दर्य-बोध में पाश्चात्य विवेचकों के अनुसार मूर्त और अमूर्त भेद-सम्बन्धी कल्पना विवेचन की रीढ़ बन रही है। जब यह अमूर्त के साथ सौन्दर्य शास्त्र का सम्बन्ध ठहराती है तो दुर्बलता से ग्रस्त होने के कारण अपने को स्पष्ट नहीं कर पाती। इसका कारण यही है कि वह सम्भावनात्मक ज्ञानमय प्रतीकों को अमूर्त सौन्दर्य कहकर घोषित करते हैं, जो सौन्दर्य के द्वारा ही विवेचन किए जाने पर केवल भ्रम तक पहुँच पाते हैं।

जयशंकरप्रसाद—काव्य और कला तथा अन्य निबंध

यथार्थवाद यदि हमारी आँखें खोल देता है तो आदर्शवाद हमें उठाकर किसी मनोरम स्थान में पहुँचा देता है। लेकिन जहां आदर्शवाद में यह गुण है वहां इस बात की भी शंका है कि हम चरित्रों को न चित्रित कर बैठें जो सिद्धान्त की मूर्तिमात्र हों, जिनमें जीवन न हो।

प्रेमचन्द—उपन्यास

मेरी स्वार्थ परायणता मेरे आलस्य और आराम-तलबी पर सान चढ़ा देती है फिर शारीरिक शैथिल्य ने तो आलस्य का प्रमाण पत्र दे दिया है। मैं अपने पास-पड़ोसी या सम्बन्धी के प्रपितामह का भी मरना नहीं चाहता उसमें मानवता की मात्रा तो थोड़ी ही है किन्तु उस शुभ कामना का असली उद्देश्य यह होता है कि श्मशान तक न जाना पड़े।

गुलाबराय—प्रभुजी ! मेरे औगुन चित न धरो

१५० प्रारम्भिक काल में गुण-दोष निर्देशन को ही आलोचना कहा गया। भारतेन्दु युग में पत्र-पत्रिकाओं में आलोचनात्मक लेख प्रकाशित होने रहे। महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्यामसुन्दरदास, मिश्रबन्धु, पद्मसिंह शर्मा, कृष्णबिहारी मिश्र, लाला भगवानदीन आदि द्विवेदी युग में आलोचनात्मक ग्रंथ लिखे।

आगे चलकर हालावाद या मादक उत्तेजना का प्रभाव कम हुआ और बच्चन जी ने 'एकांत संगीत' 'निशा निमंत्रण' जैसी रचनाएँ प्रस्तुत कीं जिनमें वस्तु चित्रण और रूप निर्माण की उच्चतर प्रवृत्तियाँ भी दिखाई पड़ती हैं। यद्यपि इन चित्रणों में कवि की अनुभूति सुसयत नहीं है, किन्तु कला की एक स्वस्थतर उद्भावना इन रचनाओं में देखी जाती है।

नन्ददुलारे वाजपेयी—आधुनिक साहित्य

दूसरा प्रश्न स्वभावतः यह उठता है कि इस आत्माभिव्यक्ति का मूल क्या है, लेखक के अपने लिए उसकी क्या सार्थकता है और दूसरों के लिए उसका क्या उपयोग है? तो जहाँ तक लेखक का सम्बन्ध है, आत्माभिव्यक्ति की सार्थकता उसके आत्म परितोष में है—जिसे शास्त्रों ने जिसे सर्जन सुख कहा है—

डा० नगेंद्र—साहित्य में आत्माभिव्यक्ति

मानदंड का स्वरूप कभी चिरस्थायी रूप से सार्वभौम नहीं हो सकता और न वह आलोच्य रचना के विषयादि की कभी उपेक्षा ही कर सकता है। जिन विशिष्ट रचनाओं ने आज साहित्य के क्षेत्र में अपना स्थान बना लिया है उनके रचना काल का मानदंड ठीक आज ही का सा नहीं था। उन दिनों जो बात उसके लिए आधार स्वरूप थीं वे सभी आज मान्य नहीं हो सकतीं।

—पं० परशुराम चतुर्वेदी

साहित्य की विभिन्न शाखाओं में जीवन के बाह्य और आभ्यंतर दोनों पक्षों की योजना किसी न किसी रूप में बराबर रहती है केवल मात्रा का भेद होता है। जीवन के बाह्य पक्ष से कार्यकलाप या वस्तु का संग्रह किया जाता है और आभ्यंतर पक्ष में हृदय तथा बुद्धि का योग रहता है।

पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र—हिन्दी का सामयिक साहित्य

रस सिद्धान्त में भाव चित्रण प्रायः आत्मानुभव के रूप में नहीं माना, उसमें तो कवि किसी दूसरे का भाव तटस्थ रूप में चित्रित करता है पर आज का कवि तो अपने भाव को अपने ही रूप में चित्रित करता है।

डॉ भगीरथ मिश्र—हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास

उनकी कविता म अपार्थिव सकत भी हैं, किन्तु सृष्टि क भीतर रह कर ही। सृष्टि म जो कुछ प्रत्यक्ष है उसी के द्वारा उन्होंन सत्य को जानना चाहा जसे क्षिति स क्षितिज को। उन्हें नक्षत्रों स, खद्योतों स श्वासों स मौन निमत्रण मिलता है किन्तु वे उसस विस्मित होकर बोल उठते हैं।

शान्तिप्रिय द्विवेदी—छायावाद का उत्कष

एक को दूसरे के हृदय के निकट देख और सब को विश्वहृदय के निकट देख और इस प्रकार जीवन म सत्योन्मुख एकस्वरता उत्पन्न हो। किसी के प्रति भी तिरस्कार या बहिष्कार का भाव रखन क भाव को साहित्य म मजबूत नहीं होन देना होगा। अपन भीतर की प्रम शक्ति का अकुण्ठित दान ही साहित्य क पास एक अस्त्र है जो अमोघ है।

जनेन्द्रकुमार—साहित्य का श्रय और प्रय

उसन वज्ञानिक आधार पर अवचेतन मन सम्बन्धी सिद्धान्त की स्थापना की और वज्ञानिक पद्धति स ही उसका विश्लेषण और विवेचन किया। इस कारे वज्ञानिक युग म उसकी मनोवज्ञानिक व्याख्या अत्यन्त लोकप्रिय हो उठी। उसकी लोकप्रियता का एक कारण यह भी था कि उसन यौनप्रवृत्ति को मानव मन तथा मानव जीवन की मूल परिचालिका शक्ति माना है।

इलाचन्द्र जोशी—विश्लेषण

जनता को सीखना होगा कि प्रबुद्ध वग उस नहीं समझता अनिच्छा या रुचि भद के कारण नहीं एक मौलिक अक्षमता के कारण—उसी प्रकार जिस प्रकार जनता प्रबुद्ध वग स अन्तरग एकता नहीं महसूस कर सकती। उसे शिक्षित होना होगा। ताकि वह प्रबुद्ध वग स साहित्य न माँगकर स्वय अपना साहित्य बनाय—एसा साहित्य जो उसके जीवन का प्रतिबिम्ब हो। जनरुचि का परिष्कार उसम आलोचक बुद्धि और जागरूकता उत्पन्न करना और बनाये रखना ही आज उन सबका कर्तव्य है जो साहित्य के लिए चिंतित हैं—चाहे वे अपीडितोन्मुख विद्रोही भाव रखन वाल साहित्यिक हों चाह कवल साहित्य पारखी या रसिक।

अज्ञेय—त्रिशकु

प्राय एक बहुत बचकानी साहित्यिक चेतना रोमांटिक भावुकता

ग्रौर स्कूली स्तर की गुटवन्दी ग्रौर ग्रापसी तनातनी, कहा-सुनी से हिन्दी का साहित्यिक चिंतन भी ग्राक्रान्त है ग्रौर सृजन भी। फलत परम्परा ग्रौर नवीनता की दुहाई तो बड़ जोर शोर से दी जाती है, पर न तो परम्परा का मौलिक मूल्यांकन हो रहा है न नवीनता का।

नेमिचन्द जैन—साहित्य और नवीनता

लेकिन ग्राजकी पूर्वीय ग्रौर पश्चिमी वैयक्तिकतापरक विचार-सरणियाँ वैयक्तिकताके जिस पक्षका विकासकी पूर्ण स्वतन्त्रता देनेका ग्राग्रह कर रही हैं उसका एक ग्रनिवार्य प्रगतिपरक सामाजिक महत्व है। इसीलिए मूनियर वडव, कोटस, मरिटन, सभी वुजुग्रा प्रतिक्रियावादियोंसे ग्रपने वैयक्तिकतावादको पृथक् मानते हैं। इसके लिए वे दो पृथक् शब्दों का व्यवहार करते हैं। Individualism ग्रौर Personalism इन दोनोंका ग्रन्तर बताते हुए वडव यह कहता है।

डॉ॰ धर्मवीर भारती—मानव मूल्य और साहित्य

१५२ ग्रात्मकथामूलक कृतियाँ गद्यमें अपनी विशेषता रखती है। रचनाकी दृष्टिसे विचारणीय कुछ अंश उद्धृत हैं।

व्यक्तित्व के ग्रभाव में व्यक्ति ग्रपने ग्रापको जगत का महाप्रभु बनाये रखने के लिए कितने ही उद्योग करता है—उसमें शील के नाम पर तकल्लुफ होता है, उसकी चर्चा में ग्रौर को ग्रपने से छोटा बताने का ग्रप्रत्यक्ष प्रचार होता है ग्रौर लोगों का जी दुखाने के लिए ताने होते हैं। वह दलालों के दलाल की हैसियत से विश्व के बाजार में बड़ा ग्रादमी बन कर रहना चाहता है, परन्तु षोडशोपचार, भक्ति के ग्रभाव में जिस तरह भगवान को खींचने में समर्थ नहीं हो सकता, उसी तरह बाहरी समर्थ साधक ग्राभूषणों और उपकरणों के बल पर व्यक्तित्व का नाश ही किया जा सकता है। उसकी प्राप्ति नहीं की जा सकती।

छोटे से मोम दीप ने कहा, मैं जो हूँ मेरा भी छोटा सा ग्रस्तित्व है रानी।

गर्भ स्वामी तन उठे। छोटी सी मोम दीपिका की ग्रमित वीर्य ग्रन्धकार के खिलाफ यह हिम्मत।

साँप अपनी बाँबी से बाहर ग्राकर कुण्डली मारकर मोम दीप की मुखता का रसास्वादन करने बैठ गया।

अन्त कालिमा के अंग पर माम दीप का छोटा सा जलता हुआ विद्रोह चिन्ता की नहीं तमाशा देखने भर की चीज है।

माखनलाल चतुर्वेदी—अमीर इरादे गरीब इरादे

बड़े दादा रात को बहुत देर तक पढ़ते रहे थे। रात का एक बज जाता कभी दो। मुनीसर कहता हुजूर सोने का वखत हो गया। बहुत देर हो गई। बड़े दादा पूछते क्या बजा है? मुनीसर कहता दो बज गए।' बड़े दादा आश्चर्य से कहते अरे दो बज गए।

द्विवेदी जी ने करीब एक सौ पेड़ आम के लगाए हैं। एक दिन वे अपने पेड़ देखने के लिए गए। मैं भी साथ और हम जधामडिये छाकरे हैरत से हैरान रह जाते साहब सलाम। कूम साहब के स्टाल में एक से एक शराब मिलती थी। उनके बंगले में गोरों के लिए एमर्जेन्सी होटल जमा था। मिस्टर आब्रायन नामक एक बूढ़ा हयकट गोरे सिपाही की याद आती है जो नवीकट दाढ़ी रखता था। चुनार नोटिफाइड एरिया का वह सुपरिन्टेंडेंट था। नगर की सफाई वगैरह उसी के चार्ज में थी।

अब आप बच्चा गुरु का हुलिया नोट कर लें—तीन छ फुट लम्बे छरहरे, गेहुँआ रंग बड़ी-बड़ी भावुक आँखें हमेशा मुस्कराते होठों को पकड़ने मोंछाधर साधारण मूछ घनी दाढ़ी सिर पर इंगलिश कट केश। बच्चा गुरु फेल्ट टोपी बनियान बड़े कालर कफ की कमीज गरचाना नक्काशीदार धोती जुर्राब और पम्प शू या विलायती बूट पहना करते थे। नाक पर हमेशा चश्मा हाथ में बराबर छड़ी। अंगुलियों में अंगूठियाँ जेब में रेल-गाड़ी घड़ी (जो उन्होंने जुए में किसी जुआरी गोरे से जीती थी।)

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'—अपनी खबर

हाँ तो उसी छठे सम्मेलन में चतुर्वेदी जी ने वेश भाषा के अनुसार अब्दुल्ला नामक मनमनावार लेख का गवैलियों के जवाब में अनुराग चन्द्रशेखर नामक निबन्ध पढ़ा था। चमकता हुआ शानदार काला जूता चुस्त पाजामा रोगदार अचकन, चन्दनी साफा, दामन की जेब में घनदार घड़ी, चिन्तामग्न मुखड़े पर मन्द मन्द हास्य रखा गया जब बोल जा मन का आर पार तक तालियों की गड़गड़ाहट में पण्डाल गूँज गया। निबन्ध पाठ के बीच-बीच में हास्यध्वनि होता रहा।

एसी रचनाओं के लिए 'रग रूप की फौज' नामक स्तम्भ बनाया था। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और साहित्यिक जगत की जो हवाई खबरें और अफवाहें होती थीं उन्हें कलमबन्द करने के लिए 'चण्डूखाने की गप' नामक स्तम्भ कायम किया गया था। उससे पाठकों का इतना अधिक मनोरंजन होता था कि देश के अनेक भागों के लोग अपने यहाँ की उड़ती खबरें और दिलचस्प अफवाहें लिख लिखकर भेजा करते थे। 'रग रूप की फौज' में भी प्रति सप्ताह नये सैनिकों का दल जुटने लगा। अपनी भेजी हुई खबरों और चुटकियों पर 'मतवाला' की रंग साना देखकर लोग बड़े विनोदपूर्ण ढंग से बधाइयाँ भेजा करते थे।

शिवपूजन सहाय—वे दिन वे लोग

हम तीन साथी थे—साहिर लुधियानवी रामप्रकाश अश्क और मैं। फोर्ट बंगलोज से बस द्वारा अंधेरी पहुंचे। वहाँ से बिजली से चलने वाली रेलगाड़ी द्वारा खार पहुँचे। खार के एवरग्रीन होटल में पहुँचने पर मालूम हुआ कि शचीनदेव अपने कमरे में मौजूद हैं। मैं सोच रहा था कि संगीत की कोई मधुर धुन हमारा स्वागत करेगी। पर मेरी हैरानी की हद न रही जब मैंने देखा कि शचीन बाबू तो पलंग पर ताश के पत्ते फैलाए किसी खेल में मग्न हैं।

मैंने कहा, देखिए मैं हूँ 'खाना बदोश' के लेखक के रूप में शायद मैं उस पुस्तक की सबसे अधिक प्रतीक्षा करता आ रहा हूँ।"

इस उत्तर से अनय की मुस्कान फिर आँखों के कोनों तक फैल गई। मैंने मुड़कर श्रीमती जी की ओर देखा, वे जैसे सोच रही हों—यह साहित्यकार कितने गहरे पानियों में रहता है। फिर मैंने प्राण नागपाल की ओर देखा जो शायद यह सोच रहे थे कि वह कौन भला प्रकाशक है जिसने तीन वर्ष से यह प्रकाशन रोक रखा है।

देवेन्द्र सत्यार्थी—कला के हस्ताक्षर

कमजोरी से मारे उन्हें चक्कर आ गया। पास के पेड़ का सहारा लिया। खेत में होकर हम लोग जा रहे थे। फिर चक्कर आना शुरू हुआ। मैंने सहारा दिया। अपने लगाए हुए वृक्षों के निकट पहुँचकर बोले। 'देखो हमारे लगाए वृक्ष कैसे फलों से लदे हुए हैं। हम तो अब इन्हीं को देखने में आनन्द आता है।"

मुझे उस वक्त मज़ाक सूझा। मैंने कह दिया, आपके साहित्य

पवन को तो ढोर जानवर चरे जा रहे हैं।'

द्विवेदी मुस्कराए और उन्होंने कहा, 'अब दूसरे लोग उसकी देख भाल करें।'

बनारसीदास चतुर्वेदी—संस्मरण

एक ओर श्वेत शतदल की पंखुडियों की तरह कुछ खुली कुछ बन्द, कहीं अस्पष्ट कहीं अलक्ष्य पर्वत श्रेणियाँ और दूसरी ओर कहीं हरित दल से फले खेत और कहीं गली चाँदी जैसे सोतों बीच में जो जीवन गतिशील है, उसे देखकर प्रसन्नता से अधिक करुणा आती है।

महादेवी वर्मा—स्मृति की रेखाएं

१५३ हिन्दी वाक्य रचनाके क्रमिक विकासका संक्षिप्त इतिवृत्त देनेके उपरान्त निष्कर्ष रूपमें कुछ कहनेकी आवश्यकता प्रतीत होती है। अधुनातन गद्य रचनाओंमें कुछ विरोधी प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं। एक ओर यह गद्य व्याकरण द्वारा सिद्ध कृत्रिम बन्धनोंको तोड़ता जा रहा है। दूसरी ओर कुछ अधिक वैज्ञानिकताकी ओर अग्रसर है। यह प्रवृत्ति अवश्य पूर्वक एक या दो दशकोंसे दिखाई पड़ रही है। लेखक विचारणाके प्रवाहमें यथावत लिखता जाता है। बिम्बके प्रति आग्रह बढ़ रहा है। अभिव्यक्तिको अनुभूतिकी सहजताके अनुरूप ढालनेकी आन्तरिक कामनाके फलस्वरूप ऐसा हो रहा है—यह कथन पूर्ण आश्वस्त भावसे किया जा सकता है। व्यक्तिका सूक्ष्म-अन्वेषण गद्यको उसके अनुरूप सशक्त और समर्थ बनाता जा रहा है। संक्षिप्तताकी प्रवृत्ति बढ़ रही है। अभिव्यक्तिमें रचयिताका दृष्टिकोण कुछ संश्लेषणात्मक होता जा रहा है। यही कारण है कि प्रयोगकी दृष्टिसे एकरूपता नहीं पाई जाती। अनुभूति और चिन्तनके नैकट्यके साथ अभिव्यक्तिमें सहजता दिखाई पड़ती है। यथावत वर्णनकी प्रवृत्तिके कारण ही प्रायः अँग्रेजी पद ही नहीं वाक्यांश और वाक्य तक लिखे जा रहे हैं। अरबी-फारसी प्रयोग तो प्रचुरताके साथ पाए जाते हैं। बहुतसे विचार भागोंको एक ही वाक्यमें एक ही प्रवाहमें लिख दिया जाता है और अपूर्ण होनेपर भी प्रायः लेखकका आशय स्पष्ट रहता है। कहीं-कहीं अवश्य ही दुरूहता आ जाती है। प्रायः यह विचार धारामें निहित मनोवैज्ञानिक सम्बन्धोंपर आधृत रहता है। साहित्यके अध्ययनके फलस्वरूप न केवल भाव अथवा विचार ही प्रभावित होते हैं वरन भाषाकी वाक्य रचना भी प्रभावित हो जाती है। हिन्दीकी वाक्य रचनामें पाए जाने वाले जटिल प्रयोग इसके निदर्शक हैं। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि गद्य और पद्यका अन्तर मिटता जा रहा है। पद्य एकदम गद्यवत् होता जा रहा है।

किसी भी तथाकथित पद्यांशको यदि गद्यके समान लिख दें तो उसे काव्यमय गद्य तो कह सकते हैं किन्तु कविता नहीं। दूसरी ओर कहीं-कहीं गद्य इतना काव्यमय हो गया है कि उस सामान्यतः पद्यात्मक रूपमें लिखनेपर वह कविता ही प्रतीत होगी। उपर्युक्त प्रवृत्तियोंको ध्यानमें रखकर अधुनातन प्रणेताओंकी कुछ गद्य एवं पद्य कृतियोंसे उदाहरण दिए जा रहे हैं।

नारी का स्वभाव ही पूजा करने का है। वह किसी को अपना बनाना चाहती है। वह अधिकार चाहती है, पुरुष अधिकार चाहता है शासक बनकर। लेकिन नारी सेवक बनकर शासन करना चाहती है, वह पुरुष से अधिक खतरनाक है। और इसीलिए प्रिय भी है।

विष्णु प्रभाकर—निशिकान्त

अलग होना सरल नहीं है। इसके लिए पहिले टूटना पड़ता है। मिलन के लिए त्यागना ही पड़ता है। जिससे मन अलग हट जाने को कहता है उस पर बुद्धि का ही प्रयोग क्या।

अलग तो मोह क्या? आसक्ति क्यों?

लक्ष्मीनारायण लाल—काले फूल का पौधा

जो व्यक्ति स्नेह में शर्त्त स्वीकार नहीं करता वह स्नेह में हार जीत भी नहीं मानता। स्नेह सदा एक पवित्र धारा है, जो मन की वायु से टकरा-टकरा कर स्वच्छन्द और अबाध गति से बहती है। जब उसकी गति रुक जाती है या जबरदस्ती रोक दी जाती है, तो स्नेह का निर्मल जल सड़ने लगता है और वह दोनों पक्षों में से किसी को भी लाभ नहीं पहुँचा सकता।

आनन्दप्रकाश जैन—स्नेह की शर्त

हम स्वयं न कुछ करते हैं न कर सकते हैं। जो कुछ हम करते हैं वह हो जाया करता है। अपने आप। इसके लिए हम अपने को श्रेय देना व्यर्थ है।

नैतिकता कानून से ऊँची है। नैतिकता के साथ कम से कम एक मानवीय गुण है—भावनाजनित विश्वास। नैतिकता को कोई दूसरा आरोपित नहीं करता, नैतिकता को स्वीकार करना अथवा अस्वीकार करना, यह हमारी इच्छा पर हमारी चेतना पर निर्भर है।

भगवतीचरण वर्मा—वह फिर नहीं आई

आजके छोकरे क्लाको क्या जानें आवेशमें आकर वे बोले "सिनमा और नो सिनमा रेडियो और ना रडियो। टलीविजन और ना टलीविजन थियेटर विल नोट डाई, नो, इट विल नवर डाइ।

वे हिंदीके पक्षपाती हैं। इस सीमा तक कि उन्हें मतांध कहा जा सकता है। परन्तु आवेशमें आकर जब वे भाषण करना शुरू करते हैं तो जिस बातपर वे विशेष प्रभाव डालना चाहते हैं उसे अंग्रेजीमें बोलते हैं।

विष्णु प्रभाकर—कौंसिल और इन्सान

कहवाघरों में चाट क्लब में माल रोड पर भील के किनारे रेस्तरां में जहां लोग मिलते थे, नन्दिनी के हुस्न का जिक्र जरूर होता। फ्लैटस पर तो लोग उसके इंतजार में इस तरह खड़े रहते थे जैसे गर्मी के दिनों में झुलस हुए यत्न हवा के एक झोंके की प्रतीक्षा में हों और नन्दिनी टूटते तारे सी नजर डालती फूल से कदमों से आगे बढ़ जाती।

तेज मगर नम रोशनियों में मर्द और औरतें खुशगप्पियाँ कर रहे थे। चमचम करती हुई जिन्दगी में रंग और खुशबू उड़ रही थी और जैसे हल्की हल्की आंच बदन को छूकर सांप सी लहरा रही थी।

मेरे विचारों में परेश की कई तस्वीरें उभर रही थीं—हरी हरी घास पर लेटे हुए पेड़ों पर खिलते हुए फूल देखते हुए परिंदों के गीत सुनते हुए गिरते हुए पानी का संगीत सुनते हुए पहाड़ों के शिखरों पर बर्फ पर फिसलती किरणों का नाच देखते हुए भील के किनारे पानी में तैरते चांद तारों के दिये जलते हुए देखते हुए आराम कुर्सी पर अधलेटा किताब पढ़ते हुए किसी तसवीर के सामने मौन खड़े हुए चांदनी रात में भीगते हुए चाय पीते पीते बहस करते हुए कितनी याद थीं परेश की। आज अचानक उसे देखकर मैं खुशी से उछल पड़ा और उससे लिपट गया— परेश मैं चिल्लाया।

हल्लो डियर तुम यहां कैसे उसने पूछा।

देवेन्द्र इस्सर—रेत और समन्दर

शमा और चोपड़ा अपने टिफिन करियरका थैला और पोर्टफोलियो लिए पीछे-पीछे बाहर निकल आए। बरामदा उतरनेसे पहले मदुलाने एक बार दुकानको थकी और उदास निगाहोंसे देखा—लम्बे कारीडारमें अकेले

बन्द जल रहे थे। दरवानोंने अपनी अपनी चारपाइयां या नरी बिस्तर निकालने शुरू कर दिए थे। आसपास निगाह डाली मसारी फाटोग्राफरके कौलप्सिबिल गेट बन्द थे।

छोटी-सी बच्ची हिंदुस्तान बनी-बनी खिड़कियोंके नीचे हाफते पिल्ले की तरह नौट रही थी मदुलाका हाथ बार-बार बगलमें नग कवच-गीयर का आगे पीछे करते समय चोपदार पार्वोंसे छू जाता तो वह और भी सिकुड़ उठता था

राजेन्द्र यादव—लौटते हुए

'हुक्म आया है कहानी भेजो क्या करूं ?
'भेज दो कहानी।'
"क्या भेज दूं ? कहांसे भेज दूं ? मन ही किसी कामको नहीं होता है।'
क्यों तुम्हें कोई और काम नहीं है कि—।'
'तो मैं मिलाती हूं आरीवालको।'' बताना क्या नम्बर है ?
तुम्हारी डायरीमें होगा न ? अर्जेंट किए देती हूं—बम्बईके लड़की वालोंका पता तो है न तुम्हारे पास ?''
नहीं है।
'नहीं है। बस तुमसे हो लिया कुछ।

जनेन्द्रकुमार—बेकार

फिर उन्होंने हल्के-से आवाज़ दी थी सुमी जाग गई ?
और वे कमरेसे होती हुई बाथरूमकी तरफ चली गई थीं। उनके साथ ही कमरेमें एक ठण्डा-सा झोंका आया था—शीतल सी गन्ध फैल गई थी—जैसे विस्मरसे नहीं, गुसलखानेसे नहाकर निकली हों।

कमलेश्वर—तलाश

वह फिर फिर उसी मार्ग से आता है।
उसी मार्ग में जिसे दिन में कई-कई बार मेरी आकुल दृष्टि बुहारती रही है। शायद वह कभी नहीं सोचता कि किसकी आँखें पलपल इस पथ पर बिछी रहती हैं। परन्तु आज उनके हाव भाव में क्या परिवर्तन है उसके हृदय में कोई तूफान उमड़ रहा है। उसकी दृष्टि चंचल है चाल अस्थिर और मन व्यग्र। उसके चपल अपांग में से उत्सुकता झांकती है। मैं अपने वातायन में पर्दे की ओट से देख रही हूँ।

शम्भूनाथ सक्सेना—निवेदन के आंसू

स्मृतियाँ भी कि जैसे स्मृतियाँ हैं जिनका कोई घर ठिकाना नहीं। भीतर हमें बच-बचकर रास्ता बनाना पड़ा। नाचते हुए जोड़ोंकी अंतहीन हिलती, क्षण क्षण बदलती सुरंगके बीच गुज़रते हुए, मेज़ों-कुर्सियोंका बीचसे धकेलते हाथोंमें उठे बीयरके गिलासोंकी पीली छाया तले रेंगते हुए आखिर हम निर्दिष्ट स्थानके आस पास लुढ़क आए।

यह हमारी जगह है! थागियरने कहा और बहुत शांत भावसे पाइप मुँहमें लगा ली। इस दौरानमें एगुई अपने जान पहचाने पियक्कड़ोंके बीच घिर गए थे।

अब आप ही बताइए दस मिनिटके अरसेमें एक छोटी सी सड़कको पार करते हुए जहाँ इतनी महान आत्माओंसे खुद ब-खुद (टेलीफोनपर समय लिए बिना) मुलाकात हो जाए उस शहरको आप क्या कहेंगे?

पूरी रात होनेसे कुछ क्षण पूर्व—भीतरके दो चेहरे हो जाते हैं—एक हँसता हुआ, दूसरा सोया सा। पानी बँट जाता है आधा जल गहरा हरा कहीं-कहीं श्यामल आधा सफेद जैसे किसीने चूनेका चिकटा चूरा पानीमें घोल दिया हो।

निर्मल वर्मा—चीड़ों पर चाँदनी

बीचमें तीन जंगलोंके झुरमुट थे और उनपर बादलोंकी सुरमई रेखा। मौसम असाधारण रूपसे साफ था। हमारे आर पार पारदर्शी धूप थी चाकूकी धार सी पैनी बीचके कोना हाशियोंको तराशती हुई और उनके ऊपर दूर खड़े थे। नंगी बर्फमें लिपटे हुए खामोश और गुम अपनी खामोशीमें आतंकित

निर्मल वर्मा—जलती झाड़ी

आप देख रहे हैं वह स्त्री वह पीली साड़ीवाली। मैं चाहता हूँ इससे पहले कि उसकी नजर हमपर पड़े हम निकल चलें। अगर उसने देख लिया तो बुरा होगा। नहीं, नहीं गलत मत समझिए। बुरी स्त्री नहीं है। मगर अभी वह मिलेगी और हम सबको और आपको जबरदस्ती निमंत्रित कर देगी। क्या कहा? आपत्ति बुरा नहीं है? मजाकमें मत लीजिए। वह सचमुच चायपर बुला लेगी और फिर मुश्किल होगी। अब आपको क्या बतलाऊँ हमदर्दीने उसे छोड़ दिया है। नहीं कभी कोई बात नहीं। उसे लोगोंको घरपर बुलानेका बहुत शौक है खासकर किसीको साथ ले

जानका, नुमाइशम घुमानका और कहाँ तक आपको बताऊँ।

श्रीकांत वर्मा—झाड़ी

वह एक कोन म खामोश बठा रहता। आस पास बूदें पडतीं और सूख जातीं। कभी हलकी बरफ के जाल गिरत और पिघल जात। आसमान म रोज़ राज़ एक स रग बनने और मिटन रहते खाली या बर्फानी बादलों के धूप और उजाल के, अँधेरे और झुटपुटे के। उन सब रगों मे दरिया और डूगों क साथ साथ वह खुद अपन का भी बार-बार रगत देखता हर बार इस वक्त के रग स निकलकर दूसरे वक्त के रग म रँग जान की प्रतीक्षा करता। उसे लगता कि जितन रग उस छूकर निकल जात हैं वे सब कहीं उस पर अपनी छाप छोड जात हैं।

मोहन राकेश—काँपता हुआ दरिया

गगा तो विशषकर भारत की नदी है, जनता की प्रिय है, उससे भारत की जातिया, स्मतिया उसकी आशाएँ और उसके भय उसके विजय गान, उसकी विजय और पराजय लिखी हुई हैं। गगा तो भारत की सभ्यता की प्रतीक रही है निशान रही है, सदा बदलती सदा बहती, फिर वही गगा की गगा। वह मुझ याद दिलाती है हिमालय की बफ स ढकी चोटियों की और गहरी घाटियों की जिनस मुझे मुहब्बत रही है और उनके नीच उपजाऊ और दूर-दूर तक फले मदान जहा काम करते मेरी ज़िन्दगी गुजरी है। मैंन सुबह की राशनी म गगा को मुस्कराते उछलते-कूदते दखा है और देखा है शाम के साये मे उदास काली सी चादर ओढ हुए भद भरी, जाडों म सिमटी-सी। आहिस्त आहिस्त बहती सुन्दर धारा और बरसात म दहाडती, गरजती हुई समुद्र की तरह से चौडा सीना लिए और सागर का बर्बाद करन की शक्ति लिए।

जवाहरलाल नेहरू—नेहरू की वसीयत

अब एक चिटठी बची थी। आहूजान पुन घडी दखी—लच टाइम हो गया था। कुछ अजीब-सी हडबडी की हालत म उसन चिटठी टाइप राइटर से उतार ली।

"आहूजा बाबू।"

आहूजान सिर उठाया। चपरासी सामन खडा हुआ धीमा धीमा

स्मृतियोंमें व जिप्सी स्मृतियाँ हैं जिनका कोई घर ठिकाना नहीं। भीतर हमें बच-बचकर रास्ता बनाना पड़ा। नाचते हुए जोड़ोंकी अन्तहीन हिलती, क्षण-क्षण बदलती सुरंगके बीच गुजरते हुए मेजों कुर्सियोंके बीचसे धकेलते हवामें उठे बीयरके गिलासोंकी पीली छाया तले रेंगते हुए आखिर हम निर्दिष्ट स्थानके आस पास लुढ़क आए।

यह हमारी जगह है। थार्गियरने कहा और बहुत शान्त भावसे पाइप मुँहमें लगा ली। इस दौरानमें एगुइ अपने जान पहचान पियक्कड़ोंके बीच घिर गए थे।

अब आप ही बताइए दस मिनिटके अरसेमें एक छोटी सी सड़कको पार करते हुए जहाँ इतनी महान आत्माओंसे खुद ब-खुद (टेलीफोनपर समय लिए बिना) मुलाकात हो जाए उस शहरको आप क्या कहेंगे?

पूरी रात होनेसे कुछ क्षण पूर्व—झीलके दो चेहरे हो जाते हैं—एक हँसता हुआ, दूसरा सोया सा। पानी बँट जाता है आधा जल गहरा हरा कहीं-कहीं श्यामल आधा सफेद जैसे किसीने चूनेका चिटटा चूरा पानीमें घोल दिया हो।

निर्मल वर्मा—चीड़ों पर चाँदनी

बाँधमें नीले जंगलोंके झुरमुट थे और उनके परे बादलोंकी सुरमई रेखा। मौसम असाधारण रूपसे साफ था। हवाके आर पार पारदर्शी धूप थी चाकूकी धार सी पैनी बीचमें पानी हाशियोंको तराशती हुई और उनके ऊपर दूर ... खड़े थे। नंगी बर्फमें लिपटे हुए खामोश और ... अपनी खामोशीमें आनन्दित

निर्मल वर्मा—जलती झाड़ी

आप देख रहे हैं वह स्त्री वह पीली साड़ीवाली। मैं चाहता हूँ इससे पहले कि उसकी नजर हमपर पड़े हम निकल चलें। मगर उसने देख लिया तो बुरा होगा। नहीं नहीं गलत मत समझिए। बुरी स्त्री नहीं है। मगर अभी वह मिलेगी और हम, मैं और आपको नाश्तेपर निमन्त्रित कर देगी। क्या कहा? आपने कहा बुरा नहीं है? मेहरबानी मत कीजिए। वह नाश्तेमें चाय पर घसीट लेगी और फिर मुश्किल होगी। अब आपको क्या बताऊँ? हमने उसे छोड़ दिया है। नहीं कभी कोई बात नहीं। उस मालिकाको चायपर बुलानेका बहुत शौक है नाश्तेपर किसीको आप मे

जानका, नुमाइशमें घुमानेका और कहा तक आपको बताऊँ।

श्रीकान्त वर्मा—झाड़ी

वह एक कोने में खामोश बैठा रहता। आस पास बूँदें पड़तीं और सूख जातीं। कभी हलकी बरफ के जाल गिरते और पिघल जाते। आसमान में रोज़ रोज़ एक-से रंग बनते और मिटते रहते खाली या बर्फानी बादलों के धूप और उजाले के अँधेरे और झुटपुटे के। उन सब रंगों में दरिया और डूगों के साथ-साथ वह खुद अपने को भी बार-बार रंगते देखता हर बार इस वक्त के रंग से निकलकर दूसरे वक्त के रंग में रँग जाने की प्रतीक्षा करता। उसे लगता कि जितने रंग उसे छूकर निकल जाते हैं वे सब कहीं उस पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं।

मोहन राकेश—काँपता हुआ दरिया

गंगा तो विशेषकर भारत की नदी है, जनता की प्रिय है, उसमें भारत की जातियाँ, स्मृतियाँ उसकी आशाएँ और उसके भय उसके विजय गान उसकी विजय और पराजय लिखी हुई हैं। गंगा तो भारत की सभ्यता की प्रतीक रही है निशान रही है सदा बदलती, सदा बहती, फिर वही गंगा की गंगा। वह मुझे याद दिलाती है हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों की और गहरी घाटियों की, जिनसे मुझे मुहब्बत रही है और उनके नीचे उपजाऊ और दूर-दूर तक फैले मैदान जहाँ काम करते मेरी जिन्दगी गुजरी है। मैंने सुबह की रोशनी में गंगा को मुस्कराते उछलते-कूदते देखा है और देखा है शाम के साये में उदास काली-सी चादर ओढ़े हुए, भेद भरी जाड़ों में सिमटी-सी। आहिस्ते आहिस्ते बहती सुन्दर धारा और बरसात में दहाड़ती गरजती हुई समुद्र की तरह से चौड़ा सीना लिए और सागर को बर्बाद करने की शक्ति लिए।

जवाहरलाल नेहरू—नेहरू की वसीयत

अब एक चिन्ता बची थी। आहूजाने पुनः घड़ी देखी—सब टाइम हो गया था। कुछ अजीब-सी हड़बड़ीकी हालतमें उसने चिन्ता सारी रास्तेमें उतार ली।

'आहूजा बाबू।

आहूजाने सिर उठाया। चपरासी सामने खड़ा हुआ मुस्करा

मुस्करा रहा था वह चिट्ठियाँ ?
हा हाँ हा गई है। आहूजान क्चरेकी टाकरीक नज़दीक जमीन पर रखी फाइलोंके गटठारी ओर इशारा किया वे।

रामकुमार भ्रमर – मौन

दूर से जाती कारों की रोशनियाँ फ्फर फल जाती थीं। और आसपास का सारा परिवेश जसे जल म काप रहा था। कोई आकार कोई आकृति स्थिर नहीं हिलती डुलती हुई थीं। उससे चला नही जा रहा था। वह फुटपाथ पर बठ गया और पाव सडक पर फला दिए। भुके भुके उसन देखा कि शहर की सडकों पर धुआ रग रहा है। यहाँ वहाँ सब जगह धुआ। सालती हुई चीजों की गध और सडते लोहे की भीगी निरनिराहट उसन अपना सिर घुटनो पर टक दिया।

अतुल भारद्वाज—शहर

मिस्टर न सिर हिला दिया। दरवाजा धीरे स बद किया और बाहर अँधेरे म उसकी मिमियाती आवाज सुनाई दी रामू नीचे स बड न० १ को स्लीपिंग पिल्स लाकर दे दो।
रामू क जीन पर उतरन और तीन सीढियाँ उतरकर रुक जान की आवाज आई। उसन सोचा कि जुल्फो म तल लगाकर घूमन वाला यह कम्माण्ड वाद-व्याय करली नस को छड रहा है।

जगदीश चतुर्वेदी—त्रास

सजय—पास ही दूर पर निरापद स्थान है।
महाराज चलत चलें। (पीछ मडकर)
आह माता गांधारी
थकी बठ गई।
माता ओ माता।
धतराष्ट्र—सजय
सब मर प्रयत्न व्यथ हैं।
छोड दो तुम सब यही
जीवन भर मैं
अज्ञान क अधियारे म भटका हूँ

अग्नि है नहीं यह है ज्योति वृत्त
दग्ध कर नहीं यह सत्य ग्रहण कर सका तो आज
मैं अपनी वृद्ध अस्थियों पर
सत्य धारण करूँगा।
अग्निमाला सा।
संजय—आग बढ़ती आती है
आह माता गान्धारी घिर गई लपटों से
किसको बचाऊँ मैं।
हाय असमर्थ हूँ।

धर्मवीर भारती—अन्धा युग

आकाश एक प्रूफ कापी
चाँद के लिए
तारांकित स्थानों की पाद टिप्पणियाँ छूट गई हैं
कम्पोज़ करो
रात की काली मुर्गी
चाँद का अंडा से रही है।

श्याममोहन श्रीवास्तव—रात : एक स्केच

चेक बुक हो पीली या लाल,
दाम सिक्के हों या शोहरत —
कह दो उनसे
जो खरीदने आये हों तुम्हें
हर भूखा आदमी बिकाऊ नहीं होता है।

धर्मवीर भारती—सात गीत वर्ष

अरसे तेरा कर एक वही गह पायेगा—
सम्भ्रम अवगुंठित अंगों को
उसका ही मृदुतर कौतूहल
प्रकाश की किरण छुआएगा।
जिसकी दीठ देखती सब-कुछ
सब कुछ को सहलाती दुलराती धर्मोगनी,

बुझी हुई भट्टी में हलवाई का काला कुत्ता
मरे हुए चूहे को कड़कड़ चबा रहा है।

नरेन्द्र धीर—कुण्ठा एक डिस्टॉर्शन

मैं इस खोखले, घुटन और निश्चित क्रम से
छुटकारा पा जाऊँ—
कहाँ चला जाऊँ ?
ईश्वर यदि सचमुच तुम हो
सचमुच कहीं हो—तो
उत्तर दो
कहाँ चला जाऊँ कि अस्तित्व बोध मर जाए
और
मुझे सपनों से
नारों से
लोगों से
हरदम के लिए मुक्ति मिल जाय।

कलाण बाजपेयी—अस्तित्व बोध

ओ समानधर्मा !
मेरे इस सम्बोधन से
चौंक ठिठक मत।
समय आ गया है
यथार्थ को
खुली आँख देखने,
पूर्ण भोगने,
निडर स्वीकृत करने का,
सपनों को पापाणों के अन्दर सेने का

डा० बच्चन—ओ समानधर्मा

तुम्हें याद होगा प्रिय
जब तुमने आँख का इशारा किया था
तब
मैंने हवाओं की बागडोर मोड़ी थी,

खाध म गिराया था पहाड़ों को
शीश पर बनाया था एक नया सागमान,
जल के बन्धों को मनचाही गति भी दी

दुष्यन्त कुमार—सूर्य का स्वागत

सभी चेहरों पर मातम छाया है
कर्मियम की कमी से
नुचे
पीले उदास चेहरे।
फाइलों म डूबे हैं
बुझी आँखों वाले
टूटी कमानी का चश्मा चढ़ाए
कुछ क्लर्क
जमे लावारिस लाश के चन्द छिछड़

जगदीश चतुर्वेदी—मातमी चेहरे

बहुत देर करके आने वाले मीत
अब द्वार खटखटाते हो
जब प्यार बूढ़ा हो चुका
बहरा हो चुका

इन्दु जैन—एक कविता

कुछ और नाम देना चाहता हूँ
उस दुख को
जो हमारे बीच आकर खुद धन्ल जाता है
उस सुख का
जो अलग अलग तरह से
हम खा जाता है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना—क्या कह कर पुकारू

स्नानार्थी मछुए डोंगे
कन्धे पर कमरा लटकाये
धूपचश्म म सलानी
घुटनों तक साड़ी उचकाये

लहरों से खेलती मन्दालसा,
घरौंदों को रूँध कर किलकते हुए बच्चे
हां, सभी वहा रहे होंगे।
पर हमने समुद्र नहीं देखा।
मैं धूप चश्मा लगाये बना रहा सैलानी
तुम सीपी और शंख समेटती
बालू बनी रहीं
और वह उद्वलित उमड़ता हहराता
ज्वार
अनदेखा रह गया।

भारतभूषण अग्रवाल—समुद्र से वापिसी पर

१५४ हिन्दीके आदिकालकी रचनाओंके उदाहरणोंसे लेकर नवीनतम रचनाओंके उदाहरणोंकी क्रमिक सरणि देखनेके उपरान्त एक तथ्य स्पष्टतः सामने आ जाता है कि हिन्दीका विकास समयकी मांगके अनुरूप हो रहा है। हिन्दी आज वैयक्तिक एवं सामाजिक विच्छित्तियोंकी अभिव्यंजनामें समर्थ है। निःसंदेह इतने थोड़े समयमें इतनी सक्षमता प्राप्त करना एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। यह कहनेमें कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि हिन्दीमें इतनी शक्ति-संवलिति उसके उदार-चरित के कारण है। भाव विचारादिके प्रकाशनमें अपेक्षित योग्यता प्राप्त करनेकेलिए, अन्य प्रादेशिक एवं विदेशी भाषाओंकी अभिव्यंजनामूला क्षमताका प्रभाव अपनी प्रकृति एवं प्रवृत्तिकी रक्षा करते हुए ग्रहण करनेमें, हिन्दीने कल्पनातीत योग्यताका परिचय दिया है। हिन्दीमें मिश्र और संयुक्त वाक्योंका पुष्कल प्रयोग, वक्र-कथन पद्धतिका हिन्दी वाक्यपद्धतिके अनुरूप ग्रहण तथा प्रयोग इसके ज्वलन्त निदर्शन हैं। आज हिन्दी मनीषा अपने दायित्वके प्रति सजग है। अतः उसके उज्ज्वलतम भविष्यकी सहज कल्पना की जा सकती है।

२

सश्लेषणात्मक वाक्य-विन्यास
पदस्तरीय

वाक्याके सभी तत्त्वाकी अन्त स्थापित व्यवस्थाकी प्रयाजनमूला याजना ही सश्लेषणात्मक पद्धति कहलाती है। इस दृष्टिस वाक्यम प्रयुक्त पद-स्तरीम इका इयासे लकर वाक्य-स्तरीय सरचनाआ तक सभीका समावश हा जाता है। आकृतिमूलक वर्गीकरणकी दृष्टिसे हिदी विश्लेषणात्मक भाषा है। हिन्दी भाषा के य विश्लिष्ट-तत्त्व सश्लेषणात्मक योजनाको समाविष्ट कर अथ प्रेषणम समथ हात है। भाषाक सभी तत्त्व प्रयाक्ताके प्रयाजनानुसार काय करते है। कोषगत शब्द भाषाका अग बनते ही एक नए प्रकारकी सक्रियतासे अनुप्राणित हा जाते ह।

अग्रेजीम वड शब्दका प्रयोग कुछ उलझनम डालने वाला है। कोषम पाए जानवाले शब्दाकेलिए भी वडका प्रयोग हाता है और वाक्यम प्रयुक्त शब्द जो भाषाका अग बन चुके है—वे भी वड ही कहे जाते है। हिदीमे यह भ्रमात्मक स्थिति नही है। कोषम पाए जान वाले शब्दाको शब्द कहा जाता है लेकिन भाषान्तगत प्रयागके बाद उनकी सज्ञा बदल जाती है वे पद कहलाते हैं।

वाक्य रचनाम पद सबस छाटी अथमूला इकाइ है। वास्तवम पद व साधित शब्द है जा प्रयोगान्तगत भाषा व्यवस्थाम सभी सदस्याके साथ गुथे हुए है। यह ग्रन्थन पदको मात्र रूप विचार तक सीमित नही करता वरन वाक्यके एक सक्रिय सदस्यके रूपम पदके अध्ययन—सश्लेषण विश्लेषणकी अनिवायताकी आर भी सकेत करता है।

पदका अध्ययन केवल विश्लेषणात्मक दृष्टिस रूप विचारके अन्तगत ही हाता रहा है। किन्तु वाक्य-योजनाका एक इकाईके नाते पदका सश्लेषणात्मक अध्ययन भी अपेक्षित है। प्रस्तुत प्रबन्धम पदका वाक्यकी परिचालन और अनु

शासन-व्यवस्थासे अनुप्राणित मानकर अध्ययन किया गया है। रूढ व्याकरणिक कोटियोमे विभाजित पदाभिधानके रूपमे निरखा परखा गया है। साथ ही इस बातपर भी ध्यान दिया गया है कि प्रयोगकी दृष्टिसे पदोका भिन्न योगदान क्या है। उदाहरणके लिए—सज्ञापद जहा विशेषणकी भाति प्रयुक्त हुए है अथवा क्रियाविशेषण जहा सज्ञावाक्याशके रूपमे प्रयुक्त हुए है वहा वैसा निर्देश कर दिया गया है अर्थात परम्परा और प्रयोगमे अनुस्यूत व्यवस्था सजगताके साथ ग्रहीत है। सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण सम्बन्धसूचक, समुच्चय-बोधक—सभीकी सभावित सृष्टियोका सश्लेषणात्मक दृष्टिसे वाक्य विन्यासके अन्तर्गत समझनेका प्रयास किया गया है।

पदस्तरीय सरचनाओके उपरान्त **वाक्य-स्तरीय सरचनाओंका** विभिन्न वर्गोंकी इकाइयोके रूपमे परीक्षण भी सश्लेषणात्मक दृष्टिसे हुआ है। वाक्याश उपवाक्य, वाक्य आदिकी परीक्षा वृहदतर इकाई—वाक्यके सन्दर्भमे की गई है। इसमे भी दृष्टि योजनामूला ही रही है अर्थात यह देखनेका प्रयत्न किया गया है कि ये इकाइया वाक्यसे ध्वनित होने वाले अर्थको सश्लिष्ट बनानेमे कहा तक समर्थ हुई है। इनको वाक्यके पदकी अपेक्षा वृहदतर इकाइयोके रूपमे ही लिया गया है। इन वाक्य स्तरीय रचनाओकी अन्विितिमे जिन लघु तत्त्वोका सक्रिय योगदान है उनको विश्लिष्ट रूपमे रखकर वाक्य-योजनाके मूलमे सक्रिय व्यवस्थाकी ओर निर्देश किया गया है। इस प्रकारकी विश्लेषणात्मक दृष्टिसे सश्लिष्ट बोध प्राप्तिमे सहायता मिली है।

वाक्य-सरचनाकी एक अन्य व्यवस्था—उद्देश्य विधेय मूला है। इस व्यवस्थाके अन्तर्गत एक तत्त्व प्रयोज्य होता है और दूसरा तत्त्व प्रयोजक। प्रयोज्य तत्त्व वास्तवमे आधार होता है और प्रयोजक तत्त्वके द्वारा उस आधारका व्याख्यान अथवा कथन हुआ करता है। अस्तित्वका सिद्धान्त मूलत सापेक्षिकता-के सिद्धान्तपर आधृत है। यही स्थिति वाक्य विधानमे उद्देश्य और विधेयकी है। एक कथ्य है, एक उसका कथन। दोनो परस्पर अनुस्यूत, परस्पर सम्बद्ध। दोनोमे सश्लेषणात्मक दृष्टि सतत क्रियाशीला है। प्राय व्याकरण ग्रन्थोमे कर्ता और उद्देश्यको समान मान लिया गया है वास्तवमे ऐसा नहीं है। योजनामे एक योजक-तत्त्व कर्ता और उद्देश्य दोनो हो सकता है, और यह भी हो सकता है कि किसी योजनामे कर्ता और उद्देश्य अलग-अलग हो। उद्देश्य और विधेयका अनिवार्यता असदिग्ध है। अत इन दोनो योजकोका योजित करनेवाले प्रत्यक्ष एव परोक्ष तत्त्वोकी ओर सकेत करते हुए सश्लेषणात्मक तत्त्वोकी ओर निर्देश किया गया है।

कहावतें अथवा लोकोक्तियाँ और वाक्‌पद्धतियाँ (मुहावरे) किसी भी भाषा के प्रयोक्ताओंकी अन्तश्चेतना एवं जीवन-सम्बन्धी दृष्टिकोणके सिद्ध प्रतिफल हैं जिनका प्रयोग परिस्थितियों अथवा वातावरण आदिके बदल जानेपर भी निरन्तर होता चला जाता है। इनका विश्लेषणात्मक अध्ययन मनोविश्लेषणात्मक भाषा विज्ञानके अन्तर्गत स्वतन्त्र अध्ययनका विषय है। अतः प्रस्तुत अध्ययनमें इनकी अध्ययन दिशाकी ओर निर्देश भर किया गया है। प्रस्तुत विषयके अन्तर्गत इन इकाइयोंकी प्रयोगान्तर्गत योजनापर ही विचार हुआ है। इनके अध्ययनमें दृष्टि संश्लेषणमूला रही है। लोकोक्तियों एवं वाक्‌-पद्धतियोंमें पाये जाने वाले सूक्ष्म अन्तरकी ओर स्पष्ट निर्देश करके इनके भाषा वैज्ञानिक महत्त्वपर प्रकाश डालना ही अभिप्रेत रहा है।

पदस्तरीय संरचनाएँ

वाक्य रचनामें पद अपरिहार्य सिद्ध तत्त्व है। वस्तुतः पदोंका संश्लेषण ही वाक्यकी सप्राणताका सूचक है। आज भी परम्परागत व्याकरणोंमें पाया जाने वाला शब्द भेद वाक्य विन्यासके अध्ययनहेतु महत्त्वपूर्ण है। यह दूसरी बात है कि वाक्यमें आए हुए पद प्रायः अपने व्याकरण-सम्मत रूढ़ अभिधान और धर्मसे भिन्न अभिधान और धर्म ग्रहण करते हैं। वाक्यकी सजीवताके लिए यह परिवर्तन अपेक्षित है। इस दृष्टिसे वाक्य विन्यासमूलक अध्ययनमें पद-स्तरीय विवेचना अनिवार्य है। वर्णनात्मक भाषा विज्ञानमें परम्परा और परम्परागत तत्त्वोंका भिन्न दिशाओंमें सक्रिय होना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रस्तुत अध्यायमें रूढ़ शब्द भेदका उपयोग करते हुए पदकी वास्तविक स्थिति एवं सक्रियताका वाक्य विन्यासीय विवेचन किया जा रहा है।

इस विवेचनके लिए वाक्योंका चयन सर्वमान्य साहित्यकारोंकी प्रमुख रचनाओं एवं मुख्य समसामयिक पत्र-पत्रिकाओंमेंसे किया गया है। इन कृतियोंका साहित्यमें विशेष स्थान इस तथ्यकी पुष्टि करता है कि भाषामें सजीवता लानेके लिए लेखकोंने सहज ही या सप्रयत्न जो प्रयोग किए हैं वे सर्वस्वीकृत हैं। सममाभावके कारण कुछ वाक्योंकी रचना स्वयं करनी पड़ी है पर वे भी मान्य भाषासे भिन्न कदापि नहीं हैं तथा उनकी संख्या अत्यल्प है।

२.१ संज्ञा—वाक्य-विन्यास

अर्थकी दृष्टिसे संज्ञाके चार भेद हैं—व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक और द्रव्यवाचक। कारक, लिंग और वचनकी दृष्टिसे संज्ञाओंमें प्रत्यय-योगमूलक

रूपान्तर होता है।

२ १ १ कारक

२ १ १ १ व्यक्तिवाचक संज्ञा

वेणु मिलिट्री कमज़ोर सिपाही नहीं थे।	(कर्ता कन ० उ०)
मुनी नियताननें उत्तेजित होकर कहा।	(कर्ता, कम०)
रामने रावणको मारा।	(मु०कम भाव०)
चाचीने गंगाप्रसादको रुपया दिया।	(गौ०कम, कम०)
हम यह काम मोहनसे कराना है।	(करण कम०)
हम श्यामसे मिलकर जा रहे हैं।	(अपा० कतृ ०)
इलाहाबादमें उनकी एक बहुत बड़ी कोठी है।	(अधि०, कतृ ०)
सुमनपर नाराज मन होना।	(अधि०, कत ०)
गोविन्दसे विरक्त मन होना।	(अपा० कत ०)

२ १ १ २ जातिवाचक संज्ञा

मेरी पत्नी बहुत बड़े खानदानकी लड़की थी।	(कर्ता कन ० उ०)
दरवाजेपर बैठे दूसरे आदमीने कहा।	(कर्ता, कम०)
उसने हृष्ट पुष्ट युवकोंको देखकर	(मु०कम, सपरसर्ग,भाव०)
इक्का रुकवाया।	(मु०कम, परसर्ग रहित, कम०, उ०)
लड़कोंको बहुत काम है।	(गौ०कम, कम०)
लड़कोंसे पुस्तक लिखवाइ।	(करण, कम०)
सिपाहीसे रुपया छीनकर भाग गया।	(अपा०, कतृ ०)
शहरमें बहुत पुराने घर हैं।	(अधि०, कत ०)
बच्चोंपर ही सारा क्रोध उतरता है।	(अधि०, कम०)

२ १ १ ३ भाववाचक संज्ञा

जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, यह लगाव बढ़ता रहा।	(कर्ता, कतृ ०, उ०)
दर्शसे बड़ा एक अभिमान होता है और	(कर्ता, कत ०, उ०)
अभिमानसे भी बड़ा विश्वास।	(कर्ता, कतृ ० उ०)
वह शत्रुता निभा रहा है।	(मु०कम, कतृ ०)
हमें देशभक्तोंके बलिदानसे स्वतन्त्रता मिली।	(करण, कम०)

मित्रताका निर्वाह करना ही पड़ता है। (अधि० कम०)
आज इस पातकसे मेरा पिण्ड छूट गया है। (अपा० कम०)

२ ११४ द्रव्यवाचक संज्ञा

पानी बह रहा है। (उ०, कर्त कम०)
पानीने फसल तबाह कर दी। (कर्ता, कम०)
उसने शराब फेंक दी। (कम कम० उ०)
आज सोनेसे ईमान खरीदा जाता है। (करण कम०)
वह दरकी मिट्टीपरसे लुढक गया। (अपा० कर्तृ०)
गंगाकी बाढ़के पानीमें सब डूब गए। (अधि० कर्त०)

विशेष—परम्परागत व्याकरणमें संज्ञाओंके अर्थकी दृष्टिसे जो विभाजन हुआ है वह मात्र सुविधामूलक है। उसे सर्वथा अटल एवं अदोष नहीं माना जा सकता। प्रयोगमें एक विशेष प्रकारकी संज्ञाका दूसरे प्रकारकी संज्ञामें बदल जाना हिन्दीकी एक उल्लेख्य प्रवृत्ति है।

२ ११५ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ → जातिवाचक संज्ञाएँ
विशिष्ट धर्मितायुक्त

वह दूसरा कौटिल्य है, उससे सचेत रहना। (पूरक कर्त०)
कृतघ्नताके कर अग्निकाण्डमें नररक्तरंजित
विभीषणोंकी आहुति दूंगा। (कम कर्त०)
(सामान्यतः संख्यासूचक विशेषण किन्तु आहुति दूंगा संयुक्त क्रिया होनेके कारण यहाँ यह कम है।)

२ ११६ जातिवाचक संज्ञाएँ → व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ
विशिष्ट धर्मितायुक्त

मैं तो ग्रीष्मावकाशमें पुरी जा रहा हूं। (कम कर्त०)
गोस्वामीजी भक्त पहले हैं कवि बादमें। (कर्ता कर्त० उ०)
उसपर देवी आ गई है। (कर्ता कर्त०, उ०)

२ ११७ भाववाचक संज्ञाएँ कुछ मूल होती हैं कुछ अन्य शब्द-भेदोंसे बनती हैं।

मूल

दद इतना था कि वह रा भी नहीं सकता था। (कता, कत० उ०)

अन्य शब्दभेदोंसे

(अ) जातिवाचक सज्ञासे— मित्र→मित्रता
मित्रताका अर्थ है पारम्परिक ईमानदारी
भावनात्मक लगाव और मानसिक समदृष्टि। (समू० वि०, कर्तृ०)

(आ) सर्वनामसे— मम→ममता
अपनी ममता निद्वन्द्व उसपर वार दी। (कम कम०, उ०)

(इ) विशेषणसे— सर्द→सर्दी
बेचारा सर्दीसे ठिठुरकर मर गया। (करण कत०)

(ई) धातुसे— रुद→रुदन
रुदनमे कितना उल्लास, कितनी शान्ति
कितना बल है। (अधि० कत०)

(उ) क्रियाविशेषणसे— शीघ्र→शीघ्रता
उसने काय समाप्त करनेम शीघ्रता की। (कम, कम० उ०)

२११८ जातिवाचक सज्ञाओका समूह → समुदायवाचक सज्ञाएँ

भीडसे सभी घबरात हैं। (करण, कत०)
अकबरकी सेनाको पीछे हटना पडा। (कम, भाव०)
पक्षियोंका झुण्ड दिखाई दिया। (कम, कम०, उ०)
आज सारा परिवार बम्बई जा रहा है। (कर्ता कर्तृ०, उ०)

२१२ लिंग

पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	
अ० कबूतर उड रहा है।	कबूतरी उड रही है।	(कर्ता, कत०, उ०)
नाग काला है।	नागिन काली है।	(कर्ता कत० उ०)
अ० मोर नाच रहा है	मोरनी नाच रही है।	(कर्ता, कर्तृ०, उ०)

जड पदाथ

पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	
रस्सा टूट नही सकता।	रस्सी टूट जायगी।	(कर्ता कत० उ०)
कटोरा चांदीका है।	कटोरी चांदीकी है।	(कर्ता कत० उ०)
पोथा पढ़ा नही जाता।	पोथी पढ़ी जाती है।	(कम कम० उ०)
झण्डा लहरा रहा है।	झण्डी फहरा रही है।	(कर्ता कत० उ०)

भाववाचक सज्ञाएँ

कितनी शालीनता और शिष्टतासे वे रहते थे।	(स्त्री०)	(करण कत०)
जब मनमे प्यार जाग जाता है	(पु०)	(कर्ता कत० उ०)
तुमपर अब विश्वास नही रहा।	(पु०)	(कम कम० उ०)
उसे प्रताडनाके सिवा कुछ न मिला।	(स्त्री०)	(कम कम० उ०)

समुदायवाचक सज्ञाएँ

आजकी सभामे बहुत भीड थी।	(स्त्री०)	(अधि० कत०)
कुछ मगध सेना भी वहाँ है परन्तु वह तो	( )	(कर्ता कत० उ०)
जस उनका स्वागत कर रही है।	( )	(कर्ता कत० उ०)
वम फटते ही समूहमे भगदड मच गई।	(पु०)	(अधि० कत० उ०)
भिक्षुओका दल शान्तिसे जा रहा है।	(पु०)	(कर्ता कत उ०)
हमारा कुटुम्ब बहुत बडा है।	(पु०)	(कर्ता कत० उ०)

द्रव्यवाचक सज्ञाए

जलयान समुद्रके अगाध जलमे समा गया।	(पु०)	(अधि० कत०)
राम कगनमे दो ताला सोना लगगा।	(पु०)	(कर्ता कत० उ०)
दामिया ही चाँदी पहनती थी।	(स्त्री०)	(कम कत०)
सब स्याही समाप्त हो गइ है।	(स्त्री०)	(कर्ता कत उ०)

२१२६ अधिकाश विदेशी सज्ञाओका लिंग वही होता है जो उनकी पर्यायवाची हिन्दी सज्ञाओका।

पुल्लिग

दस अक मिले है।	दस नम्बर मिले है।	(कम, कम०, उ०)
काला अगरखा पहनते थे।	काला कोट पहनते थे।	(कम कत०)
व्याख्यान प्रभावशाली था।	लेक्चर प्रभावशाली था।	(कता कत उ०)

स्त्रीलिंग

गाडी आ रही है।	रेल आ रही है।	(उ० कत कम०)
जजीर खीची गई।	चेन खीची गई।	(कम कम० उ०)
कितनी दक्षिणा दोगे।	कितना फीस दोगे।	(कम, कत०)
सभा कल होगी।	मीटिंग कल होगी।	(उ०, कत कम०)

२१२७ सामान्य लिंगकी दृष्टिसे सम्बद्ध प्रतीत होनेवाले कुछ असम्बद्ध प्रयोग ऐसे भी होते है जिनमे रूपकी दृष्टिसे पारम्परिक लिंगगत सम्बन्ध प्रतीत होता है, लेकिन अर्थकी दृष्टिसे उनमे कोई सम्बन्ध नही होता।

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
मकडीका जाला है।	जाली नाहककी है। (कर्ता कत० उ०)
घडा पक्का है।	घडी सुन्दर है। (कर्ता कत, उ०)
नदीका किनारा रतीला है।	साडी की किनारी सुन्दर है। (कता, कत, उ०)
अडा तीन आनका है।	अडी बहुत महँगी है। (कर्ता कत उ०)
बीडा किसने बनाया है।	बीडी किसने खरीदी है। (कम, कम०, उ०)
इस अँगूठीमे पन्ना जडा है।	पन्नी चमकीली है। (कता, कत० उ०)
किताबका पन्ना मुडा है।	
स्त्रिया घाटपर नहा रही है।	घाटीमे घोड चर रहे हैं। (अधि० कत०)
सारा कच्चा चिट्ठा सुना दिया।	चिट्ठी भिजवा दी। (कम, कम० उ०)
चौका साफ कर ला।	चौकी बिछा दो। (कम कत०)
उसे सारा टोला जानता है।	टोली घूम रही है। (कर्ता कत० उ०)
पीढ़ेपर टोकरा रखा है।	पुरानी पीढीमे आत्म विश्वास था। (अधि०, कत०)

पुल्लिग

हम अक्क मिले ह।	दमनम्बर मिले है।	(कम कम० उ०)
काला अगरखा पहनते थ।	काला कोट पहनत थे।	(कम, कम०)
व्याख्यान प्रभावशाली था।	लेक्चर प्रभावशाली था।	(कर्ता, कत उ०)

स्त्रीलिग

गाडी आ रही है।	रेल आ रही है।	(उ०, कत, कम०)
जजीर खीची गई।	चेन खीची गई।	(कम कम०, उ०)
कितनी दक्षिणा दोगे।	कितनी फीस दोगे।	(कम, कत ०)
सभा कल होगी।	मीटिंग कल होगी।	(उ० कत कम०)

२१२७ सामान्य लिगकी दृष्टिसे सम्बद्ध प्रतीत होनेवाले कुछ असंबद्ध प्रयोग ऐसे भी होते है जिनमे रूपकी दृष्टिमे पारम्परिक लिगगत सम्बन्ध प्रतीत होता है, लेकिन अर्थकी दृष्टिसे उनमे कोई सम्बन्ध नही होता।

पुल्लिग	स्त्रीलिग	
मकडीका जाला है।	जाली लाहकी है।	(कर्ता कत ०, उ०)
घडा पक्का है।	घडी सुदर है।	(कर्ता कत, उ०)
नदीका किनारा रेतीला है।	साडी की किनारी सुदर है।	(कर्ता कत उ०)
अडा तीन आनेका है।	अडी बहुत महँगी है।	(कर्ता कत, उ०)
बीडा किसने बनाया है।	बीडी किसने खरीदी है।	(कम, कम० उ०)
इस अगूठीमे पन्ना जडा है।	पन्नी चमकीली है।	(कर्ता कत ० उ०)
किताबका पन्ना मुडा है।		
स्त्रिया घाटपर नहा रही हैं।	घाटीमे पाडे चर रहे हैं।	(अधि० कत ०)
सारा कच्चा चिट्ठा सुना दिया।	चिट्ठी भिजवा दो।	(कम कम० उ०)
चौका साफ कर लो।	चौकी बिछा दो।	(कम, कत ०)
उसे सारा टोला जानता है।	टोली घूम रही है।	(कर्ता कत ० उ०)
पीढ़ेपर टोकरा रखा है।	पुरानी पीढ़ीमें आत्म विश्राम था।	(अधि० कत ०)

यह बस्ता बदला है।	बदली गा ा है।	(गा्ी गत० उ०)
शीशा टूट गया है।	शीशी फूट गई है।	(उ० का कम०)
साड पाड़े गये	सांड़नी भजी गई।	(कम, कम० उ०)

२ १ ३ वचन

२ १ ३ १ जातिवाचक पुल्लिंग—

	एक वचन	बहुवचन	
अ० अवि०	अध्यापक पढ़ाता है।	अध्यापक पढ़ाते हैं।	(कर्ता रत० उ०)
विका०	अध्यापकने पढ़ाया।	अध्यापकोंने पढ़ाया।	(कर्ता कम०)
अवि०	पर्वत विशाल है।	पर्वत विशाल हैं।	(कर्ता, कत० उ०)
,, विका०	पर्वतपर चढ़ रहा है।	पर्वतोंपर चढ़ रहा है।	(अधि० कत०)
आ० अवि०	बेटा जाता है।	बेटे जाते हैं।	(कर्ता, कत०, उ०)
,, विका०	बेटेने कहा।	बेटोंने कहा।	(कर्ता कम०)
अवि०	झरोखा छोटा है।	झरोखे छोटे हैं।	(कर्ता, कत० उ०)
विका०	झरोखेसे देखता है।	झरोखोंसे देखता है।	(अपा० कत०)
इ० अवि०	कवि कहता है।	कवि कहते हैं।	(कर्ता, कत०, उ०)
विका०	कविने कहा।	कवियोंने कहा।	(कर्ता कम०)
अवि०	गिरि ऊंचा है।	गिरि ऊंचे हैं।	(कर्ता कत० उ०)
विका०	गिरिसे नदी निकलती है।	गिरियोंसे नदियां निकलती हैं।	(अपा० कत०)
ई० अवि०	ब्रह्मचारी पढ़ता है	ब्रह्मचारी पढ़ते हैं।	(कर्ता कत०, उ०)
विका०	ब्रह्मचारीने पढ़ा।	ब्रह्मचारियोंने पढ़ा।	(कर्ता कम०)
अवि०	मोती सच्चा है	मोती सच्चे हैं।	(कर्ता कत० उ०)
विका०	मोतीमें चमक है।	मोतियोंमें चमक है।	(अधि० कत०)
उ० अवि०	बन्धु कपटी है।	बन्धु कपटी हैं।	(कर्ता कत० उ०)
विका०	बन्धुने बुलाया है।	बन्धुओंने बुलाया है।	(कर्ता कम०)
अवि०	बिन्दु कुछ ऊंचा है।	बिन्दु कुछ ऊँचे हैं।	(कर्ता, कत० उ०)
विका०	बिन्दुको देखता है।	बिन्दुओंको देखता है।	(कर्म कत०)
ऊ० अवि०	डाकू मारता है।	डाकू मारते हैं।	(कर्ता कत० उ०)
विका०	डाकूने मारा।	डाकुओंने मारा।	(कर्ता कम०)
अवि०	गेहूँ महंगा है।	गेहूँ महंगे हैं।	(कर्ता कत० उ०)

ऊ० विका० गेहूँ मे रेत मिला है। गेहूँओमे जा वट्टन हैं। (अधि०,वत ०)
आ० अवि० खेतम कोदो है। (कर्ता वत ० उ०)
„ विका० कोदोमे स्वाद है। (अधि०, वत ०)
औ० अवि० जौ बहुत महँगा है। (कर्ता, वत ० उ०)
„ विका० जौसे बियर बनती है। जौओमे मिट्टी है। (अधि० वत ०)
(करण, वत ०)

(जहा अनाजके रूपम जौका प्रयाग हाना ह वहा रचना एकवचनम होती है। इसके विपरीत जहा प्रकार अथवा जातिबोध होना है वहाँ इनका प्रयाग जातिवाचक सज्ञाके रूपम होना है।)

२ १ ३ २ जातिवाचक स्त्रीलिंग—

		एकवचन	बहुवचन	
अ०	अवि०	बहिन कहती है।	बहिनें कहती है।	(कर्ता, वत ० उ०)
	विका०	बहिनने कहा।	बहिनोने कहा।	(कर्ता कम०)
„	अवि०	तस्वीर सुदर है।	तस्वीरें सुन्दर हैं।	(कर्ता वत ० उ०)
	विका०	तस्वीरमे कालापन है।	तस्वीरोमे कालापन है।	(अधि०, वत ०)
आ०	अवि०	सम्पादिका लिखती है।	सम्पादिकाएँ लिखती हैं।	(कर्ता वत ०, उ०)
	विका०	सम्पादिकाने लिखा	सम्पादिकाओंने लिखा।	(कर्ता कम०)
	अवि०	सरिता पवतसे निकलती है।	सरिताएँ पवतसे निकलती हैं।	(कर्ता, वत ०, उ०)
,	विका०	सरितामे प्रवाह है।	सरिताओमे प्रवाह है।	(अधि०, वत ०)
इ०	अवि०	रात्रि अधेरी है।	रात्रियाँ अँधेरी हैं।	(कर्ता वत ०, उ०)
	विका०	रात्रिमे वर्षा हुई।	रात्रियोमे वर्षा हुई।	(अधि० वत ०)
ई०	अवि०	रानी देखती है।	रानियाँ देखती हैं।	(कर्ता वत ०, उ०)
	विका०	रानीने देखा।	रानियोंने देखा।	(कर्ता कम०)
	अवि०	अलमारी बड़ी है।	अलमारियाँ बडी हैं।	(कर्ता वत ० उ०)
	विका०	अलमारीमे पुस्तकें हैं।	अलमारियोंमे पुस्तकें है।	(अधि० वत ०)
उ०	अवि०	यह वस्तु कामकी है।	ये वस्तुएँ कामकी हैं।	(कर्ता वत ० उ०)

उ० विका० इन वस्तुमे क्या कमी है ? इन वस्तुओमे क्या कमियाँ हैं ? (अधि०, कत०)
ऊ० अवि० वधू देखती है। वधुएँ देखती हैं। (कर्ता कत० उ०)
, विका० वधूने देखा। वधुओने देखा। (कर्ता कर्म०)
अवि० झाड़ू टट गई है। झाड़ुएँ टूट गई हैं। (उ० कत कर्म०)
विका० झाड़ूको बाँध दो। झाड़ुओंको बाँध दो। (कर्म० कत०)
ओ० अवि० सरसो फूल रही है। (उ० कत० कर्म०)
' विका० सरसोमे नमक तेज है। (अधि०, कत०)
औ० अवि० गौ दूध देती है। गौएँ दूध देती हैं। (कर्ता कत० उ०)
विका० गौने दूध दिया। गौओंने दूध दिया। (कर्ता कर्म०)

जातिवाचक सज्ञाओके समान ही समुदायवाचक सज्ञाओमे भी लिंग-वचनके कारण रूपान्तर होता है।

२१३३ समुदायवाचक पुल्लिग—

	एकवचन	बहुवचन	
अ० अवि०	मेरा परिवार सुखी है।	हमारे परिवार सुखी हैं।	(कर्ता कत० उ०)
विका०	परिवारमे आठ प्राणी है।	परिवारोमे परस्पर स्नेह है।	(अधि कत०)
अवि०	भिक्षुओका दल जा रहा है।	भिक्षुओके दल जा रहे हैं।	(कर्ता कत० उ०)
' विका०	चीनियोके दलमे फूट पड गई है।	दो दलोमे झगडा है।	(अधि० कत०)
' अवि०	हरिणोका झुण्ड दिखाई दिया।	हरिणोके झुण्ड दिखाई दिये।	(कर्म कर्म० उ०)
विका०	झुण्डमे भगदड मच गई।	झुण्डोमे झगडा हो गया।	(अधि० कत कर्म०)
आ० अवि०	मुहल्ला हिंदुओका है।	मुहल्ले हिंदुओंके है।	(कर्ता कत० उ०)
विका०	मुहल्लेमे मुखिया आया।	मुहल्लोमे मुखिया आए।	(अधि० कत०)

आ० अवि० मुसलमानोका टोला है।	मुसलमानोके टोले हैं।	(कर्ता, कत०, उ०)
" विका० टोलेमे झगडा हो गया।	टोलोमे झगडा हो गया	(अधि०, कत०)

२१३४ समुदायवाचक स्त्रीलिंग—

	एकवचन	बहुवचन	
अ० अवि०	फौज आ रही है।	फौजें आ रही हैं।	(कर्ता, कत०, उ०)
विका०	फौजने हमला किया।	फौजोने हमला किया।	(कर्ता, कम०)
आ० अवि०	सेना पीछे हटी।	सेनाएँ पीछे हटी।	(कर्ता, कत०, उ०)
, विका०	सेनामे भगदड मच गई।	सेनाओमे भगदड मच गई।	(अधि० कत कम०)
इ० अवि०	टोली आ रही है।	टोलियाँ आ रही हैं।	(कर्ता, कत०, उ०)
, विका०	टोलीने सबपर रँग डाला।	टोलियाने सबपर रँग डाला।	(कर्ता, कम०)

२१३५ भाववाचक पुंलिंग—

	एकवचन	बहुवचन	
अ० अवि०	आपका आशीर्वाद फल रहा है।	आपके आशीर्वाद फल रहे हैं	(कर्ता कत० उ०)
, विका०	उनके आशीर्वादसे ही सफलता मिली।	आपके आशीर्वादसे ही अब तक सफलता मिलती रही है।	(करण, कम०)
आ० अवि०	बचपन बहुत सुखद है।		(कर्ता, कत०, उ०)
विका०	वह बचपनेसे काम बिगाड बैठा।		(करण कत०)

२१३६ भाववाचक सज्ञा स्त्रीलिंग—

	एकवचन	बहुवचन	
अ० अवि०	उसने कोई भूल नही की।	उसने बहुतसी भूलें की है।	(कम, कम० उ०)
विका०	आप अपनी भूलको नही सुधारते।	अपनी भूलोको सुधारना पडेगा।	(कम कत०)

आ० अवि० मुझे आपकी मित्रता चाहिए। (कर्म कर्म० उ०)

विका० रामकी मित्रतासे सुग्रीवको बड़ा लाभ हुआ। (करण कर्म०)

ई० अवि० यह आपकी ईमानदारी है। (कर्ता कर्म० उ०)

विका० सब आपकी ईमानदारीपर निर्भर है। (अधि० कर्म०)

संज्ञा वाक्यविन्यासपर कारक लिंग एवं वचनकी दृष्टिसे विचार करनेके उपरान्त सामान्य निष्कर्ष रूपमें यह कहा जा सकता है कि भाषाके जीवन्त प्रयोग परम्परागत व्याकरणिक प्रयोगोंसे भिन्न होते हैं। भाषाके सहज प्रवाहमें व्याकरणके नियमोंका प्रयोग कभी बाधक नहीं बन सकता। रूढ़ व्याकरणिक प्रयोगोंकी दृष्टिसे संज्ञाके वाक्यगत प्रयोग (विशेषतया कारक) कुछ और संकेत करते प्रतीत होते हैं परन्तु भाषाकी दृष्टिसे उनका कार्य सर्वथा भिन्न होता है। उपर्युक्त विवेचनमें वाक्यान्तर्गत संज्ञाओंका सक्रियताके विश्लेषण परीक्षणका प्रयास किया गया है।

२.२ सर्वनाम—वाक्य-विन्यास

व्यक्त या प्रसंगगत संज्ञाके स्थानपर सर्वनामका प्रयोग होता है। हिन्दी सर्वनामोंमें वचन और कारकके कारण रूपान्तर होता है। लिंग भेदका ज्ञान क्रिया या विशेषणके लिंगसे होता है। सर्वनामकी छः श्रेणियाँ हैं।

२.२.१ पुरुषवाचक सर्वनाम

इस सर्वनामके तीन भेद हैं—
उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष और अन्यपुरुष।

२.२.१.१ उत्तमपुरुष—अविकारी

एक० मैं उन्हें बुला लाऊँगा। (कर्ता कर्तृ० उ०)

एक० हम तुमसे एकदम बात नहीं करेंगे। (कर्ता कर्तृ० उ०)

बहु० हम लोग हैरान हैं कि तुम्हें यह क्या सूझी। (कर्ता कर्तृ० उ०)

२.२.१.२ उत्तमपुरुष—विकारी

एक० फिर हमने कभी कोई बात तुम्हारी टाली है। (कर्ता कर्म०)

बहु० हम लोगोंने स्वर्गकी ऊँचाइयोंपर साथ बैठकर आत्माका संगीत सुना। (कर्ता, कर्म०)

एक०	तुम लोगोंने अभी तक खाया क्या नही ?	(कर्ता, कर्म०)
एक०	आप लोगोंने तो कुछ भी नही किया ।	(कर्ता, कर्म०)
एक०	तुझे किसीने कुछ कह दिया है ।	(गौ०कर्म, कर्म०)
एक०	नही यह अन्याय है तुम्हें खाना पडेगा ।	(गौ०कर्म, कर्म०)
एक०	तुमको कितनी बार समझाया है ।	(कर्म, भाव०)
एक०	आपको प्रवासनाथ सामग्री चाहिए या नही ।	(गौ० कर्म कर्म०)
एक०	तेरेलिए कुछ नही बचा ।	(गौ० कर्म, कर्म०)
एक०	तुम्हारेलिए चार पुस्तकें लाया हू ।	(गौ० कर्म, कर्त ०)
एक०	आपकेलिए यह तुच्छ भेंट लाया हूँ ।	(गौ०कर्म, कर्त ०)
बहु०	तुम लोगोंकेलिए भोजन बनवाया है ।	(गौ०कर्म कर्म०)
बहु०	मै आप लोगोंकेलिए पुस्तक तैयार कर रही हूँ ।	(गौ०कर्म, कर्त ०)
एक०	तुझसे सौ बार यही बात कही है ।	(गौ०कर्म० कर्म०)
एक०	मैं तुमसे कहता हूँ कि मुझे आना था ।	(कर्म कर्त०,)
एक०	आपसे कहते हुए शर्म आ रही है ।	(कर्म, कर्म० उ०)
एक०	तुझसे कुछ नही होगा ।	(करण, कर्त०)
एक०	तुमसे ही सारा काम करवाना है ।	(करण कर्म०)
एक०	आपसे बोला नही गया ।	(करण भाव०)
बहु०	तुम लोगोंसे खाया नही गया ।	(करण, भाव०)
बहु०	आप लोगोंसे अब तक कुछ हुआ है ।	(करण कर्म०)
एक०	तुझसे दूर रहकर भी तुझे भूलता नहीं है ।	(अपा०, कर्तृ ०)
एक०	मैं तुमसे अलग नहीं रहना चाहती ।	(अपा०, कर्तृ ०)
एक०	वह आपसे दूर रहना ही अच्छा समझता है ।	(अपा० कर्तृ ०)
बहु०	तुम लोगोंसे सब कुछ छिन चुका है ।	(अपा०, कर्म०)
बहु०	वह आप लोगोंसे दूर रहता है ।	(अपा० कर्तृ ०)
एक०	मैं तुझमें जीवन पाती हूँ ।	(अधि० कर्तृ ०)
एक०	इस कामका भार तुमपर है ।	(अधि० कर्तृ ०)
एक०	मैं तुममें अपने पूजा पूनम अपना सांस भर देना चाहता हूँ ।	(अधि० कर्तृ ०)
एक०	सब तुमपर निर्भर है ।	(अधि०, कर्त ०)
एक०	आपमें इतना ज्ञानातीत है ।	(अधि०, कर्त ०)
एक०	निर्मम आपपर टाला है ।	(अधि० कर्तृ ०)
बहु०	तुम लोगोंमें यहां कमजोरी है ।	(अधि०, कर्त ०)

बहु०	तुम लोगोपर देशका भविष्य निभर है।	(अधि० कतृ ०)
बहु०	आप लोगोमे इस प्रकारका झगडा क्या रहता है।	(अधि०, कम०)
बहु०	आप लोगोंपर शासन करनेका अधिकार किसीको क्या हो ?	(अधि० कतृ ०)

२२१५ अ यपुरुष—अविकारी

एक०	वह परेशानीम उस कमरेसे इस कमरम आ-जा रही थी।	(कर्ता, कतृ ० उ०)
एक०	वे कभी क्षमा नही करत।	(कर्ता कतृ ० उ०)
बहु०	वे लोग इधर ही आ रह हैं।	(कर्ता कतृ ०, उ०)

२२१६ अ यपुरुष—विकारी

एक०	उसने कलाईकी घडी देखी दो बज चुके थ।	(कर्ता, कम०)
एक०	उ होने तीन चार तमाचे उसक लगा दिए।	(कर्ता, कम०)
बहु०	उन लोगोने हडताल कर दी है।	(कर्ता कम०)
एक०	उसे गवाह पेश करनेम कोई दिक्कत नही होती।	(गौ०कम कम०)
एक०	उन्हें कहना कि हमारा समाजके कागज दे दें।	(कम, कतृ ०)
एक०	वह उसको कभी याद नही करता।	(कम कतृ ०)
एक०	उनको दखकर हठात् पूछ बैठा।	(कम, कतृ ०)
एक०	उसकेलिए मैं था एक बडा सा भाई।	(कम, कतृ ०)
बहु०	सत्य उनकेलिए है, जिनमे उस सह लनकी शक्ति है।	(कम, कतृ ०)
एक०	वह उससे अभ्यस्त हो जाता है।	(करण, कतृ ०)
बहु०	शेखरने पहले उनसे भेंट की थी।	(करण, कम०)
एक०	शशि उससे छिटककर अलग खडी हो गइ।	(अपा०, कतृ ०)
बहु०	वह दूसरास मिलता नही, उनसे अलग रहता है।	(अपा०, कतृ ०)
एक०	उसमे मेरा जीवन है।	(अधि०, कतृ ०)
एक०	यह उसपर आरोपित लाछनाका इतिहास है।	(अधि०, कतृ ०)
बहु०	उनमे एक गहरी आत्मीयता है।	(अधि० कतृ ०)
बहु०	उनपर मेरा अधिकार है।	(अधि०, कतृ ०)
बहु०	उन लोगोमे समझौता हो गया है।	(अधि०, कतृ ०)
बहु०	उन लोगोंपर कोई दायित्व नही है।	(अधि०, कतृ ०)

२२१७ अ यपुरुषके अन्तगत मध्य व्यक्तिका उल्लेख होता है। सामा यतया

यह कथ्य व्यक्ति दूरस्थ होता है लेकिन कभी-कभी यह व्यक्ति सामने भी होता है। ऐसी स्थिति में आदरार्थक 'आप' का प्रयोग अन्यपुरुषमें ही होता है।

अविकारी

एक० आप बड़े उत्साही युवक हैं। (कर्ता कर्तृ० उ०)

विकारी

एक० आपने कभी किसीको कष्ट नहीं दिया। (कर्ता कर्म०)
एक० आपको भारत रत्नकी उपाधि प्रदान की गई थी। (गौ० कर्म कर्म०)
एक० आपकेलिए धनका कोई मूल्य नहीं था। (गौ०कर्म, कर्म०)
एक० आपसे देशका बहुत हित हुआ। (करण, कर्म०)
एक० आपसे बिछोह होते ही देश बिलख उठा। (अपा०, कर्तृ०)
एक० आपमें मानवता थी आपपर विश्व-कल्याणका दायित्व था। (अधि० कर्तृ०)

२२२ निजवाचक सर्वनाम

आप पटकी खाये बिना मानता कौन है। (कर्ता कर्तृ० उ०)
मैं तो आपही आ रही थी। (कर्ता वि० कर्त)
मीरसाहब अपनेको पठान कुलका कहते थे। (कर्म कर्तृ०)
आप कहेंगे, मद अपनेको क्या नहीं मिटाता। (कर्म कर्तृ०)
मैं अपनेलिए चाभी स्वयं अपने कष्टसे बनाता हूँ। (गौ० कर्म कर्तृ०)
फिर उन्होंने गम्भीरतापूर्वक माना अपनेसे ही कहा। (करण कर्तृ०)
शिक्षा सभ्यता, संस्कार— हमें अपनेसे ऊपर उठाते हैं। (अपा०, कर्तृ०)
वह अपनेमें विश्वासी यानी अहंकारी है। (अधि० कर्तृ०)
और वह उसकी आपबीती पूछती। (अधि० कर्तृ०)
अपनेपर बीतती है तब पता लगता है। (अधि० कर्तृ०)

२२२१ 'आप' के स्थानपर खुद स्वयं निज स्वतः आदि शब्दोंका भी प्रयोग होता है।

अब आपही खुद चलकर उनसे बात कर लें। (कर्तावि० कर्तृ०)
शेखर स्वयं उनके पीछे खड़ा है। (कर्तावि०, कर्तृ०)

व स्वत-सम्मत तर्कोंका खण्डन कर रहे हैं। (कर्ताधि० कर्तृ०)
और वे आपसमें एक दूसरेकी सहायता करना कर्तव्य
समझते हैं। (अधि०, कर्तृ०)

२ २ ३ निश्चयवाचक सर्वनाम

वह यह सो, हैं। वह दूरस्थ व्यक्तिकेलिए प्रयुक्त होता है और यह निकटस्थकेलिए। वह के प्रयोग अन्यपुरुष सर्वनामके अन्तर्गत विवेचित हो चुके हैं। यह और सो के प्रयोग इस प्रकार हैं—

२ २ ३ १ अविकारी

एक० यह तो काम नहीं करता। (कर्ता, कर्तृ० उ०)
बहु० इस गुलाबके फूल हैं, ये क्या मूल्यवान हैं? (कर्ता, कर्तृ० उ०)
बहु० बल्कि, ये लोग स्वराज्य क्या होने देंगे? (कर्ता कर्तृ० उ०)

२ २ ३ २ विकारी

एक० इसने कभी किसीका भला नहीं किया। (कर्ता कर्म०)
बहु० मेरे विश्वासघातका भूतकर इन्होंने मुझे विश्वास
दिया। (कर्ता कर्म०)
बहु० इन लोगोंने कभी काम नहीं किया। (कर्ता कर्म०)
एक० और इसे तुम अपना त्याग समझते हो नक्षत्र। (कर्म कर्तृ०)
बहु० इन्हें स्वराज्यकी क्या जरूरत है? (गौ०कर्म, कर्तृ०)
एक० इसको कोई कुछ नहीं कह सकता (गौ०कर्म, कर्तृ०)
बहु० इनको कम्पके बाहर पहुँचा आओ। (कर्म, कर्तृ०)
बहु० इन लोगोंको किताबें दे दना। (गौ०कर्म कर्तृ०)
एक० इसकेलिए पहाड़ने तैयार न थी। (कर्म कर्तृ०)
बहु० हम उनकेलिए मर मिटेंगे। (कर्म कर्तृ०)
एक० हम आज इससे आखिरी बात करते हैं। (करण, कर्तृ०)
एक० इनसे यह सब नहीं हो सकता। (करण, कर्म०)
बहु० इन सबोंसे बड़ा महारा है एक धुंधला अपार
निष्पा है। (करण, कर्तृ०)
एक० इससे तुम कोई पुस्तक नहीं ले सकते। (अपा०, कर्तृ०)

एक० जाते हुए इनसे पाच रुपए लेत जाना। (अपा०, कत ०)

बहु० न जाने इनमेंसे किसकी प्रतिभा छू त नभका दामन ? (अपा०, कत ०)

एक० दूर दक्षिणी समीरकी सास क्योंकि इसमे गर्माहट थी। (अधि० कत०)

एक० इसमे अग्रेजोकी जीतके ही समाचार रहत थ। (अधि०, कतृ ०)

बहु० इनमे अगाध स्नेह है। (अधि० कतृ ०)

बहु० इनलोगामे सत्य नामका काइ वस्तु नही है। (अधि० कतृ ०)

एक० इसपर कितना रुपया है। (अधि०, कतृ ०)

बहु० मैं इनपर सारा काम छाडता हू। (अधि० कतृ ०)

बहु० इन लोगोपर निभर ता नही रहा जा सकता। (अधि० भाव०)

अविकारी

एक० जा पेशगी तुम खा गए सो तुम्हारी है। (कर्ता कतृ ० उ०)

विकारी

एक० पाछे जा हागा सो मैं देख लूगा। (कम कतृ ०)

२ २ ४ सम्बन्धवाचक सर्वनाम

२ २ ४ १ अविकारी

एक० एस प्रेयसके भूख है जो तुम्हारी त्रुटियाँ दूर कर दगा। (कर्ता कतृ ० उ०)

बहु० जननाक नभु दिखाई दत थ जो अग्रेजी सरकारके दशम बैठाए हुए थ। (कता, कतृ ०, उ०)

२ २ ४ २ विकारी

एक० जिसने रिमोंका सांगाम घुसकर रहस्य पाया है। (कना कम०)

बहु० जिन्होंन काइ पाप नहा किया व क्या सजा पायें। (कना कम०)

एक० डायरक्टर और प्राड्यूमर चाहे जिस चढा दें जिस गिरा दें। (कम०, कतृ ०)

एक० जिसको यह मिल जाता है वह जी जाता है। (गौ०कम कम०)

एक० जिसकेलिए सब कुछ होम दिया उसका
ऐसा व्यवहार। (गौ०कम कम०)

बहु० जिन्हें जीनका कोई हक नहीं उनका मर
जाना स्वत सम्मत है। (गौ० कम कम०)

बहु० जिनको नशस स्वाद आता है मरी इस
मर्मान्तिक पीडाम। (गौ० कम, कम०)

बहु० वे ऋषि जिनकेलिए सुख-दु ख किसीस
अन्तर नहीं पडता। (गौ० कम कर्तृ०)

एक० किन्तु एसा भाई जिससे प्रेम किया जा सके। (करण कम०)

बहु० जिनसे स्नह किया ह उन्ह भी सुख नहीं दिया। (करण०, कम०)

एक० एक सीमा होती है जिससे आगे मौन
स्वय अपना उत्तर है। (अपा० कर्तृ०)

बहु० जिससे रचनाकार स्वत तटस्थ जिज्ञासु मात्र
रह जाता है। (अधि०, कर्तृ०)

एक० फिर मौन, जिसमें वह लालस्फटिक
कापता-सा है। (अधि०, कर्तृ०)

बहु० एस व्यक्ति हैं जिनमें जीवन नहीं है। (अधि० कर्तृ०)

एक० उस मिट्टीका भी चलानी ह जिसपर
उसके पर खडे हैं। (अधि० कर्तृ०)

एक० जिसपर नेतरका अपना अन्तरग बिछाना ह। (अधि०, कम०)

बहु० पगडण्डी जिनपर चल मैं शिखरा तक पहुँचा। (अधि०, कर्तृ०)

बहु० जिनलोगोंपर मैंन विश्वास किया, उन्होने
धोखा दिया। (अधि०, कम०)

२ २ ५ अनिश्चयवाचक सर्वनाम

२ २ ५ १ *अविकारी*

एक० कोई उसक भीतर कहता है वह नहा
थी सहोदरा नहीं था बहन। (कर्ता कर्तृ०, उ०)

बहु० कोई कोई एसा भी कहन हैं कि उसन
आत्म हत्या की है। (कर्ता, कर्तृ०, उ०)

२ २ ५ २ विकारी

एक० एस दिया था जस कभी किसीने नही न्या । (कर्ता कम०)
एक० किसीको क्या वह मरे जिय माटरके नीचे आए। (कम कतृ०)
एक० आज तक किसीकेलिए कुछ नही किया। (गौ० कम, कम०)
एक० वह सोच ही रहा था कि किसीसे कुछ वात करे। (करण कन०)
एक० किसीसे सहसा आलोक प्रकट हुआ। (अपा० कतृ०)
एक० वावास जवन्स्ती करनका साहस किसीमे न था।(अधि० कतृ०)
एक० मैं किसीपर भार नही वनना चाहती। (अधि०, कतृ०)

२ २ ५ ३ अविकारी

एक० हर कोई विदेश नही जा सकता। (कर्ता कतृ० उ०)
एक० छात्रामसे कोई एक गया। (कर्ता कतृ० उ०)
एक० क्या तुम्हारे यहासे और कोई नही आएगा। (कर्ता कतृ० उ०)
एक० कोई दूसरा कुछ कह तो दे। (कर्ता कतृ०, उ०)
एक० कोई भी आ जाए वहुत जगह है। (कर्ता कतृ० उ०)
एक० कोई आ रहा है कोई जा रहा है। (कर्ता कतृ० उ०)

विशष—सामान्यतया कोई के बहुवचन रूप विरल है। आवत्तिसे ही बहु वचनका वाध हाता है।

२ २ ५ ४ अविकारी

एक० शखरके पास कुछ आकर लगा। (कर्ता कतृ० उ०)
एक० और समाजको कुछ कहनेका अधिकार नही है। (कम भाव०)
एक० काई कुछ कहता रहे मुझे परवाह नही। (कम कतृ०)
एक० कोशिश करनेपर सब कुछ हो जाएगा। (कम, कम० उ०)
एक० परिश्रमसे कुछ-के कुछ बन गए। (पूरक कतृ०)
एक० आपने कुछ-का-कुछ समझ लिया। (कम, कम०, उ०)
एक० हम कुछ-न कुछ तो करना ही होगा। (कम, कम० उ०)

२२६ प्रश्नवाचक सर्वनाम

२२६१ अविकारी

एक० क्या यह आत्मश्लाघा उचित है ?
कौन कह सकता है ? (कर्ता, कर्तृ०, उ०)
बहु० तुम्हारे यहाँ कौन-कौन आएगा ? (कर्ता कर्तृ० उ०)

२२६२ विकारी

एक० नेवर हडवटाकर उठा किसने बुलाया है ? (कर्ता कर्म०)
बहु० सारी मिठाई किन्होंने खाई ? (कर्ता कर्म०)
एक० वासना एकदम घृणित परवशता इस
और किसे कहते हैं। (कर्म, कर्तृ०)
एक० यह भी पता लिया कि किसको कितने
पैसे मिलेंगे। (गौ०कर्म कर्म०)
एक० निरुद्देश्य, कारणहीन, अर्थहीन पीड़ा ?
क्या वह किसकेलिए था ? (गौ०कर्म, कर्तृ०)
बहु० तुम किन्हें बुला रहे हो ? (कर्म कर्तृ०)
बहु० इस अपराधकेलिए किनको उत्तरदायी ठहराओगे ? (कर्म कर्तृ०)
एक० मैंने और किनकेलिए इतने कष्ट उठाए ? (गौ०कर्म कर्म०)
एक० तुम यह सब किससे कह रहे हो
क्या फायदा होगा ? (गौ०कर्म कर्तृ०)
बहु० हमारा ध्यान रखनेकेलिए किनसे कह रही हो ? (कर्म, कर्तृ०)
एक० आज तक ऐसा किससे हुआ है ? (करण कर्म०)
बहु० किनसे करते बनेगा यह सब। (करण, कर्म०)
एक० इसने किससे क्या छीन लिया है ? (अपा०, कर्म०)
बहु० इतनी राशि किनसे ली जा सकती है ? (अपा०, कर्म०)
एक० समझ नहीं आता किसमें बुराई है ? (अधि० कर्तृ०)
बहु० इसकी गिनती किनमें की जाए
अच्छोंमें या बुरोंमें। (अधि०, कर्म०)
एक० और बाबू साहब तुम किसपर जाकर
अपना रंग जमाओगे ? (अधि० कर्तृ०)

एक० किस योद्धाने किस बाणसे किसपर किस
अवस्थामें प्रहार किया? (अधि०, कर्म०)

बहु० हमारा किनपर अधिकार है जो कुछ कहें? (अधि०, कर्तृ०)

विशेष—सामान्यतया क्या विशेषण और क्रियाविशेषणके रूपमें प्रयुक्त होता है। एकाध सर्वनामके प्रयोग भी मिल जाते हैं।

२२६.३ क्या

एक० यह क्या है? (पूरक कर्तृ०)

बहु० ये क्या हैं? (पूरक कर्तृ०)

२२७ संयोगमूलक सर्वनाम

धरती अपने आप नहीं फूलती फलती। (पूरक कर्तृकर्म०)

अपना आप मैंने स्वेच्छासे दे दिया है। (कर्म कर्म० उ०)

अभी तो अपना आप बेचता हूँ। (कर्म कर्तृ०)

वह डबल मसहरी आप ही आप बन गई थी। (क्रि०वि० कर्तृकर्म०)

सब सामान आप से आप उठा लाया। (क्रि०वि० कर्तृ०)

भूषणने अपने आपको इस वक्त अयोग्य पाया। (कर्म भाव०)

विस्मयसे उसने अपने-आपसे पूछा। (अपा० कर्म०)

शेखर सोचता था कि जो-जो वह देखता है
उसके पीछे गहराई है। (कर्म कर्तृ०)

ऐसे समयमें कोई-कोई बहुत घबरा जाते हैं। (कर्ता कर्तृ०, उ०)

तुम्हारे यहाँ कौन-कौन आएँगे। (कर्ता कर्तृ० उ०)

विष देनेवाले लोगोंने क्या-क्या किया। (कर्म कर्म० उ०)

हा ही दिनमें क्या-क्या न गया। (उ० कर्तृकर्म०)

कोई अच्छा है कोई बुरा है सभी तरहके लोग हैं। (कर्ता कर्तृ० उ०)

कुछ तुमने कमाया कुछ तुम्हारे भाईने। (कर्म कर्म० उ०)

जो कोई कहेगा मुँहकी खाएगा। (कर्ता कर्तृ० उ०)

खानेके लिए जो कुछ हाथ न आया। (कर्म कर्तृ०)

विजय उसीको प्राप्त होती है जो कोई विजयी
होनेका साहस करता है। (कर्ता कर्तृ० उ०)

संसारमें जो कुछ सुन्दर है उसीकी प्रतिमा
स्वीकार करता हूँ। (कर्ता० कर्तृ० उ०)

आप किस किसको ढूंढते फिरेंगे। (कम वतृ०,)
जिस किसीको जाना हो अभी चला जाए। (कम कम०, उ०)
कोई-न कोई हर समय बठा रहता है। (वर्ता वतृ० उ०)
इस समय कुछ-न-कुछ तो करना ही होगा। (कम कम० उ०)
आपने कुछ-का कुछ समय लिया। (कम कम०, उ०)
विश्राम रहकर कुछ-से-कुछ हो गए। (पूरक वतृ०)
व्यापारमें आदमी कुछ-से-कुछ बन जाता है। (पूरक वतृ०)
सारे गम क्या-से-क्या न गया है। (उ० वतृ कम०)

सर्वनामोंका उपचार संज्ञाओंकी भाँति ही होता है। इनमें और संज्ञाओंमें एक मूलभूत अन्तर यह है कि सर्वनामोंमें लिंगमूलक रूपान्तरण नहीं होता। सर्वनाम संज्ञाओंकी अपेक्षा अनमनीय प्रयोग हैं। जिस प्रकार संज्ञाओंका सनागत भेद-परिवर्तन होता रहता है उस प्रकारका परिवर्तन सर्वनामोंमें सम्भव नहीं है।

२३ कारक—वाक्य-विन्यास

संस्कृत वैयाकरणोंके मतानुसार कारक अनिवार्यत क्रियामें अन्वित रहता है—

कारक स्यात क्रियामूल[1]
क्रियान्वयित्व कारकत्वम्[1]

इस प्रकार क्रिया कारकमें अनिवार्यत सम्बद्ध मानी गई है। वस्तु स्थिति यह है कि क्रियाका नामपदसे सम्बन्ध कारक कहलाता है। जिस विकारक तत्त्वसे यह अन्वय सूचित होता है, उसे विभक्ति या परसर्ग कहा जाता है। कारक विषयक यह मान्यता हिंदी वैयाकरणोंको भी स्वीकार्य है।

वाक्य मे नाम-पद का क्रिया के साथ जो सम्बन्ध हो उसे कारक कहते हैं।[1]

वाक्य में प्रयुक्त उस नाम (=संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण) को कारक कहते हैं जिनका अन्वय या सम्बन्ध साक्षात्कार या परम्परा से आख्यात क्रिया या कृदन्त क्रिया के साथ होता है।

---

१ सम्पादित संस्कृतसाहित्यपरिषत्प्रस्तपाल—श्री जानकीनाथ साहित्यशास्त्रिणा—'कारकोल्लास' १ दिसम्बर १९२४ पृष्ठ १
२ पं० किशोरीदास वाजपेयी—हिन्दी शब्दानुशासन पृष्ठ १२६
दुनीचन्द—हिन्दी व्याकरण पृष्ठ ६८
४ शिवनाथ—हिन्दी कारकों का विकास पृष्ठ १४

क्रिया के साथ जिसका सीधा सम्बन्ध हो उसे 'कारक' कहते हैं।[1]

कामताप्रसाद गुरु प्रभृति हिन्दी वैयाकरण नामपद और आख्यातके सम्बन्ध को अनिवार्य नहीं मानते। वे वाक्यमें किन्हीं भी दो पदोंके सम्बन्धको कारक की संज्ञा देते हैं—

संज्ञा (या सर्वनाम) जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ प्रकाशित होता है उस रूप को कारक कहते हैं।[2]

कतिपय अंग्रेजीके वैयाकरणोंने भी इसी प्रकारकी धारणाएं व्यक्त की हैं।[3] लेकिन कारक सम्बन्धी ये मान्यताएं ग्राह्य नहीं है, क्योंकि दो पदोंका सम्बन्ध विशेषण विशेष्यका भी हो सकता है और क्रियाविशेषण क्रियाका भी जैसे—

इसका कारण याद आ गया है।

प्रस्तुत वाक्यमें इसका और कारण पदोंमें विशेषण विशेष्य सम्बन्ध है।

फिर एकाएक सिकुड़कर अधबैठी रह गई।

उपर्युक्त वाक्यमें अधबैठी और रह गई पदोंमें क्रियाविशेषण क्रियाका सम्बन्ध है।

इसके अतिरिक्त क्रियामें काल, अर्थ, वाच्य आदि सभीकी मान्यता रहती है अतः वाक्यमें किन्हीं दो पदोंका सम्बन्ध कहना कारकके प्रसंगमें कोई अर्थ नहीं रखता। कारक अनिवार्यतः क्रियामें अन्वित रहेगा। इसी धारणाके अनुसार संस्कृत वैयाकरणोंने छः कारक माने हैं—

---

१ पं० किशोरीदास वाजपेयी—हिन्दी शब्दानुशासन पृष्ठ १३६

२ पं० कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण पृष्ठ २१६

३ *Stokoe H R — The understanding of Syntax* page 66

The case-forms given in the declension of *Nouns or Pronouns* are different forms of the Noun or Pronoun which are used to show the relation between the person (s) or thing (s) i e the object of thought signified by the Noun or Pronoun and that which is signified by some other word or by some word group in the sentence

Jesperson Otto—A Modern English Grammar Part VII Syntax page 219 Case is defined in NED as one of the varied forms of a substantive adjective or pronoun which express the various relations in which it may stand to some other word in the sentence I know no better definition than this

कारक षडविध, कर्ता कर्मापि करण तथा
सम्प्रदानमपादान तथाधिकरण स्मृतम।[1]

सामान्यतया हिन्दीमें भी छः कारक ही माने गए हैं। वैयाकरण गुरुने इन छः कारकोंके अतिरिक्त सम्बन्ध और सम्बोधन को भी कारकोंकी कोटिमें रखा है और इस प्रकार आठ कारक माने हैं।[2] गुरु द्वारा स्वीकृत दोनों अतिरिक्त कारक—सम्बन्ध और सम्बोधन कारककी आवश्यकताएँ पूरी नहीं करते अतः उन्हें कारक नहीं माना जा सकता। सम्बन्धकी परिभाषा देते हुए वे कहते हैं—

संज्ञा के जिस रूप से उसकी वाच्य-वस्तु का सम्बन्ध किसी दूसरी वस्तु के साथ सूचित होता है, उस रूप को सम्बन्धकारक कहते हैं, जैसे राजा का महल, लडके की पुस्तक, पत्थर के टुकडे इत्यादि।[3]

यदि इस परिभाषामें दिए गए उदाहरणोंको पूरे वाक्यका स्वरूप प्रदान कर दिया जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि ये कारक नहीं हैं, वरन विशेषक हैं क्योंकि ये क्रियासे अन्वित नहीं हैं। यथा—

राजाका महल बन रहा है।
लडकेकी पुस्तक फट गई है।
पत्थरके टुकडे पानीमें डूब गए।

उपर्युक्त उदाहरणोंमें तथाकथित सम्बन्ध कारक—राजाका, लडकेकी और पत्थरके—क्रमशः बन रहा है, फट गई है और डूब गए क्रियाओंसे अन्वित नहीं हैं। ये तीनों ही महल, पुस्तक और टुकडे संज्ञाओंके संबंधसूचक विशेषणोंके रूपमें प्रयुक्त हुए हैं। अतः —का —की —के आदि विशेषक हैं सम्बन्धकारक नहीं।

सम्बोधन कारकके विषयमें गुरु का मत है कि—

संज्ञा के जिस रूप से किसीको चिताना या पुकारना सूचित होता है उसे सम्बोधन कारक कहते हैं, जैसे हे नाथ? मेरे अपराधों को क्षमा करना।

इस वाक्यमें स्पष्ट है कि हे नाथ अविकारी कर्ताके समान प्रयुक्त हुआ है और इसी वर्गका है। अतः सम्बोधन भी कोई कारक नहीं है। इसे अविकारी कर्तामें ही समाहित किया जा सकता है। इस प्रकार हिन्दीमें सामान्यतः छः

---

१ सम्पादित संस्कृतसाहित्यपरिचयपुस्तकाकार—श्री जानकीनाथ साहित्यशास्त्रिणा—कारकोल्लास पृष्ठ ४
२ पं० कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण पृष्ठ ५२
वही पृष्ठ २२१
४ वही पृष्ठ २२१

कारकोंकी स्वीकृति है—कर्ता कर्म, करण सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण। इनमेंसे सम्प्रदानको भी स्वतन्त्र कारक माननेके स्थानपर कर्मकारकमें ही समाहित कर दिया गया है। कर्मकारकके दो भेद हैं—मुख्यकर्म तथा गौणकर्म, यह गौणकर्म ही व्याकरणसम्मत सम्प्रदानकारक है। इस प्रकार कारकोंकी संख्या पाँच ही रह जाती है—कर्ता, कर्म—मुख्यकर्म और गौणकर्म, करण, अपादान अधिकरण। इन कारकोंमेंसे कर्ता और कर्म, अविकारी और विकारी दोनों रूपों में प्रयुक्त होते हैं अन्य तीनों केवल विकारी रूपमें। अविकारी कारक परसर्ग रहित और विभक्तिरहित रहते हैं विकारी कारक प्रयोगोंमें परसर्ग अथवा विभक्तिका योग रहता है। कुछ स्थलोंपर विकारी कारकोंके परसर्ग या विभक्तियाँ भी लुप्त हो जाती हैं।

संस्कृतमें केवल विभक्तियाँ कारकीय सम्बन्ध अभिव्यक्त करती हैं पर हिन्दीमें परसर्ग और विभक्ति दोनोंका प्रयोग होता है। परसर्ग और विभक्तिमें अन्तर है। परसर्ग स्वतन्त्र शब्दसे विकसित होकर कारक निर्माणके हेतु अलगसे जुड़ता है। इसके योगसे शब्दमें विकार नहीं होता। कारक निर्माणके हेतु जो विकार मूल शब्दमें हो जाता है वह विभक्ति है। यथा—

यह काम तुमको करना है। (परसर्ग)
यह काम तुम्हें करना है। (विभक्ति)

हिन्दीके ने, को, के लिए, से, में पर—परसर्ग लिंग वचन एवं पुरुषके भेद होनेपर भी अपरिवर्तित रहते हैं।

२.३.१ अविकारी कारक

उसी समय तोताराम कमरेमें आकर खड़े हो गए।	(कर्ता, बहु० उ०)
प्रोफ़ेसर रमा निगम मन ही मन कुढ़ीं।	(कर्ता एक० उ०)
हम लोग व्यर्थ आपसमें ही झगड़ते हैं।	(कर्ता, बहु० उ०)
श्रीमती आनन्द अपनी इच्छा रोक नहीं सकीं।	(कर्ता एक० उ०)
लड़का चोर है।	(पूरक एक०)
कुत्ता वफ़ादार जानवर है।	(पूरक एक०)
हे नाथ! मेरे अपराधोंको क्षमा करो।	(कर्ता एक०, म०)
ईश्वर! तू कहाँ है?	(कर्ता एक०, उ०)
राजाने पुत्रको राज्य दिया।	(कर्म कर्म० उ०)
[illegible] हस्ताक्षर किया।	(कर्म कर्म० उ०)
अंधेरेमें रस्सीको साँप समझना।	(समानाधिकरण कर्म०)

पशियांने हमको राजा चुना।	(समानाधिकरण, कत्०)
विद्यार्थीको एक पल और धनार्थीको एक कण भी नहीं खाना चाहिए।	(कम, कम० उ०)
कम-से-कम मुस्कान तो बिखेर सकते हैं।	(कम कत०)
हाडावन किसीकी गुलामी स्वीकार नहीं करेगा।	(कम कत०)
चादरने वाली बिसका दी।	(कम, कम०, उ०)
ये किताबें तुमसे नहीं पढ़ी जाएँगी।	(कम, कम०, उ०)
धोती फटती है।	(उ०, कत कम०)
गिलास टूट गया।	(उ० कत कम०)
वर्षा हो रही है।	(उ०, कत् कम०)

२३२ विकारी कारक

कमवाच्य प्रयोगोंमे कत पद विकारी रहता है अर्थात नामपदमे ने' परसग, का योग होता है। भाववाच्यके कम-अपक्षित प्रयोगोंम कम-परसग 'को' अथवा कम विभक्ति ए' जुड़ती है।

२३२१ कर्ता परसगयुक्त नामपद

मसारामने बात कही।	(कर्ता कम०)
मैंने भटाकका वरण किया है।	(कर्ता कम०)
मैंने देशवासियोंको सन्नद्ध करनेका सकल्प किया है।	(कर्ता कम०)

२३२२ कम विभक्ति/परसगयुक्त नामपद

हमे बाजार जाना है।	(अधिकृत कर्ता भाव०)
उसको फल मिल जाना है।	(कर्ता कम०)
सबको अपने कर्मों का फल भोगना पड़ेगा।	(अधिकृत कर्ता कम०)
ज्वालाप्रसादको स्नान करते निवृत्त होने दस बज गए।	(कर्ता भाव०)

२३२३ करण परसगयुक्त नामपद

हमसे पढ़ा नहीं जाएगा।	(कर्ता भाव०)
मझसे काम नहीं हो सकेगा।	(कर्ता कम०)

२ ३ २ ८ मे, पर परसर्गयुक्त नामपद

सोमामें शलेन्द्रको बनी आस्था थी।	(गौ० कम, कम०)
उम अन्तद्वन्द्वके क्षणम तुमपर कठोर हा जाती हूँ।	(कम कत्०)
यह उसपर अन्याया और अत्याचाराका इतिहास है।	(कम, कत्०)
उनपर मेरी असीम श्रद्धा है।	(गौ० कम कम०)
आपपर जनताको असीम विश्वास था।	(गौ० कम, कम०)

२ ३ २ ९ विशेपक–का,-के,-की, -रा,-रे,-री युक्त नामपद

रामके लडका हुआ है।	(गौ० कम कम०)
मैं तुम्हारे हाथ जोडती हूँ।	(गौ० कम कत ०)
मैं यह बात तुम्हारे भलेकी कह रहा हूँ।	(गौ० कम, कत ०)
यह भोजन किसका है ?	(गौ० कम, कम०)

२ ३ २ १० परसग केलिए के स्थानपर अन्य शब्दयुक्त नामपद

मैंने सब पुस्तकें तुम्हारे वास्ते खरीदी।	(गौ० कम, कम०)
उसके पीछे अपनी जिन्दगी चौपट कर दी।	(गौ० कम कम०)
वह तुम्हारे लेखे अपना काम बिगाड रहा है।	(गौ० कम, कत ०)
सफलता हेतु कठिन परिश्रम कर रहा है।	(गौ० कम, कत ०)
धनके अर्थ बडे बडे कुकम किए जाते हैं।	(गौ० कम, कम०)
पूजाके निमित्त सामग्री ले आइए।	(गौ० कम कत ०)
जीवनके प्रति आस्था रखनी चाहिए।	(गौ० कम, कम०)

२ ३ ३ करणकारक

२ ३ ३ १ से परसगयुक्त नामपद

प्रतिभासे काम शुरू होते हैं किन्तु समाप्त परिश्रमसे होते है।	(करण, कम०)
घृणा या बदला लेनकी भावनासे मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं।	(करण कम०)
एकाग्रतासे ही विजय प्राप्त होती है।	(करण, कम०)
समाज साहित्यकारोसे साहित्यिक क्षुधा-पूर्ति चाहता है।	(करण, कत ०)

उस उचित कहूँ यह मुझसे न होगा। (करण कर्तृ०)
उस सम्बन्धमे उसे कोई अन्तर जान पडता है तो दूरी
का नही, बल्कि और अधिक समीपत्वका। (करण, कर्म०)
शान्त न बैठ सकनेसे ही तपस्या शुरू होती है। (करण, कर्तृ०)
वे पहली बार अजनबी आनन्दमय दर्दसे तिलमिला उठी। (करण, कर्तृ०)
काम किसीसे किया नही जाता। (करण, कर्म०)
मुझसे तुम्हारा कुछ भला न होगा। (करण, कर्म०)
ठेकेदारने मजदूरोंसे मकान बनवाया। (करण, कर्म०)
उदास मत हुआ करो फिर हमसे कोई काम नही होना। (करण कर्म०)
आज नौकरसे खाना भिजवा देना। (करण, कर्तृ०)
कुलपतिने आचार्यसे प्राध्यापकको बुलवाया। (करण, भाव०)

२ ३ ३ २ करण परसर्गलोप

आखो देखी मानता हूँ कानों सुनी नही। (करण कर्तृ०)
नौकरके हाथ रुपया भेज रहा हू। (करण, कर्तृ०)
शुभ काम अपनी बहनके हाथो होना चाहिए। (करण, कर्म०)
बहुतसे मनुष्य भूखो मर गए। (करण, कर्तृ०)
सबकी लट्ठ पिटाई हुई। (करण, कर्म०)

२ ३ ३ ३ कर्म परसर्गयुक्त नामपद

दुखिया मूवा दुखको सुखिया सुखको झूरी। (करण, कर्तृ०)

२ ३ ३ ४ विशेषकयुक्त नामपद

मैं गानेका गायक हूँ। (करण कर्तृ०)
क्या शरीरका निर्बल आत्माका सबल नही हो सकता। (करण, कर्तृ०)
इस बातका मुझे कोई डर नहा था। (करण, कर्म०)

२ ३ ३ ५ अधिकरण परसर्गयुक्त नामपद

तारा इसमें सहोदरका-सा स्नेह है। (करण कर्म०)
स्वकर्तव्य-पालनमें पुरुष फूलसे हो जाते है। (करण, कर्तृ०)
बहनके नाम यह कहानी और ही कालपर लिखी है। (करण कर्तृ०)
बजरंग अपमानपर वह आगबबूला हो गया। (करण कर्तृ०)

२ ३ ३ ६ करण परसर्ग से के स्थानपर अन्य शब्दयुक्त नामपद

वायुयानद्वारा सब डाक पहुँचाई जाती है। (करण, कर्म०)
गुप्तचराके जरिए सब खबरें मिल जाती हैं। (करण, कर्म०)
आपके मारे सब बठे हैं। (करण, कर्त०)
धनके कारण घमण्डी हो गया है। (करण, कर्त०)
राम प्रकृत्या शान्त थे। (करण, कर्त०)
येन केन प्रकारेण वह उत्तीण हुआ। (करण कर्त०)
किसी-न किसी रूपमे परम्परया प्राप्त हुई है। (करण, कर्म०)

२ ३ ४ अपादानकारक

२ ३ ४ १ से परसर्गयुक्त नामपद

कर्मवीर पथसे नहा डिगते। (अपा०, कर्त०)
जब मैं तुमसे विलग होता हूँ तभी मुझे अपने
अस्तित्वका भान हाता है। (अपा० कर्त०)
जीवनसे पलायन कायरता कहलाती है। (अपा०, कर्म०)
अपने जीवनकी प्रेरणा मूर्तिकी गोदसे बहुत दिन तक
निर्वासित रह चुका हूँ। (अपा० कर्त०)
पूजाकी आखासे अविरल अश्रुधारा प्रवाहित हा रही थी। (अपा० कर्त०)
मैं ही अभी व्यक्तिगत मोहसे उठनकी बात कर रहा था। (अपा०, कर्त०)
अरबी संस्कृतसे बहुत भिन्न है। (अपा० कर्त०)
जीवनसे इतर विषयका कवि वर्णन नही करता। (अपा०, कर्त०)
वफ़ादारीका अर्थ है मस्तकनिका अपने स्थानसे
च्युत कर दना। (अपा०, भाव०)

२ ३ ४ २ अपादान परसर्गलोप

कढी ग्रोठा चढी काठा। (अपा० कर्म०)

२ ३ ४ ३ विशेषकयुक्त नामपद

मेरा वाक्य मे बटनेपर हमारे हाथका रुधिर निकलेगा। (अपा० कर्त०)
चोरीमे घरकी बहुत-सी चीजें चली गई। (अपा० कर्त०कर्म०)

गाडी रामनगरके लिए काशीके पूर्व जाती होगी। (अपा०, कर्तृ०)
गाँवके आगे जानेपर एक शहर दिखाई दिया। (अपा०, कर्म०)

२ ३ ४ ४ अधिकरण परसर्गयुक्त नामपद

सारा गाव इसी कोडमे आग लेने जाता है। (अपा०, कर्तृ०)
नारी और पुरुषके सम्बन्धोमे अस्वस्थ रुमानी
अंश निकाल दे (अपा०, कर्तृ०)

२ ३ ४ ५ अपादान परसर्ग से के साथ अन्य शब्दयुक्त नामपद

घरसे दूर परदेसमे रहना पड रहा है। (अपा०, भाव०)
सडकसे हटकर चलनेपर भी टक्कर हो गई। (अपा०, कर्म०)
अन्तर्जातीय विवाह करनेके कारण उसे जातिसे बाहर
निकाल दिया। (अपा०, भाव०)

२ ३ ५ अधिकरणकारक

२ ३ ५ १ अधिकरण परसर्गयुक्त नामपद

अद्भुत ज्योति सत्य, अनन्तसुख और अनादि
प्रेम सबही तुझमे है। (अधि०, कर्तृ०)
स्त्रीकी आँखोमे ईश्वर ने दीपक जला दिए हैं। (अधि०, कर्म०)
जो अपने आपमे विश्वास नही करता वह नास्तिक है। (अधि०, कर्तृ०)
अन्तःकरणके मामलेमे बहुमतके नियमका
कोई स्थान नही है। (अधि०, कर्तृ०)
दूसरे मेरे बारेमे जो कुछ कहते है
वह कुछ मायने नही रखता। (अधि० कर्तृ०)
दोस्तोमे एक दूसरेसे निबाह करना ही पडता है। (अधि० कर्तृ०)
दुख दर्द सभीमे आदमी हँसता है। (अधि० कर्तृ०)
अब कभी तुम्हारी जिंदगीमे आनेका साहस नही करूँगा। (अधि०, कर्तृ०)
यह किसीभी परिस्थितिमे किसीभी तथ्यको
स्वीकार नही करता। (अधि०, कर्तृ०)
प्यारके उन क्षणमे मेरी आत्मा भी नहीं है। (अधि० कर्तृ०)

मेरी कलाकी हर रेखामे, मेरी मूर्तियाके हर उभारमे,
मेरी हर कल्पनामे हर निर्माणमे तुम्हारी साँसें
गूजी है। (अधि०, कत कम०)
ईश्वर हमारे ज्ञानमे सबस बडा झूठा और छलिया
और मक्कार है। (अधि०, कत ०)
जीवनकी गहनतम घटनाएँ किसी अनजाने क्षणमे ही
हो जाती हैं। (अधि०, कत ०)
सुधाके मनपर कुछ धीरे धीरे मरघटकी उदासीकी तरह
बैठता जा रहा था। (अधि० कत ०)
जब कोइ जीवनकी पूणतापर पहुँच जाता है तो उसे
मर जाना चाहिए। (अधि०, कत ०)
ऐसी यात्रापर हूँ जो कही पहुँचती ही नही। (अधि०, कत ०)
मैं तो महज दूसरोकी इच्छापर चूर चूर हो जानेके लिए
बनी हूँ। (अधि०, कत ०)
एक ऐसा व्यक्ति जिसपर झुका जा सके,
जिसके आधारपर स्वप्न बुने जा सके। (अधि०, कम०)
मेरे कण-कणपर अंकित है प्रेयसि तेरी अनमिट छाप। (अधि० कत०)

२ ३ ५ २ अधिकरण परसगलोप

उस समय मेरी बुद्धि फिर गई थी। (अधि० कम०)
मुझे कुछ नजर नही आ रहा। (अधि०, कम०)
अकबरके हाथ सभी किले आ गए। (अधि०, कम०)
छत छत कूदती फिरती है। (अधि०, कत ०)
चिट्ठी तो कल दोपहर ही आ गइ थी। (अधि०, कत कम०)
उस रात बहुत देर तक काम किया। (अधि०, कम०)

२ ३ ५ ३ कम परसगयुक्त नामपद

रोओगे तो पुरुषत्वको धक्का लगेगा। (अधि०, कम०)
सब ही भाग्यको रोते हैं। (अधि०, कत०)

२ ३ ५ ४ करण परसगयुक्त नामपद

मीठे स्वरसे गा रही थी। (अधि०, कत०)

संक्षेपसे वर्णन करता हूँ। (अधि०, कर्त०)
कल्पनासे मत ही वास्तविकताका पुट न हो। (अधि०, कर्त०)

२ ३ ५ ५ विशेषणयुक्त नामपद

मैं इस नगरके किसी आदमीको नहीं जानता। (अधि० कर्त०)
डारीका नाच मुझे पसन्द आया। (अधि० कर्म०)
मुझे किसीका विश्वास नहीं है। (अधि०, कर्त०)

२ २ ५ ६ विशेषकके साथ अन्य शब्दयुक्त नामपद

बन्दरका अपने ऊपर कभी कभी बाघ आता था। (अधि० कर्म०)
समुद्रके अन्दरका खजाना इतना महंगा नहीं। (अधि०, कर्त०)
कमरेके भीतर भावकर चित्र देखा। (अधि०, कर्म०)
नदीके मध्य टापू प्रवाहको रोक रहा था। (अधि०, कर्त०)

२ ३ ६ परसर्ग-युग्मकयुक्त नामपद

मिट्टीमेंको चला गया।	में+को→अधि० कर्त०
छतपरको चक्कर देखा।	पर+को→अधि० कर्म०
लाटेमेंसे पानी पी लिया।	में+से→अपा०, कर्म०
कोई वसी अवस्थामेंसे बीत रहा था।	में+से→अपा०, कर्त०
कुछ दूरपरसे ही उसने देखा।	पर+से→अपा०, कर्म०
पेड़परसे जामुन गिरने लगे।	पर+से→अपा०, कर्तकर्म०
बालक छतपरसे गिर पड़ा।	पर+से→अपा०, कर्त०
दोनोंमेंसे कोई भी इस प्रक्रियासे वाकिफ न था।	में+से→अपा०, कर्त०
क्या जाने इनमेंसे किसकी प्रतिभा छू ले नभका दामन।	में+से→अपा, कर्त०

कारक वस्तुतः नामपदोंके वे रूप हैं जो उन्हें वाक्यान्तर्गत क्रियासे जोड़ते हैं। प्रयोगान्तर्गत कारकोंकी सक्रियता भी बड़ी महत्वपूर्ण है। रूढ़ एवं परम्परागत प्रयोगोंके अतिरिक्त कारकोंके नव्य प्रयोग हिन्दी-वाक्य-योजनामें बहुलताके साथ पाए जाते हैं। उपर्युक्त विवेचनमें विस्तारके साथ कारकों वाक्य विन्यासगत दिशाओंका निर्देश किया गया है।

२४ विशेषण—वाक्य-विन्यास

विशेष्यके लिंगके अनुसार सभी आकारान्त विशेषणोंमें रूपान्तर होता है। किन्तु स्त्रीलिंग सूचक विशेषणोंमें वचन भेद होनेपर भी रूपान्तर नहीं होता। रचनाके भीतर जो कारकमूलक स्थिति विशेष्यकी होती है वही उससे सम्बद्ध विशेषणकी समझी जानी चाहिए। विशेषणोंको तीन वर्गोंमें रख सकते हैं—सार्वनामिक, गुणवाचक और संख्यावाचक।

२४१ सार्वनामिक विशेषण

प्रायः सभी सर्वनाम विशेषणके रूपमें प्रयुक्त होते हैं। ये विशेषण दो प्रकारके हैं—मूल और साधित।

२४११ मूल

मेरी निठुराईसे प्यार किया। (करण, कर्म०)
मेरा क्रोध और खीझ क्षमा की। (कर्म, कर्म० उ०)
मेरे विश्वासघातको भूलकर तुमने मुझे विश्वास दिया। (गौ० कर्म, कर्म०)
उस समय हमारी नींद खुल जाती है। (उ०, कर्तृ कर्म०)
हम अपना सपना देख रहे थे कि हमारा सिर
कहीं झुका ही नहीं। (कर्ता कर्तृ ०, उ०)
कल हमारे घर बहुत मेहमान आए। (अधि० कर्तृ ०)
हम लोगोंका ऐसा कोई विचार नहीं है। (कर्ता कर्तृ ०, उ०)
यही सलाह हम लोगोंकी है। (कर्ता, कर्तृ ०, उ०)
हम लोगोंके मतमें राजनीति विचित्र है। (अधि०, कर्तृ ०)
जिसमें तेरी आत्मा सांस फूंकती है। (कर्ता, कर्तृ ०, उ०)
तेरे जीवनके लिए अपनी एक सांस भी महत्वपूर्ण रही है। (कर्म कर्तृ ०)
शुभाशंसा चूमती है भाल तेरा—स्नेह शिशु उठ जाग। (कर्म कर्तृ ०)
नायक शुरूसे ही तुम्हारा पक्ष लेती आई है। (कर्म, कर्तृ ०)
तुम्हारी मर्म-पुकार जो कभी-कभी मैं नहीं सुन पाती। (कर्म, कर्तृ ०)
तुम्हारे जीवनमें आशाका साहस नहीं करूँगी। (अधि०, कर्तृ ०)
तुम लोगोंकी यह मर्जी है तो ऐसा ही होगा। (कर्ता कर्तृ ०, उ०)
तुम लोगोंके घर एक सालमें बन जाएँगे। (उ० कर्तृ कर्म०)
आपकी अन्तिम देन पीठ फेरकर नहीं लूंगी। (कर्म, कर्तृ ०)

संक्षपसे वर्णन करता हूं। (अधि०, कत०)
कल्पनासे भले ही वास्तविकताको पुट न हो। (अधि०, कत०)

२३५८ विशेषकयुक्त नामपद

मैं इस नगरके किसी आदमीको नहीं जानता। (अधि० कत०)
डोरीका नाच मुझे पसन्द आया। (अधि० कम०)
मुझे किसीका विश्वास नहीं है। (अधि० कत०)

२३५६ विशेषकके साथ अन्य शब्दयुक्त नामपद

चन्दरको अपने ऊपर कभी-कभी क्रोध आता था। (अधि०, कम०)
समुद्रके अन्दरका खजाना इतना महंगा रहा। (अधि० कत०)
कमरेके भीतर झांककर चित्र देखा। (अधि० कम०)
नदीके मध्य टापू प्रवाहको रोक रहा था। (अधि० कत०)

२३६ परसर्ग-युग्मकयुक्त नामपद

मिट्टीमेंको चला गया। मे+को→अधि० कत०
छतपरको चक्कर देखा। पर+को→अधि० कम०
लोटेमेंसे पानी पी लिया। म+से→अपा०, कम०
कोई वसी अवस्थामेंसे बीत रहा था। म+से→अपा० कत०
कुछ दूरपरसे ही उसने देखा। पर+से→अपा०, कम०
पेडपरसे जामुन गिरने लगे। पर+से→अपा०, कत कम०
बालक छतपरसे गिर पडा। पर+से→अपा० कत०
दोनोंमेंसे कोई भी इस प्रक्रियासे
वाकिफ न था। म+से→अपा० कत०
क्या जाने इनमेंसे किसकी
प्रतिभा छू ले नभका दामन। म+से→अपा कत०

कारक वस्तुतः नामपदोंके वे रूप हैं जो उन्हें वाक्यान्तर्गत क्रियासे जोड़ते हैं। प्रयोगान्तर्गत कारकोंकी सक्रियता भी बड़ी महत्वपूर्ण है। रूढ़ एवं परम्परागत प्रयोगोंके अतिरिक्त कारकोंके नव्य प्रयोग हिन्दी-वाक्य-योजनामें बहुलताके साथ पाए जाते हैं। उपर्युक्त विवेचनमें विस्तारके साथ कारकका वाक्य विन्यासगत दिशाओंका निर्देश किया गया है।

२४ विशेषण—वाक्य-विन्यास

विशेष्यके लिंगके अनुसार सभी आकारान्त विशेषणोंमें रूपान्तर होता है। किन्तु स्त्रीलिंग सूचक विशेषणोंमें वचन भेद होनेपर भी रूपान्तर नहीं होता। रचनाके भीतर जो कारकमूलक स्थिति विशेष्यकी होती है वही उससे सम्बद्ध विशेषणकी समझी जानी चाहिए। विशेषणोंको तीन वर्गोंमें रख सकते हैं—सार्वनामिक, गुणवाचक और संख्यावाचक।

२४१ सार्वनामिक विशेषण

प्रायः सभी सर्वनाम विशेषणके रूपमें प्रयुक्त होते हैं। ये विशेषण दो प्रकारके हैं—मूल और साधित।

२४११ मूल

मेरी निठुराईसे प्यार किया।	(करण, कर्म०)
मेरा क्रोध और खीझ क्षमा की।	(कर्म कर्म०, उ०)
मेरे विश्वासघातको भूलकर तुमने मुझे विश्वास दिया।	(गौ० कर्म, कर्म०)
उस समय हमारी नींद खुल जाती है।	(उ०, कर्त कर्म०)
हम अपना सपना देख रहे थे कि हमारा सिर कहीं झुका ही नहीं।	(कर्ता कर्त ०, उ०)
कल हमारे घर बहुत मेहमान आए।	(अधि० कर्त्०)
हम लोगोंका ऐसा कोई विचार नहीं है।	(कर्ता कर्त ०, उ०)
यही सलाह हम लोगोंकी है।	(कर्ता कर्त्०, उ०)
हम लोगोंके मतमें राजनीति विचित्र है।	(अधि०, कर्त ०)
जिसमें तेरी आत्मा साँस फूकती है।	(कर्ता, कर्त्०, उ०)
तेरे जीवनके लिए अपनी एक साँस भी महत्वपूर्ण रही है।	(कर्म कर्त्०)
शुभाशीष चूमती है भाल तेरा—स्नेह शिशु उठ जाग।	(कर्म, कर्त ०)
नालायक गुस्से ही तुम्हारा पक्ष लेती आई है।	(कर्म कर्त ०)
तुम्हारी मर्म-पुकार जो कभी-कभी मैं नहीं सुन पाती।	(कर्म, कर्त ०)
तुम्हारे जीवनमें आनेका साहस नहीं करूँगी।	(अधि०, कर्त ०)
तुम लोगोंकी यह मर्जी है तो ऐसा ही होगा।	(कर्ता कर्त्० उ०)
तुम लोगोंके घर एक मालम बन जाएँगे।	(उ० कर्त कर्म०)
आपकी अन्तिम देन पीठ फेरकर नहीं लूँगी।	(कर्म, कर्त ०)

आपके विचारार्थ कई एक चीज़ें लाया हूँ। (गौ० कर्म, कत०)
यह तो आपका हक है। (कर्ता, कत० उ०)
आप लोगोंके उत्साहका मैं स्वागत करता हूँ। (कर्म कत०)
आप लोगोंका विचार बहुत पसन्द आया। (कर्म, कर्म०, उ०)
आप लोगोंकी किताब दो दिनमें आ जायगी। (उ०, कत कर्म०)
वही आदमी असाधारण होता है जो किसी भी परिस्थितिमें
किसी भी तथ्यका स्वीकार नहीं करता। (कर्ता कत० उ०,)
वे लड़के किसीकी बात नहीं सुनते। (कर्ता कत० उ०)
यह उत्तरहीन प्रश्न—ईश्वर तू है। (कर्ता कत० उ०)
उस अन्तर्द्वन्द्वके क्षणोंमें तुमपर कठोर हो जाती है। (अधि० कत०)
उन पगध्वनियोंमें एक नन्ही किशोर ध्वनि मरी भी है। (अधि० कत०)
पर उसका मन वहां नहीं है। (कर्ता कत० उ०)
इसी प्रकार उसकी पढ़ाई होती रही। (कर्म कर्म० उ०)
एक ही बात उसके मनमें रह गई। (अधि० कत०)
उनकी आकृतिसे शेखरको जान पड़ा कि कोई असाधारण
समाचार है। (करण भाव०)
एकाएक उनका स्वर बहुत धीमा हो जाता है। (कर्ता कत०, उ०)
ऐसा शेखरने उनके स्वरसे जाना। (करण, कर्म०)
आपका नाम सभी जानते हैं। (कर्म, कतृ०)
आपकी मां वीर क्षत्राणी थी। (कर्ता, कत०, उ०)
आपके मनमें असीम करुणा थी। (अधि०, कत०)
एक सीमा होती है जिससे आगे मौन स्वयं अपना
उत्तर होता है।
और आपसमें एक दूसरेकी सहायता करना अपना
कर्तव्य समझती हैं। (पूरक, कत०)
यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी जीवनी लिखने लगे तो संसारमें
सुन्दर पुस्तकोंकी कमी न रहे। (कर्म, कत०)
आप अपनी बात क्या नहीं कहते। (कर्म कत०)
चन्दर अपने प्यारसे अपनी मुस्कानोंसे, अपने आँसुओंसे
धो देनेके लिए व्याकुल हो उठा। (कर्म कत०)
अपनेको अपनेपनकी सम्पूर्णतासे बहिष्कृत कर देता है। (करण कत०) (अपा० कत०)

जिनकी लयपर साथ हमने आत्मा हारा ।
जिनका विचार था कि जब स्वयमेव बन ही गए (अधि०, कम०)
तब डर क्या ।
इसलिए कि जिनके हित अग्नि जीत लाया हूँ उनमें नहीं है (कर्ता कत०, उ०)
साहस या संवेदना ।
कोई स्त्री प्यार नहीं जानती जो एक साथ ही बहिन स्त्री (गौ० कम कत०)
और माँका प्यार देना नहीं जानती ।
जब कोई व्यक्ति जीवनकी पूर्णतापर पहुँच जाता है (कर्ता कत० उ०)
तो उसे मर जाना चाहिए ।
बैठे-बैठे उसे कोई एक बात याद आ गई । (कर्ता कत० उ०)
किसी भीतरी आलोकसे सहसा प्रकट हुआ । (कम कम०, उ०)
किसी तरहकी कोई गहरी अनुभूति नहीं है । (अपा० कत०)
जीवनकी गहनतम घटनाएँ किसी अनजाने क्षणमें ही (कर्ता, कत०, उ०)
हो जाती हैं ।
किसीके अन्तर्द्वन्द्व चाहे कितनी गरज हो लेकिन सत्यकी (अधि० कत कम०)
शान्त अमृतमयी आवाज नहीं होती ।
किसीका विश्वास नहीं किया जा सकता । (अधि०, कत०)
तुम्हारी बहिन थी और इसके अतिरिक्त किसीकी (कम कम० उ०)
कुछ न थी ।
वह सोचता है कि हमसे कुछ बात करे । (कर्ता कत० उ०)
उसकी ललाईसे उसे कुछ शान्ति मिली । (कम कत०)
और समाजको कुछभी कहनेका अधिकार नहीं । (कम कम० उ०)
रोकनेवाली तुम कौन हो ? (कम कम०, उ०)
किस योद्धाने किस बाणका प्रहार किसपर किस (कर्ता कत० उ०)
अवस्थामें किया था ?
एक जाने किस दम्भका अमंगल छाया एक जाने किस (कर्ता कम अधि० कम०)
पीडाकी मूक आवाज ।
हमारे पत्रमें नाम किन लेखकोंके छपते हैं । (कर्ता कत० उ०)
किन किन मिलमालिकों और व्यापारियोंका काग्रेससे (उ० कत कम०)
गहरा सम्पर्क है ।
ब्याह पहले किसका दायित्व है । (कर्ता कत० उ०)
किसके आधारपर काम शुरू करें । (कर्ता कत० उ०)
(अधि० कत०)

क्या जाने इनमेंसे किसकी प्रतिभा छू ले नभका दामन।	(कर्ता कर्त०, उ०)
क्या सुन्दर दृश्य है।	(कर्ता, कर्त०, उ०)
क्या पागल आदमी है।	(कर्ता कर्त० उ०)
तुम कोई-सा सवाल पूछ सकते हो।	(कर्म कर्त०)
और कोई बच्चा नहीं पढ रहा है।	(कर्ता कर्त० उ०)
किसी एक व्यक्तिको इतना प्यार नहीं करना चाहिए कि जीवनमें किसी दूसरे उद्देश्यकी गुंजाइश न रह जाए।	(गौ० कर्म कर्म०) (कर्म, कर्म० उ०)
कोई-न कोई बात जरूर है वरना एसे नहीं बोलता।	(कर्ता कर्त० उ०)
उसके भीतरसे मानो किसी तरहका प्रकाश फूट रहा है।	(कर्म कर्म० उ०)
इस काण्डमें बहुत कुछ पुलिसका हाथ है।	(कर्ता कर्त० उ०)
पर उसने कुछ और ही क्रम रखा है।	(कर्म, कर्म० उ०)
साडीका रंग कुछ कुछ हल्का हो गया है।	(उ० कर्त कर्म०)
परिश्रमसे कुछ-के कुछ काम हो जाते हैं।	(उ०, कर्त कर्म०)
अब कुछ-न कुछ रुपया तो चाहिए ही।	(कर्म कर्म० उ०)
कुछ रुपया तुम दो	(कर्म कर्त०)
कुछ रुपया बक्से मिल जाएगा।	(कर्म कर्म० उ०)
कोई कोई बच्चा जन्मसे ही प्रतिभावान होता है।	(कर्ता, कर्त० उ०)
कोई न कोई मुसीबत हर समय लगी रहती है।	(कर्ता कर्त०, उ०)
इसका कौनसा अंश प्रकाशमान है ?	(कर्ता कर्त०, उ०)
कौनसे पापका फल मिला है ?	(कर्म, कर्म० उ०)
अब कौनसी तुम्हारी ऐसी बात है जो तुम्हारी सुधा नहीं मान सकती।	(कर्ता कर्त०, उ०)
क्या-क्या संशोधन उन्होंने सुझाए ?	(कर्म कर्म० उ०)
मेरी अपनी किताबें अलमारीमें है।	(कर्ता कर्त० उ०)
तुम्हारे अपने कपडे बाहर सूख रहे हैं।	(उ० कर्त कर्म०)

२४१२ सम्बन्धसूचक विशेषण

सभी सार्वनामिक विशेषण विकारी रूपमें प्रयुक्त होते हैं। सार्वनामिक विशेषणोंमें जहाँ सम्बन्धवाची का, के, -की, रा, रे, -री विशेषण जुडते हैं वहाँ ये सम्बन्धसूचक विशेषण होते हैं। यह सिद्धान्त सभी प्रकारके सार्वनामिक विशेषणोंपर लागू होता है।

पुरुषवाचक सर्वनामाभाव (उत्तम० एवम मध्यम०) अविकारी रूप विशेषणकी भाँति प्रयुक्त नहीं होते। यह, वे तथा इनके विकारी रूप उस, उन एवं और अन्य पुरुषवाची सर्वनामोंकी भाँति प्रयुक्त होते हैं दूसरा और दूरार्थी संकेतसूचक विशेषणकी भाँति।

२४१३ साधित

पहले जैसा विश्वास हुआ था वैसा ही अविश्वास भी हुआ।
जैसी स्थिति हो वैसा ही आचरण करना चाहिए। (कम कम० उ०)
(कर्ता कर्त० उ०)
ऐसे प्रश्न जो बार बार जाग उठा करते हैं। (कम कम० उ०)
न जाने धर्म अधर्मकी कैसी बात करती थी। (उ० कर्तकम०)
चन्दर मनकी श्रद्धा चाहे अब भी वैसी हो लेकिन तुमपर अब विश्वास नहीं रहा। (कम, कर्त०)
पर ऐसे भी दर्द होते हैं जो अभिमानसे भी बड़े होते हैं। (पूरक कम०)
वह ऐसा-वैसा आदमी नहीं है। (कर्ता कर्त० उ०)
ऐसी-वैसी कोई बात नहीं कहनी चाहिए। (पूरक कर्त०
दर्दसे बड़ी एक लाचारी होती है—जितना बड़ा दर्द उतनी ही बड़ी। (कम कम० उ०)
अच्छा हुआ कि इतना तीखा दर्द मुझे मिला। (कर्ता कर्त० उ०)
इतनी जिज्ञासाएँ उसके मनमें जाग उठती थीं। (कम कम० उ०)
और जानता हूँ कि जितने स्वप्न मैंने देखे हैं सब तुममें आकर घुल जाते हैं। (उ० कर्तकम०)
जितना ही बड़ा वह कलाकार होगा उतना ही बड़ा कलाकार होगा। (कम कम० उ०)
आखिर इतनेसे काम का कितना लाभ। (कर्ता कर्त० उ०)
लेकिन कितनी विभिन्न हैं दोनों बहनें। जितनी कितनी व्यावहारिक कितनी यथार्थ कितनी संयत और सुधा कितनी आदर्श कितनी कल्पनामयी कितनी सूक्ष्म कितनी ऊँची कितनी सुकुमार और पवित्र। (गौ०कम कर्त०)
जाने कितनी अनुभूतियाँ कितने सपने कितनी परिस्थितियाँ। (पूरक कर्त०)

से मिलकर ज़िन्दगी बनती है। (करण धम० कत्०)
जितना जितना काम करोगे। (कम कत्०)
उतना-उतना दाम मिलेगा। (कम कम०, उ०)
सब सामान जैसा-का-तैसा वापिस आ गया है। (पूरक कत कम०)

४१४ सार्वनामिक विशेषणोंके साधित रूप दो प्रकारके होते —गुणवाची, परिमाणवाची। -ना,-नी,-ने अन्त्यवाले साधित सार्वनामिक विशेषण परिमाणवाची तथा -सा,-सी -से अन्त्यवाले गुणवाची होते है।

१४२ गुणवाचक विशेषण

किन्तु मैं तुम्हारे उस गत जीवन और नष्ट प्रेमसे क्या ईर्ष्या करूँ? (कम०, कत ०)
फिर इतने चिर मिलनके बाद भी यह अनगावका भाव क्या? (अधि० कत ०)
नव वर्षाके समय बादल झुक जाते हैं। (अधि० कत ०)
उन्होंका सजीव चित्रण उपस्थित कर चित्रम जान डाल देता है। (कम कत ०)
वे वायुपर रंगीन रेखाएँ खींच देते हैं। (कम कत ०)
उन्होंने गत्यात्मक सौन्दर्यका अंकन भी कुशलतासे किया है। (कम कम० उ०)
उनके निर्मल हृदयपर स्पष्ट चित्र उतर आता है। (अधि० कत कम०)
कविके इस सूक्ष्म कौशलपर उदीयमान आलोचक कहते है। (अधि० कत ०)
पुस्तकें समयके विशाल समुद्रमे प्रकाश स्तम्भके समान हैं। (अधि० कत ०)
धन वह अतुल सागर है जिसमे इज्जत और ईमानदारी डुबाई जा सकती है। (पूरक कत ०)
तरुणाई और विश्वासके सम्बन्ध बहुत गहरे हैं। (पूरक कत ०)
बाहरी सघर्षोंसे हम लोग डरते रह ता कायरता है। (करण कत्०)
उच्च पदपर बिना चक्करदार सीढ़ीकी सहायताके नही पहुँचा जा सकता। (अधि० करण भाव०)
समयकी बर्बादी दुनियामे सबसे बडी फिजूल-खर्ची है। (पूरक कत ०)
यह हमारे स्वभावकी सबसे बडी सकीर्णता या कमजोरी है। (पूरक कत्०)

पानी नागके समान अपाकार शोर कर रहा है। (समानाधिकरण वत०)
श्वेत परिधानकी अपनी गरिमा है। (अधि० वत०)
दूरीपर सिगनलकी लाल बत्तियाँ चमक रही थी। (कर्ता वत० उ०)
मनुष्यकी उन्नति एवं अवनतिका कारण उसका
 विद्यार्थी जीवन है। (पूरक वत०)
सबसे प्रथम और सुन्दर जीत अपनेपर विजय पाना है। (कर्ता, वत० उ०)
निर्धन मनुष्य प्रसन्न हो सकता है पर प्रसन्न मनुष्य
 निर्धन नहीं। (कर्ता वत० उ०)
मैं पश्चिमीय आकाशको देखती बैठी रहती हूँ। (कर्म वत०)
यह मौन अनुशासन स्वीकार कर लिया था। (कर्म कर्म०, उ०)
आजके लिए और सदाके लिए अच्छी पुस्तक सबसे अच्छा
 मित्र है। (कर्ता, वत० उ०)
यदि मतदाता मूर्ख होंगे तो उनके प्रतिनिधि धूर्त होंगे। (पूरक वत०)
सभी लोग आदतोंके छोटे या बड़े गुलाम हैं। (पूरक वत०)
महान आदर्श महान मस्तिष्कका निर्माण करते हैं। (कर्ता कर्म वत०)
अन्भुत ज्योति सत्य अनन्त सुख और अनादि प्रेम
 सबही तुझमें है। (कर्ता वत० उ०)
जिनके काम बड़े होते हैं उनकी जीवनी बहुत
 छोटी होती है। (पूरक, वत०)
ऐसे कार्योंमें लगना चाहिए जिनका बुरा पहलू (पूरक, वत०)
 छोटे-से-छोटा हो और अच्छाई जिसमें असीम हो। (पूरक वत०)
सच्चा भाव ही ईश्वरकी सच्ची उपासना है। (पूरक, कर्ता, वत०)
मुस्कान यदि एक बद आंसूके साथ हो तो
 कहीं ज्यादा खूबसूरत होती है। (पूरक वत०)
अत्यन्त मधुर और सुगन्धवाला फूल सलज्ज
 और विनीत होता है। (कर्ता वत० उ०)
मित्रताका अर्थ है पारस्परिक ईमानदारी भावनात्मक
 लगाव और मानसिक समदृष्टि। (पूरक वत०)
इसका सम्यक परिज्ञान आप ही हो जाएगा। (कर्म कर्म०, उ०)
उनकी शैलीपर पाश्चात्य प्रभाव बहुत है। (पूरक, वत०)
सभी आधुनिक कवियोंने विशेष मनोनिवेशके साथ
 अपनाए हैं। (करण कर्म०)

कवि श्रीकी श्रृगार-साधनाम बडा कौशल दिखाया है। (अधि०, कम०)

२ ४ ३ सख्यावाचक विशेषण

ये तीन प्रकारके हैं—निश्चितसख्यावाचक, अनिश्चितसख्यावाचक और परिमाणवाचक।

२ ४ ३ १ निश्चितसख्यावाचक विशेषण

गणना

सन् १८५७म प्रथम स्वतन्त्रता-सग्राम हुआ था। (अधि०, कत कम०)
पाच वषम हमन बहुत तरक्की कर ली। (अधि० कम०)
दहलीम पाच लाख आदमियाने गणतन्त्र दिवस समारोह देखा। (कर्ता, कम०)
हिन्दी-साहित्यका प्रारम्भ एक हजार वप पहले हुआ। (पूरक, कर्तृकम०)
आधा सेर दूध काफी रहगा। (कम, कम०, उ०)
पूरे सूटम ढाई गज कपडा लगेगा। (पूरक, कत कम०)
चौथाई मकान उनके पास है। (कम, कम०, उ०)
सवा तोले सानकी एक चूटी बनेगी। (करण कत कम०)
साढे पाच बजे भाषण शुरु होगा। (अधि० कत कम०)
सवा लाखका महल ढह गया। (उ० कत कम०)
रुपएम चौदह आने काम हुआ है। (उ०, कतृकम०)

क्रम

पहला लडका बहुत लाडला होता है। (कर्ता, कत ०, उ०)
तीसरे दिन सब लोग चले गए। (अधि० कत ०)
पन्द्रहवें अध्यायम नखशिख वणन है। (अधि०, कत ०)
अब पचासवें वषम हूँ। (अधि० कत ०)
तुलसीदासको प्रथम श्रेणीके लेखकाम रख सकते हैं। (अधि०, कतृ०)
प्रियप्रवासके षष्ठ सगम पवनदूतिका प्रसग है। (अधि० कत ०)
दूजका चाद एक रेखाके समान ही होता है। (कर्ता कत ० उ०)
बसन्त पचमीका साया बहुत बडा है। (कर्ता कतृ० उ०)

काले नागके समान जुगनू क्रीडा कर रहा है। (समानाधिकरण कत०)
श्वेत परिधानकी अपनी गरिमा है। (अधि० कत०)
दूरीपर सिगनलकी लाल बत्तियाँ चमक रही थीं। (कर्ता कत०, उ०)
मनुष्यकी उन्नति एव अवनतिका कारण उसका
विद्यार्थी जीवन है। (पूरक, कत०)
सबसे प्रथम और सुन्दर जीत अपनेपर विजय पाना है। (कर्ता, कत० उ०)
निधन मनुष्य प्रसन्न हो सकता है पर प्रसन्न मनुष्य
निधन नहीं। (कर्ता कत० उ०)
मैं पश्चिमीय आकाशको देखती बैठी रहती हू। (कम कत०)
यह मौन अनुशासन स्वीकार कर लिया था। (कम कम० उ०)
आजकेलिए और सदाकेलिए अच्छी पुस्तक सबसे अच्छा
मित्र है। (कर्ता कत० उ०)
यदि मतदाता मूर्ख होंगे तो उनके प्रतिनिधि धूर्त होंगे। (पूरक कत०)
सभी लोग आदतोंके छोटे या बड़े गुलाम हैं। (पूरक कत०)
महान आदर्श महान मस्तिष्कका निर्माण करते हैं। (कर्ता कम कत०)
अद्भुत ज्योति सत्य अनन्त सुख और अनादि प्रेम
सबही तुझमें है। (कर्ता कत० उ०)
जिनके काम बड़े होते हैं उनकी जीवनी बहुत
छोटी होती है। (पूरक कत०)
उस कार्यमें लगना चाहिए जिसका बुरा पहलू
छोटे-से-छोटा हो और अच्छाई जिसमें असीम हो। (पूरक कत०)
सच्चा भाव ही ईश्वरकी सच्ची उपासना है। (पूरक कत०)
मुस्कान यदि एक बूद आँसूके साथ हो तो (पूरक कर्ता कत०)
कहीं ज्यादा खूबसूरत होती है।
अत्यन्त मधुर और सुगन्धवाला फूल मनोज्ञ
और विनीत होता है। (पूरक कत०)
मित्रताका अर्थ है पारस्परिक ईमानदारी भावनात्मक
लगाव और मानसिक समदृष्टि। (कर्ता कत० उ०)
इसका सम्यक् परिज्ञान आप ही हो जाएगा। (पूरक कत०)
उनकी शैलीपर पाश्चात्य प्रभाव बहुत है। (कम कम० उ०)
सभी आधुनिक कवियोंने विनय मनोनिवेशके साथ
अपनाए हैं। (पूरक कत०)

(करण कम०)

कवि श्रीकी श्रृंगार-साधनामे बडा कौशल दिखाया है। (अधि० कम०)

२४३ सख्यावाचक विशेषण

ये तीन प्रकारके हैं—निश्चितसख्यावाचक, अनिश्चितसख्यावाचक और परिमाणवाचक।

२४३१ निश्चितसख्यावाचक विशेषण

गणना

सन १८५७मे प्रथम स्वतन्त्रता-सग्राम हुआ था।	(अधि० कत कम०)
पाच वर्षमे हमने बहुत तरक्की कर ली।	(अधि० कम०)
दस तीस पाच लाख आदमियोंने गणतन्त्र दिवस समारोह देखा।	(कर्ता कम०)
हिन्दी-साहित्यका प्रारम्भ एक हजार वर्ष पहले हुआ।	(पूरक, कत कम०)
आधा सेर दूध काफी रहेगा।	(कम, कम०, उ०)
परे सूटमे ढाई गज कपडा लगेगा।	(परक, कत कम०)
चौथाई मकान उनके पास है।	(कम, कम० उ०)
सवा तोले सोनेकी एक चूडी बनेगी।	(करण, कत कम०)
साढे पाच बजे भाषण शुरू होगा।	(अधि०, कत कम०)
सवा लाखका महल ढह गया।	(उ०, कत कम०)
रुपएमे चौदह आने काम हुआ है।	(उ०, कत कम०)

क्रम

पहला लडका बहुत लाडला होता है।	(कर्ता, कत० उ०)
तीसरे दिन सब लोग चले गए।	(अधि० कत०)
पन्द्रहवें अध्यायमे नखशिख वर्णन है।	(अधि० कत०)
अब पचासवें वर्षमे हूँ।	(अधि० कत०)
तुलसीदासका प्रथम श्रेणीके रामभक्तोंमे स्थान है।	(अधि० कत०)
प्रियप्रवासके षष्ठ सर्गमे पवनदूतिका प्रसग है।	(अधि०, कत०)
दूजका चाँद एक रेखाके समान ही होता है।	(कर्ता कत० उ०)
वसन्त पचमीका मेला बहुत बडा है।	(कर्ता कत० उ०)

आवृत्ति

महाजन किसानोसे दुगुना-चौगुना रुपया वसूल करते है। (कम कत०)
हमारा मकान इससे तिगुना बडा है। (पूरक कत०)
सौगुना रुपया देनेपर भी नही बेचगा। (गौ०कम कत०)
अलकारोसे नायिकाकी शोभा द्विगुणित हो गई। (पूरक कत०)
चौहरी तह है इकहरा कपडा देखा। (कर्ता कत० उ० कम कत०)

समुदाय

दोनो हाथोम बहुत दद हो रहा है। (अधि० कत०)
बीसो सिपाही भागकर पहाडोम छिप गए। (कर्ता कत० उ०)
यहाँ तो तीसो दिनका यही काम है। (कम कत०)
चारो भाइयोकी शोभा देखत बनती है। (कम कम० उ०)
बारहो महीने यही धधा लगा रहता है। (अधि० कम०)
पाचो के-पाचो गिलास एक बारम ही टूट गए। (उ० कत कम०)
एक जोडी जूता कल ही खरीदा है। (कम कम० उ०)
एक दजन बटन तीन आनेम है। (कर्ता कत० उ०)
ढाई रुपएम एक कौडी बतनोपर कलई कर रहा है। (अधि० कत०)
आग पाच रुपए सकडाके भावसे बिक रहा है। (करण कत कम०)

प्रत्येक

हर मनुष्य अपने भाग्यका निर्माता स्वय है। (कर्ता कत० उ०)
हरएक बच्चेके लिए शिक्षा अनिवाय है। (कम कत०)
विद्यार्थीको एक पल और धनार्थीको एक कण
भी नही खोना चाहिए। (कम कत०)
आपत्तिम प्रत्येक व्यक्ति अपनको पहचान लेता है। (कर्ता, कत० उ०)
रोगीको दवा चार-चार घण्टे बाद देनी है। (अधि० कम०)
एक एक साडी ढाई ढाई सौ रुपएकी है। (कर्ता अधि०, कत०)
सबने पाच-पाच हजार रुपया लगाकर काम
शुरू किया। (पूरक, कम०)
सभी ब्राह्मणोको सवा-सवा गजका टुकडा दे दो। (कम कत०)
दिन भरका थका आया था। (कर्ता कत०, उ०)

२ ४ ३ २ अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

संख्यावाचक विशेषण 'एक'

कल वह मेहमान है जो एक बार आकर फिर जानेका नाम नहीं लेता।	(अधि०, कर्तृ०)
एक आ रहा है एक जा रहा है।	(कर्ता कर्तृ० उ०)

संख्यावाचक विशेषण 'एक'+अव्यय (मात्र, सी, आदि), अन्य शब्दों के साथ

सत्य और अहिंसा ही एकमात्र धर्मका मार्ग है।	(पूरक, कर्त ०)
सबके लिए एकसी साड़ियां खरीद ली हैं।	(कर्म कर्म०, उ०)
बच्चे हर समय एक दूसरेसे लड़ते रहते हैं।	(करण, कर्त ०)
कई एक वर्ष बीत गए हैं।	(कर्ता, कर्त ०, उ०)
टोकरीमें कुछ एक आलू पड़े हैं।	(उ०, कर्तृ०कर्म०)
कक्षामें कितने एक लड़के हैं।	(कर्ता, कर्त ०, उ०)
कोई एक आदमी यह भी कह रहा था।	(कर्ता, कर्त ०, उ०)

संख्यावाचक विशेषण द्वित्व

एक एकको अच्छी तरह समझ लूगा।	(कर्म, कर्त ०)

संख्यावाचक विशेषण+संख्यावाचक विशेषण

दस एक दिनमें सब काम पूरा हो जाएगा।	(अधि०, कर्त कर्म०)
पचास-साठ रुपयेमें अच्छा मकान कहां मिलता है।	(करण, कर्म०)
सौ-पचास दे दिवाकर छुट्टी करो।	(कर्म कर्त ०)
चार छ घंटेमें कोई मुसीबत नहीं आ जाएगी।	(अधि०, कर्त ०)

अन्यसूचक 'और', 'अन्य', 'दूसरा'+अन्य शब्द भेद

राम नहीं आया और लड़का आया है।	(कर्ता कर्तृ०, उ०)
इससे क्या सम्बन्ध यह अन्य बात है।	(कर्ता, कर्त ० उ०)
किसी दूसरी लड़कीको ले आए हो।	(कर्म, कर्तृ०)
एक पढ़ता है दूसरा बेटा हर समय खेलता है।	(कर्ता कर्त ०, उ०)
पहले दिन सब चुप रहे पर दूसरे दिन फिर लड़ने लगे।	(अधि०, कर्तृ०)

मुझे और रुपया नहीं चाहिए। (कर्म कर्म० उ०)
यह काम और किसी व्यक्तिने किया है। (कर्ता कर्म०)
यह काम तुमने नहीं किसी और व्यक्तिने किया है। (कर्ता कर्म०)
राष्ट्रपति कोई और व्यक्ति है। (पूरक कर्त०)
राष्ट्रपति और कोई व्यक्ति है। (पूरक कर्त०)
तुम्हें और कुछ कहना है। (कर्म कर्म० उ०)
तुम्हारे साथ और कौन बच्चा आया है। (कर्ता कर्त० उ०)
हिन्दीके साथ और क्या विषय पढ़ा है। (कर्म कर्म० उ०)
घड़ीके अतिरिक्त और क्या-क्या सामान खोया है। (कर्म कर्म० उ०)
झगड़ा बढ़ानेके लिए औरको और बात कह रहे हैं। (कर्म कर्त०)

सर्वसूचक शब्द

मैं सब काम कर लूंगा। (कर्म कर्त०)
हम सब आज ही चले जाएंगे। (कर्ता कर्त० उ०)
मेहनत तो सब कोई मनुष्य करते हैं। (कर्ता कर्त० उ०)
सब कुछ सामान जुट गया। (उ० कर्त कर्म०)
सब का-सब भोजन तैयार हो गया। (उ० कर्त कर्म०)
सभी घरोंमें काम होता है। (अधि० कर्त कर्म०)
कुल कितने नम्बर मिले? (कर्म कर्म० उ०)
सारे शहरमें सजावट की गई। (अधि० कर्म०)
सकल समाजमें निन्दा हो रही है। (अधि०, कर्म०)

आधिक्य और न्यूनतासूचक शब्द

सेठके पास बहुत पैसा है। (पूरक कर्म०)
वर्षासे बहुतसे घर गिर गए। (उ० कर्त कर्म०)
युद्धमें बहुत सारे सिपाही मारे गए। (कर्म कर्म० उ०)
आज बहुत थोड़ी-सी चीनीसे काम चलाना होगा। (करण कर्म०)
एक सेरसे कुछ ज्यादा घी है। (कर्ता, कर्त० उ०)
कम से कम दामपर दे दो। (करण कर्त०)

अनेकतासूचक शब्द

अनेकों मनुष्य इस रोगसे पीड़ित हैं। (कर्ता, कर्त०, उ०)

उपवनमे अगणित पुष्प सौरभ बिखेर रहे हैं। (कर्ता, कर्त ०, उ०)
आकाशमे असख्य नक्षत्र ज्योति विकीर्ण कर रहे हैं। (कर्ता, कर्त ०, उ०)
पूजाकेलिए पान फूल आदि सामग्री ले आना। (कर्म, कर्त ०)
रूप, शील, शिक्षा इत्यादि सभी गुण हैं। (कर्ता, कर्त ०, उ०)

निश्चित गणनावाचक विशेषण→अनिश्चितसख्यावाचक विशेषण

बारातमे सौ एक आदमी आए होंगे। (कर्ता कर्त ० उ०)
एकाध दिनमे सब काम आ जाएगा। (अधि०, कर्म०)
दस-बीस रुपये हों तो कल तककेलिए दे दो। (कर्म कर्म०, उ०)
दोनो कपड़ोंके रगमे उन्नीस-बीसका अन्तर है। (पूरक, कर्त ०)
अपने सुखकेलिए सारा घर तीन-तेरह कर दिया। (पूरक, कर्म०)
शादीमे हजारों रुपयपर पानी फिर गया। (कर्म, कर्म० उ०)
सकड़ो वर्षोंसे यही परम्परा चली आ रही है। (अपा०, कर्त कर्म०)
आगमे पचासियों आदमी जल मरे। (कर्ता, कर्त ० उ०)

२४४ परिमाणवाचकविशेषण

इस वर्गके अनिश्चित परिणामसूचक विशेषण अनिश्चित सख्यावाचक भी हैं—

२४४१ अनिश्चित

और दूध नहीं चाहिए। (कर्म, कर्म० उ०)
सब घी उठाकर रख दो। (कर्म, कर्त ०)
सारा कपड़ा पचास रुपएका है। (कर्ता कर्त ० उ०)
समूचा चावल पुराना पड़ गया। (कर्ता, कर्त ० उ०)
अधिक रोटियाँ नहीं चाहिएँ। (कर्म, कर्म०, उ०)
शिक्षाकेलिए बहुत रुपएकी आवश्यकता है। (कर्म कर्म०, उ०)
कुछ रुपए हैं। (कर्म, कर्म०, उ०)
थोड़े कागज दे सकोगे ? (कर्म कर्त ०)
गाड़ी उलटनेमे सेरों दूध बह गया। (उ० कर्त कर्म०)
गोदाममे मनों अनाज पड़ा हुआ सड़ रहा है। (उ० कर्त कर्म०)
बहुत सारा काम तो हो ही चुका था। (कर्म कर्म०, उ०)
व्यापारमे थोड़ा बहुत लाभ तो होता ही है। (उ०, कर्त कर्म०)

हिन्दी-वाक्य विन्यास

मुझे और रुपया नहीं चाहिए । (कर्म कर्म० उ०)
यह काम और किसी व्यक्तिने किया है । (कर्ता कर्म०)
यह काम तुमने नहीं किसी और व्यक्तिने किया है । (कर्ता कर्म०)
राष्ट्रपति कोई और व्यक्ति है । (पूरक कर्त०)
राष्ट्रपति और कोई व्यक्ति है । (पूरक कर्त०)
तुम्हें और कुछ कहना है । (कर्म कर्म० उ०)
तुम्हारे साथ और कौन बच्चा आया है । (कर्ता कर्त० उ०)
हिन्दीके साथ और क्या विषय पढ़ा है । (कर्म कर्म० उ०)
घड़ीके अतिरिक्त और क्या-क्या सामान खोया है । (कर्म कर्म० उ०)
झगड़ा बढ़ानेके लिए औरकी और बात कह रहे हैं । (कर्म कर्त०)

सर्वसूचक शब्द

मैं सब काम कर लूंगा । (कर्म कर्त०)
हम सब आज ही चले जाएंगे । (कर्ता कर्त० उ०)
महनत तो सब कोई मनुष्य करते हैं । (कर्ता कर्त० उ०)
सब कुछ सामान जुट गया । (उ० कर्त कर्म०)
सब का-सब भोजन बेकार हो गया । (उ० कर्त कर्म०)
सभी धराम काम होता है । (अधि० कर्त कर्म०)
कुल कितने नम्बर मिले ? (कर्म कर्म० उ०)
सारे शहरमें सजावट की गई । (अधि० कर्म०)
सकल समाजमें निन्दा हो रही है । (अधि०, कर्म०)

आधिक्य और न्यूनतासूचक शब्द

सेठके पास बहुत पैसा है । (पूरक कर्म०)
वर्षासे बहुतसे घर गिर गए । (उ० कर्त कर्म०)
युद्धमें बहुत सारे सिपाही मारे गए । (कर्म, कर्म० उ०)
आज बहुत थोड़ी सी चीनीसे काम चलाना होगा । (करण कर्म०)
एक सेरसे कुछ ज्यादा घी है । (कर्ता कर्त० उ०)
कम से कम दामपर दे दो । (करण कर्त०)

अनेकतासूचक शब्द

अनेकों मनुष्य इस रोगसे पीड़ित हैं । (कर्ता कर्त० उ०)

उपवनमें अगणित पुष्प सौरभ बिखेर रहे हैं। (कर्ता, कर्तृ०, उ०)

आकाशमें असंख्य नक्षत्र ज्योति विकीर्ण कर रहे हैं। (कर्ता, कर्तृ०, उ०)

पूजाकेलिए पान फल आदि सामग्री ले आना। (कर्म, कर्तृ०)

रूप, शील, शिक्षा इत्यादि सभी गुण हैं। (कर्ता, कर्तृ०, उ०)

निश्चित गणनावाचक विशेषण→अनिश्चितसंख्यावाचक विशेषण

बारातमें सौ एक आदमी आए होंगे। (कर्ता कर्तृ०, उ०)

एकाध दिनमें सब काम आ जाएगा। (अधि०, कर्म०)

दस-बीस रुपये हों तो कल उनकेलिए दे दो। (कर्म, कर्म०, उ०)

दोनों कपड़ोंके रंगमें उन्नीस-बीसका अन्तर है। (पूरक, कर्तृ०)

अपने सुखकेलिए सारा घर तीन-तेरह कर दिया। (पूरक, कर्म०)

शादीमें हजारों रुपयोंपर पानी फिर गया। (कर्म, कर्म०, उ०)

सैकड़ों वर्षोंसे यही परम्परा चली आ रही है। (अपा० कर्तृ०कर्म०)

आगमें पचासियों आदमी जल मरे। (कर्ता कर्तृ० उ०)

२४४ परिमाणवाचकविशेषण

इस वर्गके अनिश्चित परिमाणसूचक विशेषण अनिश्चित संख्यावाचक भी हैं—

२४४१ अनिश्चित

और दूध नहीं चाहिए। (कर्म कर्म० उ०)

सब घी उठाकर रख दो। (कर्म, कर्तृ०)

सारा कपड़ा पचास रुपएका है। (कर्ता कर्तृ०, उ०)

समूचा चावल पुराना पड़ गया। (कर्ता, कर्तृ० उ०)

अधिक रोटियाँ नहीं चाहिएँ। (कर्म, कर्म०, उ०)

शिक्षाकेलिए बहुत रुपएकी आवश्यकता है। *(कर्म कर्म०, उ०)*

कुछ रुपए हैं। (कर्म, कर्म०, उ०)

थोड़े कागज दे सकोगे? (कर्म कर्तृ०)

गाड़ी उलटनेसे सेरों दूध बह गया। (उ०, कर्तृ कर्म०)

गोदाममें मनों अनाज पड़ा हुआ सड़ रहा है। (उ०, कर्तृ०कर्म०)

बहुत सारा काम तो हो ही चुका था। (कर्म कर्म० उ०)

व्यापारमें थोड़ा बहुत लाभ तो होना ही है। (उ०, कर्तृ कर्म०)

यामम कम ज्यादा होता रहता है। (उ०, कत कम०)
जरा से परावलिए जानरा मार दिया। (गौ०कम, भाव०)
बहुत-सा लाभ ता खचम ही निकल जाता है। (उ० कत कम०)
थोड से दिनका मह त ही जीवन भर सुख देती है। (कर्ता कतृ० उ०)

२४४२ निश्चित

दो हाथ जगहके लिए झगडा नही करना चाहिए। (गौ०कम, कम०)
तोले भर सानम चूडी बन जाएगी। (करण, कम०)
चायके लिए चार सेर दूध खरीदा है। (कम कम० उ०)
एक एक ल गेम चालीस चालीस गज कपडा लगता है। (उ० कत कम०)

२४५ अन्य शब्दभेद->विशेषण

इनके अतिरिक्त अन्य शब्द भेद भी कभी स्वत त्र रूपम और कभी अ य तत्त्वाके योगस विशेषणके समान प्रयुक्त हाते है।

२४५१ क्रियावाचक विशेषण

चलती गाडीस चढ़ता उतरता रहता है। (अपा० कतृ०)
गया समय हाथ नही आता। (अपा० कत०)
मरा हुआ साप गलेम डाल दिया। (कम कम०, उ०)
हँसता बच्चा अच्छा लगता है। (कर्ता, कत० उ०)
बडा चलता हुआ लडका है। (पूरक, कत०)
बाहर जाते समय टोकना नही चाहिए। (अधि० कम०)
मन्द मन्द सचरण करती हुई नौका हमार सम्मुख
नाचने लगती है। (कर्ता कत०, उ०)
उसस झाँकती हुई माती-सी श्वेत मुख छवि सभी
मिलकर एक हो गए है। (अपा०, कत०)

२४५२ सज्ञा और सवनाम

विभक्ति या सा प्रत्ययके यागके बाद भी विशेषणके रूपम प्रयुक्त हाते है—
हिन्दी साहित्यका इतिहास एक सहस्र वषका है। (कर्ता, कत० उ०)
पजाबी भाषाका हिन्दीपर बहुत प्रभाव है। (कर्ता, कत०, उ०)

गुप्तजीन साकेतम भारतीय सस्कृतिका आख्यान किया है।	(कम कम०, उ०)
तुभ-सा मूख काई नही है।	(कर्ता, कत ०, उ०)
लडकी ता गाय-सी सीधी है।	(पूरक, कत ०)

२ ४ ५ ३ 'सा' के स्थानपर 'जैसा' और 'सरीखा' शब्दोका प्रयोग भी होता ह।

तुम जसे लडकेसे ता कोइ वात भी न कर।	(करण, कत ०)
रानी जसी मूखा काई लडकी नही है।	(पूरक, कत ०)
अजु न सरीखा धनुषधारी कौन है ?	(उ० विस्तार कत ०)
भोज सरीखा प्रतापी राजा नही हुआ।	(उ० विस्तार कत ०)

२ ४ ५ ४ अन्य शब्द भेदोमे 'का-सा' के योगसे विशेषण निष्पन्न होते है—

एकदम तोते-की-सी नाक ह।	(कर्ता, कत ०, उ०)
गधे-की सी आवाजम क्या गा रह हा।	(करण, कत ०)
बन्दर के से मुह वाला लडका बाल रहा था।	(कर्ता, कत ०, उ०)
नवाबों के से वस्त्र पहनता है।	(कम, कत ०)

२ ४ ६ विशेषण+-सा—हीनतासूचक

विशेषणाके साथ सा' प्रत्यय जुड जानेपर हीनताका बाध होता है—

अठन्नी खोटी-सी लग रही है।	(पूरक, कम०)
बहुत-सा धन कमा चुके ह।	(कम, कत ०)
लडका दुबला-सा लग रहा है।	(पूरक, कम०)

२ ४ ७ विशेषण-द्वित्व और विशेषण-युग्मक प्रयोग

सुन्दर-सुन्दर फूल खिल रह है।	(उ०, कत कम०)
हरे हरे खत लहलहा रह है।	(उ०, कत कम०)
पीली-पीली सरसा फूल रही ह।	(उ०, कत कम०)
सबको पाच-पाँच आम द दो।	(कम, कत ०)
काली-काली कायल बाली—होली हाली होली।	(कर्ता, कत ० उ०)
सभी छोटे छोटे घराम रह रह हैं।	(अधि०, कत ०)

भले भले लोगोंको समाजमें रहना चाहिए। (अधि०, भाव०)
कौन-कौन बच्चा स्कूल जाता है? (कर्ता कत० उ०)
दिनमें क्या-क्या काम किया। (कम कम० उ०)
कोई कोई लडका खड़ा हुआ था। (कर्ता कत्० उ०)
आज न जाने कैसा-कैसा दर्द हो रहा है। (कम कम० उ०)
ऐसे ऐसे धूर्तोंसे तो दूर ही रहना चाहिए। (अपा० भाव०)
तुम्हारी कक्षामें कैसी-कैसी लडकियाँ है। (कर्ता कम० उ०)
नया-नया घर चमक रहा है। (उ०, कत कम०)
ताजा-ताजा मक्खन मिलता ही कब है। (कर्ता, कत० उ०)
दीवार कुछ ऊँची ऊँची लग रही है। (पूरक कत०)
सिर कुछ भारी भारी हो रहा है। (पूरक कत०)
गज गज भर कपडा काफी रहेगा। (कम, कम० उ०)
पुराने-पुराने कपडे ही दान कर दो। (कम कत०)
बड़ो-बड़ोंकी बातोंमें नहीं बोलना चाहिए। (अधि० भाव०)
छोटों छोटोंको आगे बठा दो। (कम कत्०)
दो-दो लडकोंकी पंक्तियाँ बनाओ। (कम कत०)
इस बल्बमेंसे लाल हरा प्रकाश निकल रहा है। (पूरक कत कम०)
कपोलों कन्धों एवं पृष्ठ भागपर रुपहले सुनहले बाल
बिखरे हैं। (कर्ता कत०, उ०)
उतना ज्ञान हिन्दीमें गिने चुने कवियोंको ही है। (गौ०कम कम०)
एक ही पदार्थके भिन्न भिन्न स्वरूपोंको स्पष्ट करते हैं (कम कत्०)

२४८ बलद्योतक गुणवाची विशेषण

इन विशेषणोंमें पहला पद हिन्दीका होता है और दूसरा वही अर्थ रखने वाला फारसीका—

सफेद-बुर्राक साडी ही अच्छी लगती है। (कम कम० उ०)
उसकी आँखें लाल सुर्ख हो रही है। (पूरक, कत०)
डरके मारे चेहरा पीला-जर्द पड गया। (पूरक कत०)

२४६ तुलनात्मक विशेषण

२४६१ मूलावस्था

सीता सुन्दर है।	(पूरक, कत०)
काला घोडा दौड रहा है।	(कर्ता, कत० उ०)

२४६२ उत्तरावस्था

उत्तरावस्थाम दोनी तुलना की जाती है। इसम कभी साम्य कभी आधिक्य और कभी न्यूनताका उल्लेख होता है।

साम्यसूचक

लक्ष्मण जितने वीर थे उतने ही चचल थे।	(पूरक कत०)
जो जितना अधिक बोलता है	(कर्म कत०)
वह उतना ही बडा झूठा है।	(पूरक, कत०)
प्यासेम पानेका विधान उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना गा देनेका।	(पूरक कत०)
जितना ही बडा अनुभव होगा उतना ही बडा कलाकार होगा।	(कर्ता कत०, उ०)

आधिक्यसूचक

राम लक्ष्मणसे अधिक गम्भीर थे।	(पूरक, कत०)
बच्चा फूलसे ज्यादा खूबसूरत है।	(पूरक, कत०)
पालनेवाला मारनेवालेसे अधिक महान होता है।	(पूरक कत०)
कुलपति-कन्या राजकन्यासे अधिक सुन्दर और सुशील है।	(पूरक, कत०)
दान देनेम कर्णसे बढकर कोई नहीं हुआ।	(कर्ता, कत० उ०)
युवराज राजाकी अपेक्षा अधिक लोकप्रिय है।	(पूरक कत०)
हम कलकी अपेक्षा अधिक सावधान हैं।	(पूरक कत०)
उन्हें दृढतर प्रबल प्रमाण देना होगा।	(कर्म, कर्म०, उ०)

न्यूनतासूचक

राम सौन्दयमे कामदेवसे कम नहीं थे। (पूरक कत०)
मानव मनसे सूक्ष्मतर विषयकी चर्चा करते हैं। (कम, कत०)
तुमही किससे घटकर हो ? (पूरक कत०)
इससे बदतर लेख तो आज तक देखा नहीं। (कम कम० उ०)

२ ८ ६.३ उत्तमावस्थामे समुदायसे तुलना होती है—

सबसे + विशेषण

इश्वर हमारे ज्ञानमे सबसे बडा झूठा और छलिया और मक्कार है। (पूरक कत०)
मीठा बोलना सबसे बडा दान है। (पूरक कत०)
प्रमके बाद सबसे बडा और सबसे अमोघ अस्त्र है यही बौद्धिक घणा। (कर्ता कत० उ०)
क्रियाका रूप न लेनेवाले शब्द आदशवादके सबसे बडे शत्रु है। (पूरक कत०)
विचार करना सबसे मुश्किल काम है। (पूरक कत०)

विशेषण + तम

दशनशास्त्र उच्चतम सगीत है। (पूरक कत०)
हमारे जीवनकी सुन्दरतम आवश्यकता किसी वस्तुका प्रेम करना है। (पूरक, कतृ०)
जीवनकी गहनतम घटनाएँ किसी अनजाने क्षणमे ही घट जाती है। (उ०, कतृ कम०)
मित्र सर्वोत्तम सम्पत्ति है। (पूरक कतृ०)
सत्य हमेशा सुन्दरतम और सवश्रेष्ठ होता है। (पूरक, कत०)
पृथ्वीराजरासो हिन्दीका प्राचीनतम महाकाव्य है। (पूरक कत०)
वह अभिन्नतम अग है। (पूरक कतृ०)
वात्सल्यके क्षेत्रमे सूर श्रेष्ठतम है। (पूरक कतृ०)
मानवकेलिए झूठ छल और मक्कारी सर्वाधिक सहज है। (पूरक, कतृ०)

विशेषण+से+विशेषण

वे अधिक-से अधिक यह करग कि विद्यालयमे
निकाल देंगे। (कम कत०)
ऊँची-से ऊँची चोटीपर पहुँचना हो तो अपन उद्योगको (अधि०, कम०)
निचली-से निचली सतहसे प्रारम्भ करो। (अपा०, कतृ०)
गरीब से-गरीब व्यक्ति भी इसान हो सकता है। (कर्ता, कतृ० उ०)
एमे कार्योम लगना चाहिए जिनका बुरा पहलू
छोटे से छोटा हो। (पूरक, कतृ०)
वह बुरा-से-बुरा काम भी कर सकता है। (कम कतृ०)

धार्मिताकी दृष्टिसे विशेषणाकी गणना 'नाम के अतगत होती है। यह सवथा उपयुक्त भी है। आज हिन्दीम अनेकानेक शब्द एसे हैं जो मूलत विशेषण रह चुके हैं लेकिन आज वे पूणरूपेण सना शब्द बन हुए है। ऊपरके विवेचनम इस प्रवत्तिकी आर सकेत किया गया है।

२५ क्रिया—वाक्य-विन्यास

२५१ अकर्मक और सकर्मक

२५११ अकमक क्रियाएँ

मनुष्य बहुत होते हैं पर मनुष्यता विरलेम
होती है। (कन० सावकालिक, विधा०)
निधन मनुष्य प्रसन्न हो सकता है पर प्रसन्न
मनुष्य निधन नही। (कन० सावकालिक सम्भा०)
सूय निकलता है। (कतृ० सावकालिक विधा०)
ईश्वर है। (कत०, सावकालिक, विधा०)
शेखर दिन भर भटकता रहा। (कतृ० अभूत०, विधा०)

२५१२ सकमक क्रियाएँ

सम्पादकने एक रचना देखी। (कम०, पूभूत० विधा०)
उसन गतको दूध पिया। (कम० पूभूत०, विधा०)

मैं तो कुछ और ही समझा था। (कतृ० पूभूत० विधा०)
उसका अभिप्राय समझते हुए कहा। (भाव० पूभूत० विधा०)
क्यो उसने शशिको अपना सम्मति नही दी थी। (कम० भूत० जिज्ञा०)
पडित श्रोताओको क्या सुनाते हैं। (कत० तात्कालिक विधा०)

२५२ प्रेरणार्थक क्रियाएँ

हिन्दीमे प्रेरणार्थक क्रियाओका महत्त्वपूण स्थान है। मूल अकमक और सकमक प्रत्यय योगके उपरान्त निष्पन्न सकमक धातुआमे प्रत्यय योगसे प्रेरणार्थक धातुएँ निष्पन्न होती है। वस्तुत प्रेरणार्थकमे सम्बोधित व्यक्तिकी अपेक्षा किसी अन्य व्यक्तिसे कोई काम करानेकी आकाक्षा विशेष रहती है। यही प्रयोजन प्रेरणामे निहित है। कभी-कभी वक्ता सम्बोधित व्यक्तिकेलिए ही प्रेरणार्थक रूपोका प्रयोग करता है, यथा—

मैं तुमसे काम कराऊगा।
मैं तुमसे काम करवाऊँगा।

ऐसे प्रयोगोमे प्रेरणाकी अपेक्षा आग्रह अथवा आदेशका भाव ही प्रधान रहता है। तथाकथित प्रथम और द्वितीय प्रेरणार्थकमे कोई अर्थमूलक अन्तर नही होता इसीलिए व्याकरण-सम्मत प्रथम और द्वितीय प्रेरणार्थकको मिथ्या प्रेरणार्थक कहा गया है। वास्तवमे यह परिवतन ध्वनिमूलक परिवतनकी दृष्टिसे महत्त्वपूण है अत ध्वनि विकासके अन्तगत विवेच्य है।

२५२१ अकमक—व्यजनान्त

अविधा० √चल→सविधा० √चला प्रेविधा० √चलवा
मैं चलता हू। (कतृ० वत० विधा०)
मैं गाडी चलाता हूँ। (कतृ०, वत०, विधा०)
मैं ड्राइवरसे गाडी चलवाता हूँ। (कतृ० वत०, विधा०)

२५२२ अकमक—स्वरान्त

अविधा० √नहा→सविधा० √नहला, प्रेविधा० √नहलवा
मैं नहाता हूँ। (कत० वत० विधा०)
मैं बच्चोको नहलाता हूँ। (कत० वत०, विधा०)
मैं नौकरसे बच्चोको नहलवाता हूँ। (कत० वत०, विधा०)

अक्रिधा० √सो→सक्रिधा० √सुला, प्रेक्रिधा० √सुलवा

मैं सोता हूँ । (कत ० वत० विधा०)

मैं उसे सुलाता हूँ । (कत् ०, वत०, विधा०)

मैं उससे बच्चाको सुलवाता हूँ । (कत ० वत० विधा०)

२ ५ २ ३ सकमक—व्यजनान्त

सक्रिधा० √कर्→प्रेक्रिधा० √करा, √करवा

मैं काम करता हूँ । (कत् ० वत० विधा०)

मैं उससे काम कराता/करवाता हूँ । (कत ० वत० विधा०)

सक्रिधा० √काट→प्रेक्रिधा० √कटा √कटवा

तुम पेड काटते हो । (कत् ०, वत० विधा०)

तुम पेड कटाते/कटवाते हो । (कत ०, वत० विधा०)

२ ५ २ ४ सकर्मक—स्वरात

सक्रिधा० √खिला→प्रेक्रिधा √खिलवा

मैं भूखोको भोजन खिलाता हूँ । (कत् ० वत०, विधा०)

मैं भूखोको भोजन खिलवाता हूँ । (कत् ० वत० विधा०)

सक्रिधा० √सी→प्रेक्रिधा० √सिला, √सिलवा

मैं कपडा सीता हूँ । (कत ०, वत०, विधा०)

मैं कपडा सिलाता/सिलवाता हूँ । (कत ०, वत० विधा०)

सक्रिधा० √छू→प्रेक्रिधा √छुवा, √छुला

मैं उसे छूता हूँ । (कत् ०, वत० विधा०)

मैं उसे छुआता/छुलाता हूँ । (कत ० वत०, विधा०)

सक्रिधा० √दे→प्रेक्रिधा० √दिला, √दिलवा

वह लडडू देता है । (कत ० वत० विधा०)

वह लडडू दिलाता/दिलवाता है । (कत् ० वत० विधा०)

सक्रिधा० √धो→प्रेक्रिधा० √धुला, धुलवा

मैं कपडे धोता हूँ । (कत ० वत० विधा०)

मैं धोबी धुलाता/धुलवाता हूँ । (कत ० वत०, विधा०)

विशेष—प्रेरणार्थक क्रियाओमें कर्ता स्वय कार्य नही करता, केवल प्रेरणा देता है अत ऐसी सरचनाओमे तथाकथित कर्ताको प्रेरक कर्ता कहना समीचीन होगा ।

२ ५ ३ क्रियारूपान्तरमूलक

क्रिया विधान मर्मी होती है हिन्दी क्रियाके विधानमें लिंग वचन, पुरुष काल अर्थ और वाच्यका सक्रिय योग रहता है।

२ ५ ३ १ कर्तृवाच्य (अकर्मक)

भूत विधानार्थी

मैं/तू/वह चलता था।	(पु० एक०, कत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप चलते थे।	(पु० एक० (आदर), बहु०, कत० कृ०)
मैं/तू/वह चलती थी।	(स्त्री० एक०, कत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप चलती थीं।	(स्त्री०, एक०, (आदर) बहु० कत० कृ०)
मैं/तू/वह चला/चला था।	(पु० एक०, भूत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप चले/चले थे।	(पु० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)
मैं/तू/वह चली/चली थी।	(स्त्री० एक० भूत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप चली/चलीं थीं।	(स्त्री० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)

भूत सभावनार्थी

मैं चला होऊँ।	(पु०, एक०, भूत० कृ०)
तू/वह चला हो।	(पु० एक० भूत० कृ०)
तुम चले होओ।	(पु० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)
हम/वे/आप चले हों।	(पु० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)
मैं चली होऊँ।	(स्त्री० एक० भूत० कृ०)
तू/वह चली हो।	(स्त्री० एक० भूत० कृ०)
तुम चली होओ।	(स्त्री० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)
हम/वे/आप चली हों।	(स्त्री० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)

भूत संदेहार्थी

मैं चला होऊँगा।	(पु०, एक० भूत० कृ०)
तू/वह चला होगा।	(पु० एक० भूत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप चले होंगे।	(पु० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)
मैं चली होऊँगी।	(स्त्री०, एक० भूत० कृ०)

तू/वह चली होगी। (स्त्री० एक०, भूत० कृ०)
हम/तुम/व/आप चली होगी। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)

भूत संकेतार्थी

मैं/तू/वह चलता होता। (पु० एक० वर्त० कृ०)
हम/तुम/वे/आप चलते होते। (पु० एक० (आदर) बहु०, वर्त० कृ०)
मैं/तू/वह चलती होती। (स्त्री० एक० वर्त० कृ०)
हम/तुम/व/आप चलती होतीं। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० वर्त० कृ०)
मैं/तू/वह चला होता। (पु० एक० भूत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप चले होते। (पु०, एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)
मैं/तू/वह चली होती। (स्त्री०, एक०, भूत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप चली होतीं। (स्त्री०, एक० (आदर) बहु०, भूत० कृ०)

वर्तमान विधानार्थी

मैं चलता हूँ। (पु० एक० वर्त० कृ०)
तू/वह चलता है। (पु०, एक०, वर्त० कृ०)
तुम चलते हो। (पु० एक० (आदर), बहु०, वर्त० कृ०)
हम/वे/आप चलते हैं। (पु० एक० (आदर) बहु० वर्त० कृ०)
मैं चलती हूँ। (स्त्री० एक०, वर्त० कृ०)
तू/वह चलती है। (स्त्री० एक० वर्त० कृ०)
तुम चलती हो। (स्त्री० एक० (आदर), बहु०, वर्त० कृ०)
हम/वे/आप चलती हैं। (स्त्री० एक० (आदर) बहु०, वर्त० कृ०)
मैं चला हूँ। (पु० एक०, भूत० कृ०)
तू/वह चला है। (पु० एक०, भूत० कृ०)
तुम चले हो। (पु० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)
हम/वे/आप चले हैं। (पु० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)
मैं चली हूँ। (स्त्री० एक० भूत कृ०)
तू/वह चली है। (स्त्री० एक० भूत० कृ०)
तुम चली हो। (स्त्री० एक० (आदर), बहु० भूत० कृ०)
हम/वे/आप चली हैं। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)

वर्तमान सम्भावनार्थी

मैं चलता होऊँ। (पु० एक० वर्त० कृ०)
तू/वह चलता हो। (पु०, एक०, वर्त० कृ०)
तुम चलते हो। (पु० एक० (आदर) बहु०, वर्त० कृ०)
हम/तुम/वे चलते हों। (पु०, एक० (आदर), बहु०, वर्त० कृ०)
मैं चलती होऊँ। (स्त्री० एक०, वर्त० कृ०)
तू/वह चलती हो। (स्त्री०, एक० वर्त० कृ०)
तुम चलती हो। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० वर्त० कृ०)
हम/वे/आप चलती हों। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० वर्त० कृ०)

वर्तमान सन्देहार्थी

मैं चलता होऊँगा। (पु० एक० वर्त० कृ०)
तू/वह चलता होगा। (पु० एक० वर्त० कृ०)
तुम चलते होंगे। (पु०, एक० (आदर) बहु० वर्त० कृ०)
हम/वे/आप चलते होंगे। (पु० एक० (आदर), बहु० वर्त० कृ०)
मैं चलती होऊंगी। (स्त्री० एक० वर्त० कृ०)
तू/वह चलती होगी। (स्त्री० एक०, वर्त० कृ०)
तुम चलती होगी। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० वर्त० कृ०)
हम वे आप चलती होंगी। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० वर्त० कृ०)

वर्तमान संकेतार्थी

मैं/तू/वह चलता। (पु० एक० वर्त० कृ०)
हम/तुम/वे/आप चलते। (पु० एक० (आदर) बहु०, वर्त० कृ०)
मैं/तू/वह चलती। (स्त्री० एक० वर्त० कृ०)
हम/तुम/वे आप चलतीं। (पु० एक० (आदर) बहु०, वर्त० कृ०)

वर्तमान आज्ञार्थी

तू चल। (उभय० एक० धातुसिद्ध)
वह चले। (उभय० एक० धातुसिद्ध)
तुम चलो। (उभय० एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)
वे/आप चलें। (उभय० एक० (आदर) बहु०, धातुसिद्ध)

वर्तमान अनुमत्यार्थी

मैं चलू । (उभय० एक० धातुसिद्ध)
हम चलें । (उभय०, एक० (आदर), बहु० धातुसिद्ध)

भविष्य विधानार्थी

मैं चलूगा । (पु० एक०, धातुसिद्ध)
तू/वह चलेगा । (पु०, एक० धातुसिद्ध)
तुम चलोगे । (पु० एक० (आदर), बहु० धातुसिद्ध)
हम/तुम/वे/आप चलेंगे । (पु०, एक० (आदर), बहु० धातुसिद्ध)
मैं चलूगी । (स्त्री०, एक० धातुसिद्ध)
तू/वह चलेगी । (स्त्री० एक०, धातुसिद्ध)
तुम चलोगी । (स्त्री० एक० (आदर), बहु०, धातुसिद्ध)
हम/तुम/वे/आप चलेंगी । (स्त्री० एक०, (आदर) बहु० धातुसिद्ध)

भविष्य सम्भावनार्थी

(शायद) मैं चलू । (उभय०, एक०, धातुसिद्ध)
(शायद) तू/वह चले । (उभय० एक० धातुसिद्ध)
(शायद) तुम चलो । (उभय० एक०, (आदर) बहु०, धातुसिद्ध)
(शायद) हम/वे/आप चलें । (उभय० एक० (आदर), बहु०, धातुसिद्ध)

भविष्य आज्ञार्थी

तू चलना । (उभय० एक० क्रियार्थक संज्ञा)
तुम/आप चलना । (उभय० एक० (आदर) बहु० क्रियार्थक संज्ञा)

भविष्य आदरार्थी

आप चलियेगा । (उभय० एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)

२५३२ कर्तृवाच्य (सकर्मक)

भूत विधानार्थी

मैं/तू/वह ( ) खाता था । (पु० एक०, वर्त० कृ०)
हम/तुम/वे/आप ( ) खाते थे । (पु० एक० (आदर), बहु० वर्त० कृ०)

मैं/तू/वह (   ) पाती थी। (स्त्री० एक० वत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप (   )
पाती थीं। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० वत० कृ०)

भूत संकेतार्थी

मैं/तू/वह (   ) पाता होता। (पु० एक० वत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप (   ) पाते होते। (पु० एक० (आदर) बहु० वत० कृ०)
मैं/तू/वह (   ) पाती होती। (पु० एक०, वत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप (   )
पाती होतीं। (पु० एक० (आदर) बहु० वत० कृ०)

वर्तमान विधानार्थी

मैं (   ) पाता हूँ। (पु० एक०, वत० कृ०)
तू/वह (   ) पाता है। (पु० एक० वत० कृ०)
तुम (   ) पाते हो। (पु० एक० (आदर) बहु० वत० कृ०)
हम/वे/आप (   ) पाते हैं। (पु० एक० (आदर) बहु० वत० कृ०)
मैं (   ) पाती हूँ। (स्त्री० एक० वत० कृ०)
तू/वह (   ) पाती है। (स्त्री० एक० वत० कृ०)
तुम (   ) पाती हो। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० वत० कृ०)
हम/वे/आप (   ) पाती हैं। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० वत० कृ०)

वर्तमान सम्भावनार्थी

मैं (   ) पाता होऊँ। (पु० एक० वत० कृ०)
तू/वह (   ) पाता हो। (पु० एक० वत० कृ०)
तुम (   ) पाते होओ। (पु० एक० (आदर) बहु० वत० कृ०)
हम/वे/आप (   ) पाते हों। (पु० एक० (आदर) बहु० वत० कृ०)
मैं (   ) पाती होऊँ। (स्त्री० एक० वत० कृ०)
तू/वह (   ) पाती हो। (स्त्री० एक० वत० कृ०)
तुम (   ) पाती होओ। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० वत० कृ०)
हम/वे/आप (   ) पाती हों। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० वत० कृ०)

वर्तमान संदेहार्थी

मैं (   ) पाता होऊँगा। (पु० एक० वत० कृ०)

तू/वह ( ) पाता होगा। (पु०, एक०, वत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप ( )
पाते होंगे। (पु०, एक० (आदर), बहु०, वत० कृ०)
मैं ( ) पाती होऊँगी। (स्त्री०, एक०, वत० कृ०)
तू/वह ( ) पाती होगी। (स्त्री०, एक०, वत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप ( )
पाती होंगी। (स्त्री०, एक०, (आदर) बहु०, वत० कृ०)

वतमान सकेतार्थी

मैं/तू/वह ( ) पाता। (पु०, एक०, वत० कृ०)
हम/तुम/व/आप ( ) पाते। (पु०, एक० (आदर), बहु०, वत० कृ०)
मैं/तू/वह ( ) पाती। (स्त्री०, एक०, वत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप ( ) पाते।(स्त्री०, एक० (आदर), बहु०, वत० कृ०)

वतमान आज्ञार्थी

तू/वह ( ) पाए। (उभय०, एक०, धातुसिद्ध)
तुम ( ) पाओ। (उभय०, एक० (आदर), बहु०, धातुसिद्ध)
वे/आप ( ) पाएँ। (उभय०, एक० (आदर), बहु०, धातुसिद्ध)

वतमान अनुमत्यार्थी

मैं ( ) पाऊँ। (उभय० एक०, धातुसिद्ध)
हम ( ) पाएँ। (उभय०, एक० (आदर), बहु०, धातुसिद्ध)

भविष्य विधानार्थी

मैं ( ) पाऊँगा। (पु०, एक०, धातुसिद्ध)
तू/वह ( ) पाएगा। (पु०, एक०, धातुसिद्ध)
तुम ( ) पाओगे। (पु०, एक० (आदर) बहु०, धातुसिद्ध)
हम/वे/आप ( ) पाएगे। (पु० एक० (आदर), बहु०, धातुसिद्ध)
मैं ( ) पाऊगी। (स्त्री० एक०, धातुसिद्ध)
तू/वह ( ) पाएगी। (स्त्री०, एक०, धातुसिद्ध)
तुम ( ) पाओगी। (स्त्री०, एक० (आदर), बहु०, धातुसिद्ध)
हम/वे/आप ( ) पाएगी। (स्त्री०, एक० (आदर), बहु०, धातुसिद्ध)

भविष्य संभावनार्थी

(शायद) मैं (   ) पाऊं। (उभय० एक० धातुसिद्ध)

(शायद) तू/वह (   ) पाए। (उभय०, एक०, धातुसिद्ध)

(शायद) तुम (   ) पाओ। (उभय०, एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)

(शायद) हम/वे/आप (   ) पाएं। (उभय०, एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)

भविष्य आज्ञार्थी

तू (   ) पाना। (उभय०, एक० क्रियार्थक संज्ञा)

तुम/आप (   ) पाना। (उभय० एक० (आदर) बहु० क्रियार्थक संज्ञा)

भविष्य आदरार्थी

आप (   ) पाइएगा। (उभय०, एक० (आदर) बहु०, धातुसिद्ध)

२५३३ कर्मवाच्य (कर्तृ-कर्मणि प्रयोग)

२५३४ कर्मवाच्य (कर्म-कर्मणि प्रयोग) (पृष्ठ १३५ पर देख)

भूत विधानार्थी

मैं/तू/वह देखा जाता था। (पु०, एक० वत० कृ०)

हम/तुम/वे/आप देखे जाते थे। (पु०, एक० (आदर) बहु०, वत० कृ०)

मैं/तू/वह देखी जाती थी। (स्त्री० एक०, वत० कृ०)

हम/तुम/वे/आप देखी जाती थीं। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० वत० कृ०)

मैं/तू/वह देखा गया/गया था। (पु० एक०, भूत० कृ०)

हम/तुम/वे/आप देखे गए/गए थे। (पु० एक० (आदर), बहु० भूत० कृ०)

मैं/तू/वह देखी गई/गई थी। (स्त्री०, एक० भूत० कृ०)

हम/तुम/वे/आप देखी गई/गई थीं। (स्त्री० एक० (आदर), बहु०, भूत० कृ०)

२५३३ कर्मवाच्य (कर्तृ-कर्मणि प्रयोग)

भूत विधानार्थी	मैंने/तूने/उसने/हमने/तुमने/उन्होंने/आपने	( ) पाया/पाया था।	(पु०, एक०, भूत० कृ०)
	" " " " " " "	( ) पाए/पाए थे।	(पु०, बहु०, भूत० कृ०)
	" " " " " " "	( ) पाई/पाई थी।	(स्त्री० एक०, भूत० कृ०)
	" " " " " " "	( ) पाइ/पाई थी।	(स्त्री०, बहु०, भूत० कृ०)
भूत सम्भावनार्थी	मैंने/तूने/उसने/हमने/तुमने/उन्होंने/आपने	( ) पाया हो।	(पु०, एक०, भूत० कृ०)
	" " " " " " "	( ) पाए हों।	(पु०, बहु०, भूत० कृ०)
	" " " " " " "	( ) पाई हो।	(स्त्री०, एक०, भूत० कृ०)
	" " " " " " "	( ) पाई हों।	(स्त्री०, बहु०, भूत० कृ०)
भूत सन्देहार्थी	मैंने/तूने/उसने/हमने/तुमने/उन्होंने/आपने	( ) पाया होगा।	(पु०, एक०, भूत० कृ०)
	" " " " " " "	( ) पाए होंगे।	(पु०, बहु०, भूत० कृ०)
	" " " " " " "	( ) पाई होगी।	(स्त्री०, एक०, भूत० कृ०)
	" " " " " " "	( ) पाई होंगी।	(स्त्री० बहु०, भूत० कृ०)
भूत संकेतार्थी	मैंने/तूने/उसने/हमने/तुमने/उन्होंने/आपने	( ) पाया होता।	(पु०, एक०, भूत० कृ०)
	" " " " " " "	( ) पाए होते।	(पु०, बहु०, भूत० कृ०)
	" " " " " " "	( ) पाई होती।	(स्त्री०, बहु०, भूत० कृ०)
	" " " " " " "	( ) पाई होतीं।	(स्त्री०, बहु०, भूत० कृ०)
वर्तमान विधानार्थी	मैंने/तूने/उसने/हमने/तुमने/उन्होंने/आपने	( ) पाया है।	(पु०, एक०, भूत० कृ०)
	" " " " " " "	( ) पाए हैं।	(पु० बहु०, भूत० कृ०)
	" " " " " " "	( ) पाई है।	(स्त्री० एक०, भूत० कृ०)
	" " " " " " "	( ) पाई हैं।	(स्त्री०, बहु०, भूत० कृ०)

भूत सम्भावनार्थी

मैं देखा गया होऊँ। (पु०, एक०, भूत० कृ०)
तू/वह देखा गया हो। (पु० एक०, भूत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप देखे गए हों। (पु० एक० (आदर) बहु०, भूत० कृ०)
मैं देखी गई होऊं। (स्त्री० एक०, भूत० कृ०)
तू/वह देखी गई हो। (स्त्री०, एक० भूत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप देखी गई हों। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)

भूत सन्देहार्थी

मैं देखा गया हूँगा/होऊँगा। (पु० एक०, भूत० कृ०)
तू/वह देखा गया होगा। (पु० एक० भूत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप देखे गए होंगे। (पु० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)
मैं देखी गई हूँगी/होऊँगी। (स्त्री० एक० भूत० कृ०)
तू/वह देखी गई होगी। (स्त्री० एक०, भूत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप देखी गई होंगी। (स्त्री० एक० (आदर) बहु०, भूत० कृ०)

भूत सङ्केतार्थी

मैं/तू/वह देखा गया होता। (पु० एक० भूत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप देखे गए होते। (पु० एक० (आदर) बहु०, भूत० कृ०)
मैं/तू/वह देखी गई होती। (स्त्री०, एक० भूत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप देखी गई होतीं। (स्त्री० एक० (आदर), बहु०, भूत० कृ०)

वर्तमान विधानार्थी

मैं देखा जाता हूँ। (पु०, एक० वर्त० कृ०)
तू/वह देखा जाता है। (पु० एक० वर्त० कृ०)
तुम देखे जाते हो। (पु० एक० (आदर) बहु० वर्त० कृ०)
हम/वे/आप देखे जाते हैं। (पु०, एक० (आदर), बहु०, वर्त० कृ०)
मैं देखी जाती हूँ। (स्त्री०, एक० वर्त० कृ०)
तू/वह देखी जाती है। (स्त्री०, एक० वर्त० कृ०)

तुम देखी जाती हो।	(स्त्री०, एक० (आदर), बहु०, वत० कृ०)
हम/वे/आप देखी जाती हैं।	(स्त्री०, एक० (आदर), बहु०, वत० कृ०)
मैं देखा गया हू ।	(पु० एक०, भूत० कृ०)
तू/वह देखा गया है।	(पु०, एक०, भूत० कृ०)
तुम देखे गए हो।	(पु०, एक० (आदर), बहु० भूत० कृ०)
हम/वे/आप देखे गए हैं।	(पु० एक० (आदर), बहु०, भूत० कृ०)
मैं देखी गई हू ।	(स्त्री० एक भूत० कृ०)
तू/वह दखी गई है।	(स्त्री० एक०, भूत० कृ०)
तुम देखी गई हो।	(स्त्री०, एक० (आदर), बहु०, भूत० कृ०)
हम/वे/आप देखी गई हैं।	(स्त्री०, एक० (आदर), बहु० भूत० कृ०)

वतमान सम्भावनार्थी

मैं देखा जाता होऊ।	(पु०, एक०, वत० कृ०)
तू/वह देखा जाता हो।	(पु०, एक० वत० कृ०)
तुम देखे जाते हो।	(पु० एक० (आदर) बहु०, वत० कृ०)
हम/वे/आप देखे जाते हो।	(पु०, एक० (आदर) बहु०, वत० कृ०)
मैं देखी जाती होऊ।	(स्त्री० एक० वत० कृ०)
तू/वह देखी जाती हो।	(स्त्री०, एक० वत० कृ०)
तुम देखी जाती हो।	(स्त्री०, एक० (आदर) बहु०, वत० कृ०)
हम/वे/आप देखी जाती हैं।	(स्त्री० एक० (आदर) बहु० वत० कृ०)

वतमान सन्देहार्थी

मैं देखा जाता हू गा/होऊगा।	(पु०, एक०, वत० कृ०)
तू/वह देखा जाता होगा।	(पु०, एक०, वत० कृ०)
तुम देखे जात होंगे।	(पु०, एक० (आदर), बहु०, वत० कृ०)
हम/आप/वे देखें जाते होगे।	(पु०, एक० (आदर) बहु०, वत० कृ०)
मैं देखी जाती हू गी/होऊँगी	(स्त्री०, एक०, वत० कृ०)
तू/वह देखी जाती होगी।	(स्त्री०, एक०, वत० कृ०)
तुम देखी जाती होंगी।	(स्त्री०, एक० (आदर), बहु०, वत० कृ०)
हम/वे/आप देखी जाती होंगी।	(स्त्री०, एक० (आदर) बहु०, वत० कृ०)

वतमान सकेतार्थी

मे/तू/वह देखा जाता होता। (पु० एक०, वन० कृ०)
हम/तुम/वे/आप देखे जाते होते। (पु० एक० (आदर), बहु० वत० कृ०)
मैं/तू/वह देखी जाती होती। (स्त्री०, एक०, वत० कृ०)
हम/तुम/व/आप देखी जाती होतीं। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० वत० कृ०)

वतमान श्राज्ञार्थी

तू/वह देखा जाए। (पु० एक० धातुसिद्ध)
तुम देखे जाग्रो। (पु० एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)
वे/आप देखे जाए। (पु०, एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)
तू/वह देखी जाए। (स्त्री० एक० धातुसिद्ध)
तुम देखी जाग्रो। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)
वे/आप देखी जाए। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)

वतमान ग्रनुमत्यार्थी

मैं देखा जाऊ। (पु० एक० धातुसिद्ध)
हम देखे जाए। (पु०, एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)
मैं देखी जाऊ। (स्त्री०, एक०, धातुसिद्ध)
हम देखी जाए। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)

भविष्य विधानार्थी

मैं देखा जाऊगा। (पु० एक० धातुसिद्ध)
तू/वह देखा जाएगा। (पु० एक० धातुसिद्ध)
तुम देखे जाग्रोगे। (पु०, एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)
हम/व/आप देखे जाएगे। (पु० एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)
मैं देखी जाऊगी। (स्त्री० एक० धातुसिद्ध)
त/वह देखी जाएगी। (स्त्री० एक० धातुसिद्ध)
तुम देखी जाग्रोगी। (स्त्री० एक० (आदर), बहु० धातुसिद्ध)
हम/व/आप देखी जाएंगी। (स्त्री० एक० (आदर), बहु० धातुसिद्ध)

भविष्य सम्भावनार्थी

(शायद) मैं देखा जाऊँ। (पु०, एक० धातुसिद्ध)
(„) तू/वह देखा जाए। (पु०, एक० धातुसिद्ध)
(„) तुम देखे जाओ। (पु० एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)
(,) हम/वे/आप देखे जाएं। (पु० एक (आदर) बहु०, धातुसिद्ध)
(,) मैं देखी जाऊं। (स्त्री० एक०, धातुसिद्ध)
(„) तू/वह देखी जाए। (स्त्री०, एक० धातुसिद्ध)
(,) तुम देखी जाओ। (स्त्री०, एक० (आदर), बहु० धातुसिद्ध)
(„) हम/वे/आप देखी
जाएँ। (स्त्री०, एक० (आदर) बहु०, धातुसिद्ध)

भविष्य संकेतार्थी

मैं/तू/वह देखा जाता। (पु०, एक०, वत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप देखे जाते। (पु० एक० (आदर) बहु०, वत० कृ०)
मैं/तू/वह देखी जाती। (स्त्री०, एक०, वत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप देखी
जातीं। (स्त्री०, एक० (आदर) बहु० वत० कृ०)

२ ५ ३ ५ भाव वाच्य

भूत विधानार्थी

मुझसे/तुझसे/उससे चला जाता था। (उभय०, एक०, वत०कृ०)
हमसे/तुमसे/उनसे/आपसे चला जाता था। („ „ „)
मुझसे/तुझसे/उससे चला गया/चला गया था। (उभय०, एक०, भूत०कृ०)
हमसे/तुमसे/उनसे/आपसे चला गया/
चला गया था। („ , „)

भूत सम्भावनार्थी

मुझसे/तुझसे/उससे चला गया हो। (उभय० एक०, भूत० कृ०)
हमसे/तुमसे/उनसे/आपसे चला गया हो। (, , ,)

भूत सदेहार्थी

मुझस/तुमस/उसस चला गया होगा। (उभय०, एक०, भूत० कृ०)
हमस/तुमस/उनस/आपसे चला गया होगा। (, ,)

भूत सकेतार्थी—

( ) मुझसे/तुझसे/उससे चला गया होता। (उभय०, एक० भूत० कृ०)
( ) हमसे/तुमसे/उनसे/आपस चला
गया होता। (, ,,)

वतमान विधानार्थी

मुझसे/तुझसे/उसस चला जाता है। (उभय० एक० वत०कृ०)
हमसे/तुमसे/उनसे/आपसे चला जाता है। (,, , ,)
मुझसे/तुझसे/उससे चला गया है। (उभय० एक० भूत० कृ०)
हमस/तुमसे/उनस/आपसे चला गया है। (, ,)

वतमान सभावनार्थी

मुझसे/तुझसे/उससे चला जाता हो। (उभय० एक०, वत०कृ०)
हमसे/तुमसे/उनसे/आपसे चला जाता हो। (,)

वतमान सदेहार्थी

मुझसे/तुझस/उससे चला जाता होगा ? (उभय० एक० वत०कृ०)
हमसे/तुमसे/उनसे/आपस चला जाता होगा ? (, ,)

वतमान सकेतार्थी

मुझसे/तुझसे/उससे चला जाता होता। (उभय०, एक०, वत०कृ०)
हमसे/तुमसे/उनसे/आपसे चला जाता होता। (,)

भविष्य विधानार्थी

मुझस/तुझस/उसस चला जाएगा। (उभय० एक० धातुसिद्ध)
हमस/तुमस/उनसे/आपस चला जाएगा। ( )

भविष्य संभावनार्थी

(शायद) मुझसे/तुझसे/उससे चला जाए। (उभय०, एक० धातुसिद्ध)
(शायद) हमसे/तुमसे/उनसे/आपसे चला जाए। („ ,)

भविष्य संकेतार्थी

मुझसे/तुझसे/उससे चला जाता। (उभय० एक०, वर्त०कृ०)
हमसे/तुमसे/उनसे/आपसे चला जाता। (, ,)

२ ५ ३ ६ वृत्त वाच्य (स्थितिसूचक)

भूत विधानार्थी

मैं/तू/वह था। (पु० एक०, धातुसिद्ध)
हम/तुम/वे/आप थे। (पु०, एक० (आदर), बहु० धातुसिद्ध)
मैं/तू/वह थी। (स्त्री०, एक०, धातुसिद्ध)
हम/तुम/वे/आप थीं। (स्त्री० एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)

वर्तमान विधानार्थी

मैं हूँ। (उभय०, एक० धातुसिद्ध)
तू/वह है। (उभय० एक०, धातुसिद्ध)
तुम हो। (उभय०, एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)
हम/वे/आप हैं। (उभय०, एक० (आदर) बहु०, धातुसिद्ध)

२ ५ ३ ७ वृत्त वाच्य (विकारसूचक)

भूत विधानार्थी

मैं/तू/वह होता था, (पु० एक० वर्त०कृ०)
हम/तुम/वे/आप होते थे, (पु० एक० (आदर) बहु० वर्त०कृ०)
मैं/तू/वह होती थी (स्त्री० एक०, वर्त०कृ०)
हम/तुम/वे/आप होती थीं (स्त्री० एक० (आदर) बहु०, वर्त०कृ०)
मैं/तू/वह हुआ/हुआ था (पु० एक०, भूत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप हुए हुए थे, (पु० एक० (आदर) बहु०, भूत० कृ०)
मैं/तू/वह हुई/हुई थी, (स्त्री०, एक० भूत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप हुई/हुई थीं, (स्त्री० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)

भूत सम्भावनार्थी

मैं/हुआ होऊ,	(पु०, एक०, भूत० कृ०)
तू/वह हुआ हो,	(पु०, एक०, भूत० कृ०)
तुम हुए हो,	(पु०, एक० (आदर), बहु० भूत० कृ०)
हम/वे/आप हुए हो,	(पु० एक० (आदर), बहु०, भूत० कृ०)
मैं हुई होऊ,	(स्त्री० एक०,भूत० कृ०)
तू/वह हुई हो,	(स्त्री० एक० भूत० कृ०)
तुम हुई हो,	(स्त्री० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)
हम/वे/आप हुई हो	(स्त्री० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)

भूत सदेहार्थी

मैं हुआ होऊगा	(पु०, एक०, भूत० कृ०)
तू/वह हुआ होगा	(पु०, एक० भूत० कृ०)
तुम हुए होगे	(पु० एक० (आदर), बहु० भूत० कृ०)
हम/वे/आप हुए होगे	(पु० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)
मैं हुई होऊगी	(स्त्री० एक० भूत० कृ०)
तू/वह हुई होगी	(स्त्री० एक० भूत० कृ०)
तुम हुई होंगी	(स्त्री० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)
हम/वे/आप हुई होगी	(स्त्री० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)

भूत सकेतार्थी

मै/तू/वह हुआ होता	(पु० एक०, भूत० कृ०)
हम/तुम/वे/आप हुए होते	(पु० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)
मैं/तू/वह हुई होती	(स्त्री० एक० भूत० कृ०)
हम/तुम/व/आप हुई होतीं	(स्त्री० एक० (आदर) बहु० भूत० कृ०)

वतमान विधानार्थी

मैं होता हू।	(पु० एक०, वत०कृ०)
तू/वह होता है।	(पु०, एक० वत०कृ०)
तम होते हो।	(पु० एक० (आदर) बहु० वत०कृ०)
हम/वे/आप होते हैं।	(पु०, एक० (आदर) बहु० वत०कृ०)

मैं होती हू।	(स्त्री०, एक०, वत०कृ०)
तू/वह होती है।	(स्त्री०, एक०, वत०कृ०)
तुम होती हो।	(स्त्री०, एक० (आदर), बहु०, वत०कृ०)
हम/वि/आप होती हैं।	(स्त्री०, एक० (आदर), बहु०, वत०कृ०)
मैं हुआ हू ।	(पु०, एक०, भूत० कृ०)
तू/वह हुआ है।	(पु०, एक०, भूत० कृ०)
तुम हुए हो।	(पु० एक० (आदर), बहु०, भूत कृ०)
हम/वि/आप हुए हैं।	(पु०, एक० (आदर), बहु०, भूत० कृ०)
मैं हुई हू ।	(स्त्री०, एक०, भूत० कृ०)
तू/वह हुई है।	(स्त्री०, एक०, भूत० कृ०)
तुम हुई हो।	(स्त्री० एक० (आदर), बहु०, भूत० कृ०)
हम/वि/आप हुई हैं।	(स्त्री०, एक० (आदर), बहु० भूत० कृ०)

वतमान सभावनार्थी

मैं होता होऊ	(पु०, एक० वत०कृ०)
तू/वह होता हो	(पु० एक० वत०कृ०)
तुम होते हो	(पु० एक० (आदर), बहु०, वत०कृ०)
हम/आप/वि होते हों	(पु० एक० (आदर), बहु०, वत०कृ०)
मैं होती होऊ	(स्त्री०, एक०, वत०कृ०)
तू/वह होती हो,	(स्त्री०, एक० वत०कृ०)
तुम होती हो	(स्त्री० एक० (आदर) बहु०, वत०कृ०)
हम/वि/आप होती हो,	(स्त्री०, एक० (आदर) बहु०, वत०कृ०)

वतमान सदेहार्थी

मैं होता हू गा/होऊगा	(पु०, एक, वत०कृ०)
तू/वह होता होगा	(पु० एक०, वर्त०कृ०)
तुम होते होंगे	(पु०, एक० (आदर) बहु०, वत०कृ०)
हम/वि/आप होते होंगे	(पु० एक० (आदर) बहु० वत०कृ०)
मैं होती हू गी/होऊगी	(स्त्री०, एक० वत०कृ०)
तू/वह होती होगी	(स्त्री० एक० वत०कृ)
तुम होती होंगी	(स्त्री०, एक० (आदर) बहु०, वत०कृ०)
हम/वि/आप होती होंगी	(स्त्री०, एक० (आदर) बहु० वत०कृ०)

वतमान सकेतार्थी

मैं/तू/वह होता	(पु० एक० वत०कृ०)
हम/तुम/वे/आप होते	(पु०, एक० (आदर) बहु०, वत०कृ०)
मैं/तू/वह होती	(स्त्री० एक० वत०कृ०)
हम/तुम/वे/आप होतीं	(स्त्री० एक० (आदर) बहु० वत०कृ०)

वतमानआज्ञार्थी

तू/वह हो	(उभय० एक० धातुसिद्ध)
तुम होओ	(उभय० एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)
वे/आप हो	(उभय० एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)

वतमान अनुमत्यार्थी

मैं होऊ	(उभय० एक० धातुसिद्ध)
हम हो	(उभय० एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)

भविष्य विधानार्थी

मैं हूंगा/होऊंगा	(पु० एक० धातुसिद्ध)
तू/वह होगा	(पु० एक० धातुसिद्ध)
तुम होगे	(पु० एक० (आदर) बहु० धातसिद्ध)
हम/वे/आप होंगे	(पु० एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)
मैं हूंगी/होऊंगी	(स्त्री० एक० धातुसिद्ध)
तू/वह होगी	(स्त्री० एक० (आदर) बहु०, धातुसिद्ध)
हम/वे/आप होंगी	(स्त्री० एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)

भविष्य सम्भावनार्थी

मैं होऊं	(उभय० एक०, धातुसिद्ध)
तू/वह हो	(उभय० एक० धातुसिद्ध)
तुम होओ	(उभय० एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)
हम/वे/आप हो	(उभय एक० (आदर) बहु० धातुसिद्ध)

भविष्य आज्ञार्थी

तू होना, (उभय०, एक०, क्रियार्थक संज्ञा)
तुम/आप होना। (उभय० एक० (आदर), बहु०, क्रियार्थक संज्ञा)

भविष्य आदरार्थी

आप होइएगा (उभय०, एक० धातुसिद्ध)

२ ५ ४ संयुक्त क्रियाएँ

हिन्दीमें संयुक्त क्रियाओंकी बहुलता है। सामान्यतया दो या दोसे अधिक क्रियाओंके योगसे संयुक्त क्रियाएं निष्पन्न होती हैं। संयुक्त क्रियाएँ वे ही है जो संयोजक तत्त्वोंसे अलग एक अतिरिक्त और विशिष्ट अर्थका बोध कराती हैं। दो या दोसे अधिक क्रियाएँ आनेपर यदि कोई विशिष्ट अर्थ सूचित नहीं करती तो वे किसी प्रकार भी संयुक्त क्रियाएँ नहीं कही जा सकती। वे संयोगमूलक क्रियाएँ होती हैं।

वह गाता है।
वह गाए जाता है।

उपर्युक्त वाक्योंमेंसे प्रथम वाक्यमें गाता है संयोगमूलक क्रिया है, तथा द्वितीय वाक्यमें 'गाए जाता है' संयुक्त क्रिया।

संयुक्त क्रियाओंमें सामान्यतया पहली क्रिया मुख्य होती है तथा दूसरी और उसके बादकी क्रियाएँ सहायक होती है। प्राय धातुसे निष्पन्न क्रिया क्रियार्थक संज्ञा, विशेषण और कृदन्त मुख्य क्रियाके रूपमें प्रयुक्त होते हैं।

२ ५ ४ १ मुख्य क्रिया—धातुसे निष्पन्न

मैं उसे देख आया हूँ। (पु०, एक०, वर्त० विधा०, कर्त०)
पढ़ते-पढ़ते लड़का सो गया है। (पु० एक० वर्त० विधा० कर्त०)
तुम कल बाजार हो आना। (पु० एक० भवि० आज्ञा० कर्त०)
मैं पूरा ग्रन्थ एक ही दिनमें
पढ़ गया। (पु० एक० भूत० विधा० कर्त०)
बच्चे दोपहरमें स्कूलसे आ जाते हैं। (पु० बहु० वर्त० विधा० कर्त०)
व्यापारमें सब धन खो बैठा। (पु० एक० भूत० विधा० कर्त०)

गुस्सा मत दिलाओ वरना
मार बठूगा। (पु० एक० भवि० संकेत०, कत०)
जो कुछ भेजोगे सब ले लूगा। (पु० एक० भवि० विधा०, कत०)
एक सप्ताहमे सब काम हो लेगा। (पु०, एक०, भवि० संकेत० कम०)
तुम अपना क्या-क्या
दे दोगे ? (पु० एक० (आदर) भवि०, प्रश्न०, कत०)
वह एकदम छतसे कूद पडा। (पु० एक० भूत० विधा० कत०)
मुझसे जो भी बन पडेगा
अवश्य करूँगा। (पु०, एक० भवि० विधा० कम०)
उसने गुस्सेम रडियो तोड डाला
कपडे फाड डाले। (पु० एक०, भूत० विधा०, कम०)
नौका डूबनेसे सब यात्री डूब गए। (पु० बहु० भूत० विधा० कत०)
इस बीच बहुत कुछ लिख मारा है। (पु० एक० वत०, विधा०, कम०)
उसने बच्चेको पत्थरपर दे मारा। (पु० एक०, भूत० विधा०, भाव०)
किताबोंकेलिए वह रखा है। (पु० एक० वत०, विधा० कम०)
वह प्राय बात भूल जाता है। (पु० एक० वत०, विधा०, कत०)
माला टूट गई और मोती
बिखर गये। (स्त्री० एक० भूत० विधा० कत कम०, पु० बहु०)
हमने सब सुन लिया है। (पु० एक० वत० विधा०, कम०)
दुनियाम इस रास्ते सभी जो लेते हैं। (पु० बहु० वत० विधा०, कत०)
आड वक्तकेलिए कुछ रुपए रख
छोड़े हैं। (पु० बहु० वत० विधा० कम०)
तुमने बच्चोंको बिगाड
रखा है। (पु० एक० (आदर) वत० विधा० भाव०)

२ ५ ४ २ मुख्य क्रिया—क्रियार्थक संज्ञा

अब वह पढ़ने लगी थी। (स्त्री० एक० भूत० विधा० कत०)
बच्चे टेनिस खेलने लगे हैं। (पु० बहु० वत० विधा० कत०)
तुम्हें एक बार जरूर
मिलना चाहिए। (पु० एक० भवि० इच्छा० भाव०)
मैं जी भरकर हँसना चाहता हूँ। (पु० एक० वत० विधा० कत०)

जीवनकी पूर्णतापर पहुँचनेके बाद
मनुष्यको मरना चाहिए (पु०, एक० भवि० इच्छा० कर्त०)
एकके बाद एक गिलास
टूटने लगे। (पु०, बहु० भूत० विधा० कर्तकर्म०)
परीक्षाका समय है अब सबको
पढ़ने दो। (उभय०, बहु०, वर्त०, आज्ञा० कर्म०)
आखिर कब तक नहीं
खाने दोगे। (पु०, एक० (आदर०) भवि०, प्रश्न० कर्त०)
खाये बिना तुम नहीं
जाने पाओगे। (पु० एक० (आदर) भवि०, निषेध०, कर्त०)
प्रतिदिन काम तो करना ही पड़ता है। (पु० एक० वर्त०, विधा० कर्म०)
कामके लिए तो बोलना ही पड़ेगा। (पु० एक०, भवि० विधा०, कर्म०)
मुझे आज ही घर जाना होगा। (पु०, एक०, भवि० विधा० भाव०)

२५८३ मुख्य क्रिया—संज्ञा

मैं अपनी भूल स्वीकार करता हूँ। (पु० एक० वर्त० विधा०, कर्त०)
प्रसाद ग्रहण कीजिए। (पु०, एक० (आदर) वर्त०, आदर०, कर्त०)
गौतमने सबका त्याग किया। (पु०, एक० भूत०, विधा० कर्म०)
मैंने तुम्हें बहुत याद किया है। (उभय० एक० वर्त०, विधा०, भाव०)
हमने सब बातें याद रखी हैं। (स्त्री०, बहु० वर्त०, विधा० कर्म०)
काम कर लेनेपर सन्तोष होता है। (उभय० एक० वर्त०, विधा०, कर्त०)
कभी तो पूरे विश्वपर अधिकार
होगा। (उभय०, एक०, भवि०, सभा०, कर्म०)
बिना आज्ञाके जानेपर उसे बहुत
क्रोध आया। (उभय०, एक० भूत० विधा० कर्म०)
अभी मधुर संगीत सुनाई पड़ेगा। (पु०, एक० भवि० विधा० कर्म०)
आसमानमें कुछ तारे दिखाई पड़े। (पु० बहु० भूत०, विधा०, कर्म०)
यह घटना अभी मालूम हुई है। (स्त्री० एक०, वर्त०, विधा० कर्म०)
माँ नियमसे पूजा
करती हैं। (स्त्री०, एक० (आदर) वर्त० विधा० कर्त०)
तुमने कितना रुपया उधार
दिया है। (पु० एक० वर्त० प्रश्न० कर्म०)

शिवने कामदेवका भस्म किया था। (पु०, एक०, भूत०, विधा०, भाव)
अब मैं भी यही अनुभव करता हू। (पु० एक०, वत० विधा०, कत०)
जरा सी बातका सोच करता है। (पु० एक०, वत०, विधा०, कत०)
कविको समस्त बाह्य-बन्धनोसे
मुक्ति प्रदान कर दी। (स्त्री०, एक० भूत०, विधा०, कर्म०)

२ ५ ४ ४ मुख्य क्रिया—विशेषण

डाक्टरने चार दिनमें अच्छा कर दिया। (पु०, एक०, भूत०, विधा०, कर्म०)
मैंने उसका क्या बुरा किया है? (उभय०, एक०, वत०, प्रश्न०, भाव०)
बच्चोको मिठाई अच्छी लगती है। (स्त्री०, एक०, वत०, विधा०, कर्म०)
हम हर समय खेलना बुरा लगता है। (पु० एक०, वत०, विधा०, कर्म०)
डरके मारे चेहरा जर्द पड गया। (पु० एक० भूत० विधा०, कर्म०)
जल्दीसे दूध गर्म कर दो। (पु० एक० (आदर) वत०, आज्ञा०, कत०)
आज बहुत उदास हो गया है। (पु० एक० वत० विधा०, कत०)

२ ५ ४ ५ मुख्य क्रिया—कृदन्त

वर्तमानकालिक कृदन्त

रोगीका रोग बढता जाता है। (पु० एक० वत० विधा० कत०)
प्राध्यापक लगातार बोलते जाते हैं। (पु० बहु० वत०, विधा० कत०)
शशि पढ़ती जा रही है। (स्त्री० एक० वत० विधा०, कत०)
बच्चे राष्ट्रीय गीत गाते जा रहे हैं। (पु० बहु० वत० विधा० कत०)
यह तो हमेशासे होता
आया है। (पु० एक० भूत०→वत० विधा० कर्म०)
सारे दिन काम चलता रहता है। (पु० एक० वत० विधा० कत कर्म०)
देहलीमें बरसोंसे रहते आये हैं। (पु० बहु० भूत→वत० विधा०, कत०)
बादल घिरते जा रहे हैं। (पु० बहु० वत० विधा० कत कर्म०)

भूतकालिक कृदन्त

मैं यू ही चला आया हू। (पु० एक० वत० विधा० कत०)
गाडी चढ़ी आ रही है। (स्त्री०, एक० वत० विधा० कत०)

राष्ट्रपति मचसे चले
जाते हैं। (पु०, एक० (आदर), भूत० विधा०, कत्०)
अब मुझसे नहीं खाया जाता। (पु० एक० वत०, निषेध० भाव०)
मैं रोज ही कालिज जाया करता हू। (पु० एक० वत०, विधा० कत्०)
अब ध्यानसे समझकर
पढ़ा करो। (पु०, एक० (आदर) वत०, आज्ञा० कत्०)
आख बद करके चला करता था। (पु०, एक० भूत० विधा०, कत ०)
रातम आराममे सोई रहो। (स्त्री० एक० भूत० विधा० कत ०)
लडका आया जाता है। (पु०, एक०, वत० (भवि०), विधा०, कत ०)
तुम्हारी सब वस्तुएँ लौटाए
जा रहा हू। (पु० एक०, वत० विधा० कत ०)
हर समय अपनी-अपनी कहे
जाते हो। (पु०, एक० (आदर) वत० विधा०, कत ०)
पुस्तक आज पढे लेता हूँ। (पु० एक० वत०, विधा०, कत ०)
वह सापको लाठीमे मारे देता था। (पु० एक० भूत०, विधा०, कत ०)
कुम्भकरणकी नीदम सोया रहता ह। (पु० एक० वत० विधा०, कत ०)
न जाने किन ख्यालाम खोए
रहते हो। (पु०, एक० (आदर), वत०, सदेह०, कत ०)
मैं बोले जाऊगा तुम
लिखे जाओ। (पु०, एक०, भवि०, विधा०, कत ०, उभय०
एक० (आदर) भवि०, आज्ञा० कत ०)
यह प्रश्न कैसे समझा जाएगा? (पु०, एक० भवि०, प्रश्न०, कम०)
लडकेसे चला नहीं
जाएगा। (पु०, एक०, भवि०, निषेध०, भाव०)
तुम यह घडी उठा ले जा
सकते हो। (पु०, एक० (आदर), वत०, आज्ञा०, कत ०)

पूर्वकालिक कृदन्त

अभी हमसे मिलकर गया है। (पु०, एक०, भूत०, विधा०, कत ०)
इस प्रदर्शनीको देखकर जाऊँगा। (पु०, एक०, भवि०, विधा० कत ०)
सब कुछ समझकर कहा है। (उभय०, एक० वत०, विधा० कम०)
दस मिनटम उठकर जा रहा हूँ। (पु०, एक० भवि० विधा०, कत ०)

फिर वह हँसकर बोला। (पु०, एक० भूत०, विधा०, कर्तृ०)
फाँसी लगाकर मर गया। (पु० एक० भूत०, विधा०, कर्त०)
इस तरह क्यों झाँककर
देख रहे हो ? (पु० एक० (आदर), वर्त०, प्रश्न०, कर्तृ०)
कितना रुपया देकर
जाओगे ? (पु० एक० (आदर) भवि०, प्रश्न०, कर्त०)
दरवाज़ा खटखटाकर चला गया। (पु०, एक०, भूत०, विधा०, कर्तृ०)
धप पडनेपर हडबडाकर उठ बैठा। (पु० एक०, भूत०, विधा०, कर्त०)
प्रश्न पूछते ही सकपकाकर बोला। (पु० एक०, भूत०, विधा०, कर्त०)
गोली सनसनाकर निकल गई। (स्त्री०, एक० भूत० विधा० कर्तृम०)

२ ४ ४ ६ कतिपय प्रयोग ऐसे भी होते है जिनमें दो क्रियाएँ अथवा मुख्य क्रियाओंके छायापद साथ साथ आते हैं।

जाओ अपना काम
देखो भालो। (पु० एक० (आदर), वर्त० आज्ञा०, कर्त०)
अब बैठकर कुछ
पढ़ो लिखो। (उभय० एक०(आदर), वर्त०, आज्ञा०, कर्त०)
बाहर जाकर सबसे
मिलो जुलो। (उभय० एक०(आदर), वर्त०, आज्ञा०, कर्त०)
स्कूल जाकर अध्यापकसे
पूछो-पाछो। (उभय०, एक० (आदर) वर्त०, आज्ञा०, कर्त०)
किसीके घरमे मत
झाँको भूँको। (उभय०, एक० (आदर), वर्त०, आज्ञा०, कर्तृ०)

२ ४ ४ ७ कतिपय प्रयोगोंमें दो कृदन्त अथवा उनके छायापद साथ-साथ आते हैं।

वर्तमानकालिक कृदन्त सार्थक निरर्थक

अब तू कुछ पढ़ता-पढ़ता भी है ? (पु० एक० वर्त० प्रश्न०, कर्त०)
वह कुछ पढ़ाता-पढ़ाता भी है ? (पु० एक०, वर्त०, प्रश्न०, कर्तृ०)
तुझसे होता-हवाता भी है। (पु० एक० वर्त०, सन्देह० कर्म०)

विरोधी

अक्सर यहाँ आता जाना रहता है। (पु०, एक०, वत०, विधा०, कत ०)
बड़े लोगाम उठता-बठना है। (पु०, एक०, वत०, विधा०, कत ०)

समजातीय

यूँ ही खेलते-कूदते रहे। (पु०, बहु०, भूत०, विधा०, कत ०)

भूतकालिक कृदन्त समजातीय

लड़कोंमें कैसे चला फिरा जायेगा? (पु०, एक० भवि०, प्रश्न०, भाव०)
अच्छी तरह खाया पिया
करो। (उभय०, एक० (आदर) वत०, आज्ञा०, कत ०)
सब बातें समझी-बूझी जाएँगी। (स्त्री०, बहु० भवि०, विधा०, कर्म०)
सुबहसे क्या पढ़े लिखे जा
रहे हो। (पु०, एक० (आदर), वत०, प्रश्न०, कत०)

विरोधी

प्राय यहाँ आया जाया करती है। (स्त्री०, एक० वत० विधा०, कत ०)
बड़े लोगोंमें उठा-चढ़ा करता है। (पु० एक०, वत०, विधा० कत ०)

सार्थक निरर्थक

कुछ पढ़ा-वढ़ा सकता है या नहीं? (पु०, एक०, वत० प्रश्न०, कत ०)
घर चलकर नहा-वहा
लेना। (उभय०, एक० (आदर), भवि०, आज्ञा०, कत०)

२८४८ कुछ प्रयोगोंमें दो क्रियार्थक संज्ञाएँ अथवा उनके छाया-पद साथ-साथ आते हैं।

समजातीय

अब मैं पढ़ना लिखना चाहता हूँ। (पु० एक०, वत०, विधा० कत०)
इसएक बात समझनी बूझनी चाहिए। (स्त्री०, एक० वत० आज्ञा०, कर्म०)
रातभर खाना-पीना चलता रहा। (पु० एक० भत० विधा०, कतकर्म०)

समय आनेपर भागना दौड़ना
पड़ता है। (पु०, एक०, वत०, विधा०, कत०)

विरोधी

मुझे सामान उतारना-चढ़ाना पड़ा। (पु०, एक०, वत०, विधा०, कत०)
भले लोगोंमें उठना-बैठना चाहिए। (पु० एक०, भूत०, विधा०, कर्म०)
संसारमें मरना जीना लगा
रहता है। (पु०, एक०, सार्वकालिक, विधा०, भाव०)

सार्थक निरर्थक

तुम्हें कुछ नहीं करना वरना है। (उभय०, एक०, वत०, निषेध०, कर्म०)
किसीसे पूछना-ताछना नहीं है। (उभय० एक०, वत०, निषेध०, कर्म०)

संयुक्त क्रियाओंके सम्बन्धमें कुछ बातें द्रष्टव्य हैं —

संयुक्त क्रियाओंकी योजक इकाइयोंका कोई निश्चित क्रम नहीं होता, अर्थात् पूर्वापर क्रममें विपर्यय सम्भव है।

संयुक्त क्रियाओंके सम्बन्धमें यह प्रायः निश्चित है कि महत्त्वपूर्ण इकाई पहले आती है लेकिन हिन्दीमें कतिपय विकल्पात्मक योजनाएँ भी पाई जाती हैं यथा—

जा बैठा और बैठ गया।
मार दिया और दे मारा।

संयुक्त क्रियाओंकी योजक इकाइयोंसे सर्वथा नया अर्थ प्रकाशित होता है। *संयुक्तताकी अनुभूतिका यह चमत्कार अन्य शब्दभेदोंके संदर्भमें भी द्रष्टव्य है।*

२.५.५ सहायक क्रियाएँ

हिन्दीमें सहायक क्रियाओंका बहुत महत्त्व है। इनके अभावमें अर्थ अपूर्ण रह जाता है। जैसे वह जाता सामान्यतः तब तक पूर्ण अर्थ नहीं दे सकता जब तक इसके साथ है था आदि किसी सहायक क्रियाका योग न हो। सहायक क्रियाओंमें दो प्रयोजन सिद्ध होते हैं। कुछ सहायक क्रियाओंके योगसे संयोगमूलक क्रियाएँ बनती हैं और कुछके योगसे संयुक्त क्रियाएँ। यथा, मैं जाता हूँ, वाक्यमें जाता मुख्य क्रिया है और हूँ सहायक क्रिया। किन्तु इन दोनोंके योगसे संयुक्त क्रियाका निर्माण नहीं हो रहा है क्योंकि जाता हूँ में कोई चमत्कारी अर्थ नहीं

है, अत यह सयोममूलक क्रिया है।

इसके विपरीत में जाता रहता हूँ वाक्यम जाता रहता हूँ सयुक्त क्रिया है। यहाँ जाता मुख्य क्रिया है तथा रहता हूँ सहायक क्रिया।

हिन्दीम सहायक क्रियाएँ तीन प्रकारकी है।

२ ५ ५ १ वे क्रियाएँ जो हर दशामे सहायक रहती है।

हिन्दीकी सक और चुक क्रियाएँ ही इस वगम आती हैं —

सक

क्या मैं जा सकता हूँ ?	(पु०, एक०, वत०, प्रश्न० कत ०)
तुम कल आ सकते हो।	(पु० एक० (आदर), भवि०, सकेत०, कत ०)
तुम किसीसे बात नही कर सकते।	(पु०, एक० (आदर) वत०, आज्ञा०, कत ०)
आज तुम कुछ खा सकोगे।	(पु०, एक० (आदर) भवि०, आज्ञा०, कत ०)
क्या मैं कुछ पूछ सकूगा ?	(पु०, एक० भवि० प्रश्न०, कत ०)
मैं किताबें नही ले सकती।	(स्त्री०, एक० वत० निषेध० कत ०)

चुक

तब तक वह जा चुका था।	(पु० एक०, भूत०, विधा० कत ०)
मैं शाम तक सब पढ चुकी थी।	(स्त्री० एक० भूत विधा०, कत ०)
इस समय तक सब काम किया जा चुका है।	(पु०, एक०, भूत० विधा० कम०)

विशेष—बोलीम कहीं-कहीं चुक मुख्य क्रियाके रूपम भी प्रयुक्त होता है।

आटा चुक गया है।	(पु० एक० वत०, विधा० कत कम०)
कल तक घी चुक जाएगा।	(पु० एक० भवि०, सम्भा० कत कम०)

२ ५ ५ २ 'ह्' और 'थ्' धातुसे निष्पन्न क्रियाएँ

ये दोनो सहायक रूपमे भी प्रयुक्त होती हैं और स्वतत्र रूपम भी। ह्'से सिद्ध क्रियाएँ मुख्य क्रियाके रूपम भी प्रयुक्त होती है।

स्वतंत्र रूपमें प्रयुक्त

एक राजा हैं/थीं।	(पु०, एक० वत०, वत०/भूत०)
मैं एक व्यक्ति हूँ/था।	(पु० एक० वत० वत०/भूत०)
तुम बिलकुल जानवर हो/थे।	(पु० एक० (आदर) वत० वत०/भूत०)
वे महान् ऋषि हैं/थे।	(पु० एक० (आदर) वत० वत०/भूत०)
वे लड़कियाँ अच्छी हैं/थीं।	(स्त्री०, बहु० वत० वत०/भूत०)
वह स्त्री महान् है/थी।	(स्त्री० एक० वत० वत०/भूत०)

सहायक रूपमें प्रयुक्त संयोगमूलक क्रियाओंके साथ

मैं जाता हूँ/था।	(पु० एक० वत० वत०/भूत०)
मैं जाती हूँ/थी।	(स्त्री० एक० वत०, वत०/भूत०)
तुम जाते हो/थे।	(पु० एक० (आदर) वत०, वत०/भूत०)
तुम जाती हो/थीं।	(स्त्री० एक० (आदर) वत० वत०/भूत०)
तू/वह जाता है/था।	(पु० एक० वत० वत०/भूत०)
तू/वह जाती है/थी।	(स्त्री० एक० वत० वत०/भूत०)
हम/वे/आप जाते हैं/थे।	(पु० एक० (आदर) बहु० वत० वत०/भूत०)
हम/वे/आप जाती हैं/थीं।	(स्त्री०, एक० (आदर) बहु० वत० वत०/भूत०)

संयुक्त क्रियाओंके साथ

मुझे कई जगह जाना रहता है।	(उभय० एक०, वत०, वत०)
तुम कहाँ जाया करते हो।	(पु०, एक० (आदर) वत०, वत०)
हम व्यर्थमें परेशान हो रहे थे।	(पु० एक० (आदर) बहु०, वत० भूत०)
वहाँ जल पिलाया जाता है।	(पु० एक०, कर्म०, वत०)
ये प्रायः देखा करते थे।	(पु० एक० (आदर) वत० भूत०)
वे सुबह जल्दी उठ जाती थीं।	(स्त्री० एक० (आदर) बहु० वत० भूत०)
सब बातें सुना दिया करती थी।	(स्त्री० एक० वत० भूत०)
तुम्हें अब तक कुछ दे नहीं पाया हूँ।	(पु० एक० वत० वत०)

'हू' से निष्पन्न क्रियाए मुख्य क्रियाके रूपमे प्रयुक्त

तुम्हारा काम होकर रहेगा।	(पु०, एक०, कम० भवि०)
ऐसे व्यक्ति भी होते आए है।	(पु० बहु० कत ०, वत०)
तुम कैसे हुए जा रहे हो।	(पु०, एक० (आदर) कम० वत०)
आजकल काम होने लगा है।	(प० एक०, वत कम०, वत०)
ऐसी स्त्रिया भी होती होगी।	(स्त्री०, बहु०, कत ० भूत०)
वह स्वय ही हमारे साथ हो लिया।	(पु०, एक०, कत ० भूत०)

२ ५ ५ ३ प्रसगानुसार सहायक और मुख्य क्रियाके रूपमे प्रयुक्त

अब मे रोज आया करुगा।	(पु०, एक० कत ०, भवि०)
कुछ ही हो काम किए जाऊँगा।	(पु० एक० कत ० भवि०)
वह कल जा रहा है।	(पु० एक०, कत ०, भवि०)
अब तो यही रह रहा है।	(पु०, एक०, कत ०, वत०)
सभी किताबें रख लेता है।	(पु०, एक०, कत ० वत ०)
सारा सामान ले रखूगा।	(पु० एक० कत ०, भवि०)
एक तीर पेटमे जा लगा।	(पु० एक० कत कम० भूत०)
अभी एक घाटा लग जाएगा।	(पु० एक०, कम०, भवि०)
इस तरह क्या पा लोगे ?	(पु०, एक० (आदर), कत ० भवि०)
इस प्रकार क्या ले पाओगे ?	(पु०, एक० (आदर), कत ०, भवि०)
बहुत जल्दी बैठ गया।	(पु०, एक०, कत ०, भूत०)
सुबह ही बागमे जा बैठा।	(पु०, एक० कत ०, भूत)
सब कुछ आगमे झोंके दे रहा है।	(पु०, एक०, कत ०, वत०)
अभी सब कुछ दिए देता हू।	(पु०, एक०, कत ० वत०)
अभी चला चलूगा।	(पु०, एक०, कत ०, भवि०)
अब इनमे नही जाया जाता।	(पु० एक० (आदर), कम० वत०)

२ ५ ६ बलान्वित क्रियामूलक

२ ५ ६ १ क्रिया अथवा क्रिया-वाक्याश तथा 'ही', 'भी', 'मत', 'मात्र', 'तो' आदि अव्यय।

ये सभी अव्यय क्रिया वाक्याशमे मुख्य क्रियाके बाद तथा सहायक क्रियाके

दिनमें खा तो चुके हैं। (पु० बहु०, कर्तृ० भूत०)
अब वे बोल तो चुके हैं। (पु०, एक० (आदर) बहु० कर्तृ० भूत०)
काम हो तो गया। (पु० एक०, कर्म०, भूत०)
पत्र पहुँच तो जाता है। (पु० एक०, कर्तृ कर्म०, निर्विशेष)

विशेष—'तो' का क्रिया वाक्यांशान्तर्गत प्रयोग अंग्रेजीके 'डु' के क्रिया-पूर्व डू डज, डिड वाले प्रयोगोंके समकक्ष है। यह सामान्यतया क्रियाके बलके प्रयोगमें सहायक होता है। कभी-कभी इसके प्रयोगमें अनिश्चितता अथवा सन्देह ध्वनित होता है।

२५७ कृदन्त—वाक्य-विन्यास

धातुओंमें प्रत्यय योगके उपरान्त निष्पन्न शब्दोंकी संज्ञा कृदन्त है। इनका प्रयोग दो प्रकार से होता है—विकारी और अविकारी। अविकारी कृदन्त प्रत्येक स्थितिमें अपरिवर्तित रहते हैं विकारी कृदन्तोंके रूप लिंग, वचन पुरुष आदिके अनुरूप परिवर्तित होते हैं। अविकारी कृदन्त चार प्रकारके हैं—अपूर्णक्रियाद्योतक पूर्णक्रियाद्योतक तात्कालिक और पूर्वकालिक। विकारी कृदन्तोंको भी चार वर्गोंके अन्तर्गत रखा जा सकता है—क्रियार्थक संज्ञा कर्तृवाचक संज्ञा वर्तमानकालिक कृदन्त और भूतकालिक कृदन्त।

२५७१ क्रियार्थक संज्ञा

धातुके अन्तमें 'ना' प्रत्ययके योगसे क्रियार्थक संज्ञाएँ बनती हैं। आकारान्त संज्ञाओंके समान ही इनका रूपान्तर होता है।

संज्ञाओंकी भाँति प्रयुक्त

कहना आसान है करना बहुत कठिन। (कर्ता कर्तृ० उ०)
कल पानी बरसना शुभ होगा। (उ० कर्तृ कर्म०)
तुम्हारा कहीं भी जाना ठीक नहीं है। (कर्म० कर्तृ०)
सुनने और देखनेमें जमीन आसमानका फर्क है। (अधि० कार०)
राजाके मर जानेसे उथल-पुथल हुई। (करण कार०)
यह काम जल्दी खत्म करनेमें ही लाभ है। (करण कार०)
जो होना था सो हो चुका। (कर्म कर्म० उ०)
होनी होकर ही रही। (कर्म कर्म० उ०)
जल्दी खाना खा गया। (कर्म कर्तृ०)

उसे मारनेको पिस्तौल लिए घूम रहा है। (कम कत ०)
तुमसे कुछ मागने तो आए नही। (कम, कतृ ०)
मैं यहास उठनेको तैयार नहीं हूँ। (कम कत ०)
मल्लाहान स्त्रीको डूबनेसे बचाया। (अपा० भाव०)
न जाने क्या हो गया है, न खाना, न पीना न
किसीस कुछ कहना न सुनना (कम कम० उ०)
पिताने पुत्रको सिगरेट पीनेपर मारा। (करण भाव०)

विशेषणोंकी भांति प्रयुक्त

जागनेके आदमी होशियार होने चाहिए। (कर्ता०, कत ०, उ०)
धुलनेके कपडे इकटठे कर दो। (कम कत ०)
दिखानेके दाँत और है खानेके (—) और। (कर्ता कत ० उ०)

२ ५ ७ २ कतृ वाचक सज्ञा

क्रियार्थक सज्ञाके विकृत रूपमे —वाला' प्रत्यय योगसे कत वाचक सज्ञाएँ बनती हैं।

सज्ञाओंकी भाति प्रयुक्त

रोनेवालेको सब बनाते है। (कम, कत ०)
दरियागज जानेवाले जल्दी चल। (कर्ता, कत ० उ०)

विशेषणोकी भांति प्रयुक्त

आज नतीजा आनेवाला है। (पूरक, कतृ ०)
नौकर आजकलम जानेवाला है। (पूरक कतृ ०)
गानेवाली लडकी बहुत सुन्दर है। (*कर्ता, कत ०, उ०*)
किसी अच्छा लिखनेवाले लडकेको बुलाओ। (कम कतृ ०)
यह उत्तर देनेवाला व्यक्ति निश्चय विद्वान है। (कर्ता कत ०, उ०)
झूठ बोलनेवाले लडकेका कोई विश्वास नही करता। (कम कत ०)

कही-कही -वाला के स्थानपर हार प्रत्ययका प्रयोग होता है।

उडनहार बहू बलैंड साँप दिखाती है। (कर्ता, कत ० उ०)
वह बडा होनहार है। (पूरक कत ०)

२.५.७.३ वर्तमानकालिक कृदन्त

धातुओंके अन्तमें ता प्रत्यय योगसे वर्तमानकालिक कृदन्त निष्पन्न होते हैं। इन्हीं के विकृत रूप जोड़नेसे मिश्र रूप बनते हैं। ये संज्ञा विशेषण और क्रिया विशेषणकी भाँति प्रयुक्त होते हैं।

क्रियाओंकी भाँति प्रयुक्त

मैं जाता हूँ।
तू/वह जाता है।
हम/वे/आप जाते हैं।
तुम जाते हो।
मैं/तू/वह नहीं जाता।
हम/तुम/वे नहीं जाते।

विशेष—क्रियाओंकी भाँति प्रयुक्त कृदन्तोंका विवेचन किया वाक्यविन्यास के अन्तर्गत किया जा चुका है अतः यहाँ पिष्टपेषण अपेक्षित नहीं है।

संज्ञाओंके रूपमें

मरता सब कुछ करता है। (कर्ता कत० उ०)
रोतेको रुलाना अच्छा नहीं। (कर्म भाव०)
उसने डूबतोंको बचानेका प्रयत्न किया। (कर्म भाव०)
मरतोंके साथ मरा नहीं जाता। (करण कर्म०)
गिरतेको सँभालना फर्ज है। (कर्म कत०)

विशेष—इन प्रयोगोंमें विशेषण+विशेषण→विशेष्य याजना है।

विशेषणोंकी भाँति

हम तो उड़ती चिड़िया मारते हैं। (कर्म कत०)
चलती बसमें चढ़ना जुर्म है। (अधि० कत०)
बहता पानी स्वच्छ होता है। (कर्ता कत० उ०)
हँसते बच्चोंको मत रुलाओ। (कर्म कत०)
चोरी करता हुआ चोर पकड़ा गया। (कर्म कर्म० ०)
खाने-पीनेके आत्मीयोंकी भी चिन्ता रहता है। (कर्म कत०)

क्रियाविशेषणोकी भाँति प्रयुक्त

(—) अकड़ती हुई क्या चल रही हो ? (स्त्री० एक० (आदर), कर्त०)

कौन गाता हुआ चला जा रहा है ? (पु०, एक० कर्तृ०)

हिरन आहट होते ही चौकड़ी भरता हुआ भागा। (पु०, एक०, कर्त०)

घबराहटमे अटकते हुए बोला। (पु०, एक०, कर्त०)

हाथी झूमते हुए चले जा रहे है। (पु० बहु० कर्त०)

बच्चा रोता हुआ आया और हँसता हुआ गया। (पु०, एक० कर्त०)

द्विरुक्तिमूलक क्रियाविशेषणोकी भाँति प्रयुक्त

पढ़ता पढ़ता सो गया लगता है। (पु० एक० कर्त०)

सारा दिन काम करते-करते
थक गए। (पु० एक० (आदर) बहु० कर्त०)

२५७४ भूतकालिक कृदन्त

धातुओके अन्तमे -आ प्रत्ययके योगसे भूतकालिक कृदन्त निष्पन्न होते हैं तथा लिंग वचनके अनुसार इनके रूप बदल जाते हैं। ये संज्ञा विशेषण और क्रियाविशेषणकी भाँति भी प्रयुक्त होते है।

संज्ञाकी भाँति प्रयुक्त

जलेपर नमक छिड़कना ठीक नही। (अधि० कर्तृ०)

मरेको मारनेमे क्या लाभ है ? (कर्म कर्तृ०)

हाथका दिया फलता है। (उ०, कर्तृ कर्म०)

विशेषणोंकी भाँति प्रयुक्त

सुनी बातपर विश्वास नही करना चाहिए। (अधि० भाव०)

वह पगध्वनि मेरी पहचानी। (पूरक कर्तृ०)

लिखा लिखाया पत्र फाड़ डाला। (कर्म कर्म० उ०)

उठा हाथ मुश्किलसे रुकता है। (उ०, कर्तृ कर्म०)

मुहँसे निकली बात वापिस नहीं आती। (कर्ता कर्त० उ०)

५७७ तात्कालिक कृदन्त

अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्ताम ही अव्ययके योगसे कृदन्त निष्पन्न होते है। इस मुख्य क्रियाके तत्काल पूर्व होनेवाले व्यापारोका बोध होता है तथा स्वतन्त्र वाक्याश भी निर्मित होते हैं।

इतना सुनते ही रो पडा।	(कर्तृ० भूत०)
सिपाहीको देखते ही चोर छिप गया।	(कर्तृ०, भूत०)
कालिजसे आते ही वे काममे जुट जाते है।	(कर्त०, वर्त०)

विशेष—इस कृदन्तकी पुनरुक्तिसे कालगत स्थितिका बोध होता है।

उसके दिन रोते-ही रोते बीते।	(कर्त० भूत०)
उन्हे पहुँचते ही-पहुँचते कई दिन लग जाएगे।	(कर्म०, भवि०)
खाते ही-खाते उन्हे देर हो गई।	(कर्म० भूत०)
नदी पार करते-करते ही नाव डूब गई।	(कर्त० भूत०)
खासते खासते ही दम निकल गया।	(कर्त० भूत०)

२५७८ पूर्वकालिक कृदन्त

धातुरूपाम शून्य प्रत्यय अथवा के कर करके प्रत्ययोंके योगसे यह कृदन्त निष्पन्न होता है। प्राय पूर्वकालिक कृदन्त और मुख्य क्रियाका कर्ता एक ही होता है।

शून्य प्रत्ययान्त

मैं सब देख चला हूँ।	(कर्त० वर्त०)
तू आप जा देख।	(कर्त०, भवि०)
वह सब पढ-पढ बैठा है।	(कर्त० वर्त०)

प्रत्ययान्त

तुम्हारी उन्नतिकी सुनकर बहुत खुशी हुई।	(कर्म० भूत०)
अभी अभी पढ़के आ रहे हैं।	(कर्त०, वर्त०)
धीरे धीरे दमन करके सब भक्त बन गए।	(कर्त०, भूत०)
मुसाने हसकर कहा।	(कर्म० भूत०)
भय्याको स्वस्थ देखकर मुझे बहुत खुशी हुई।	(कर्म० भूत०)

क्रियाविशेषणोंकी भाँति प्रयुक्त

बच्चा रोता हुआ आया और सो गया। (पु० एक० कर्तृ० भूत०)
खटका होते ही चोर घबराया हुआ भागा। (पु० एक० कर्तृ० भूत०)

२।७५ अपूर्णक्रियाद्योतक कृदन्त

ये क्रियाविशेषणके समान प्रयुक्त होते हैं। इनसे मुख्य क्रियाके साथ होने वाले व्यापारकी अपूर्णता सूचित होती है।

मैंने उन्हें घूमते छोड़ा। (भाव० भूत०)
लड़की चलते हुए बोली। (कर्तृ० भूत०)
तुमने हँसते हुए कहा था। (भाव०, भूत०)
वे हम देखते हुए गए। (कर्तृ० भूत०)
उसकी बातें सुनकर सब हँसते हँसते लोट पोट हो गए। (कर्तृ०, भूत०)
वह बात बताते बताते रो पड़ा। (कर्तृ० भूत०)
विद्यार्थियोंको कई देशोंमें घूमते घूमते चार साल लग गए। (कर्म० भूत०)

विशेष— ते प्रत्ययके योगसे निष्पन्न कृदन्तोंकी द्विरुक्ति होने पर प्रयोग लिंग और वचनकी दृष्टिसे निर्विशेष होते हैं।

२।७६ पूर्णक्रियाद्योतक कृदन्त

ये भूतकालिक कृदन्तोंके विकृत रूप हैं। इनका प्रयोग मुख्य रूपसे स्वतन्त्र वाक्यांशोंमें होता है।

हम आए बहुत दिन हो गए।
दिन चढ़े, मैं सोकर उठा।
खाना खाए एक घंटा हुआ।
उनसे मिले बहुत दिन हो गए।

इन कृदन्तोंसे संयुक्त क्रियाओंका निर्माण भी होता है।

मेहमान आए पड़े हैं। (कर्तृ० भूत०→वर्त०)
वह खाए जा रहा है। (कर्तृ० वर्त०)
विशेष—पूर्णक्रियाद्योतक कृदन्त लिंग वचन निर्विशेष होते हैं।

२५.७७ तात्कालिक कृदन्त

अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्तोंमें ही अव्ययके योगसे कृदन्त निष्पन्न होते हैं। इनसे मुख्य क्रियाके तत्काल पूर्व होनेवाले व्यापारोंका बोध होता है, तथा स्वतन्त्र वाक्यांश भी निर्मित होते हैं।

इतना सुनते ही रो पड़ा। (कर्तृ० भूत०)
सिपाहीको देखते ही चोर छिप गया। (कर्तृ०, भूत०)
कॉलिजसे आते ही वे काममें जुट जाते हैं। (कर्त०, वर्त०)

विशेष—इस कृदन्तकी पुनरुक्तिसे कालगत स्थितिका बोध होता है।

उसके दिन रोते-ही रोते बीते। (कर्त० भूत०)
उन्हें पहुँचते ही-पहुँचते कई दिन लग जाएँगे। (कर्म० भवि०)
खाते ही-खाते उन्हें देर हो गई। (कर्म० भूत०)
नदी पार करते करते ही नाव डूब गई। (कर्त० भूत०)
खाँसते खाँसते ही दम निकल गया। (कर्त० भूत०)

२५७८ पूर्वकालिक कृदन्त

धातुरूपोंमें शून्य प्रत्यय अथवा के-कर करके प्रत्ययोंके योगसे यह कृदन्त निष्पन्न होता है। प्रायः पूर्वकालिक कृदन्त और मुख्य क्रियाका कर्ता एक ही होता है।

शून्य प्रत्ययान्त

मैं मन देख चला हूँ। (कर्त० वर्त०)
तू आप जा देख। (कर्त०, भवि०)
वह सब पढ़-पढ़ कर बैठा है। (कर्त०, वर्त०)

प्रत्ययान्त

तुम्हारी उन्नतिकी सुनकर बहुत खुशी हुई। (कर्म० भूत०)
अभी अभी पढ़के आ रहे हैं। (कर्त० वर्त०)
धीरे धीरे दर्शन करके सब भक्त चल गए। (कर्त० भूत०)
मुझसे न हँसकर कहा। (कर्म० भूत०)
भैयाका स्वास्थ्य देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। (कर्म० भूत०)

जितने स्वप्न मैंने देखे हैं सब तुममे आकर
घुल जाते हैं। (पु०, बहु० भूत०, विधा०)
चन्दरने थाली खिसका दी। (स्त्री०, एक० भूत०, विधा०)
फिर हमने कभी कोई बात तुम्हारी
टाली है। (स्त्री०, एक०, भूत०, विधा०)
हम लोगोने स्वर्गकी ऊँचाइयोपर साथ बैठकर
आत्माका सगीत सुना। (पु०, एक०, भूत० विधा०)
मैंने केवल किसीकी सासोमे घुलकर
रहस्य पाया है। (पु०, एक० भूत०, विधा०)
मैंने इतने दिनो तक अपना प्यार
छिपाए रखा। (पु० एक०, भूत०, विधा०)
तुम्हारे मनने जो तुमसे भी नही कहा वह
मुझसे कह दिया था। (पु०, एक०, भूत०, विधा०)

कर्मकर्मणि प्रयोग

इस रचनामे यदि, कर्ता अपेक्षित हो तो वह करण कारकमे अथवा 'द्वारा' शब्दके साथ आता है।

सुना गया है कि इस वर्ष बहुत अनाज होगा। (पु०, एक०, भूत० विधा०)
पत्र भेज दिए जाएगे। (पु० बहु०, भवि०, विधा०)
इस उत्सवमे सब मित्र बुलाए जाएँगे। (पु० बहु०, भवि०, विधा०)
सब बच्चे पहलेही क्या भेज दिए गए? (पु० बहु०, भूत०, प्रश्न०)
निर्दोष नहीं मारा गया। (पु०, एक० भूत०, निषेध०)
इस समय उससे शायद ही पत्र लिखा जाए। (पु०, एक०, भवि० सभा०)
प्रधानमत्रीजीके द्वारा भवनका
शिलान्यास हुआ। (पु० एक०, भूत०, विधा०)

द्विकर्मक क्रियाओंके कर्मवाच्यमे मुख्य कर्म उद्देश्य होता है। गौण कर्म विकारी रहता है।

भिखारीको दान दिया गया। (पु०, एक०, भूत०, विधा०)
अध्यापकके द्वारा विद्यार्थीको गणित
सिखाया जायगा (पु०, एक० भवि०, विधा०)

२५८३ कर्म कर्मवाच्य

कुछ रचनाएँ विधानकी दृष्टिसे कर्तृवाच्य होती हैं किन्तु अर्थकी दृष्टिसे कर्मवाच्य। इन्हें कर्तृकर्मवाच्य कहा गया है।

खेत सिंच रहे हैं।	(पु० बहु० वर्त०, विधा०)
यह रीति प्रचलित हुई।	(स्त्री०, एक०, भूत० विधा०)
प्रदर्शिनीमें उसके सभी चित्र नहीं बिकेंगे।	(पु० बहु० भवि०, निषेध०)
सूखनेपर मिट्टी झड़ जाएगी।	(स्त्री० एक० भवि विधा०)
कमरेमें सर्दी लगती है धूपमें गर्मी।	(स्त्री०, एक०, वर्त०, विधा०)

२५८४ भाववाच्य

जब क्रियाका रूपविधान न कर्ताके अनुसार हो न कर्मके तब रचना भाववाच्यकी कहलाती है। भाववाच्य रचनामें अकर्मक सकर्मक दोनों प्रकारकी क्रियाएं प्रयुक्त हो सकती हैं तथा क्रिया हमेशा अन्य पुरुष पुंल्लिंग एकवचनमें रहती है। भाववाच्य तीन प्रकारका है।

कर्तृ भावे प्रयोग

इस रचनामें अकर्मक और सकर्मक क्रियाओंके कर्ता और कर्म दोनों परसर्गयुक्त होते हैं।

लड़कीने छींका था।	(पु० एक, भूत०, विधा०)
मैंने स्वयं कहा था।	(पु०, एक० भूत०, विधा०)
रानीने सहेलियोंको बुलाया।	(पु० एक०, भूत०, विधा०)
मैंने किसीको नहीं देखा।	(पु० एक०, भूत०, निषेध०)
भूरीकी स्त्रीने कलोको द्वारपर देखा।	(पु० एक० भूत० विधा०)
महाराजाने देहलीको हिन्दकी राजधानी क्या बनाया ?	(पु०, एक०, भूत०, प्रश्न०)
उसने अपने लड़कों लड़कियों और स्त्रीका त्याग किया है।	(पु० एक०, भूत०, विधा०)
उन्होंने दुख और सुख दोनोंका भोग लिया है।	(पु०, एक०, भूत०, विधा०)

हमन काम, क्रोध, लोभ मोहादि सब
विकाराको छोड दिया है। (पु०, एक०, भूत०, विधा०)

कर्मभावे प्रयोग

इसरचनाम कर्म परसर्गयुक्त रहता है और यदि कर्ता अपक्षित हो तो वह करण कारकके परसर्ग से या द्वारा अव्ययके साथ आता है।

तुमको अभी भेज दिया जाएगा। (पु०, एक०, भवि० विधा०)
मेरे द्वारा अपराधीको जेलमे भेजा गया। (पु०, एक०, भूत०, विधा०)
रातको दिनम बदला नही जा सकता। (पु०, एक० भवि० विधा०)
मुझसे मेरे मनने आग्रहसे, विस्मयसे तन्मयतासे
सब बातोको पूछा है। (पु०, एक० वत०, विधा०)
मुझस कहीको भी जाया नही जाता। (पु०, एक०, वत०, निषेध०)

भावभावे प्रयोग

इस रचनाम क्रिया अकर्मक रहती है और यदि कर्ता अपक्षित हो तो वह करण कारकम रहता है।

यदि हमसे चला जाएगा, तो रुकेंगे नहीं। (पु०, एक०, भवि०, सम्भा०)
पहल मुझसे अच्छी तरह खाया जाता था। (पु०, एक० भूत० विधा०)
मुझसे पढा गया, तभी तो पास हो गई। (पु०, एक०, भूत० विधा०)

विशेष—भाव प्रयोगकी मुख्य क्रिया सदैव पुल्लिंग, एक वचन, भूतकालकी होती है। सयुक्त क्रिया बननेपर प्रभाव और अर्थकी दृष्टि से समग्रत वह वतमान और भविष्यकी भी हो सकती है।

२६ क्रियाविशेषण—वाक्य-विन्यास

क्रियाविशेषण दो प्रकारके होते है—मूल और यौगिक। कुछ अन्य शब्द भेद भी मूल तथा यौगिक रूपमे क्रियाविशेषणकी भाति प्रयुक्त होते हैं।

२६ १ मूल क्रियाविशेषण

तुम चलो, मैं पीछे आऊँगा।
वह तो सदा दीख सकती था।
जिसके पटम निरतर आग जलती रहती है।
वह फौरन घरसे बाहर निकल गया।

सब झटपट तैयार हो गए।
चाहे तुम रहो चाहे जाओ हमारा क्या है।
माचवानन घोल्का तडातड पीट लिया।
शायद आँसुओंसे मन जल्दी बहल जाता है।
जरा वह पुस्तक दे देना।
और बराबर सजाएँ पाता रहता है।
परीक्षा पास आ गई है।
शेखर प्राय गल्प लिखता है।
नया चेहरा हमेशा प्रसन्नसे भरा रहता है।
दस बारह कोठरियोंसे आगे चलकर बाहर निकला।
काचपर जमी हुई नमीका एक उंगलीसे नाच बढ़ाकर भीतर झांकने लगा।
खिडकीके पास बैठ चिन्तित आंखोंसे बाहर देखते रहते थे।
यह रहस्य मुझसे दूर होता चला जा रहा है।
जो धमका मार्ग नहीं छोडता उसे सदैव स्वर्ग मिलता है।
तब उसने शशिके कमरेके आगे जाकर कहा।
तुमपर अब विश्वास नहीं रहा।
क्योंकि असली अन्त तो दो वर्ष बाद तब हुआ जब उस कूडखानेमें दीमक
तथा अन्य कीडे खा गए।
तुम कब जाओगे ?
शेखर कहाँ जा रहे हो ?
तुम कहीं जाओगी नहीं।
वे संदिग्ध व्यक्ति हैं तो पुलिस यहाँ भी आ सकती है।
तुम यहीं बैठो।
शेखर इधर देखो क्या तुम मनमानी कर सकते हो ?
वह उधर बढ़नेका डर है जिधर वह जा रहा है।
तुमने आरम्भ ही क्यों नहीं अपनी नियतिको देखा।
कब और क्यों उसने चन्द्रके इशारोंका यह मौन अनुशासन स्वीकार कर
लिया था।
मैं इधर सिरहाने बैठूँगा उधर मुझे दिखता नहीं।
मेरी रायमें किवाड बन्द ही कर दीजिए।
अब तो बनी है और समझदार तो है ही।
लम्बी धारें चीर गा भी रही थी।

मुझे मालूम तो है।
अच्छी भली तो बठी हूँ।
परमा तड़के चली ही जाऊँगी, अगर काइ विराध न हो तो।
तुम्हारा कुछ अनिष्ट होगा तो अपने आप जान जाऊँगी।
तो तुम साहित्यकार बनाग?
हाँ मैं जानता हूँ कितनी झूठी हो तुम।
हाँ, जब मैं भी ऐसा सत्य हो जाऊँगी निरा सत्य।
कुछ भी हो मैं अवश्य जाऊँगा।
कोई विशेष घटना जरूर घटी है।
नहीं शशि मैं नहीं पढ़ूँगा, नहीं बिलकुल नहीं।
शशि कहती है कि अब लौटना नहीं है।
मैं उस यहा रहने से मना नहीं करती।
संध्या के झुटपुटे में शशि को अकेले मत छोडो।
वह स्वय नहीं जानता कि क्या हो रहा है।
न कोई आया, न कोई गया।

२६२ क्रियाविशेषण—द्विरुक्त

शेखर और तीसरा युवक भी पीछे-पीछे मुडे।
लडकी धीरे धीरे कुछ गुनगुना भी रही थी।
वह जल्दी-जल्दी घर की ओर चला।
कभी कभी उदासी भी थक जाती है।
एस प्रश्न बार-बार जाग उठा करते है।
मैं क्या करूँ कहीं कहीं चल देता है।
वह कहा कहा घूमता रहा उसे कुछ पता नहीं।
वह हमारे यहा कब-कब आता है।
उद्देश्य में असफल हो जब जब आदमी लौट कुटुम्ब के सामने तब तब अद्भुत खबरें सुना।
ज्यों-ज्यों वह घर के समीपतर आता जाता है त्यों त्यों एक अज्ञात आशका एव विस्मय उस पकड रही है।

२६३ क्रियाविशेषण—युग्मक

जहाँ-कहीं जाना हो आज ही चले जाना।

वापिस वहाँ जहाँ दे दी गई थी।
तब फिर तुमने क्या जवाब दिया।
तब कहीं मैं समझ पाया।
वह मेरे यहा जब तब आया करता है।
मुझे इस तरह अब नय करना नही आता।
इधर उधर दो चार तारे बिखर हुए थ।
जितनी देर खाता रहा उतनी देर नज़र ऊपर न उठाई।
मैं क्यों नहीं जाऊँगा।

२ ६ ४ यौगिक क्रियाविशेषण

२ ६ ४ १ क्रियाविशेषण + परसग

कुछ दूर चलकर आगेको बढ गया।
डरते डरते उसका मन उधरको बढने लगा, जिधरसे अनिच्छाका नाता टूटा था।
इस काव्यके निर्माणका बीज कहासे मिला।
शेखरने वहींसे पुकारकर कहा।
बल्कि उसने धीरेसे आख भी बद कर ली।
मा कबसे पुकार रही है।
वह उसके पाससे चला गया।
अब हम कहापर जाना है ?
घरसे कुछ दूरपरसे ही उसने देखा।

२ ६ ४ २ क्रियाविशेषण + विशेषक

अबका गया शामको लौटेगा।
बेचारी कबकी गई हुई है।
वे पीछेकी ओर देखते हैं।

२ ६ ४ ३ क्रियाविशेषण (बलाभिव्यक्ति तत्त्व अन्तर्निहित)

अभी इधर ही गए हैं।
फिर हमारा कभी कोई बात तुम्हारा टाली है।
जब हृत्यम स्पन्दनका स्वर उठता है तभी संगीतका वाणी मिला करता है।

२६४४ क्रियाविशेषण+बलान्वितिमूलक तत्त्व

हो

घरस कुछ दूरपरसे हो उमन देखा।
कुछ पहले ही उसने जल्दी-जल्नी दूकान व द की और घर चला।
सवेरे सवेरे ही एक युवक न आकर पूछा कि दादा कहा है।
नीद नहीं आएगी ता यों हो समय तो सुखसे बीत जाएगा।
बापसे बसे ही भगडता रहता है।

-तक

फिर मौन हो गया और बहुत देर तक रहा।
दिन छिपे तक लौट आना।
जहाँ तक मेरी बात रही, मैं तो उन्ह जी भर घणा करना चाहती हूँ।
नेखर बहुत देर तक खडा रहा।
तब तक समस्या है जब तक कि उतना ही व्यापक सामजस्य फिर न खोज लिया जाए।

भी

यहा भी तो केवल शत्रुका ही खतरा है।
अब भी वह एसे ही साई था।
जीवनमे कहीं भी उसका फिर काइ अस्तित्व नही ह।
सौन्दय और बुद्धिका सम्मिलन कभी भी वन्ध्य नही होता।

-सा से -सी

शेखर जरा-सा ठहरा फिर थोडी दर बाद बोला।
जब करारा बिल्कुल सामन आ गया तब दादान सोचते हुए से कहा।

-सा

गाना हो तब तो बुरा नही लगता।
उसन खूब तो खाया।

२ ६ ४ ५ क्रियाविशेषण (द्विरुक्त मध्यसगत)

दुछ रहिय कभी-न-कभी आपकी बात जरूर सुनी जाएगी।
कुछ ही दिनमे कहाँ से-कहाँ पहुच गया।
कहीं-न-कहीं तो रहना ही होगा।
जब घर पहुचे तो सब चीजें वहीं की-वहीं मिलीं।

२ ६ ५ अन्य शब्दभेद → क्रियाविशेषण

२ ६ ५ १ सज्ञाएँ → क्रियाविशेषण

मुझे आज जाना है।
ठीक है मैं कल आ जाऊँगा।
मा सवेरे गृहकाजमे लग जाती है।
वह रोज घूमने जाता था।
परसो सब लोग चले जाएँगे।
शेखर अब नित्य उनसे मिलने जाता है।

२ ६ ५ २ सज्ञाएँ+अन्य तत्त्व → क्रियाविशेषण

अतमे उसने सब कुछ कह दिया।
शेखर सवेरे ही घूमने निकल जाता।
दिन भर पडा रहा।
घण्टेभरमे लौट आऊगा।
महात्मा लोग थोडा बोलते है पर बोलते है कामका।
दिन छिपे-तक लौट आऊँगा घबराना मत।
शामतक यहा थोडे ही बैठा जा सकता है।
मन ही मन सोचता है कि किसी तरह भी और नहीं।
नाशिका सिसकना क्रमश मूक हो गया।
उसके दिमागमे घडी घडी एक ही सवाल उठ रहा है।
आजकल ऐसा जमाना आ गया है कि सद्भावनाका श्रेय किसीको नहीं मिलता।

२६५३ सवनाम → क्रियाविशेषण

वह **कौन** है ?

उसका **कुछ** खो गया है। (कुछ नही)

जीवनकी पूर्णता पर **कोई** पहुँचा है। (कोई नहीं)

वह स्वय नही जानता कि **क्या** हो रहा है।

तुम सगीत **क्या** सीखोगे। (नहीं सीख पाओगे।)
तुम हम जाने **क्या** समझ रही होगी।
जीवनमे हरएकको अपना मार्ग **स्वय** खोजना होता है।
इस व्यक्तिके आगे शिष्टाचार मानो **स्वय** मर जाता है।
शेखर भापता था कि **जो जो** वह देखता है उसके पीछे तक है।
तुम समझ पाता कि मैं **क्या** सोचता हूँ, **क्या** समझता हूँ।
न **कुछ** कहा जा रहा है, न **कुछ** किया जा रहा है।
लीजिए साहब मैं **यह** चला।

२६५४ सवनाम + अन्य तत्त्व,
अन्य तत्त्व + सवनाम → क्रियाविशेषण

कुछ भी हो, मैं अवश्य आऊँगा।
इतनो देरमे तो **बहुत कुछ** किया जा सकता है।
सारा दिन **कुछ न कुछ** करता ही रहता था।
क्या से-क्या हो गया है।
हमने **क्या-क्या** सोच रखा था।
मैं **अपने आप** सभाल लूगा तुम चिन्ता क्या करती हो ?
तुम्हे बचानेके लिए झूठ बोली थी कि **अपने आप** लग गया।
धरती **आप ही आप** नहीं फूलती फलती।
फिर फेफड़े **आप-से-आप** भर जाते हैं।
आत्माएँ इस सम्बन्धमे **इस तरह** जकडी गई है
फिर भी मैं आग्रहपूर्वक **अपनेको** खोलता हूँ।
डरते डरते उसका मन **उस ओर** बढने लगा।
वह **स्वय भी** कुछ नहीं बोल सका।
तुम्हारा अनिष्ट कुछ होगा तो **अपने आप** जान जाऊगी।

२ ६ ५ ५ विशेषण → क्रियाविशेषण

मुझसे कैसे बचोगे दिन भर पत्थर या पानी की कठोर और व्यर्थ प्राय तपस्या करके ।
वह ऐसा भागा कि मुड़कर पीछे नहीं देखा ।
मैं जैसी हूँ मुझे वैसी ही क्यों नहीं रहने देते ।
उन्हें जैसे मेरी दृष्टि का भान न हुआ ।
जैसे माता पिता राजी रहें वैसे करना चाहिए ।
सूर्य के प्रकाश में ओस की बूँदें कैसी चमकती हैं ।
दर्द इतना था कि शेखर आह भी नहीं कर सकता था ।
आखिर इतने से काम का कितना लोगे ।
अविश्वास आदमी की प्रवृत्तियों को जितना बिगाड़ता है विश्वास उतना ही बनाता है ।
महात्मा लोग थोड़ा बोलते हैं ।
क्योंकि अंधेरे में कोई निश्चल खड़ा था ।
शशि ठीक कहती है कब उसकी बात गलत होती है ।
खम्भे जमीन में सीधे गाड़ दिए हैं ।
भावुकता और सुख हम ऊँचा नहीं उठाते ।
वह केवल चिल्लाता रहता है ।
वह पहले जाता है ।

२ ६ ५ ६ विशेषण+अन्य तत्त्व,
अन्य तत्त्व+विशेषण → क्रियाविशेषण

वैसे ही शिथिल निष्प्राण पड़ी रही ।
वैसे तो मुझे कोई तकलीफ नहीं है ।
विश्वास आदमियों को उतना ही बनाता है ।
वह हल्का-सा देखता है ।
वह बाईं ओर मुड़ गया ।
नाम जानने पहले-पहले कुछ प्रश्नों का उत्तर आवश्यक था ही ।
पता चला कि कृष्णा तो बन गई ठीक-ठीक ।
प्रश्न या तो सीधा सादा पूछा जा सकता है या नहीं ही पूछा जा सकता ।
मुझे यहाँ रहना अच्छा लगता है ।

दायित्व है या नहीं कम-से-कम व अवश्य मानती हैं।
अधिक से अधिक, यह कि आपाढम अगहन तक स्थगित कर देंगी।
ता बिल्कुल नहीं खाओगी, थोडा-सा भी।
मुरारवा नाम किसानोंके लिए बहुत अरुगो है।
अभी ठीक-ठाक कर देती हूँ।
कुछ पहले ही उसने जल्दी जल्दी दूकान बन्द की।
थोडा-सा चक्कर काटा।
सामने नालका ऊँचा करारा धीमा-सा दीख रहा था।
शखर हताश-सा खडा रहा।
वह पहले से जानता है।

२६५७ क्रिया → क्रियाविशेषण

तागा दौडा चला जा रहा था।
शेखर लिखता जा रहा है।

२६५८ क्रिया+क्रिया, क्रिया+अन्य तत्त्व,
अन्य तत्त्व+क्रिया → क्रियाविशेषण

सुबहसे दौडते-दौडते थक गया।
न जाने क्या एकाएक कडे-पडकर उसने कहा।
वह खोया-सा बोला।
फिर एकाएक मुस्कराकर अधबठी रह गई।
मन्तव्य गतम गिरनेसे पहले, विवेकका अवलम्बन ले ना विजया।
चीजोंको पुन उलटने-पुलटने और ताकको पुन साफ करके सवारने लगी।
अकेला पर्देकी ओर देखता हुआ रह जाता है।
सिर आगापर लनेके लिए उमड-उमड आती है।
वशम ही बठे बठे सा सकता है।
चलते चलते शेखरने दुलारमे मुस्कराकर कहा।
खडे-खडे थक गय हो बठ जाओ।
य बातें मैंने जान-बूझकर कही हैं।
मैं ता खोजता खोजता हैरान हो गया।
सब हँसते-खेलते पहाडपर चढ गए।
रोता रोता घर आया।

केवल इतनी कि उनपर चलते चलते या चाकरी चाकरी चेष्टा करते करते समाप्त हो जाऊँ।
मेरी रायमें किवाड उढका ही दीजिए।
एक युवकने आकर पूछा कि दादा कहाँ है।
दादाने सोचते हुए से कहा।
शकर झेंपा सा रह गया।
वह फट सा जाता था।
लडका दौडकर आया।
उसने हँसकर कहा।

परपरागत व्याकरणमें क्रियाविशेषणको अव्यय कहा जाता रहा है लेकिन इस कोटिके अन्तर्गत परिगणित शब्दोंका प्रयोग विकारी रूपमें भी होता है तथा वे अन्य शब्द भेदोंकी भाँति भी प्रयुक्त होते हैं। इससे यह पुष्ट होता है कि प्रचलित हिन्दी भाषामें क्रियाविशेषणोंका प्रयोग रूढ वैयाकरणिक अव्ययोंकी भाँति ही नहीं हो रहा है। अपनी अभिव्यजना सामर्थ्य बढानेके लिए क्रियाविशेषण भी भाषामें परम्परासे हटकर नवीन रूपमें प्रयुक्त हो रहे हैं।

२७ सम्बन्धसूचक—वाक्य-विन्यास

परम्परागत व्याकरणमें सम्बन्धसूचक शब्दका प्रयोग विशेष प्रकारका कार्य करनेवाले रूपोंके लिए है। इनका प्रयोग वाक्यकी इकाइयोंमें सम्बन्ध स्थापित करना रहता है। परसर्ग ने को के लिए, से में पर आदि नामपदकी सिद्धिके उपरान्त क्रियासे अन्वित होते है। इनका विवेचन कारक-वाक्य विन्यासके अन्तर्गत हो चुका है। सम्बन्धसूचकोंका कार्य भी सम्बन्ध स्थापित करना है। यहाँ हम उन रूपोंका ले रहे हैं जो परसर्गोंसे भिन्न हैं। सामान्यतया इन सम्बन्धसूचकोंके पूर्व का, की, के, रा, री रे विशेषक आते हैं। कुछ सम्बन्धसूचक का, की, के, रा, री रे, विशेषकोंके बिना भी आते हैं।

२७ १ का-, की-, के-, रा-, री-, रे- के साथ प्रयुक्त

यह सब खेल जादूका सा था। म०↔वि० ‡
इसे जीनकी अपेक्षा मरना भला है। क्रियार्थक म०↔क्रियार्थक म०—
बस उसीकी ओर उन्मुख करना मेरा लक्ष्य है। सव०↔क्रियार्थक सज्ञा—
मैं मन्त्र पूजा फूलकी तरह तुम्हें देवताके चरणोंपर
चढा देना चाहता हूँ। म०↔सव०—

एक दिन मैं प्रभाती कमलकी भाँति खुल
पडी उनके सामने। स०↔क्रिया—
अपचके मारे बुरा हाल था। स०↔वि०—
अकबरके समान राजनीतिज्ञ दूसरा नही हुआ। स०↔स०—
सबके ऊपर प्रधानाध्यापक होना है। स०↔स०—
वह जानता है कि इसके पीछे उलझन या असमर्थता
छिपी होती है। सव०↔स०—
मैं अपनी कोठरीके बाहर सूनी दीवारकी ओर
देख रहा हूँ। स०↔वि०—
वर्षाके बाद आसमान साफ हो गया। स०↔क्रिया—
चार दिनके भीतर यह काम हो जाएगा। स०↔सवाश—
उसके कुछ कहनेके पहले ही शेखर बोला। क्रियार्थक स०↔क्रि० वि०—
झरनेके नीचे हरे भरे खेत लहलहा रहे थे। क्रियार्थक स०↔सवाश—
स्टेशनके निकट ही घर है। स०↔क्रि० वि०—
शेखर शशिके यहाँ अक्सर चला जाता है। स०↔क्रि० वि०—
नौकरके हाथ कोई सामान मत भेजना। स०↔सवाश—
अब तक मैं ददके सहारे जीती थी। स०↔क्रिया #
शुभ काम कहनेके द्वारा ही किया जाय। स०↔क्रि० वि०—
तुम्हारी इच्छाके अनुसार ही आचरण करूँगा। स०↔क्रि० वि०—
वह अनुभूतिके परे चला गया था। स०↔क्रिया #
तुम्हारे विषयमे तो कोई बात नही हुई। सव०↔क्रि० वि०—
हमारे योग्य कोई काम हो तो अवश्य बताना। सव०↔सवाश—
तुम्हारे पास और कुछ नही कहना चाहता। सव०↔सवाश—
मेरे जीवनकी जो भी घटना मेरे सामने आती है
वह मेरी है। सव०↔क्रिया—
एक दिन मैं तुम्हारे सामने विजयी था। सव०↔स०—
तुम्हारे सिवा हमारा यहाँ कौन है? सव०↔सव०—

विशेष—इस नाटकमें याद रखने लायक
पात्र एक भी नही है। (केका लोप) क्रियार्थक स०↔स०—
डील पहाड सा और मन हाथी सा है। स०↔समु०—
(का का लोप) स०↔क्रिया #

२७२ से-युक्त प्रयोग

वह अनुभूति से परे चला गया था।	स०↔क्रिया #
मैं तुमसे पहले पहुँच जाऊँगा।	सव०↔क्रिया #
भूरमुटों से आगे रतौंधा डाल था।	स०↔सवाश
मैं उससे अलग रहना नहीं चाहती।	सव०↔क्रियार्थक स०—
इससे आगे बढ़कर कि यहीं प्यार नहीं सभी प्यार प्यार मात्र मूलत एक समस्या है।	सव०↔पूर्वकालिक कृदन्त—

२७३ स्वतन्त्र प्रयोग

तुम्हें भूले बिना कैसे काम चलेगा।	भूत० कृ०↔क्रि०वि०—
अब मैं सुख पूर्वक मर सकूँगा।	स०↔क्रिया #
वह रात्रि पर्यन्त सर्दी से काँपता रहा।	स०↔स०—
तुम सरीखे मूर्ख कम होते हैं।	सव०↔वि०—
वह दिन भर भटकता रहा।	स०↔क्रिया #
वह बड़ी देर रात तक पुस्तकें पढ़ता रहा।	स०↔स०—
मेहमान कुछ झेंप कर बोले।	स०↔क्रिया #
पुल पार कर दोनों नदी के किनारे हो लिये।	स०↔स०—
शशि मुझसे दो क्लास आगे है।	स०↔क्रिया #
बहुत देर तक कमरे के दो ओर दोनों बैठे रहे।	स०↔स०—
स्पन्दन का हल्का सा अनुभव कर सकती थी।	वि०↔स०—
एक द्रुत छाया सी उसके मन में दौड़ गई।	स०↔सव०—
नाम मात्र बिस्तर वे साथ लाए थे।	स०↔स०—
परन्तु उनसे जाति प्रथा टूटी नहीं है, उलटे कई धार्मिक सम्प्रदाय अन्त तक चलकर अलग अलग जाति ही बन गए।	क्रिया↔सवाश— / स०↔पूर्वकालिक कृ०—
समस्याके इस निरूपण तक पहुँचकर उसका मन फिर लौट जाता।	स०↔पूर्वकालिक कृ०—
स्नेह एक ऐसा कितना परिव्यापक भाव है कि उसमें व्यक्तित्व नहीं रहते।	वि०↔सवाश—

चन्दर की निगाह में जाने क्या एक अजब सा पथराया सूनापन, एक जाने किस दर्द की अमंगल छाया एक जाने किस पीड़ा की मूक आवाज, एक जाने

कसी पिघलती हुई सी उदासी और वह भी गहरी जाने कितनी गहरी।

स०↔सवाश वि०↔सवाश, वि०↔सवाश, वि०↔सवाश, वि०↔ सवाश, वि०↔सवाश (सनालुप्त)।

२७४ मिश्र स्वतन्त्र प्रयोग

शशि के यहा होने मात्र से दुनिया कितनी भिन्न है। क्रियाथक स०↔स०—

नदी पार करके भी कम-से कम दो मील लौटना होगा। क्रिया↔क्रि०वि०—

२८ समुच्चयबोधक—वाक्य-विन्यास

समुच्चयबोधक दो प्रकारके है—मूल और यौगिक। कुछ अ य शब्दभेद भी हैं जिनका प्रयोग समुच्चयबोधक अव्ययोकी भाति हाता है।

२८१. मूल

प्रश्नकी आत्मीयता और उसकी ध्वनिकी सहज प्रसन्नतासे शेखरने चौक कर देखा।

(वाक्याश v वाक्याश—वाक्याशसकेतक)

मैं *एकान्तम जला किया हूँ* **और** *जलना स्वय अपना ही शमन लाया है* और भी अनबुझ जलनके रूपमे।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

स्त्री पृथ्वीकी भाति धैयवान शान्तिसम्पन्न व सहिष्णु है।

(पद v पद v पद—पदसकेतक)

वह किसी खाहमे जा बठेगा तथा सर्वात्मासे मिलनेके स्वप्न देखगा।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

लोग उपमाए देखकर विस्मित एव मुग्ध हो जाते है।

(पद v पद—पदसकेतक)

उसम माकी ममता, बहनका स्नेह, प्रेयसिका प्यार एव सगिनीकी आस्था थी।

(वाक्याश v वाक्याश v वाक्याश v ( ) वाक्य # वाक्याशसकेतक)

औरत जन्मसे पूव या मरनेके बाद ही अच्छी होती है।

(वाक्याश v वाक्याश—वाक्याशसकेतक)

तुम्हारी हैसियत वा स्थिति चाहे जसी भी हो।

(पद v पद—पदसकेतक)

वे हैं नरक के दूत जिन्हें युग कहते हैं कलिराज।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

किसी देश, जाति अथवा राष्ट्रका जीवन, उसके प्रत्येक व्यक्तिके जीवनका समष्टिरूप है।

(वाक्यांश v ( ) वाक्यांश v वाक्यांश v वाक्य # वाक्यांशसंकेतक)

वह इतना काम कर डालना चाहता था कि उसे एक क्षण भी बैठनेका मौका न मिले।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

कुछ पूछना चाहते थे यही न कि मैंने हत्या क्यों की।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

उससे एक तीक्ष्ण वेदना भरी अनुभूति मात्र होती है कि यह सब पुराना है, बीत चुका है।

(वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

ये हमारे स्वभावकी सबसे बड़ी मलीनता है कि जिसे हम अपना बनाना चाहते हैं, उसे केवल अपना बनाना चाहते हैं।

(वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

मन ही मन निश्चय कर लिया कि यह व्यक्ति दिलचस्प नहीं है।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

शेखरका अपना अंतर्विरोध ऐसा था कि वह दानाहीन आगे बढ़ता जा रहा था।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज अब आगेकी कथा सुनिए।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

तुम मानोगी चाहे कुछ भी हो?

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

एक अहद नशीला मगर बेहद खूनी दर्द मेरी नसोंको झकझोर रहा था।

(वाक्यांश v वाक्यांश—वाक्यांशसंकेतक)

यह उत्तर वाली ही बात लो मगर रोगका इलाज तो चिकित्सा है, स्वस्थ तो वही करती है।

(वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

तुम्हारा जो भी वरदान हो मुझे स्वीकार है मगर उसे उचित कह सकें, यह

(वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

भ्रमर आम्रकी मजरीसे अतिशय प्रेम करता है पर चम्पेके पास तक नही जाता।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

बहुत्तर मानवजीवनको गाढ भावसे उपलब्ध करानेमे मूर्त्तियाँ सहायक होती हैं,परन्तु उससे विच्छिन्न होनेपर उसकी उपयोगिता कम हो जाती है।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

क्षणभर गुनगुनानेके बाद निष्कम्प किन्तु गूजते स्वरमे गान लगी।

(वाक्याश v वाक्य—वाक्याशसंकेतक)

वातावरणमे स्फटिककी-सी शीतल स्वच्छता किन्तु उसमे रगकी स्निग्धता भी है।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

कोई भी नही सभाल सकता प्यारका दर्द शायद इसलिये प्यार नहीं रहता, दर्द रह जाता है।

(वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

वह मरी नही है, इसलिये शखर उसे कभी याद नही करता, कभी देखता नही अधिकार उसने पाया नही पूजा ही पूजा उसने दी है।

(वाक्य v वाक्य v वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

धर्म ही से मनुष्यकी स्थिति है, अत उसके बारेमे किसी प्रकारका रुचि भेद, मतभेद आदि नही है।

(वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

उन तथ्योमे परिणाम निकलता है अत परिणाम ही रुचि द्वारा निर्मित हुए।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

उन्हींका अवलम्बन करनेमे बीत जाता है, अतएव क्रम क्रमसे उन्हें सासारिक बातोंसे अधिक ममता हो जाती है।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

जनसाधारणकेलिये शीलका सबसे पहले ध्यान होना स्वाभाविक है क्योंकि उसका सम्बन्ध मनुष्यमात्रकी सामान्य स्थितिसे है।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

उसकी मैं उपेक्षा कर सकता हूँ, क्योंकि वह मेरे प्रति कर्त्तव्यशील नही है।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

उस उनारटर पर ला होगा, ताकि वह उल्टा आघात न कर।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

दारता है वह बन्धन, वह मनाही जो हमारा मान माँगनेका अधिकार छीन लती है।

(वाक्य v ( ) वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

वही लिखना आरम्भ किया जो उसके मनमस बीत रहा था।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

आत्मा क्षुब्ध हो जाता है मानो हम थक गए हैं, पराभूत हो गए हैं।

(वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

शरीर अपने वह अर्थात एकमात्र कमरेमें टहल रहा था।

(वाक्यांश v वाक्यांश—वाक्यांशसंकेतक)

वह वहिन यानी अपनी हारकर भी नई, कुछ अपरिचित कुछ आयास सिद्ध थी।

(पद v वाक्यांश v वाक्यांश v वाक्य # पदसंकेतक)

समाजमें रहना हर आदमीका कर्तव्य है बल्कि समाजके बिना कोई जी ही कस सकता है।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

२ ८ २ मूल—एकाधिक सम विविक्त

कठोर और कड़आ और स्वयं नारीकी तरह चिरन्तन शशिका निर्णय।

(पद v पद v वाक्यांश # —पदसंकेतक)

प्यार भी या घटता है या बढ़ता है या बदलने लगता है—नदीकी धाराकी ही भाँति।

(वाक्यांश v वाक्य v वाक्य v वाक्य v वाक्यांश # वाक्यसंकेतक)

न दोस्तीका खिंचाव है न दुश्मनीका बचाव।

(v वाक्य v वाक्य ( ) # वाक्यसंकेतक)

न कुछ स्वीकार कर सकती हूँ न प्रतिकार कर सकती हूँ न कुछ दे सकती हूँ।

(v वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

चाहे यह अपने प्रश्नका उत्तर पानेकी उत्कट इच्छा रही हो चाहे कुछ घूमने फिरनेकी।

(v वाक्य v वाक्य ( ) # वाक्यसंकेतक)

करना न करना दोनों एकसा है, न परलोकमें उसका कुछ फल मिलताहै,

न इसी नोकम उस कामकी काई तारीफ करता है।
(वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

२ ८ ३ मूल—एकाधिक विषम विविक्त

क्यो नहीं कहा था कि समाज उसकी विविक्त इकाइयाका समूह है **और** इकाईकी अवहेलना समाजकी अवहलना है।
(वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

ऐसे कामोमे अभ्यासका तथा समय **और** श्रमके अपव्ययका पूरा परिचय मिलता है।
(वाक्याश v वाक्याश v वाक्य # वाक्याशसकेतक)

बस्ती अर्थात जनस्थान या जनपदका ता नाम भी मुश्किलस मिलना है।
(पद v पद v वाक्य # पदसकेतक)

पर सवाल उस स्थूल वस्तुका नही जो देश या प्रान्त या हम हैं सवाल भावनाका है या कतव्यका।
(v वाक्य v पद v पद v वाक्य v वाक्य v वाक्य ( ) # वाक्यसकेतक)

श्रत जिसकी स्वार्थबद्ध दृष्टि अपनेसे आगे नही जा सकती अथवा अभिमान के कारण जिन्हे अपनी ही बडाईकी लत लग गई है, उनकी उतनी समाइ नही।
(v वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

च दर चाहे मनकी श्रद्धा अब भी बसी हो लेकिन तुमपर अब विश्वास नही रहा।
(पद v वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

वह उसकी सगी बहिन नही है पर उस सबधसे उसे यदि कोई अन्तर जान पडता है तो दूरी का नही बल्कि और अधिक समीपताका एक निर्बाध सखा भावका।
(वाक्य v वाक्य v वाक्य ( ) v वाक्याश v वाक्याश # वाक्यसकेतक)

कुछ ता इसलिए **और** कुछ इसलिए कि शेखरने अपने भावी कार्यक्रम-की कुछ रूपरेखा भी बना ली थी।
(वाक्याश v वाक्याश v वाक्य # वाक्याशसकेतक वाक्यसकेतक)

रोने रोते आदमीकी उदासी थक जाती है **और** आदमी करवट बदलता है

ताकि हमीरी छोड़ा कुछ विश्रामकर फिर आगुआओं गली घूमने चल सकें।

(वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

इसलिए यह नागरिक प्रति दुगुनी घृणा है कि वह इसीलिए इतना करते उसमें आग भी जा रहा है वह उसमें शीतलम स्नेह भी भर रहा है।

(v वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

सोनेम पहन यह इतना मरकर चूर हो जाए कि लेटो ही नाक उस जरा न और उसे बेहोश कर दे।

(वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

वायक्रम बनाओ और उसमें पहला काम लिख दो उभारता ताकि वह सबको अनुप्राणित करती रहे।

(वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

चिरन्तन जीवन कहीं है तो ऐसे ही गँदले नालाम जो समाजकी नींव इन अछूताके बीचमेंसे होते हुए फिर उपेक्षित बढ़ जा रहे हैं।

(वाक्य v वाक्य v वाक्यांश v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

और परिणाम भी चाहे मिथ्या हो परन्तु दिखाई तो वास्तविक पड़ना चाहिए।

(v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

कुबेर, साम, अप्सराएँ यद्यपि बादके ब्राह्मण ग्रथामे भी स्वीकृत हैं तथापि पुरान साहित्यमें वे अपदेवताके रूपमें ही मिलते हैं।

(पद v पद v पद v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

लेकिन फिर भी हम चाहते हैं कि जिनके प्रति हम अप्रकट भावनाएँ रखते हैं वे हमारी भावनाओंका प्रत्युत्तर दें।

(v वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

२८४ मूल युग्मक तथा मूल एकाकी विविक्त

मच खागया है और वह सभामे है याकि सभा खागई है।

(वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

तुम हम जाने क्या समझ रही होगी, लेकिन अगर तुम समझ पाती कि मैं क्या सोचता हूँ।

(वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

पर तत्काल ी पहला पश्न इस दूसरे प्रश्नका निवाल ेता और मानो इस अल्पकालीन विस्मृतिके दण्डस्वरूप स्वय अधिक तीव्र हो उठता।

(v वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

हिंसा उचित है या नही या तो पूणतया अनुमोदित हो सकती है या पूणतया वर्जित।

(वाक्य v ( ) वाक्य v वाक्य v वाक्य ( ) # वाक्यसकेतक)

या तो प्यार आदमीको बादलाकी ऊँचाई तक उठा ले जाता है या स्वगस पातालमे फेंक देता है।

(v वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

मैं सिगरेट छोड रही हूँ, इसलिए कि कपूरको अच्छा नही लगता।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

२८५ अन्य शब्दभेद—युग्मक

यह दोष हमे देशको देना ही है नहीं तो हमम कही भीतर प्राणाकी जगह कचरा भरा हुआ है।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

जसे किसी भीतरी घावम ककड चुभे ऐसे ही यह सशय उसके भीतर चुभता था नहीं तो मैं क्या एसे बेबस होकर रोया।

(v वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

ददसे बडी एक लाचारी होती है—जितना बडा दद उतनी ही बडी, नहीं तो ददके सामन जीवन हमशा हार जाए।

(वाक्य v ( ) वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

आकाशके तार भी आपके लिए तोडकर ला सकते है, नहीं तो स्नेह करनेके लिए कोई किसीको मजबूर नही करता।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

थोडासा आदरभाव भी होता था, जिसके कारण शेखर तीन चार बार उसके घर गया।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक

२८६ अन्य शब्दभेद—एकाकी

आदश क्या है सो उसके बारेमे साधारण नियम कठिन है।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक

रहा उपयोगिताका प्रश्न—सो मैं। जो उपन्यास लिखता है उसमें उसकी उप-
योगिता ही उसका प्रमाण है।

(वाक्य ١ वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

२८७ अन्य शब्दभेद—विविक्त

आज भी मानव जब यह प्रश्न पूछ बैठता है तब अनजानी घटनाएँ होने
लगती हैं।

(पद ١ वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

जब कोई जीवनकी पूर्णतापर पहुँच जाय तब उसे मर जाना चाहिए।

(١ वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

जब भावना और सौन्दर्यके उपासकोंका बुद्धि और वास्तविकतासे ठन लगती
है तब यह गहरा बढ़ता और व्यंग्य उबल पड़ता है।

(v पद v वाक्यांश पद v वाक्य v वाक्यांश # v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

आज बीमार हूँ तो मुर्गी उठा रहे हो। मर जाऊँगी तो अर्थी उठाने भी जाना
वरना नरक मिलेगा।

(वाक्य ١ वाक्य ١ ( ) वाक्य ١ वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

यहाँके अनगिनत विस्मय पाषाण और आभूषण भिन्न भिन्न रुचिके अनु-
कूल गिनने लगें तो घड़ी-की घड़ी न चाहिये वरन् दिन-का दिन समाप्त
हो जाए।

(पद v पद ( ) वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

जब मैं तुमसे विलग होता हूँ तभी मुझे अपने अस्तित्वका ज्ञान होता है।

(v वाक्य ١ वाक्य # वाक्यसंकेतक)

मालूम तब होता है जब जिसके कदमपर हमने सर रखा है, वह झटकेसे अपने
कदम घसीट ले।

(क्रियांश v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

२८८ मूल तथा अन्य शब्दभेद—विविक्त

जब मैं तुम्हारे प्यारसे वंचित होता हूँ तभी यह सत्ता जागृत होती है कि
मेरे हृदयपर तुम्हारा आधिपत्य कितना आत्यन्तिक है।

(v वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसंकेतक)

पीना तपस्या है किन्तु असली तपस्या तो जिनामा है—क्योंकि वही सबसे बड़ी पीडा है।

(वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

मीराकी महिमा इसमे नही कि वह विष पीकर जीती रही प्रत्युत इस बात मे है कि उसे विष पीनेमे भय नही लगा।

(वाक्य v वाक्य v वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

एक काल विशेषके कवियोको यदि हम फलस्वरूप मानलें, तो उनके उत्तर वर्ती ग्रन्थकारोको फूलस्वरूप मानना होगा।

(वाक्याश v वाक्य v ( ) वाक्य # वाक्यसकेतक)

पृथ्वीको जीतने वाला कठोर धनुष जो पृथ्वीपर गिरा तो कोमल फूलमे बदल गया।

(वाक्याश v वाक्याश v ( ) वाक्य # वाक्यसकेतक)

हम कुछ कर सकते है तो यही कि उसका कवच कम द, अगर उसकेपास दिया है तो उसकी बाती उकसा दें।

(वाक्य v वाक्य ( ) v ( ) वाक्य v वाक्य v ( ) वाक्य # वाक्यसकेतक)

अगर किसीको मूक होकर जलना हो तो वह कोई मैं ही क्यो न हूँ।

(v वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

हम कल्पनामे चित्रित करते है एक प्रेयस जो कि हमारी आत्माके सूक्ष्मतम कम्पनके साथ स्पदित होता है।

(वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

२ ८ ९ अन्य शब्दभेद एव मूल युग्मक

किसी चित्रके विचारके कविताके, गीतके, ध्वनिके, सुन्दर स्वप्नके, जो कि हमारा ही है।

(वाक्याश शृखला v वाक्य # वाक्यसकेतक)

(वाक्याश v वाक्याश v वाक्याश v वाक्याश v वाक्याश v वाक्याश v वाक्य #)

२ ८ १० अन्य शब्दभेद + मूल

तब तक समस्या है जब तक कि उतना ही व्यापक सामजस्य न खोज निकाला जाए।

(v वाक्य v वाक्य # वाक्यसकेतक)

महत्त्वपूर्ण है। सभी वाक्योंका साधारण वाक्योंमें रूपान्तरण सम्भव है। संज्ञा और क्रिया वाक्यके अनिवार्य तत्त्व हैं। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपसे सभी वाक्योंमें संज्ञा और क्रियाकी योजना रहती है। इन्हींको उद्देश्य अथवा कर्ता और विधेय नाम भी दिया गया है।

३.३ मिश्रवाक्य

लगभग सभी प्रकारके विचार साधारण वाक्यमें व्यक्त किए जा सकते हैं। साधारण विचारको व्यक्त करनेका सर्वोत्तम साधन साधारण वाक्य है किन्तु यदि विचार मिश्रित है अर्थात् यदि विचार एक दूसरेपर आश्रित हैं तो उन्हें प्रधान विचारके अधीन उपवाक्य बनाकर व्यक्त किया जाता है। इसी स्थितिमें वाक्य रचना मिश्र होती है। साधारण वाक्योंकी अपेक्षा मिश्र वाक्य कुछ विशिष्ट अर्थ देते हैं। अर्थकी दृष्टिसे अधीन उपवाक्योंका प्रयोजन है शब्दभेदमें निहित अर्थपर बल देना। मिश्र वाक्योंमें संज्ञा, विशेषण या क्रियाविशेषणको उपवाक्यके अन्तर्गत लाकर प्रमुखता प्रदान की जाती है।

हिन्दीमें तीन प्रकारके उपवाक्य हैं—

३.३.१ संज्ञा उपवाक्य

मिश्रवाक्य रचनाके प्रधान वाक्यकी क्रियाकी पूर्ति जिस संज्ञार्थी वाक्यसे होती है उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं—

बालिकाको शायद आशा थी कि वह कुछ अधिक कहेगा।
वह चौंककर देखता है कि वह उसीका एक छन्द गुनगुना रही है।
वह जानता है कि इसके पीछे सदा कोई उलझन या असमर्थता छिपी होती है।
उसका उत्तर सुनकर सब लोग हँसते यह उसे मालूम है।
विरुद्ध लड़ना ही पर्याप्त नहीं है ऐसा तुमने सिखाया।
मैंने तुम्हें प्यार किया है, यह मैं अब स्वीकार करता हूँ।
शशिने कहा (—) अब वह सब कर लेगी।
मुझे लगता है हम जरूरतसे ज्यादा सभ्य हो गए हैं।
वह वरदान है यह मैं भी बिना लज्जाके देखती हूँ।
उसे इस बातका भी ध्यान नहीं है कि उसका मुँह छिल गया है, कि उसके चोट आई है कि बायीं एड़ीमें मोच आ गई है।
यह क्या है कि जीवनके इन तीव्रतम दिनोंकी स्मृतिमें मैं बार बार दुविधा में पड़ जाता हूँ कि क्या सचमुच हुआ और क्या नहीं हुआ, केवल

सोचा गया।

कमरमे उसे लिटाता हुआ शेखर यह नही सोच सका कि मूर्छा देवताओंकी देन होती है, कि असह्य तनावसे अपनी देनकी रक्षाकेलिए ही वे विस्मति के फूल बरसाते हैं, कि उस मन्त्र सिक्त नींदमे प्राणोकी सूक्ष्म देह विश्राम पाकर स्फूर्त हो उठती है।

३ ३ २ विशेषण उपवाक्य

प्रधान उपवाक्यकी सनाका वशिष्टयसूचक विशेषण उपवाक्य कहलाताहै।

एक सीमा होती है जिससे आगे मौन स्वय अपना उत्तर है।

जितने स्वप्न मैंने देखे हैं (—) सब तुमम आकर घुल जाते हैं।

जो दे दिया है (—)मेरा नही है।

और अमूर्त होकर मैं तुम्हारा अपना-आप हूँ, जिसे तुम नाम नहीं दोगे।

जसा घुला हुआ उसका मन आज है, वसा उसे याद नही इससे पहले कब था।

जिस जीवन लहरका शिखर इतने युगों बाद पाया है, उसकी दूसरी उठान कब होगी।

जब मैं भी ऐसा सत्य हो जाऊंगी, निरा सत्य, जिसे तुम तटस्थ होकर देख सकते हो।

जिस शेखरको मैं देखती हू, उसके बनानेमे मेरा बराबरका साझा है।

रात मूर्तिमती करुणा है अन्धकार देवताओका कोई रामबाण मरहम है जो फुल वेदनाओकी टीसको सोख जाता है।

उसमे कितना बडा शून्य है जो अभी तक नहीं भरा।

शेखरको एक ग्रीक गाथा याद आई जिसमे किसी दुखिनी वनदेवीके आसू कल-स्वनित जल प्रपात बन जाते हैं जिसका प्रवाह हर आते-जाते पथिकके भीतर करुण चीत्कार कर उठता है और एक टीस छोड जाता है।

कोई स्त्री प्यार नहीं जानती जो एक साथ ही बहिन, स्त्री और माका प्यार नहीं देना जानती।

उधरसे एक छोटी चौकी उठाकर इधर रख लगा जो मेज तिपाई और डेस्कका काम देगी।

रहा यह कि आदेश क्या है सो निश्चित नही है।

प्यारमे पानेका विधान उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना खो देनेका।

३ ३ ४ १ प्रधान उपवाक्य + अधीन उपवाक्य

⌊शालिकाको शायद आशा थी⌋¹ ⌊कि वह कुछ अधिक कहेगा।⌋²

⌊यही वह सोपान है⌋¹ ⌊जो मलयज प्राणद पहले स्पर्श होता है।⌋²

⌊प्यारम पानेका विधान उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है⌋¹ ⌊जितना खो देनेका।⌋²

⌊यह उसग बढनेका डर है⌋¹ ⌊जिधरसे वह भाग रहा है।⌋²

⌊सब जिज्ञासाएँ उसमें लीन हैं⌋¹ ⌊क्योंकि वह परम अप्रश्न है।⌋²

१ + २

३ ३ ४ २ अधीन उपवाक्य + प्रधान उपवाक्य

└ उसका उत्तर सुनकर सब लोग हँसते ┘¹ यह उसे मालूम है । ┘²

└ विरुद्ध लडना ही पर्याप्त नही है ┘¹ └ एसा तुमने सिखाया । ┘²

└ जिससे मिलना था ┘¹ └ वह यह आदमी ह । ┘²

└ जिसे मैं खोजती हू ┘¹ └ वह शेखर यहाँ नही है । ┘²

└ जब मैं तुमसे विलग होता हूँ ┘¹ └ तभी मुझे अपने अस्तित्वका नान होता है । ┘²

३ ३ ४ १   प्रधान उपवाक्य ; अधीन उपवाक्य

⌊वालिकाको शायद आशा थी⌋[१] ⌊कि वह कुछ अधिक कहेगा।⌋[२]
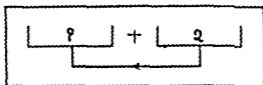
⌊यही वह सोपान है⌋[१] ⌊जो मलयके प्राणद पहले स्पर्श में होता है।⌋[२]
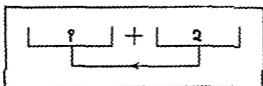
⌊प्यारमें पानेका विचार उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है⌋[१] ⌊जितना खो देने का।⌋[२]
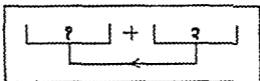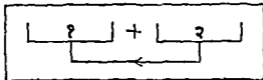
⌊यह उधर बढ़नेका डर है⌋[१] ⌊जिधरसे वह भाग रहा है।⌋[२]
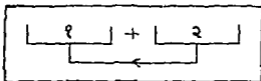
⌊सब जिज्ञासाएँ उसमें लीन हैं⌋[१] ⌊क्योंकि वह परम अप्रश्न है।⌋[२]
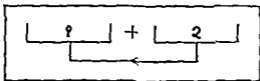
३ ३ ४ २ अधीन उपवाक्य + प्रधान उपवाक्य
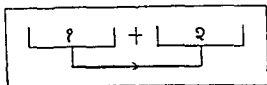
⌊उसका उत्त र सुनक र सब लोग हँसते⌋¹ यह उसे मालूम है।⌋²

⌊विरुद्ध लडना ही पर्याप्त नही ह⌋¹ ⌊ऐसा तुमने सिखाया।⌋²
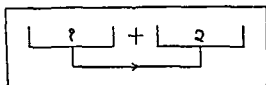
⌊जिससे मिलना था⌋¹ ⌊वह यह आदमी ह।⌋²
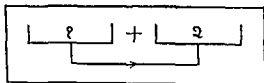
⌊जिसे मैं खाजती हू⌋¹ ⌊वह शेखर यहाँ नही ह।⌋²
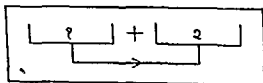
⌊जब मैं तुमसे विलग होता हूँ⌋¹ ⌊तभी मुझे अपने अस्तित्वका भान होता है।⌋¹
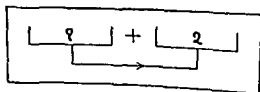
⌊चाहे कोई कठिनाई आए⌋[1] ⌊पर वह घबराता नहीं था।⌋[2]
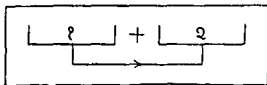
३ २ ८ ३ प्रधान उपवाक्य + एक या एकाधिक अधीन उपवाक्य
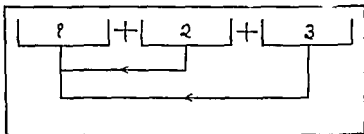
⌊आत्माएँ इस सम्बन्ध में इस तरह जकड़ी गई है⌋[1] ⌊कि वे स्वयं नहीं जानते⌋[2] ⌊( ) वे स्वयं नहीं पहचानते।⌋[3]

⌊उसे इस बातका भी ध्यान नहीं है⌋[1] ⌊कि उसका मुँह छिल गया है⌋[2] ⌊कि उसके चोट आई है⌋[3] ⌊कि बाँयी एड़ीमें मोच आ गई है।⌋[4]

⌊समरस उस दिखाता हुआ सागर यह कहा भाव सका⌋[1] ⌊कि मूर्छा दब लाभकारी बन जाता है⌋[2] ⌊कि अमर्त्य तनाव से अपना स्वकी स्थापित हो व विस्मृति पूर्ण करता है⌋[3] ⌊कि उस मन्त्रसिक्त सौन्दर्य प्राणीकी शून्य
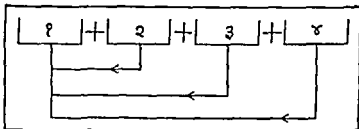
देह विश्राम पाकर स्फूर्त हो उठती है। ⌋[४]
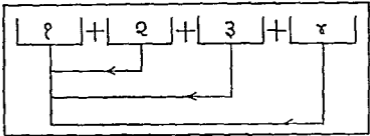
⌊वह चाहता था इतना काम इतना काम ⌋[१] ⌊कि सिर उठाना भी मुश्किल हो जाए⌋[२] ⌊(कि) साँस लेनेमें भी कामका कुछ हर्ज हो जानेका अन्देशा रहे⌋[३] ⌊कि उसके मनमें आने वाले सोच, सन्देह तड़पा देने वाले असम्भव स्वप्न ये सब अवकाशकी कमीके कारण मुरझाकर सूख जाएँ। ⌋
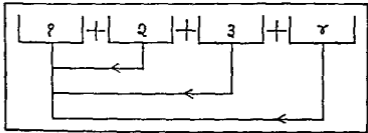
३ ३ ४ ४ प्रधान उपवाक्य+अधीन उपवाक्य+अधीनाधीन उपवाक्य

⌊नेपालका एक श्लोक गाया याद आई⌋[१] ⌊जिसमें किसी दुखिनी वनदेवीके आँसू कल-स्वनित जल प्रपात बन जाते हैं⌋[२] ⌊जिसका प्रवाह हर आते-जाते पथिकके भीतर करुण चीत्कार कर उठता है। ⌋[३]
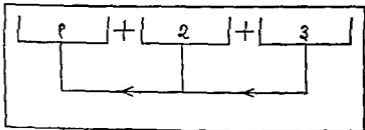
⌊केवल एक बात है⌋[1] ⌊जो मुझे सदा खटकती रहती थी⌋[2] ⌊कि तुम मेरे पत्रोंका बहुत ही जल्दी जवाब लिख भेजते हो⌋[3] ⌊जब कि तुम्हें पत्रोंके उत्तर में इतना समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।⌋[4]

⌊यही वह आदमी है⌋[1] ⌊जिसने इब्राहीमकी हत्या उस घरमें की थी⌋[2] ⌊जिसमें तुम्हारे पिता रहते थे।⌋[3]
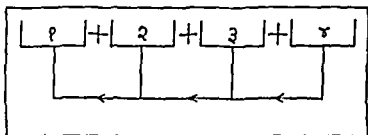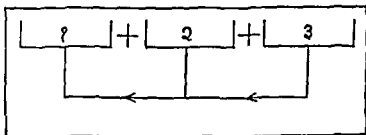
⌊आनन्दीको याद आया⌋[1] ⌊कि गए वर्ष जब उसके पिता उसे लेने आए थे⌋[2] ⌊तो उसने कहा था⌋[3] ⌊कि यदि ललिताका सम्बन्ध भी इसी गाँव में कर देते⌋[4] ⌊तो अच्छा रहता।⌋[5]
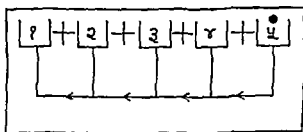
⌊टीलोंकी ऊँची-नीची रेखाएँ जो दोपहरके समय तीखी और सख्त दिखाई देती थीं⌋[1] ⌊सन्ध्याके फीके आलोकमें बेहद नरम और हल्की पड़ गई थीं⌋[2] ⌊मानो अपना अलगाव छोड़कर वे चुप एक दूसरेके पास सरक आई हों।⌋[3]
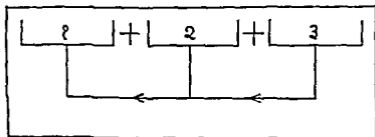
३३४५ प्रधान उपवाक्य+अधीन उपवाक्य+अधीनाधीन उपवाक्य+अधीन उपवाक्य+अधीनाधीन उपवाक्य

⌊एक बार बीचमें कच्ची नींदका हल्का-सा झोंका आया था⌋[1] ⌊तो लगा था⌋[2] ⌊जैसे वह सामने खड़ी हो⌋[3]। ⌊बिल्कुल वही शक्ल थी⌋ ⌊वही उदास-सी आँखें थीं⌋[5] ⌊और ।⌋[6]
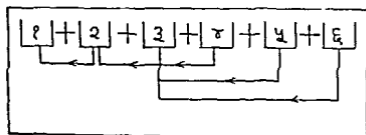
⌊यह क्या है⌋[1] ⌊कि जीवनके इन तीव्रतम दिनोंकी स्मृतिमें मैं बार-बार दुविधामें पड़ जाता हूँ⌋[2] ⌊कि क्या सचमुच हुआ⌋[3] ⌊क्या नहीं हुआ⌋ ⌊केवल सोचा गया।⌋[5]
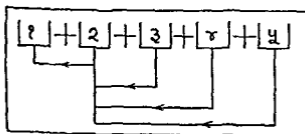
⌊मैं चाहती हूँ⌋[१] ⌊कि तुम जाना⌋[२] ⌊कि मैंने तुम्हें बांधा नहीं⌋[३] ⌊बांधनी नहीं⌋[४]—⌊न अब जब मैं हूँ⌋ ⌊और न—पीछे।⌋[६]
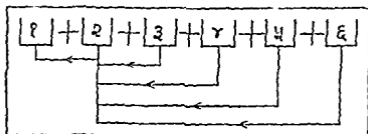
⌊स्नेही अपने स्नेह पात्रको कभी याद नहीं करता⌋[१] ⌊क्योंकि वह उसे कभी भूलता नहीं⌋[२] ⌊वह उससे इतना अभ्यस्त हो जाता है⌋[३] ⌊कि उसे कभी ध्यान नहीं होता⌋[४] ⌊कि इसे भी देखूं⌋[५] ⌊इसे देखनेके लिए एक अलग एक विशिष्ट प्रयत्न करूं⌋[६]
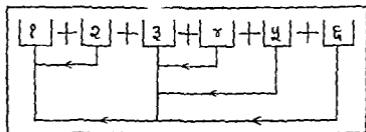
⌊और सप्तपर्णीकी छांह ⌋ ⌊अगर देवता है⌋[१] ⌊तो उन्हें धन्यवाद⌋[२] ⌊कि यह सम्भव हुआ है⌋[३] ⌊कि शशिकी वत्सल छांहमें वह खड़ा हो सका है⌋[४] ⌊और अपनेको उस वात्सल्यके प्रति उत्सर्ग कर सका है ⌋[५] ⌊कि उस वात्सल्यको कुचलनेके लिए बना आता कलुष पीछे रह गया है⌋[६] ⌊कि आसपास एक नया वायुमण्डल है⌋[७] ⌊जिसमें परिचय नहीं है⌋[८] ⌊इसलिए करुणा अवश्य है⌋[९] ⌊कि अपनेको होम कर देनेमें शशिने अपने जीवनको अंश पशु कर लिया है।⌋[१०]
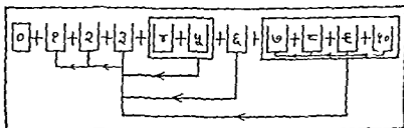
हिन्दीमे वाक्य-स्तरीय क्रमके सम्बन्धमे सामान्य सिद्धान्तके रूपमे यह कहा जा सकता है कि प्रधान उपवाक्य पहले आता है अधीन उपवाक्य बादमे। लेकिन इसे अविकल्प-योजना नही कह सकते। यदि, किसी अधीन उपवाक्यमे निहित अर्थ विशेषपर बल देना आवश्यक होता है तो उसका स्थान प्रधान उपवाक्यसे पहले हो सकता है। ऐसा भी सम्भव है कि प्रधान उपवाक्यको तोड दिया जाय और उसके बीच अर्थ प्रेषणकी आवश्यकताकी दृष्टिसे अधीन उपवाक्यको रख दिया जाये। अधीन उपवाक्यके अधीन-उपवाक्योकी शृखलाके बाद प्रधान उपवाक्यके सीधे अधीन उपवाक्य आ सकते है। निष्कर्षत यह कहा जा सकता है कि उपवाक्योके क्रममे भी उसी प्रकार उलट फर हो सकता है, जिस प्रकार वाक्यान्तर्गत पदोके क्रमम होता है।

३.४ सयुक्त वाक्य

एकाधिक सहयोगी उपवाक्योके योगसे निष्पन्न वाक्यको सयुक्त वाक्य कहा गया है। सयुक्त वाक्यके योजक सहयोगी उपवाक्य एक दूसरेके आश्रित नही होते, किन्तु वहत्तर अर्थ-योजनाकी दृष्टिसे वे परस्पर सम्बद्ध अवश्य होते है। प्राय समुच्चयबोधक अव्यय सयुक्त वाक्यके सहयोगी उपवाक्योमे योजक तत्त्वोके रूपमे प्रयुक्त होते हैं।

⌊फिर मैं हूँ⌋[१] और ⌊तुम हो⌋[२]
+

१	+	२
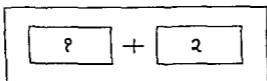
फिर मैं हू और तुम हो—वाक्यमे (फिर) मैं हू एक स्वतन्त्र वाक्य है इसी प्रकार **तुम हो** भी स्वतन्त्र वाक्य है। **और**के द्वारा योजित अर्थकी सिद्धिके हेतु इन स्वतन्त्र वाक्योसे एक सयुक्त वाक्यकी रचना सम्भव हुई है, किन्तु समूचे वाक्य का अर्थ 'मैं हूँ' या 'तुम हो' तक सीमित नही है। **मैं हू और तुम हो** वाक्य एक विराट अर्थका सूचक है। इस सयोगसे सिद्ध अर्थ, योजक वाक्य इकाइयोके स्वतन्त्र अर्थोंसे अलग है। इस तरह ये दोनो वाक्य स्वतन्त्र होते हुए भी एक-दूसरेसे अनुस्यूत हैं।

सयुक्त वाक्योमे तीन प्रकारके सम्बन्ध पाए जाते हैं—सयोजक, विरोधदर्शक और विभाजक।

३ ४ १ सयोजक

सयोजक समुच्चयबोधकसे योजित सहयोगी उपवाक्य सयोजक सबध द्योतित करते है। इस सयोजक सम्बन्धके अन्तर्गत कुछ उपसम्बन्ध भी पाए जाते हैं।

३ ४ १ १ कालवाचक उपसम्बन्ध

युगपतकालिक

इनमें सहयोगी उपवाक्योके व्यापारका एक ही समयमे होना सूचित होता है। इनमे एक ही अथ और कालकी क्रियाए प्रयुक्त होती हैं—

हरिकुमार अपने आपको मालिक न समझते थे ⌊और⌋ न प्राणनाथ अपने को नौकर मानता था।
सो देवी देवता लोग इसे लाग देख रहे है ⌊और⌋ दुनियाकी इस स्थिति की स्वर्गलोकमें बड़ी चर्चा चल रही है।
वह किसी राहमे जा बैठगा ⌊तथा⌋ सर्वात्मासे मिलनेके स्वप्न देखेगा।
बाहर वर्षा हो रही थी ⌊और⌋ चेतन अपने कमरेमे चुपचाप बिस्तरपर लेटा हुआ था।
दरवाजा खुला ⌊और⌋ अधकारमे एक आकार प्रकट हुआ।
पुस्तकें अभी तक अल्मारीमे रखी थी ⌊तथा⌋ उन्हे देखा भी न था।
माकी ममता बहिनका स्नेह प्रयसिका प्यार ⌊एव⌋ थी सगिनीकी आस्था।
समाज उसकी विविक्त इकाइयोका समूह है ⌊एव⌋ इकाईकी अवहेलना समाजकी अवहेलना है।
न तुम इस रहस्यको जानते हो ⌊ ⌋ न तुम्हारे पिता इसे समझते हैं।
न कुछ स्वीकार ही कर सकती हूँ ⌊,⌋ न प्रतिवाद कर सकती हूँ ⌊और⌋ न कुछ दे सकती हूँ।
न दोस्तीका खिचाव है ⌊(—)⌋ न दुश्मनीका सकोच।
न परलोकमे उसका कुछ फल मिलता है ⌊(—)⌋ न इसी लोकमे उस कामकी कोई तारीफ करता है।
⌊न केवल⌋ तुम्हारा यहाँ आना ही जरूरी है ⌊वरन⌋ तुम्हारा आकर रहना भी जरूरी है।
⌊न केवल⌋ उसमे मेरी आस्था है ⌊बल्कि⌋ अगाध विश्वास भी है।

क्रमानुगत

इससे ज्ञात होता है कि पूर्ववर्ती उपवाक्यका व्यापार समाप्त होनेपर ही परवर्ती उपवाक्यका व्यापार प्रारम्भ होता है।

प्रोफेसर कालिज छोड चुके थे └ और ┘ उनकी जगह नयी नियुक्ति हो गई थी।

पहले रूपरेखा बनाई └ और ┘ फिर कार्य विधिवत प्रारम्भ किया।

बहुत देर तक पढा लिखा └ और ┘ इसके बाद धूमन चली गई।

वह बमम चढा └ और ┘ एक क्षण बाद ही बेहोश हो गया।

३ ४ १ २ कारण अथवा परिणामसूचक उपसम्बन्ध

दो ऐसे महयोगी उपवाक्योंकी योजनासे बनते हैं जिनमे पूर्ववर्ती उपवाक्यमे कारण व्यक्त हो और परवर्त्तीमे परिणाम सूचित हो।

वह सगी नही है └ इसलिए ┘ शेखर उसे कभी याद नही करता।

तुम यह काम नही कर सकते हो └ इसीलिए ┘ मैं तुम्हे रोकनेके लिए कहता हूँ।

खाना होटलसे आ गया था └ अत ┘ काम बहुत न था।

उन तथ्यासे परिणाम निकलता है └ अत ┘ परिणाम भी रुचि द्वारा निर्मित हुए।

कोई भी नही सभाल सकता प्यारका दर्द └ इसीलिए ┘ शायद प्यार नही रहता └ , ┘ दर्द रह जाता है।

थोडा-सा आदर भाव भी होता था └ जिसके कारण ┘ तीन चार बार शेखर उसके घर गया।

रहा यह कि आदेश क्या है └ सो ┘ उसके बारेमे साधारण नियम कठिन है।

बाहर जानेमे हम दोनोको आलस्य लगता है └ इसलिए ┘ यहा उसने एक अच्छा ढाबा खोज लिया है।

तुम सामनेसे हट जाओ └ वरना ┘ मेरा हाथ उठ जायगा।

कुछ-न-कुछ तो होना ही चाहिए └ अन्यथा ┘ हमारा धीरज टूट जायेगा।

३ ४ १ ३ अर्थविस्तारक उपसबंध

इस प्रकारके वाक्योमे परवर्ती उपवाक्यमे पूर्ववर्ती उपवाक्यके विषयमे

तुम्हारा जो भी वरदान है सुझे स्वीकार है ⌊मगर⌋ उस उचित रङ्ग सकूँ यह मुझसे नहीं होगा।
दिन भर सारा काम करता हूँ ⌊फिर भी⌋ कोई सुन नहीं है।
उसने दस रोटियाँ खा ली ⌊फिर भी⌋ उसकी भूख नहीं मिटी।

३४२२ व्याप्तिमर्यादित विरोधप्रदर्शक उपसम्बन्ध

इस वाक्यमें कहीं-कहीं परवर्ती उपवाक्यमें पूर्ववर्ती उपवाक्यकी बातका विरोध होता है।

वह पढ़ना चाहता था ⌊पर⌋ समयाभाव उसे रोक देता था।
मैंने जाना चाहा ⌊मगर⌋ बाबाने मुझे रोक लिया।
वह आनेको तयार था ⌊परन्तु⌋ गाड़ी छूट गई थी।

३४२३ तुलनात्मक विरोधप्रदर्शक उपसम्बन्ध

इसे व्यक्त करने वाले वाक्यमें सहगामी उपवाक्योंके किन्हीं अवयवोंकी तुलना की जाती है।

शाम तक मैं पढ़ती रही ⌊लेकिन⌋ समझमें कुछ नहीं आया।
मैं तो चला गया ⌊पर⌋ वह नहीं गया।
आज तुम्हारे धन है ⌊मगर⌋ हमारे पास अन्न भी नहीं।
एक लड़केके लिए सब कुछ था ⌊पर⌋ दूसरेके लिए कुछ भी नहीं।
सम्राट्के मगधपर अभियान करनेसे मगधकी रक्षा चिन्तनीय हो गई है ⌊तिसपर⌋ महामात्य कहीं गुप्त यात्रापर चल गए हैं।

३४२४ अर्थविस्तारक उपसम्बन्ध

उसने कल्पनामें राजकुमारका अभिमान तोड़ दिया था ⌊मगर⌋ यह सत्यसे कितना दूर था।
आप हर काममें इतनी जल्दी करते हैं ⌊पर⌋ यह जल्दी उचित नहीं।

३४२५ मन स्थिति अनुमानसूचक उपसम्बन्ध

या तो जवान बूढ़े सभी मरते हैं ⌊लेकिन⌋ दुख इस बातका था कि उसने स्वयं हटककी जान ली थी।
मैं आपका उल्लंघन नहीं करना चाहता ⌊लेकिन⌋ मानता हूँ कि इस प्रकारका काम अनुचित है।

वह उसका बहुत ध्यान रखता था ∟पर⌟ न जाने क्या सुमनको उससे चिढ होती जा रही थी।

अभी परिणाम घोषित नही हुआ ∟लेकिन⌟ मुझे आशा है कि पास तो हो ही जाऊँगा।

यह दोष हम देशका देना ही है ∟नहीं तो⌟ हमम भीतर कही प्राणोकी जगह कचरा भरा हुआ है।

उसके भीतर चुभता था ∟नहीं तो⌟ मैं क्या ऐसे बेबस होकर रोया।

३ ४ २ ६ परिणामसूचक उपसम्बन्ध

तुम सामनसे हट जाओ ∟वरना⌟ मेरा हाथ उठ जाएगा।

कुछ न कुछ तो होना ही चाहिए ∟अन्यथा⌟ हमारा धीरज छूट जाएगा।

३ ४ ३ विभाजक

सामान्यतया विभाजक समुच्चयबोधकासे योजित सहयोगी उपवाक्य विभाजक सम्बन्ध द्योतित करते है।

औरत जन्मसे पूर्व अच्छी होती है ∟या⌟ मरनेके बाद ( )।

प्रश्न है कि हिंसा उचित है ∟या⌟ अहिंसाको अपनाना ( )।

अत जिसकी स्वार्थबद्ध दृष्टि अपनेसे आगे नहीं जा सकती ∟अथवा⌟ अभिमानके कारण जिन्हे अपनी ही कमाईकी लत लग गई है उनकी उतनी समाई नही है।

ईश्वरकी दया है ∟अथवा⌟ परिश्रमका फल ( )।

प्यार भी ∟या⌟ घटता है ∟या⌟ बढता है ∟या⌟ बदलने लगता है नदीकी धाराकी ही भाँति।

वहाँ ∟या तो धनके हिसाबसे वर्गीकरण या या⌟ बुद्धिके हिसाबसे)

यो तो प्यार आदमीको ∟या तो बादलोकी ऊचाई तक उठा ले जाता है या⌟ स्वर्गसे पातालमे फेक देता है।

हिंसा उचित है ∟या⌟ नही ∟या तो पूर्णतया अनुमोदित हो सकती है या⌟ पूर्णतया वर्जित।

कोई सनसनीदार घटना होगी ∟या⌟ तीव्र घृणा होगी ∟या⌟ तीव्र प्रेम होगा।

यहाँ ∟या तो अधे आते हैं या⌟ कानाके चोर ( )।

∟क्या पहले हुआ क्या⌟ बादमे वह निश्चय नही कर पाया।

गया यहाँ पता था आज ये ⌊ या ⌋ कोई नाच-तमाशा हो रहा था।
तुम मानोगी ⌊ चाहे ⌋ कुछ भी हो।
⌊ चाहे यह मर जाए ⌋ जिए किसीको क्या ?
⌊ चाहे यह अपने प्रश्नका उत्तर पानेकी उत्कट इच्छा रही हो चाहे ⌋ कुछ घूमने फिरनेकी, शेखर बाबा मदनसिंहसे मिलने गया।
चन्दर चाहे मनकी श्रद्धा अब भी वही हो ⌊ लेकिन ⌋ तुमपर अब विश्वास नहीं रहा।
इस कठिन मार्गमें चाहे ओधाम अँधेरा आ जाए चाहे गर्दन टूटने लगे, चाहे पैर उठना दुस्तर हो जाए ⌊ लेकिन ⌋ यह गठरी ढोनी ही पड़ेगी।

३ ४ ४ वाक्य-योजना

३ ४ ४ १ एकाधिक साधारण वाक्योंके संयोजनसे

⌊ बाहर वर्षा हो रही थी ⌋[1] और ⌊ चंदन अपने कमरेमें लेटा था। ⌋[2]
+

⌊ वह सगी नहीं है ⌋[1] इसलिए ⌊ शेखर उसे याद नहीं करता। ⌋[2]
+

⌊ मेरी वेदना रातसे भी काली है ⌋[1] और ⌊ दुख समुद्रसे भी विस्तृत ⌋[2]
+

⌞माकी ममता⌟[1] ⌞बहनका स्नेह⌟[2] ⌞प्रेयसिका प्यार⌟[3] एव ⌞थी सगिनीकी आस्था।⌟[4]

[१] + [२] + [३] + [४]

⌞न दोस्तीका खिचाव है⌟[1] () ⌞न दुश्मनीका सकोच।⌟[2]

⌞न कुछ स्वीकार ही कर सकती हूँ⌟[1] ⌞न प्रतिवाद कर सकती हूँ⌟[2] और ⌞न कुछ दे सकती हूँ।⌟[3]

⌞न केवल उसमे मेरी आस्था है⌟[1] बल्कि ⌞अगाध विश्वास भी है।⌟[2]

⌞तुम यहा रहती ही हो⌟[1] फिर ⌞तुम काम क्यो नही करती।⌟[2]

⌊आप जल्दी आ जाना ⌋¹ वरना ⌊अच्छा न होगा।⌋²

⌊मैंने उसकी भलाई की ⌋¹ तिस पर भी ⌊वह खफा रहता है।⌋²

⌊दिन भर सारा काम करता हूँ⌋¹ फिर भी ⌊कोई खुश नहीं है।⌋²

⌊उसने कल्पना में राजकुमार का अभिमान तोड़ दिया था⌋¹ पर ⌊वह सत्य से कितना दूर था।⌋²

⌊क्या यहाँ नेवता खाने आए थे⌋¹ या ⌊कोई नाच-तमाशा हो रहा था।⌋²

└उनके पास शक्ति थी┘[1] और └रुपया था┘[2] और └बेरहमी थी┘[3] और └आदमी थे।┘[4]
 + + +

[१] + [२] + [३] + [४]

└औरत जन्मसे पूर्व अच्छी होती है┘[1] या └मरनेके बाद ( )।┘[2]
 +

└सब ईश्वरकी दया है┘[1] अथवा └परिश्रमका फल ( )।┘[2]
 +

└प्यार भी या घटता है┘[1] या └बढ़ता है┘[2] या └बदलने लगता है┘[3] └नदीकी धाराकी ही भांति।┘[4]
 + +

└कोई सनसनीदार घटना होगी┘[1] या └तीव्र घृणा होगी┘[2] या └तीव्र प्रेम होगा।┘[3]
 + +

[१] + [२] + [३]

⌊तुम मानोगी⌋[1] चाहे ⌊कुछ भी हो।⌋[2]

[१] + [२]

⌊इस कठिन भारसे चाहे आँखोंमें अँधेरा आ जाए⌋[1] ( ) ⌊चाहे गर्दन टूटने लगे⌋[2] ( ) ⌊चाहे पैर उठना दुस्तर हो जाए⌋[3] लेकिन ⌊यह गठरी ढोनी ही पड़ेगी।⌋[4]

[१] + [२] + [३] + [४]

⌊थोड़ा सा आदर भी होता था⌋[1] जिसके कारण ⌊शेखर तीन-चार बार उसके घर गया।⌋[2]

[१] + [२]

⌊इस बीच टापू और नदीकी सीमा रेखा मिट गई थी⌋[1] या ⌊मिटी नहीं थी⌋[2] ⌊अँधेरेमें पानीको पहचानना कठिन था।⌋[3]

[१] + [२] + [३]

⌊कोई कसता जा रहा है आखिरी बिन्दु तक⌋[1] और ⌊वहाँ पहुँचनेसे पहले ही टूट जाता है⌋[2] — समूची देहमें⌋[3] ⌊न, यह पीड़ा नहीं है⌋[3] ⌊पीड़ाकी एक सीमा होती है⌋[4] और ⌊उसके पार उसकी पहचान खत्म हो जाती है।⌋[5]

[१] + [२] + [३] → [३] + [४] + [५]
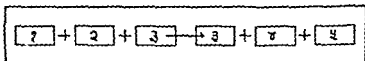
⌊कह डालूं अंतर्व्यथाको⌋[1] ⌊बहा डालूं अंतर्वेदनाको⌋[2] + ⌊बिखेर दूं अंतर्ज्वालाको⌋[3] + ⌊लुटा दूं आंतरिक अनुभूतियांको⌋[4] + ⌊दान कर जाऊं अपनी अंतःशक्तिकी चिर संचित शिखाओंको⌋[5] + ⌊अपने अन्तःकरणके उन्मादको।⌋[6]
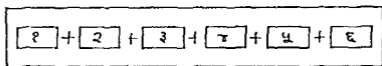
३ ४ ४ २ एकाधिक मिश्रवाक्योंके संयोगसे

⌊हम केवल इतना कर सकते हैं⌋[1] ⌊कि उसका कवच कम दें⌋[2] और + ⌊अगर उसके पास दिया है⌋[3] ⌊तो उसकी बाती उकसा दें।⌋[4]
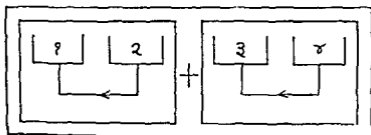
⌊आजकी आवाज़ कांप रही थी⌋[1] ⌊जैसे वह हवामें नटकी रस्सीपर चल रही हो⌋[2] और + ⌊नीचे गड्ढा हो⌋[3] ⌊जहां वह कभी भी फिसल सकती है।⌋[4]

└मुझे हल्की सी खुशी हुई┘[1] └कि वे अब चले गए हैं┘[2] और└मैं जान बूझकर यह खुशी अपनेसे छिपाता रहा┘[3] └जैसे मैं उसपर शर्मिन्दा हूँ।┘[4]

└उसका मशीन-तुल्य जीवन बीतता है वैसे ही,┘[1] └जैसे मोटरका स्पीडो मीटर यन्त्रवत फासला नापता जाता है┘[2] और └यन्त्रवत विश्रान्त स्वरमें कहता है (किससे)┘[3] └कि मैंने अपने अमित शून्य पथका इतना अंश तय कर लिया।┘[4]
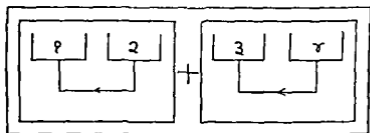
└यथार्थवादी समझते हैं┘[1]└कि ज्ञानका उत्स है वस्तु या बहिर्जगत┘[2] और └भाववादी समझते हैं┘[3]└कि ज्ञानका उत्स अपने मनमें ही निहित था।┘[4]
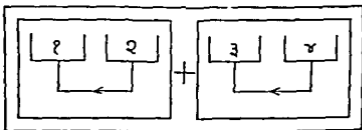
⌊जैसे किसी वीरान अँधेरेमें पतझड़के गिरे पत्ते जल रहे हों ⌋[1] ⌊ऐसे उसे अपनी देहका रोम रोम सुलगता हुआ महसूस हुआ ⌋[2] और ⌊उसने अपने हाथपाँवोंको एक झटकेके साथ ऐसे हिलाया ⌋[3] ⌊जैसे गर्दन कटा हुआ बकरा बड़ी देर तक ज़मीनपर छटपटाता रहता है। ⌋[4]

⌊इसी अनन्त नश्वरता और अनन्त पुनर्जन्म, अबाध परिवर्तनमें इसी सिद्धान्तमें ⌋ ⌊कि कोई दो क्षण एक से हो ही नहीं सकते ⌋[2] ⌊कि प्रत्येक छोटेसे छोटे विपलमें उसकी मृत्यु और उससे अगले विपलका उद्भव अवश्यम्भावी है ⌋[3] ⌊मैं मरता हूँ ⌋[1] क्योंकि ⌊मेरा जीवन केवल उस मरणकी भूमिका है ⌋[4] ⌊जिसमें लाखों और करोड़ों आगामी जीवन निहित हैं। ⌋[5]
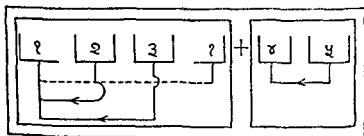
⌊ इस निष्कासनपर उसका सारा व्यक्तित्व चीत्कार कर रहा था ⌋[1] ⌊ किन्तु उसके मुँहसे एक शब्द नही निकला ⌋[2] और ⌊ उसके विवेकने किसी विचारका स्पष्ट निश्चय किया तो यही ⌋[3] ⌊ कि एक नही, पचास शेखर भी जितनी श्रद्धा जितनी आस्था जितना प्यार इस राशीको दे सकते हैं, ⌋[4] ⌊ वह सब इस एक क्षणके सामने हेय और नगण्य है। ⌋[5]
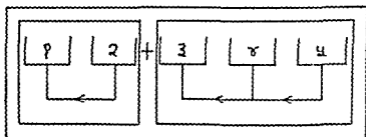
⌊ शेखरको नही लगा ⌋[1] ⌊ कि डूबनेमे बच जानेपर शर्म आनी चाहिए ⌋[2] + ⌊ न यही ( ) ⌋[3] ⌊ कि डूबना कोई बड़ी भयंकर बात होगी। ⌋[4]

⌊ मैं सोचता हूँ ⌋[1] ⌊ कि तुम अपनका बराबर मिटाती जाओगी ⌋[2] और ⌊ मैं निलज्ज होकर सब स्वीकार करता जाऊंगा ⌋[3] — ⌊ यह नहीं होगा। ⌋[4]
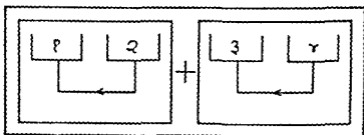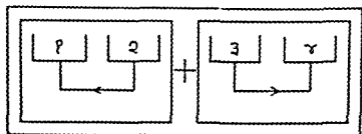
३४४३ एक या एकाधि क साधारण और एक या एकाधिक मिश्र वाक्योंके योगसे

⌊लेकिन साथ ही मैं यह भी देखना हूँ⌋[१] ⌊कि वह इतना विशिष्ट इतना एकात मेरा भी नही है⌋[२] ⌊कि दूसरे उसमे रुचि न रख सकें⌋[३] , ⌊मेरे व्यक्तिगत जीवनमे मानवके समष्टिगत जीवनका भी इतना अश है⌋[४] ⌊कि समष्टि उसे समझ सके⌋[५]और ⌊उसमे अपने जीवनकी एक झलक पा सके।⌋[६]
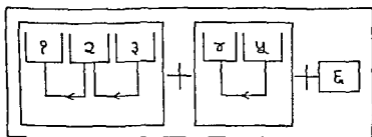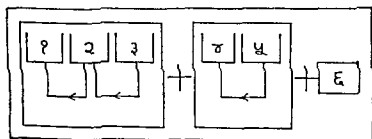
⌊देशके बडे बडे सुकुमार कोट्याधिप युवक ऐश्वर्य त्यागकर श्रमण बन गए⌋[१]और ⌊घबराकर ब्राह्मणोंने आश्रमोंकी स्थापना की⌋[२] तथा ⌊यह प्रचार किया⌋[३] ⌊कि बिना गृहस्थ और वृद्ध हुए कोई परिव्राजक न हो।⌋[४]
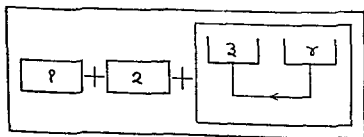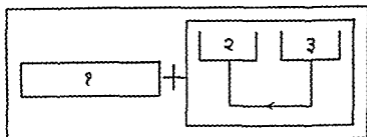
३४४३ एक या एकाधि क मावारण और एक या एकाधिक मिश्र वाक्योके योगसे

└लकिन साय ही मैं यह भी देखता हूँ┘[1] └कि वह इतना विशिष्ट, इतना एकात मेरा भी नही है┘[2] └कि दूसरे उसम रुचि न रख सकें┘[3] , └मेरे व्यक्तिगत जीवनम मानवके समष्टिगत जीवनका भी इतना अश है┘[4] └कि समष्टि उसे समझ सके┘[5] और └उसम अपने जीवनकी एक झलक पा सके।┘[6]
+ +

└राजे बडे-बडे सुकुमार राज्याधिप युवक ऐश्वर्य त्यागकर श्रमण बन गए┘[1] और └घबराकर ब्राह्मणोने आश्रमोकी स्थापना की┘[2] तथा └यह प्रचार किया┘[3] └कि बिना गृहस्थ और वृद्ध हुए कोई परिव्राजक न हो।┘[4]
+ +

⌊मैं आपका उल्लंघन नहीं करना चाहता⌋¹ लेकिन ⌊मानता हूँ⌋² ⌊कि इस प्रकारका काम अनुचित है।⌋³

⌊अत जिसकी स्वार्थबद्ध दृष्टि अपनेसे आगे नहीं जा सकती⌋¹ अथवा ⌊अभिमानके कारण जिन्हे अपनी ही बड़ाईकी लत लग गई है⌋² ⌊उनकी उतनी समाई नहीं है।⌋³
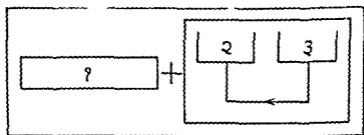
⌊उन्हे देखकर लगता था⌋¹ ⌊जैसे एक बड़ा विशालकाय पक्षी उड़ता हुआ अचानक ठिठक गया हो⌋² ⌊पहाड़ी और खुले आकाशके बीच उसके दोनो पंख ऊपरकी ओर मुड़ गए हों⌋³—⌊पसरा गए हों खाली हवापर।⌋⁴
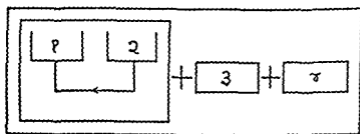
└हमारे भीतर दूरीके जो हिस्से हैं┘[1] └जिन्हें कभी-कभार सोते हुए नींदकी चन्द लहरें भिगोकर वापस लौट आती हैं┘[2] └जो हमारी आधी अंधेरी जिन्दगीका हिस्सा हैं┘[3] └( ) लगता है┘[4] └जैसे वे स्याह गहरे पनीके भीतरसे उनपर झाँक रहे हों┘[5], └हम देख रहे हों।┘[6]
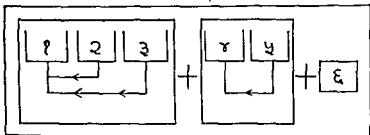
└आत्मकथा लिखना एक प्रकारका दम्भ है┘[1] — └उसमें यह अहंकार है┘[2] └कि मेरे जीवनमें कुछ ऐसा है┘[3] └जो कथनीय है┘[4] └देय है┘[5] └रक्षणीय है┘[6] └स्मरणीय है┘[7], └हो सकता है┘[8] └कि ऐसा हो┘[9] किन्तु └व्यक्ति स्वयं यह दावा करने वाला कौन होता है।┘[10]
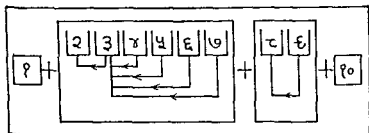
└उस उलझनमें सन्तोष था┘[1] └सान्त्वना थी┘[2] └एक छिपा दर्द था┘[3] └जो जानता है┘[4] └कि अपनेको स्वेच्छया भाड़में झोंक रहा हूँ।┘[5]
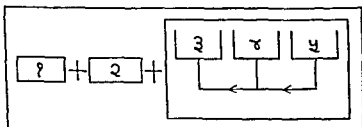
⌊छत, न यह छत नहीं है⌋¹ ⌊सिर्फ रोशनी है⌋²—⌊एक अजीब ढंगसे झूलता हुआ बल्ब⌋³ ⌊और मेरी बांह मुड़ती गई⌋⁴ ⌊(डोण्ट लेट देम एस्केप⌋⁵—⌊एक फूत्कारती सी आवाज⌋⁶ ⌊फिर भी वह नहीं⌋⁷ और ⌊वह एक तस्तेकी तरह कांप रही थी⌋⁸ और ⌊उसे मैं देख सकता था⌋⁹ ⌊कांपते हुए⌋¹⁰ ⌊जैसे वह मेरी बांह न हो।⌋¹¹
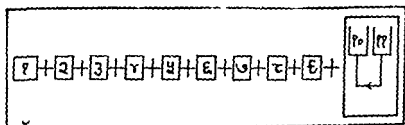
⌊पहले तो मोटर-साइकिल काफी फासलेपर रहकर चलती⌋¹ ⌊लेकिन इस नातिगपर स्कूटरके ठीक पीछे आ लगती⌋² ⌊एक ढीठता होती है⌋³ ⌊काफी हद तक डराबनी ढीठता⌋⁴ ⌊जिसके साथ उस युवककी आंख सुलझाप टिक जाती⌋⁵ ⌊रीझना⌋⁶ ⌊यहाँ तक तो खैरियत थी⌋⁷ ⌊कि स्कूटर के पीछे अपनी मोटर साइकिलकी रोशनी स्थित करके वह सुलेखाको घूरे⌋⁸ ⌊घूरता रहे⌋⁹ ⌊जमकि किसी तस्वीरकी आंखें किसीपर टिकी हों⌋¹⁰ ⌊लेकिन उसके बाद जो होता था⌋¹¹ ⌊वह खतरनाक था।⌋¹²
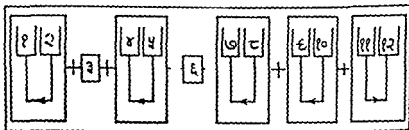
⌊घटा मैंने उससे बहसें की हैं⌋[१] + ⌊उसके साथ घूमा हूँ⌋[२] + ⌊उसकी लनत रानियां सुनीं (सुनी कम, पढ़ी ज्यादा) हैं⌋[३], + ⌊उसकी कहानियोंकी आलोचना की है⌋[४] और + ⌊देखा⌋[५] ⌊कि वह पलटकर मेरी रचनाके दोष गिनाने लगा है।⌋[६]
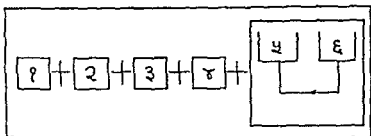
⌊और या गुम्फ करके राजेन्द्रने पत्रिकाके पूरे एक पृष्ठमें बताया है⌋[१] ⌊कि कैसे निन्नी आ जाती थी⌋[२] और + ⌊उसे परेशान करती थी⌋[३] ⌊कि वह उसे अपनी कहानीका पात्र बनाए⌋[४] और + ⌊कैसे वह उसे इस योग्य नहीं समझता⌋[५] और + ⌊कैसे निन्नी उससे बहस करती⌋[६] और + ⌊कैसे उसने राजेन्द्रका निरादर कर दिया।⌋[७]

⌊छत, न यह छत नहा है⌋[१] ⌊सिफ राशनी है⌋[२]—⌊एक अजीब ढगस भूलता हुआ बल्ब⌋[३] ⌊और मेरी बाँह मुडती गई⌋[४] ⌊(डाण्ट लट देम एस्केप⌋[५]—⌊एक फूत्कारती सी आवाज⌋[६] ⌊फिर भी वह नही⌋ और ⌊वह एक तख्तेकी तरह काँप रही थी⌋[७] और ⌊उसे मैं देख सकता था⌋[८] ⌊कापते हुए⌋[९] ⌊जसे वह मेरी बाह न हो।⌋[११]
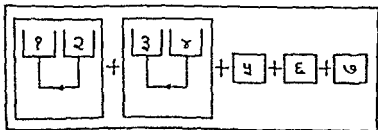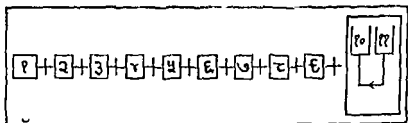
१ + २ + ३ + ४ + ५ + ६ + ७ + ८ + ९ + [१० ११]

⌊पहले ता मोटर-साइकिल काफी फासलेपर रहकर चलती⌋[१] ⌊लेकिन इस क्रासिंगपर स्कूटरके ठीक पीछे आ लगती⌋[२] ⌊एक ढीठता होती है⌋[३] ⌊काफी हद तक डरावनी ढीठता ⌊जिसके साथ उस युवककी आखें सुलेखापर टिक जाती⌋[४] ⌊रीझना⌋[५] ⌊यहाँ तक ता खरियत थी⌋[७] ⌊कि स्कूटर के पीछे अपनी मोटर साइकिलकी राशनी स्थित करके वह सुलेखाको घूर⌋[६] ⌊घूरता रहे⌋[८] ⌊जसकि किसी तस्वीरकी आँखें किसीपर टिकी हों⌋[१०], ⌊लेकिन उसके बाद जो हालाया⌋[११] ⌊वह खतरनाक था।⌋[१२]

∟घटा मैंने उससे वहसें की हैं _|[१] ∟उसके साथ घूमा हूँ _|[२] ∟उसकी लनतरानिया सुनी (सुनी कम पढी ज्यादा) हैं _|[3] ∟उसकी कहानियोंकी आलोचना की है _|[४] और ∟देखा _|[५] ∟कि वह पलटकर मेरी रचनाके दोष गिनाने लगा है। _|[६]

∟और या गुरू करके राजेन्द्रने पत्रिकाके पूरे एक पृष्ठमे बताया है _|[१] ∟कि कैसे निन्नी आ जाती थी _|[२] और ∟उसे परेशान करती थी _|[3] ∟कि वह उसे अपनी कहानीका पात्र बनाए _|[४] और ∟कैसे वह उसे इस योग्य नही समझता _|[५] और ∟कैसे निन्नी उससे वहस करती _|[६] और ∟कैसे उसने राजेन्द्र को निरुत्तर कर दिया। _|[७]

⌊ज़िन्दगीमें जवाबदेहीका समझ एकदम किस तरह आ जाता है⌋[1] ⌊जब हम उसकी बहुत कम प्रतीक्षा कर रहे होते हैं⌋[2] ⌊जैसे वह हमारेलिए न हो⌋[3] + ⌊किसी दूसरेके लिए आया हो⌋[4] + ⌊दूसरेके लिए नहीं तो तीसरेके लिए⌋[5] + ⌊तीसरेकेलिए नहीं तो चौथे पाँचवे छठेकेलिए⌋[6] + ⌊चाहे जिसके लिए हो⌋[7] + ⌊हमारेलिए नहीं है।⌋[8]

⌊मैं कल्पना करता हूँ⌋[1] ⌊ये स्वर दो तेज तराव हैं⌋[2] ⌊जो झीलकी छोटी-छोटी अदृश्य लहरोंपर सवार होकर चले जा रहे हैं⌋[3] ⌊क्षितिजकी ओर चन्द्रोदयकी ओर चन्द्रमाकी किरणोंसे मिलने⌋[4] ⌊क्योंकि ये किरणें उनकी बहिनें हैं⌋[5] और + ⌊वे इन्हें कुमुदिनियोंके हार पहनायेंगे।⌋[6]
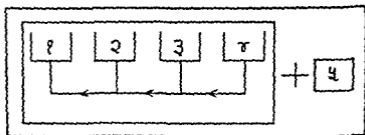
⌊और यह भी अनुभव कर रहा था⌋[1] ⌊कि मैं अकेला इसलिए हूँ⌋[2] ⌊कि मैं उस प्रकारका नहीं हूँ⌋[3] ⌊जिसे लोग अच्छा कहते हैं⌋[4], + ⌊मैं पढ़ता नहीं हूँ⌋[5] + ⌊किसीका कहना नहीं मानता हूँ⌋[6] + ⌊ढीठ हूँ⌋[7], + ⌊लड़ाका हूँ⌋[8] + ⌊शैतान हूँ।⌋[9]

⌊मुझमें उठता है एक क्रुद्ध विद्रोह इसलिए नहीं⌋[१] ⌊कि मैंने क्या कुछ खाया है⌋[२] ⌊या कितना कष्ट उठाया है⌋[३] ⌊बल्कि इसलिए कि मैंने कितना दुख दिया है⌋[४], ⌊कितने कितने भोले हृदयोंको कैसी कठोर चोटें पहुँचाई हैं।⌋[५]
+
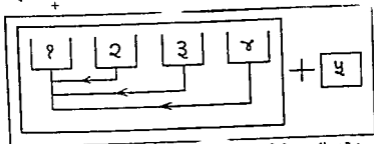
⌊गंगाप्रसादने ज्ञान प्रकाशकी ओर देखा⌋[१], ⌊"सुन रहे हो चचा"⌋[२] ⌊यह किस्सा काबिल-नाकाबिलका नहीं है⌋[३] ⌊यह किस्सा गंगाप्रसादके रिश्तेदार और अब्दुलहक्के रिश्तेदारका भी नहीं है⌋[४] ⌊यहाँ किस्सा हिन्दू मुसलमानका है⌋ ⌊जिन्हें आप भाई भाई कहते हैं⌋[५] ⌊सुन रहे हो चचा कितनी मज़ेदार बात है।⌋[६]
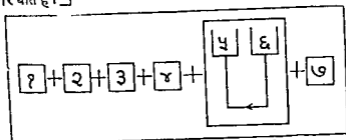
⌊अगर मैं उससे कहूँ⌋[१] ⌊कि—यार राकेश जीनियस है⌋[२] ⌊वह एक ही बार टाइप करता है⌋[३] और ⌊चीज़ सजी सँवरी बन जाती है⌋[४] ⌊हम लोग जीनियस नहीं⌋[५] ⌊हमें बहुत काट-छाँट करनी पड़ती है⌋[६] ⌊तो राजेन्द्र कापी लाकर दिखाएगा⌋[७] ⌊कि उसने टूटना जैसी सफल कहानी एक ही बार लिखी है⌋[८] और ⌊कुछ ज्यादा परिवर्तन भी नहीं किया।⌋[९]
+
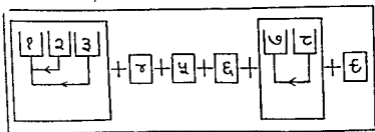
⌊उसने देखा⌋[१]—⌊समझ लिया⌋[२] ⌊कि कोई किसीका नहीं है⌋[३] + ⌊यानी इतना नहीं है⌋[४] ⌊कि उसका स्वामी निर्देशक, भाग्य विधायक बन सके।⌋[५]
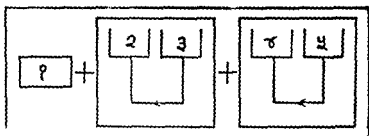
⌊पहचान लेनेका यही पुरस्कार है⌋[१] ⌊कि दोनोंके पास कहनेको कुछ नहीं है⌋[२] ⌊विनिमयकेलिये कुछ नहीं है⌋[३] ⌊एक ओर अनदेखती निस्पंद आँखे⌋[४] और ⌊दूसरी ओर विमूढ़ हतबोध पाषाण।⌋[५]
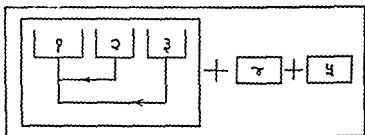
⌊और कहीं यह बात तो नहीं है⌋[१] ⌊कि चरम शान्तिकी प्रतीक्षा करते हुए अभियुक्त स्वीकारी भावको दबाकर स्मृतिके घाटेपर रचयिताकी आकलन-बुद्धि चढ़ बठी है⌋[२] ⌊क्या अन्तिम दिनोंमें अपने जीवनका अर्थ अभिप्राय, उसकी निष्पत्ति और सिद्धि खोजता हुआ मैं अपने उद्योगकी सफलताके मोहमें पड़ गया हूं⌋[३]—⌊कहकर अकनकी निमग्नतासे डिगकर सृजनकी आसक्तिमें पड़ गया हूं।⌋
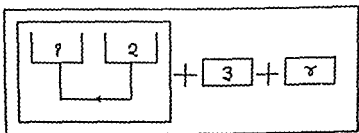
⌊प्यार कला भी हो सकता है शेखर⌋¹, ⌊वह आदर्श बुरा नहीं है⌋² + ⌊कल्याणकर है⌋³, ⌊मैं मानूगी⌋⁴, ⌊पर इसलिये वह कलाम भी अधिक अतरग और जरूरी हो गया था⌋⁵— ⌊इस अहकारमे नही कहती⌋⁶, ⌊अपनी लाचारी मानती हूँ⌋⁷, ⌊कलाका आनन्द सयत आनन्द है⌋⁸ ⌊मैंने अपना समूचा व्यक्तित्व, समूचा इद एक ही बार स्वयम भरकर उँडेल दिया⌋⁹ ⌊वह सयत नही था⌋¹⁰, ⌊इसलिये शायद आनन्द भी नही हुआ⌋¹¹— ⌊यद्यपि इतनी वेदना हुई⌋¹² ⌊कि उसे ट्रेजेडी भी नही कह सकती।⌋¹³

⌊देखता हूँ⌋¹ ⌊कि कुछ दृश्य हैं⌋² ⌊जो बिजलीकी कौंधकी तरह जगमग है⌋³ ⌊कुछ और हैं⌋⁴ ⌊जो बुझ गए हैं⌋⁵ और ⌊घटनाके अनुक्रम का धागा तोड गए हैं⌋⁶, ⌊तोड ही नही उलझा भी गए है⌋⁷ ⌊जिससे मैं उन ज्वलन्त घटनाओंको भी ठीक कालक्रमसे नहीं देखता⌋⁸— ⌊मनमाने क्रम से चलती हुई आती है⌋⁹ और ⌊चली जाती है⌋¹⁰ और ⌊मैं दावेके साथ नही कह सकता⌋¹¹ ⌊कि क्या पहले हुआ⌋¹² ⌊क्या पीछे हुआ⌋¹³ ⌊इतना ही कह सकता हूँ⌋¹⁴ ⌊कि यह सब अवश्य हुआ⌋¹⁵ ⌊और इसमे यह ध्वनित नही है⌋¹⁶ ⌊कि केवल इतना ही हुआ⌋¹⁷ ⌊या कि इसी क्रमसे हुआ।⌋¹⁸

└ उस दृष्टिमें क्या है ┘[1] └ उसे पढ़नेकी योग्यता किसीमें नहीं है ┘[2], └ उसमें भी नहीं है ┘[3] └ जिसपर जाकर वह टिक गई है ┘[4] और └ जिससे वह आगे नहीं बढ़ेगी ┘[5], └ सहसा अपने भीतर सिमट आएगी। ┘[6]

└ वह चाह उठता ┘[1] └ कि किसी तरह यह उलझन कट जाय ┘[2], └ चाहे इसके साथ उसका कोई अंग ही क्यों न कटकर चला जाय ┘[3] └ फिर वह सोचता ┘[4] └ यह सब विक्षोभ उस असन्तोषके संस्कारका ही फल है ┘[5] └ जिसमें उसका अन्तर रंगा गया है ┘[6], └ तब वह सोचने लगता ┘[7] └ कि यह विद्रोही आत्मा ही किसी तरह कुचली जाये ┘[8] └ छिन्न भिन्न हो जाय ┘[9] └ ताकि वह अपने आपको बँधने और पालतू बनाया जाने दे सके ┘[10] └ न केवल बद्ध और आनत बल्कि स्वेच्छासे और अनुगत भावसे बद्ध ┘[11] └ ताकि वह विद्रोहका अनवरत आग्नेय वसमगाता अधीर उत्पात भूल जाए। ┘[12]
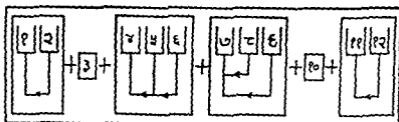
संयुक्त वाक्योंका उपर्युक्त विवेचन स्पष्ट करता है कि भाषा लेखककी अनुभूति और विचारोंकी संवाहिका है तथा इस दृष्टिसे व्याकरणिक व्यवस्था गौण हो जाती है। प्रयोक्ताकी मनःस्थितिके अनुरूप सहज स्वाभाविक अभिव्यंजनाके प्रवाहमें निर्दिष्ट किए साधारण वाक्योंके स्थान पर मिश्र एवं संयुक्त वाक्योंके

यागम वन जटिन वाक्य ही विनेष प्रभावशाली सिद्ध हुए ह। य याक्य गहननावे साथ-साथ पूण अथ दनम भी साधारण वाक्योंकी अपेक्षा अधिक समथ हैं।

३ ६ वाक्यांश

प्रसिद्ध भाषाशास्त्रियों एव वयाकरणोंने शब्दकी व्याख्या की है। ब्लूमफील्डने न्यूनतम स्वतन्त्र रूपांशको शब्द कहा है। जो भाषात्मक इकाई स्वतन्त्र रूपसे प्रयुक्त न हो सके उस बद्ध रूपांश कहा है।[1] ब्लाक एव ट्रगरका मत है कि सामान्य भाषाम स्वतन्त्र रूपम प्रयुक्त भाषात्मक इकाई स्वतन्त्र रूपांश है और जो इकाई कभी भी स्वतन्त्र रूपम प्रयुक्त न हो सके वह बद्ध रूपांश है।[2] पाइक[3] हॉकेट मारचन्ड[5] तथा हिन्दी वयाकरण प० कामताप्रसाद गुरु[6] आदिने स्वतन्त्र और बद्ध रूपांशका अन्तर स्थापित किया है।

---

1 Bloomfield Leonard—Language Page 160 A Linguistic form which is never spoken alone is a bound form all others are free forms *A free form which is not a phrase is a word* A word then is a free form which does not consist entirely of (Two or more) les er free forms in brief a word is a minimum free form

2 Block & Trager—Outline of Linguistic Analysis page 68
Any fraction that can be spoken alone with meaning in normal speech is a free form a fraction that never appears by itself with meaning is a bound form A free form which cannot be divided entirely into smaller free forms is a minimum free form or word

3 Pike K L—Phonemics Page 254 Word the smallest unit arrived at for some particular language as the most convenient type of grammatical entity to separate by spaces in general one of those units of a particular language which actually or potentially may be pronounced by itself

4 Hockett Charles F —A Course in Modern Linguistics Page 166
Word means single combination with single pronunciation A word is thus any segment of a sentence bounded by successive points at which pausing is posible

5 Marchand Hans—The categories and types of present day English word Formation page 1 It is taken to denote the smallest in dependent indivisible unit of speech susceptible of being used in isolation

६ प कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण पृष्ठ ४३ एक या अधिक अक्षरों से बनी स्वतन्त्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं।
किसी भाषा म कुछ ध्वनियाँ ऐसी होती हैं जो स्वयसार्थक नहीं होतीं पर जब वे शब्दों के साथ जोडी जाती हैं तब सार्थक होती हैं। ऐसी स्वतन्त्र ध्वनियों को शब्दांश कहते हैं।

सभी परिभाषाओंके अध्ययनके उपरान्त यही निष्कर्ष निकलता है कि स्वतन्त्र रूपसे प्रयोगमें समर्थ भाषाकी न्यूनतम अविभाज्य सार्थक इकाई शब्द है तथा जो रूपांश स्वतन्त्र रूपसे प्रयुक्त न हो सकें अर्थात् अनिवार्यतः किसी स्वतन्त्र रूपसे जुड़कर ही प्रयुक्त हो सकें उन्हें बद्ध रूपांश या शब्दांश कह सकते हैं। उदाहरणके लिए निम्नलिखित वाक्य द्रष्टव्य है—

मैं पुस्तक पढ़ता हूं।

वाक्यमें मैं पुस्तक पढ़ता हूं चारों स्वतन्त्र रूपांश हैं, क्योंकि ये चारों ही स्वतन्त्र रूपसे प्रयुक्त हो सकते हैं अविभाज्य हैं और न्यूनतम सार्थक इकाइयां हैं, अतः ये शब्द हैं। इसके सर्वथा विपरीत सु, अन तथा ता, तम आदि शब्द नहीं शब्दांश हैं क्योंकि वाक्यमें इनका प्रयोग स्वतन्त्र रूपसे नहीं होता और ये इकाइयां सार्थक भी नहीं हैं। शब्दोंमें जुड़कर ही इन शब्दांशोंका वाक्यमें प्रयोग हो सकता है। जैसे—

वे सुसंस्कृत थे। (पूर्वप्रत्यय)

तुम इतने अनजान नहीं हो। (पूर्वप्रत्यय)

सुन्दरतापर मुग्ध हो गया। (परप्रत्यय)

उन्होंने उच्चतम शिक्षा प्राप्त की। (परप्रत्यय)

उपर्युक्त सभी रेखांकित शब्द यौगिक शब्द हैं। इससे स्पष्ट है कि स्वतन्त्र शब्दोंमें शब्दांशोंके योगसे यौगिक शब्द निष्पन्न होते हैं।

समास रचनाके लिए एकाधिक स्वतन्त्र शब्दोंका योग अपेक्षित है। भारतीय और पाश्चात्य भाषाशास्त्रियों एवं वैयाकरणोंने समासकी परिभाषाएं दी हैं। भारतीय प्राचीन मनीषियोंमें पाणिनि[1] एवं पतंजलि[2] उल्लेखनीय हैं।

पं० कामताप्रसाद गुरु[3] पं० किशोरीदास वाजपेयी[4] एवं दुनीचन्दजी[5]

---

१ पाणिनि—अष्टाध्यायी (११२/१/२) समर्थ पदविधि

२ पतंजलि—महाभाष्य समर्थ पदाश्रय विधि शब्देन सर्व विभक्तयन्त समास

३ पं० कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण पृष्ठ ४८१
दो या अधिक शब्दों का परस्पर सम्बन्ध बताने वाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर उन दो या अधिक शब्दों से जो स्वतन्त्र एक शब्द बनता है उस शब्द को सामासिक शब्द कहते हैं और उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है वह समास कहलाता है।

४ पं० किशोरीदास वाजपेयी—हिन्दी शब्दानुशासन पृष्ठ ३०६ अनेक शब्द मिलकर एक पद जब बन जाते हैं तो वह समास कहलाता है।"

५ दुनीचन्द—हिन्दी व्याकरण पृष्ठ २८१। दो अथवा अधिक पदों को [illegible] करके एक पद बनाने को समास कहते हैं।

व्याख्याएँ भी द्रष्टव्य हैं। पाश्चात्य मनीषियाम ब्लूमफील्ड[1] ब्लाक एवं ट्रैगर[2], यस्पसन[3] एवं मारचदके मत[4] विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। एकाधिक स्वतन्त्र अर्थमूलक शब्दोंके योगसे निष्पन्न शब्द-स्तरीय इकाईको समासकी संज्ञासे अभिहित किया जा सकता है। सामान्यत समासमें स्वतन्त्र अर्थमूलक इकाइयोंके बीचके परसर्ग समुच्चयबोधक अव्ययादिका लोप होता है। समासमें एकाधिक शब्दोंका समान महत्त्व होता है। किन्तु इस इकाईका अर्थ योजक-तत्त्वोंसे सर्वथा भिन्न होता है। समास बन जानेके बाद सामासिक शब्दोंकी पृथक्-पृथक् रूपात्मक सत्ता नहीं रहती। प्रत्यय उपसर्ग आदि शब्दांशोंके योगसे निर्मित यौगिक शब्दोंके समान ही समास भी शब्द रचनाके अंग हैं। यौगिक शब्द और समासमें यह अन्तर है कि जहाँ यौगिक शब्दोंमें सार्थक शब्द और शब्दांशका योग होता है वहाँ समास एकाधिक सार्थक शब्दोंके योगसे बनता है। जैसे डाकघर, दृष्टिकोण प्रवेशद्वार, तन मन धन आदि समासोंमें प्रयुक्त एकाधिक सार्थक शब्द डाक घर दृष्टि कोण, प्रवेश द्वार, तन मन, धन, स्वतन्त्र रूपसे भी वाक्यमें प्रयुक्त होते हैं। किन्तु समस्त रूपमें इनका अर्थ भिन्न हो जाता है। डाक और घर, प्रवेश और द्वार, दृष्टि और कोण, तन मन और धनके अपने अपने अर्थ हैं किन्तु समस्त रूपमें इन शब्दों के स्वतन्त्र अर्थ भिन्न भिन्न अर्थोंकी प्रतीति कराते हैं। समास एकाधिक शब्दोंसे निर्मित होनेपर भी सर्वथा लुप्त न होनेपर भी वाक्यमें एक ही शब्दके समान प्रयुक्त होते हैं, इनके बीच किसी प्रकारका विराम सम्भव नहीं है। समासगत

---

1 Bloomfield—Language page 227 Compound words have two (or more) free forms among their immediate constituents The forms which we class as compound words exhibit ome features & which in their language characterise single word in contradiction to phrases

2 Block & Trager—Outline of Linguistic Analysis page 66
A word made up wholly of smaller words if at least one of the immediate constituents of a word is a bound form the word is com plex if both of the immediate constituents are free forms the word is compound.

3 Jesperson Otto—A Modern English Grammar Pt VI page 134
A compound may perhaps be provisionally defined as a combina tion of two or more words so as to function as one word as a unit

4 Marchand Hans—The categories and types of present-day English Word Formation page 11 When two or more words are combined into a morphological unit we speak of a compound determined part

शब्दोंके समयसे उसी प्रकार नहीं बदला जा सकता जिस प्रकार शब्दान्तर्गत ध्वनि समूहको। जब रूप का पदनहीं लिख सकते वसही डाकघर का घरडाक, प्रवेशद्वार का द्वारप्रवेश नहीं लिख सकते। कुछ संरचनाओंमें एकाधिक स्वतन्त्र शब्दोंके योग से समास नहीं बनता क्योंकि सभी शब्द अलग अलग रहते हैं तथा उनका स्वतन्त्र अस्तित्व रहता है। इन शब्दोंसे समास नहीं वाक्यांशकी रचना होती है। वाक्यांश के नियोजक सभी शब्दोंका वाक्यान्तर्गत स्वतन्त्र महत्त्व होता है। लेकिन वाक्यांश-के सम्बन्धमें एक विचारणीय तथ्य यह है कि ये सदैव अविच्छेद्य नहीं होते। रचना विधानके अन्तर्गत इनका विच्छेद सम्भव है। उस स्थितिमें ये वाक्यांश नहीं रहते। यथा यह बड़ा लड़का है। इस प्रयोगमें बड़ा लड़का संज्ञावाक्यांश है। इसमें विशेषण विशेष्य क्रम है जो हिन्दीकी संघटनात्मक प्रकृतिके अनुरूप है। लेकिन यह लड़का बड़ा है वाक्यमें बड़ा, लड़काका विशेषण न होकर उसका पूरक है और इस संघटनामें यह लड़का संज्ञावाक्यांश है।

समासों और वाक्यांशोंका अन्तर भी द्रष्टव्य है।

मोटर रिक्शा बहुत खतरनाक है।

मोटर रिक्शा, कुछ भी नहीं मिल रहा है।

प्रथम वाक्यमें **मोटररिक्शा** वाक्यांश है और द्वितीय वाक्यमें **मोटर और रिक्शा** शब्दोंके सहप्रयोगसे द्वन्द्व समासकी रचना हुई है। समास शब्द स्तरीय रचना है वाक्यांश **वाक्य-स्तरीय**।

पाश्चात्य मनीषियोंने वाक्यांशके विषयमें अपने विचार व्यक्त किए हैं। ब्लूमफील्डके मतमें—अपेक्षाकृत लघु शब्दोंके योगसे निर्मित स्वतन्त्र रूपोंका वाक्यांश है।[1] स्टोककी धारणा है कि—जिस शब्दसमूहका केन्द्र समापिका क्रिया न हो वह वाक्यांश है[2] तथा वाक्यांश किसी शब्दभेदके समान प्रयुक्त हो सकता है।[3] मारवदने समास और वाक्यांशका अन्तर स्थापित करते हुए यहां कहनेका प्रयास किया है कि किसीभी वाक्य-स्तरीय रचनाका केवल वही अर्थ नहीं होता जो उसके संयोजक तत्त्वोंका अलग-अलग होता है तथा उनका शब्द-स्तरपर

---

1 Bloomfield, Leonard—Language 178 A free form which consists entirely of two or more lesser free form as for instance poor John or John ran away or Yes Sir is a phrase

2 Stokoe H R—The understanding of syntax page 117
A phrase is a word group which has not a finite verb expressed or understood as its main word

3 Page 118 A phrase may be used to do the job of any part of speech except that of a Sentence Equivalent

मूल्यावन नही हो सकना। इस प्रकारकी रचनाओंमे भाषाके शब्द समूहमे किसी प्रकारकी वद्धि नही होनी।[1]

व्याकरण और अर्थकी दृष्टिसे परस्पर सम्बद्ध एकाधिक शब्दोका वह समूह जिसमे पूर्ण विचारका बोध नही होता पर जो किसी भी बातका सश्लिष्ट बोध करानेमे सहायता पहुँचाता है वाक्याश कहलाता है। सभी शब्दभेदोके (नामपद आख्यानपद अव्यय) परस्पर योगमे अनेक प्रकारके वाक्याश बनते हैं। वाक्याश का केन्द्रिक शब्द ही उसके शब्दभेदका निर्णायक है।

३ ५ १ सरचनात्मक दृष्टिसे वाक्याश

सरचनाकी दृष्टिमे वाक्याशोको पाच वर्गोंमे रखा जा सकता है।

३ ५ १ १ समशब्दभेदमूलक वाक्याश

इस वर्गके वाक्याशोमे एक ही वर्गके शब्द रहते हैं।

सज्ञा+सज्ञा—सज्ञावाक्याश परसर्गरहित

उन्होने घोडा गाडी बेच दी है।

इस वाक्यमे घोडागाडी एक समस्त पद नही है वरन यह एक वाक्याश है क्योकि इसमे गाडी केन्द्रिक शब्द है और घोडा विशेषण। इसमे यह ध्वनित होता है कि वह गाडी बेच दी गई जो घोडेके द्वारा खीची जाती है। इस प्रकारके प्रयोगो मे बलाघातका स्थान बदल जाता है। यहा बलाघात घोडा पर है।

मैंने भारतीय साहित्य पढा है।

फिर स्थल सेना दिखाई दी।

भारतीय और स्थल की भी वही स्थिति है जो पहले उदाहरणमे घोडा की है।

सर्वनाम+सर्वनाम→सर्वनामवाक्याश परसर्गरहित

वह जो जो देखता है उसके पीछे गहराई है।

ससारमे जो कुछ सुदर है उसकी प्रतिमा स्त्रीको कहता हूँ।

जो कोई कहेगा मुहकी खाएगा।

---

1 Marchand Hans—The Categories and Types of present day English Word Formation page 80 In order to create a new lexical unit language does not necessarily follow a pattern that is morphologically isolated Any syntactic group may have a meaning that is not the mere additive result of the constituents.

विशेषण+विशेषण → विशेषणपदपदांश परसर्गरहित

विशेषण वाक्यांशोंका प्रयोग सामान्यतया लिखित भाषामें नहीं होता, सम्वादोंमें ही संज्ञाके लुप्त हो जानेपर विशेषण वाक्यांश उपलब्ध होते हैं।

क्या घोड़ा काला है ?

हाँ **बहुत काला**।

लड़का लम्बा है क्या ?

हाँ **बहुत अधिक लम्बा** है।

काम आवश्यक है क्या ?

जी **अत्यधिक आवश्यक**।

बीमारीसे उसका चेहरा पीला पड़ गया है ?

एकदम पीला जर्द।

तुमने कोई काला आदमी देखा ?

काला ही नहीं **काला स्याह**।

कितना रुपया चाहिए ?

लगभग **एक सहस्र**।

क्या समय हुआ है ?

केवल साढ़े पाँच।

इस तरह तो बहुत खर्च हो जाएगा।

बहुत क्या **दुगना चौगुना** लगेगा।

घर कितना बड़ा होना चाहिए ?

जितना बड़ा हो अच्छा रहेगा।

परसर्गसहित

खर्च कम होना चाहिए।

कमसे कम होगा।

जरा अच्छा कपड़ा देना।

सबसे अच्छा लीजिए।

वह बुरा काम नहीं कर सकता।

नहीं, जी **बुरेसे बुरा** भी कर सकता है।

रतन अच्छा लड़का है।

अच्छा ही नहीं **सबसे अच्छा** है।

उद्देश्य महान होना चाहिए।

महान् ही नही, महान् से महान् ।

क्रियाविशेषण + क्रियाविशेषण → क्रियाविशेषणवाक्यांश परसर्गरहित

आप कब कब जाते हैं ।
एक ही बात बार बार कहता है ।
शशि उसके बिल्कुल पीछे खडी रही ।
सारे दिन इधर उधर भटकता रहा ।
इसका सत्य मनमे धीरे धीरे पैठता ह ।

परसर्गसहित

सारे वतन इधरसे उधर रखने लगा ।
अब तेजसे तेज चल सकता हू ।

क्रिया + सहायक क्रिया → क्रियावाक्यांश

मैं नही जा सकता ।
वह अब आ चुका ।
पत्र नही लिखा जा सका ।
मैं सौ वसन्त देख चुका हूँ ।

३ ५ १ २ विषमशब्दभेदमूलक वाक्यांश

इस वर्गके वाक्यांशोमे भिन्न शब्द भेदोसे कर्द्रिक शब्दके अनुरूप वाक्यांश रचना होती है ।

विशेषण + सज्ञा → सज्ञावाक्यांश

शेखरने अत्यन्त चिडचिडे स्वर मे कहा ।
स्त्रीने आहत विस्मयसे कहा ।
निरुद्देश्य, कारणहीन अर्थहीन आत्मपीडा क्या दी ?
ऊपर छाए हुए सप्तपर्णोके साथे प्रच्छन्न आश्वासनमे फिर तल्लीन हो गया।
उसका मौन स्पर्धाहीन अटूट अभिमान मुझमे जाग उठता ह ।
क्या सृजन ही सबसे बडी निर्ममता सबसे बडी अनासक्ति नही ह ।
तुमने बहुत बडा उत्तरदायित्व ले लिया है ।
वह उत्तरहीन प्रश्न—ईश्वर तू है ।

जितना बड़ा दद होगा उतना ही बड़ा व्यक्ति ।
यह हमारा अपना नई दिल्लीवाला घर है ।
ऐसी वसी कोई भी बात सुन नही सकता ।
हरएक कामम दुगुना चौगुना पसा खच हो रहा ह ।
सवा लाख का हाथी मर गया ।
सब व्यक्तियाको ढाई ढाई सौ गज कपडा दिया गया ।
सबसे ऊँचा हिमालय पवत भारतके उत्तरम है ।
किसी तरहकी कोई गहरी अनुभूति नही है ।
अभिमानसे भी बडा विश्वास होता है ।
एक प्रच्छन्न शिथिलता अगाम भर जाती है ।
प्रत्यूषकी आन्तरिक परिव्याप्त नीरवताका स्पन्दन है ।
उसने देखा कुछ सीमातीत परिव्याप्त पर सत्य ।

क्रियायक सज्ञा + विशेषक + सज्ञा → सज्ञावाक्याश

पढ़नेकी क्षमता नही है ।
मरे कानाम तुम्हारे चीखनेका स्वर कभी नहा पडा ह ।
सेनाने लडनेकी तयारी कर ली ।
लिखनेके लिए पुरस्कार निश्चित किया गया ।
पढ़नेके समय एकत्रित हो जाना चाहिए ।
अब तो केवल जाने की इच्छा रह गई है ।
जीनेका उद्देश्य नही है ।

विशेषण + क्रियायक सज्ञा → सज्ञावाक्याश

यदि मुझे बहुत जीना होता तब और बात थी ।
उसका मर जाना स्वत सम्मत है ।
तुम्हारा लिखना एक उद्देश्यके लिए होगा ।
स्वतन्त्र होना इकाई होना अपने आपका एक खण्ड एक टुकडा अस्तित्वका अल्पाश न देखकर समूचा देखना ।

भूतकालिक कृदन्त + सज्ञा → सज्ञावाक्याश

कमरम टूटी तलवार दिखाई दी ।
सडकपर खडे हुए बच्चे दिखाइ दिय ।

पढे लिखे व्यक्तिसे ऐसी गलती नही होनी।
घबडाए हुए स्वरमे कहा।
बिखरी हुई हस्तलिपिको एक घेरेम बाधने हुए कहा।
विस्मरणकी राखमसे त्रिवेणीकी धारासे धुला हुआ नया बोध कहता है।

वतमानकालिक कृदन्त + सज्ञा → सज्ञावाक्याश

उसके बुझते मनने जाना कि आग कुछ गति नही है।
उडते पक्षीको मार गिराया।
खेलती-कूदती कन्याएँ अच्छी लग रही थी।
नाचते मोर दिखाई दिए।
दौडते बालक देखे गए।
खाते पीते व्यक्तिको ऐसा नही करना चाहिए।

क्रियाविशेषण + क्रियार्थक सज्ञा → सज्ञावाक्याश

हर समय जोरसे बोलना अच्छा नही है।
सवेरेसे पढना शुरू करता है।
इसके बाद बाई ओर मुडना ठीक होगा।
दाइ ओर मुडकर उधर जाना ठीक रहेगा।

सवनाम + क्रियार्थक सज्ञा → सज्ञावाक्याश

किसीसे पूछना नही है, जो मनम आय वही करना है।
यदि उनसे पढना बुरा न लगे तो ठीक है।
हमसे कहना उचित समझो तो कह दो।
तुमसे माँगनेमे कोई सकोच नही है।

सज्ञा + विशेषण → विशेषणवाक्याश

वह प्रतियोगितामे पाँचवाँ रहा।
तुम किरायेदारीमे दसवें हो।

सज्ञा + क्रिया/क्रियावाक्याश → क्रियावाक्याश

उसको भी क्षमा कर दिया।
शकरने कामदेवको भस्म कर दिया।

जितना बडा दद होगा उतना ही बडा व्यक्ति ।
यह हमारा अपना नई दिल्लीवाला घर है ।
ऐसी वसी कोई भी बात सुन नहीं सकता ।
हरएक कामम दुगुना चौगुना पसा खच हो रहा ह ।
सवा लाख का हाथी मर गया ।
सब व्यक्तियोको ढाई ढाई सौ गज कपडा दिया गया ।
सबसे ऊँचा हिमालय पवत भारतके उत्तरम है ।
किसी तरहकी कोई गहरी अनुभूति नहीं है ।
अभिमानसे भी बडा विश्वास होता है ।
एक प्रच्छन्न शिथिलता अगाम भर जाती है ।
प्रत्यूषको आन्तरिक परिव्याप्त नीरवताका स्पन्दन है ।
उसने देखा कुछ सीमातीत परिव्याप्त पर सत्य ।

क्रियायक सज्ञा + विशेषक + सज्ञा → सज्ञावाक्याश

पढनेकी क्षमता नहीं है ।
मेरे कानोम तुम्हारे चीखनेका स्वर कभी नहीं पडा ह ।
सेनाने लडनेकी तयारी कर ली ।
लिखनेके लिए पुरस्कार निश्चित किया गया ।
पढनेके समय एकत्रित हो जाना चाहिए ।
अब तो केवल जाने की इच्छा रह गई है ।
जीनेका उद्देश्य नहीं है ।

विशेषण + क्रियायक सज्ञा → सज्ञावाक्याश

यदि मुझे बहुत जीना होता तब और बात थी ।
उसका मर जाना स्वत सम्मत है ।
तुम्हारा लिखना एक उद्देश्यकेलिए होगा ।
स्वतन्त्र होना इकाई होना अपने आपका एक खण्ड, एक टुकडा अस्तित्वका
अल्पाश न देखकर समूचा देखना ।

भूतकालिक कृदन्त + सज्ञा → सज्ञावाक्याश

कमरेम टूटी तस्वीर दिखाई दी ।
सडकपर खडे हुए बच्चे दिखाइ दिय ।

पढ़े लिखे व्यक्तिसे ऐसी गलती नही होती ।
घबडाए हुए स्वरमे कहा ।
बिखरी हुई हस्तलिपिको एक घेरेमे बाधते हुए कहा ।
विस्मरणकी राखमेसे त्रिवणीकी धारासे धुला हुआ नया बोध कहता हू ।

वर्तमानकालिक कृदन्त + सज्ञा → सज्ञावाक्याश

उसके बुझते मनने जाना कि आगे कुछ गति नही है ।
उडते पक्षीको मार गिराया ।
खेलती-कूदती कन्याएँ अच्छी लग रही थी ।
नाचते मोर दिखाई दिए ।
दौडते बालक देखे गए ।
खाते-पीते व्यक्तिको ऐसा नही करना चाहिए ।

क्रियाविशेषण + क्रियार्थक सज्ञा → सज्ञावाक्याश

हर समय जोरसे बोलना अच्छा नही है ।
सवेरेसे पढना शुरू करता है ।
इसके बाद बाई ओर मुडना ठीक होगा ।
दाइ ओर मुडकर उधर जाना ठीक रहेगा ।

सर्वनाम + क्रियार्थक सज्ञा → सज्ञावाक्याश

किसीसे पूछना नही है जो मनमे आय वही करना है ।
यदि उनसे पढना बुरा न लगे तो ठीक है ।
हमसे कहना उचित समझो तो कह दो ।
तुमसे मागनेमे कोई सकोच नही है ।

सज्ञा + विशेषण → विशेषणवाक्याश

वह प्रतियोगितामे पाचवाँ रहा ।
तुम किरायेदारीमे दसवें हो ।

सज्ञा + क्रिया/क्रियावाक्याश → क्रियावाक्याश

उसको भी क्षमा कर दिया ।
शकरने कामदेवको भस्म कर दिया ।

प्राय रुपया उधार देते हैं।
इस समय पूजा कर रहो हैं।
आज सब कुछ त्याग दिया।
मैंने सबको प्यार किया है।

विशेषण + क्रिया/क्रियावाक्यांश → क्रियावाक्यांश

हरएकको मिठाई अच्छी लगती है।
जल्दीमे खाना गम करा।
कदम बहुत उदास हो गया है।
हर समय खेलना बुरा लगता है।

क्रियाविशेषण/क्रियाविशेषणवाक्यांश + क्रिया/क्रियावाक्यांश → क्रियावाक्यांश

विश्वास आदमियाको उतना ही बनाता है।
शकर झेंपा सा खडा रहा।
फिर जल्दीसे उठा और बाहरकी ओर चला।
सारा सामान ज्यो का त्यो रख दिया।

मुख्यक्रिया (धातु) + सहायक क्रिया/क्रियाए → क्रियावाक्यांश

एक ही दिनमें पढ लिया।
वह एकाएक रो पडी।
हम खा चुके हैं।
प्राय भूल जाता है।
अब तो बुड्ढा हो चला है।
इस बीच बहुत कुछ लिख डाला है।

क्रियार्थक सज्ञा + सहायक क्रिया/क्रियाए → क्रियावाक्यांश

केवल एक बार देखना चाहता हू।
बहुत जल्दी जल्दी खाने लगा।
पुस्तक ध्यानसे पढनी चाहिए।
अब कुछ पढना लिखना चाहता हूँ।

वतमानकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया/क्रियाए → क्रियावाक्यांश

बिना सोच लिखती रहो।

ऐसा तो युगोसे होता चला आ रहा है।
शुरूसे इसी स्कूलमे पढते रहे हैं।
ठीक तरह समझाते रहे।
किसी प्रकार गाडी चलती रही।

भूतकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया/क्रियाए → क्रियावाक्याश

सबकी बात सुना करता हूँ।
गाडी चली आ रही है।
रोज दस बजे चले जाते हैं।
हमेशा पिए रहता है।
बच्चोको पीटे जा रहे हैं।
सब समझा बूझा जाएगा।
प्राय वहा आया जाया करता है।
इस मुकदमेमे फँसे हुए हैं।
अभी सोया हुआ है।

पूर्वकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया/क्रियाएँ → क्रियावाक्याश

आते ही कमरेमे झाककर देखा।
अभी चलकर आए हो।

क्रियार्थक सज्ञा + पूर्वकालिक कृदन्त → सज्ञावाक्याश

उसका आना देखकर खुश हुआ।
पुत्रके मरनेकी खबर सुनकर बेहोश हो गया।
मेरा पढना देखकर विस्मित हो गए।

विशेषण + क्रियाविशेषण → क्रियाविशेषणवाक्याश

आज आप बहुत जल्दी आ गए।
उसे देखते ही अत्यन्त शीघ्रतासे चला गया।

भूतकालिक कृदन्त + पूर्वकालिक कृदन्त → क्रियाविशेषणवाक्याश

बच्चोको सोया देखकर चला गया।
मन्त्रीको गया हुआ जानकर वापिस आ गया।

मुसीबतमें फंसा देखकर भाग गया।

वर्तमानकालिक कृदन्त + पूर्वकालिक कृदन्त → क्रियाविशेषणवाक्यांश

उसे पढ़ते देखकर कमरेमें आ गया।

माको सोती समझकर वापिस चला गया।

३ ५ १ ३ अव्ययमूलक वाक्यांश

सभी शब्दभेदोंमें अव्ययोंके योगसे वाक्यांश निष्पन्न होते हैं।

संज्ञा + अव्यय → संज्ञावाक्यांश

रात भर घूमता रहा।
कल तक आ जाएगा।
सवेरे ही चला जाऊंगा।
राजेन्द्र तो जानता नहीं।
लड़की भी पढ़ रही है।

संज्ञा + परसर्ग + अव्यय, संज्ञा + अव्यय + परसर्ग, संज्ञा + अव्यय + परसर्ग + अव्यय → संज्ञावाक्यांश

आखोंको भी बन्द कर लिया।
लड़कीको ही जाना चाहिए।
घंटे भरमें आ जाऊंगा।
दिन भर हीकेलिए टाल दिया था।
लड़कोंको ही जाना चाहिए।
आंखों तकको भी बन्द कर लिया है।

सर्वनाम + अव्यय → सर्वनामवाक्यांश

उसे ही भेज दो।
मुझे तो कुछ मालूम नहीं।
तुमको ही तो सब कुछ करना है।
हम भी पीछे-पीछे मुड़े।
यह तो हुआ उद्देश्य।
वह तो मन्द दौड़ सकती थी।

विशेषण + अव्यय → विशेषणवाक्यांश

अच्छी भली तो बैठी हूँ।
तुम्हें सुखी भर देखना चाहता हूँ।
बापसे व्यर्थ ही झगड़ता रहता है।

क्रियाविशेषण + अव्यय → क्रियाविशेषणवाक्यांश

लिखा तो कभी भी जा सकता है।
समय यों ही बीत जाएगा।
यहां भी तो शत्रुका डर है।
बहुत देर तक खड़ा रहा।
अब भी ऐसे ही सोई थी।
कुछ पहले ही दूकान बन्द की थी।
कभी भी लिख लिया होगा।

क्रियार्थक संज्ञा + अव्यय → संज्ञावाक्यांश

अब तो जीना ही होगा।
खाना भर शेष रहा है।
मरने तक सब सहना होगा।
जीनेके लिए हँसना भी ज़रूरी है।
मन हो या न हो पढ़ाने तो जाना ही है।

भूतकालिक कृदन्त + अव्यय + क्रिया → क्रियावाक्यांश

अब तो हँसा भी नहीं जाता।
खाया ही था कि सब आ गए।
सारी पुस्तकको एक बार पढ़ा भर है।
पिताकी मौतपर रोया तक नहीं गया।
तुम्हारे कहनेसे चला तो जाएगा।

वर्तमानकालिक कृदन्त + अव्यय → क्रियाविशेषणवाक्यांश

पढ़ते पढ़ते ही सो गया।
युवकने इधर उधर करते करते भी सब बता दिया।

समय मिलते ही चला जाता है।

वर्तमानकालिक कृदन्त + अव्यय + क्रिया → क्रियावाक्यांश

जब तो खाता भी नहीं है।
और कोई काम नहीं है सोता भर है।
यहाँ अक्सर आता तो है।

पूर्वकालिक कृदन्त + अव्यय → क्रियाविशेषणवाक्यांश

शेखरने हँसकर ही कहा।
काम पूरा करके भी सोया नहीं।
घर पहुँचकर तो सोना ही है।
आनेका वायदा करके भी नहीं आया।

३ ५ १ ४ शब्दभेद + समुच्चयबोधक अव्यय + शब्दभेद

लोग उपमाएँ देखकर विस्मित एवं मुग्ध हो जाते हैं। (विशेषणवाक्यांश)
कठोर और कड़वा और स्वयं नारीकी तरह चिरन्तन नारीका निर्णय। (विशेषण वाक्यांश)
तुम्हारी हैसियत या स्थिति चाहे जैसी भी हो। (संज्ञावाक्यांश)
सवाल उस स्थूल वस्तुका नहीं है जो देश या प्रान्त या हम हैं। (संज्ञावाक्यांश)
मैं या तुम उसमें नहीं रहेंगे। (संज्ञावाक्यांश)
देश जाति अथवा राष्ट्रका जीवन जीवित रहता है। (संज्ञावाक्यांश)
क्या छोटे, क्या बड़े सभी एक जैसे हैं। (विशेषणवाक्यांश)

३ ५ १ ५ शब्दभेद + मारे, बिना सिवा (मारे-बिना, सिवा, मारे बिना, सिवा-)

डरके मारे भाग गया। (क्रियाविशेषणवाक्यांश)
मारे भूखके सिरमें दर्द हो गया (संज्ञावाक्यांश)
तुम्हारे बिना काम नहीं चलेगा (विशेषणवाक्यांश)
बिना खाए रहा नहीं जाएगा। (क्रियाविशेषणवाक्यांश)
मेरे सिवाय कौन कौन जाएगा। (विशेषणवाक्यांश)
सिवाय शालिनीके कोई नहीं पहुँचता। (संज्ञावाक्यांश)

३ ५ २ स्वतत्र वाक्याश

सामान्य वाक्याशके अतिरिक्त स्वतन्त्र वाक्याश भी हिन्दीम पाये जाते हैं। ये स्वतन्त्र वाक्याश सरचनाकी दृष्टिम वाक्याश-योजनाकी सब आवश्यकताएँ पूरी करते हैं। स्वतन्त्र वाक्याशके सम्बन्धम मुख्य धारणा यह है कि—जब सयुक्त वाक्यम कृदन्तमूलक वाक्य खडका सम्बन्ध मुख्य क्रियाके कर्ता से न होकर किसी अन्य कर्तामे होता है तब वह वाक्य-खड स्वतन्त्र वाक्याश कहलाता है और उसके अन्वयी कारकको स्वतन्त्र-कारक कहते हैं।

इस सम्बन्धम शिवनाथजीका मत है— किसी सयुक्त-वाक्य म जब कृदन्त शब्द मुख्य क्रिया के कर्ता स भिन्न किसी अन्य कर्ता के साथ लिंग-वचन की समानता म प्रयुक्त रहता है तब उस कृदन्त घटित वाक्य खड को स्वतत्र अश की अभिधा दी जाती है और उसके अन्वयी कारक को स्वतन्त्र-कारक कहते हैं।[1]

पाश्चात्य मनीषी बनकी भी यही धारणा है—कि जब कृदन्त क्रियाके कर्ताके स्थानपर अन्य कर्ताके अनुरूप होता है तब वाक्याश स्वतन्त्र कहलाता है।[2]

अथ योजनाकी दृष्टिसे तो स्वतन्त्र वाक्याशका सम्बन्ध अधीन अथवा प्रधान उपवाक्यसे रहता है पर विन्यासकी दृष्टिसे उसका किसीसे कोई सम्बन्ध नही होता। वस्तुत वह अपनम एक स्वतन्त्र एव अखड रचना है। सामान्यत इसका प्रयोग वाक्यके आदिम होता है लेकिन कभी-कभी वाक्यके मुख्य कर्ता अथवा उद्देश्यके बाद वाक्यके मध्यम भी यह रचना आ सकती है। अन्तमे इसका प्रयोग नही होता।

सबेरा होते-होते हम आठ मील और समुद्रमे आगे बढ गए।

(स० + वत० कृ० (द्विरुक्त) → क्रियाविशेषणवाक्याश)

सबेरा होने तक हम आठ मील और समुद्रम आगे बढ गए।

(स० + क्रियार्थक सज्ञा + अव्यय → क्रियाविशेषणवाक्याश)

सबेरा होनेपर हम आठ मील और समुद्रम आगे बढ गए।

(स० + क्रियार्थक सज्ञा + परसर्ग → सज्ञावाक्याश)

आपके बोलनेपर हम आपत्ति है।

(वि० + क्रियार्थक सज्ञा + परसर्ग → सज्ञावाक्याश)

---

१ शिवनाथ—हिन्दी कारकों का विकास पृष्ठ १४६

२ वही When the participle agrees with a subject different from the subject of the verb phrase is said to in the absolute construction —Bain

आपके बोलनेसे हम नाराज है।

(वि० + क्रियार्थक संज्ञा + परसर्ग → संज्ञावाक्यांश)

दीया जले घर आ जाना अच्छा होता है।

(स० + भूत० कृ० → क्रियाविशेषणवाक्यांश)

दीया जलनेपर घर आ जाना अच्छा होता है।

(स० + क्रियार्थक संज्ञा + परसर्ग → संज्ञावाक्यांश)

दीया जलते जलते घर आ जाना अच्छा होता है।

(स० + वर्त० कृ० (द्विरुक्त) → क्रियाविशेषणवाक्यांश)

उसे आए पाँच दिन हो गए।

(सर्व० + भूत० कृ० → क्रियाविशेषणवाक्यांश)

उसे आए हुए पाँच दिन हो गए।

(सर्व० + भूत० कृ० + भूत० कृ० → क्रियाविशेषणवाक्यांश)

राक्षसके देखते हुए नदका परिवार चला गया।

(स० + विशेषक + वर्त० कृ० + भूत० कृ० → क्रियाविशेषणवाक्यांश)

राक्षसके देखते देखते नदका परिवार चला गया।

(स० + विशेषक + वर्त० कृ० (द्विरुक्त) → क्रियाविशेषणवाक्यांश)

राक्षसके देखते रहनेपर भी नदका परिवार चला गया।

(स० + विशेषक + वर्त०कृ० + क्रियार्थकसंज्ञा + परसर्ग + अव्यय → संज्ञावाक्यांश)

सबेरा होते ही वशीने कड़कती आवाज़में विट्ठलको उठाया।

(स० + वर्त० कृ० + अव्यय → क्रियाविशेषणवाक्यांश)

सबेरा होनेपर वशीने कड़कती आवाज़में विट्ठलको उठाया।

(स० + क्रियार्थक संज्ञा + परसर्ग → संज्ञावाक्यांश)

सबेरा होनेके बाद वशीने कड़कती आवाज़में विट्ठलको उठाया।

(स० + क्रियार्थक संज्ञा + विशेषक + अव्यय → संज्ञावाक्यांश)

थकावट दूर होकर अच्छी नींद आती है।

(स० + क्रि०वि० + पूर्व० कृ० → क्रियाविशेषणवाक्यांश)

थकावट दूर होनेसे अच्छी नींद आती है।

(स० + क्रि०वि० + क्रियार्थक संज्ञा + परसर्ग → संज्ञावाक्यांश)

थकावट दूर होनेपर अच्छी नींद आती है।

(स० + क्रि०वि० + क्रियार्थक संज्ञा + परसर्ग → संज्ञावाक्यांश)

थकावट दूर होनेके बाद अच्छी नींद आती है।

(स०+क्रिवि०+क्रियार्थक संज्ञा विशेषक+अव्यय→क्रिया विशेषणवाक्यांश)

बाहरके लोगों द्वारा नाच रंग होते हुए भी विट्ठलका जी खुश नहीं हुआ।

(संज्ञावाक्यांश+स०+वर्त० कृ०+भूत०कृ०+अव्यय→क्रियाविशेषण वाक्यांश)

बाहरके लोगो द्वारा नाच रंग होनेपर भी विट्ठलका जी खुश नहीं हुआ।

(संज्ञावाक्यांश + स० + क्रियार्थक संज्ञा+ परसर्ग+अव्यय→संज्ञा वाक्यांश)

बाहरके लोगो द्वारा नाच रंग होनेके बाद भी विट्ठलका जी खुश नहीं हुआ।

(संज्ञावाक्यांश+स०+क्रियार्थक संज्ञा+विशेषक+अव्यय+अव्यय →संज्ञावाक्यांश)

३ ५ ३ केन्द्रिकता और वाक्यांश

वाक्यके स्तरपर सबसे छोटी इकाई वाक्यांश है तथा केन्द्रिकताकी दृष्टिसे इसका अध्ययन वाक्यांश तक ही सीमित रहता है। प्रकृत्या वाक्यांशकी रचना दो प्रकारकी होती है—अन्त केन्द्रिक और बाह्यकेन्द्रिक।

३ ५ ३ १ अन्त केन्द्रिक रचना

यह एक ऐसी रचना है जिसमें अभिमुखता आभ्यंतरिक होती है अर्थात रचनाके अन्तर्गत सदस्य पद एक-दूसरेका स्थान ले सकते हैं। अन्त केन्द्रिक रचनाएँ दो प्रकारकी होती हैं—अधीन और सहयोगी।

अधीन अन्त केन्द्रिक

इस रचनामें एक पद केन्द्र रहता है और अन्य पद अधीन। **बडा लड़का** वाक्यांशमें **लड़का** केन्द्र है **बडा** अधीन। इसमें **बडा** और **लड़का** दो मर्यादक सदस्य हैं। दोनो ही अर्थको किसी प्रकारका व्याघात पहुँचाए बिना एक-दूसरेका स्थान ले सकते हैं। प्रतन्वित वाक्यांशमें भी केन्द्र-पद एक ही रहता है। अन्य सभी पद अधीन ही रहते हैं। **तुम्हारा सुंदर सुशील, होनहार बडा लड़का** वाक्यांशमें **लड़का** केन्द्र है **बडा होनहार सुशील सुंदर, तुम्हारा** सभी पद अधीन हैं।

सहयोगी अन्त केन्द्रिक

इस रचनामें एकाधिक केन्द्र पद होते हैं और कोई पद अधीन नहीं होता। इनमें एक या एकाधिक समुच्चयबोधक अव्यय जुड़ते हैं।

मैं या तुम उसमें नहीं रहोगे।

देश जाति अथवा राष्ट्र कैसा है ?

उसमें प्रेयसिका प्यार और भगिनीका आस्था थी।

उपयुक्त वाक्यांशोंमें प्रथम वाक्यांशमें दो केन्द्र पद हैं, मैं और तुम, द्वितीय में देश, जाति और राष्ट्र तीन केन्द्र पद है। तृतीयमें प्यार और आस्था केन्द्र-पदों के क्रमशः प्रेयसिका और भगिनीकी अधीन पद हैं। अन्त केन्द्रिक रचनाओंमें अर्थ प्रेषणकी दृष्टिसे केन्द्रिक पद ही मुख्य होता है।

३ ५ ३ २ बाह्यकेन्द्रिक रचना

इस रचनामें योजक-सदस्य परस्पर स्वतन्त्र होते हैं। वे एक-दूसरेका स्थान नहीं ले सकते। साथ ही उनका समुच्चित अर्थ योजक-तत्त्वोंके अर्थसे भिन्न होता है। इनमें दोनों सदस्योंका समान महत्त्व रहता है। यथा बड़ा लड़का बराबर जाता रहा वाक्यमें जाता रहा वाक्यांशके योजक सदस्य हैं—जाता और रहा। लेकिन ये एक दूसरेका अर्थ नहीं दे सकते। इसके अतिरिक्त इनसे जो अर्थबोध होता है वह अर्थ परिवर्तनकी दृष्टिसे अर्थादेशमूलक कहलाएगा। इस प्रकारके वाक्यांशके पदोंमें अर्थ निहित नहीं रहता, यह उनके बाहर रहता है।

बाह्यकेन्द्रिक रचनामें अर्थकी नाभि अन्यत्र होती है जबकि अन्त केन्द्रिक रचनामें अर्थनाभि योजक-सदस्योंमें ही रहती है। इस तथ्यको सूत्रके द्वारा इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है—

अधीन अन्त केन्द्रिक रचना—क ख > क अथवा ख

सहयोगी अन्त केन्द्रिक रचना—क + ख > क ख

बाह्यकेन्द्रिक रचना—क ख > ग

केन्द्रिकता की दृष्टि से वाक्यांश रचना के चित्र प्रस्तुत हैं।

अधीन अन्त केन्द्रिक रचना—क ख >क अथवा ख

तुम्हारा सुन्दर सुशील होनहार लडका > लडका

ख^{4} ख^{3} ख^{2} ख^{1} क > क
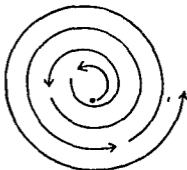
तुम्हारा होनहार बडा लडका > लडका

क^{1} क^{2} क^{3} ख > ख

सहयोगी अन्तःकेन्द्रिक रचना—क+ख >क ख

मैं या तुम उसमें नहीं रहेंगे।

क +ख >कख

बाह्यकेन्द्रिक रचना—क ख ग

वह जाता रहा।

क ख >ग
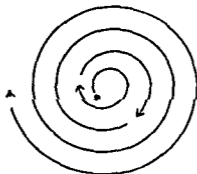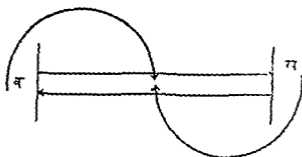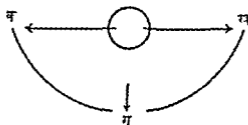
अन्तःकेन्द्रिक एवं बाह्यकेन्द्रिक रचनाओंमें वचन एवं लिंगमूलक एकता रहती है। बाह्यकेन्द्रिक रचनाओंमें कालमूलक एकताका होना आवश्यक नहीं है। दो विभिन्न कालोंके पदों, अथवा भिन्न प्रकारके कृदन्तोंके योगसे भी इस प्रकारकी रचनाएँ हो सकती हैं।

लिंगमूलक एकता—(अन्तःकेन्द्रिक) बड़ा लड़का, बड़ी लड़की।

(बाह्यकेन्द्रिक) जाता रहा, जाती रही।

जाता हुआ, जाती हुई।

वचनमूलक एकता—(अन्तःकेन्द्रिक) बड़ा लड़का, बड़े लड़के।

बड़ी लड़की बड़ी लड़कियाँ।

(बाह्यकेन्द्रिक) जाता रहा जाते रहे।

जाती रही, जाती रहीं।

कालमूलक भिन्नता—(चाहने के लिए) जाना हुआ गाया रहता है।
कृदंतमूलक भिन्नता—(चाहने के लिए) जाता रहा, जाना होता।
जाकर देखता, आकर देगा।

निष्कर्ष रूपमें कहा जा सकता है कि वाक्यों की संरचनामें वाक्यांश महत्त्वपूर्ण इकाइयाँ हैं।

३ ६. प्रयोग एवं वाक्पद्धति (मुहावरा)

३ ६ १ वाक्पद्धति

भाषाका प्रारम्भिक रूप अभिधात्मक रहता है। धीरे धीरे भाषाका प्रयोग बढ़नेके साथ-साथ लक्षणा और व्यंजना शक्तियाँ भाषा समृद्धिको प्राप्त करती हैं। भाषाके प्रसार और सम्पन्नताके साथ ही वाक्पद्धतियोंका विकास होता है। जनसाधारणके भाव, विचार, अनुभव आदि सहज प्रयोगोंके रूपमें व्यक्त न होकर वाक्पद्धतियोंमें ढल जाते हैं। इनका अर्थ सामान्य भाषासे अधिक प्रभावशाली और बिम्बग्राह्य होता है। ये वाक्पद्धतियाँ भाषाको सजीवता, सूक्ष्मता, रोचकता एवं चुस्ती प्रदान करती हैं अतः शुद्ध विद्वत्तापूर्ण साहित्यकी अपेक्षा जनप्रिय रसात्मक साहित्य—उपन्यास, कहानी, नाटक आदिमें ही इनका अधिक प्रयोग होता है। कुछ अप्रासंगिक अनपेक्षित होनेपर भी विषयके स्पष्टीकरणके लिए यह परिचयात्मक भूमिका अनिवार्य थी।

वाक्य विवेचनकी दृष्टिसे वाक्पद्धतियाँ पद या वाक्यांशके रूपमें वाक्यमें आती हैं। किन्तु इन्हें सामान्य पद या वाक्यांशके रूपमें लेना सम्भव नहीं है क्योंकि इनके मूलमें छिपा अर्थ सामान्य पदों या वाक्यांशोंसे विशिष्ट होता है। **आँख लगना** वाक्यांशका अभिधात्मक अर्थ है किसी व्यक्तिके चेहरेपर आँख लगना किन्तु इस वाक्पद्धतिके दो अर्थ हैं—नींद आ जाना और प्रेम होना। वाक्पद्धतिमें पाई जानेवाली इस प्रकारकी अनेकार्थकता प्रसंग सापेक्ष होती है।

भाषामें कुछ प्रयोग होते हैं और कुछ वाक्पद्धतियाँ। इनमें प्रायः भ्रम हो जाता है किन्तु ये दोनों सर्वथा भिन्न प्रकारकी रचनाएँ हैं। सामान्यतया प्रयोगोंका अर्थ अभिधात्मक रहता है। **खोज-खाज, रोटी पानी, पचास साठ धन-दौलत कपड़ा-लत्ता जीवन-मरण, आबाल-वृद्ध** आदि प्रयोग हैं जिनका अर्थ अधिकांशतः अभिधात्मक है।

३ ६ २ प्रयोग

परम्परागत प्रयोगमें आए हुए शब्दों या वाक्यांशोंकी संज्ञा **प्रयोग** (यूसेज)

है। यह आवश्यक नहीं है कि प्रयोगमें व्याकरण और मीमांसाके सिद्धांतोंकी पुष्टि हो। कभी कभी प्रयोग यादृच्छिक भी होते हैं तथा उनकी संरचना और क्रमके सम्बन्धमें कोई नियम निश्चित करना संभव नहीं होता यथा दस-बीस, सौ-पचास, आसपास, खानपान, भूखा प्यासा, बीचों बीच, काम-काज, आदि प्रयोगोंकी तथा अन्य प्रयोगोंकी रचना इस प्रकार क्यों हुई है, इसका कोई उत्तर नहीं है। कुछ प्रयोगोंसे तुलनाका बोध होता है यथा समुद्रकी तरह गम्भीर, स्वप्नके समान मिथ्या कणकी तरह दानी, शिशुकी भांति सरल आदि। प्रयोगोंके अर्थ प्राय निश्चित होते हैं यथा बैठ गया का अर्थ बैठना और जाना नहीं है इससे बैठनेका निश्चय सूचित होता है। आ पहुंचा का अर्थ आना और पहुँचना नहीं है वरन आनेके प्रयत्न और आशाका सूचक है। हँस पड़ा और हँसने लगा में अन्तर यह है कि प्रथम प्रयोग अचानक हँसनेकी ओर संकेत कर रहा है और द्वितीय हँसनेकी प्रक्रियाके समारम्भ और उसकी निरन्तरताकी ओर। गाली देना, नकल मारना और हँसी उडाना के क्रमश अर्थ हैं—बुरा भला कहना एकदम नकल करना और उपहास करना। न गाली दी जाती है, न नकलका वध किया जाता है और न हँसीको उडा दिया जाता है।

इस प्रकार यह सिद्ध है कि प्रयोग और वाक्पद्धतिमें एक निश्चित अन्तर होता है। वे शब्द या वाक्यांश जिनमें लाक्षणिक सर्वथा वैशिष्ट्य न हो प्रयोग हैं वाक्पद्धति नहीं। इसके विपरीत वाक्पद्धतिमें शब्दोंके अभिधात्मक अर्थसे भिन्न अर्थ रहता है। वाक्पद्धतिके सम्बन्धमें दुनीचन्दजीकी निम्नलिखित परिभाषा सर्वथा संगत है।

'किसी भाषा का ऐसा प्रचलित शब्द अथवा वाक्यांश जो किसी विशेष ढंग से प्रयुक्त होकर अपने साधारण (अभिधेय) अर्थ से विलक्षण अर्थ प्रकट करता हो मुहावरा (या वाक्पद्धति) कहलाता है।'[1]

सामान्यतया वाक्पद्धतिकेलिये मुहावरा शब्द प्रचलित है। शैलीको प्रभाव, सौंदर्य शक्ति और प्रवाह प्रदान करनेकेलिए इनका प्रयोग किया जाता है। वाक्पद्धतिका अनुवाद दुस्साध्य कार्य है। इस प्रकारके प्रयासमें या अर्थ पूर्णरूपेण बदल जाता है या सर्वथा अस्पष्ट हो जाता है जैसे सिर खाना का अंग्रेजी अनुवाद टु ईट हैड निरर्थक है इसका अर्थ है परेशान करना। नौ दो ग्यारह होना का अंग्रेजी अनुवाद टु बी नाइन टू इलेविन किसी प्रकार भी भाग जाना अर्थ नहीं देता।

---

१ दुनीचन्द—हिन्दी व्याकरण पृष्ठ २६६।

३ ६ ३ रचनात्मक दृष्टिसे वाक्पद्धति

रचनाकी दृष्टिसे प्रत्येक वाक्पद्धतिका अन्तिम पद क्रियार्थक संज्ञा होता है। क्रियार्थक संज्ञा अकेली भी वाक्पद्धतिके रूपमें प्रयुक्त हो सकती है। प्रयोगके अनुसार वाक्यमें इस एक मात्र या अन्तिम पद क्रियार्थक संज्ञा का रूप परिवर्तित हो जाता है। इसका प्रयोग संज्ञा, विशेषण क्रियाविशेषण और क्रियाके रूपमें संभव है।

३ ६ ४ वाक्पद्धतियोंके आधार

वाक्पद्धतियोंके विभिन्न आधार हैं—मानव शरीर तत्कालीन वातावरण चेतन जगत अमूर्त पदार्थ स्वभाव रीति रिवाज और अंधविश्वास तथा इतिहास धर्म और परम्परा।

३ ६ ४ १ मानव शरीरपर आधारित वाक्पद्धतियाँ

आँख दिखाना (क्रोध व्यक्त करना)

हर समय आँख दिखाना अच्छा नहीं है।	(संज्ञा)
आँखें दिखानेवाले व्यक्तिसे सभी दूर रहते हैं।	(विशेषण)
जब चन्दरने आँख दिखाई बिन्नी घरमें चली गई।	(क्रिया)
अध्यापक छात्राको आँख दिखाते हुए चले गये।	(क्रियाविशेषण)

दिल दुखाना (दुखी करना)

गरीबका दिल दुखानेसे क्या मिलेगा।	(संज्ञा)
दिल दुखानेवाली बात न कहना ही अच्छा है।	(विशेषण)
यही कोशिश करता रहा कि किसीका दिल न दुखाऊं।	(क्रिया)
मना करनेपर भी दिल दुखाते हुए बोलता रहा।	(क्रियाविशेषण)

कानमें उँगली देना (न सुनना)

ऐसी बात होनेपर कानमें उंगली देना ही ठीक रहता है।	(संज्ञा)
ऐसे मौकेपर कानमें उंगली दिए रहनेकी बात कुछ समयमें नहीं आती।	(विशेषण)
जब उसको इच्छाके विपरीत सुनना पड़ता है तब वह कानमें उंगली दे लेता है।	

मैं बुरा भला कहता रहा, पर बालक उसकी दिए बैठा रहा।　　　　(क्रियाविशेषण)

हाथ धो बैठना (खो देना)

कभी-कभी अपने ही कारण मनुष्य हाथ धो बैठना पड़ता है।　　　　(संज्ञा)
उसके गवाँतिन हाथ धो बैठनेकी बात सही है।　　　　(विशेषण)
अपनी भूलके कारण वह बालक हाथ धो बैठा।　　　　(क्रिया)

मुँह फुलाना (गुस्सा होना)

बात बातमें मुँह फुलाना बच्चोंका विशेष गुण है।　　　　(संज्ञा)
यह भी कोई मुँह फुलानेकी बात है।　　　　(विशेषण)
इतनीसी बात पर मुँह फुला रहे हो।　　　　(क्रिया)
बहुत कोशिश की किन्तु एक भी शब्द नहीं बोला
मुँह फुलाए बैठा रहा।　　　　(क्रियाविशेषण)

पेट काटना (भूखा मरना)

जनता अब गरीबोंका पेट काटना बर्दाश्त नहीं करेगी।　　　　(संज्ञा)
इतना कम वेतन पेट काटनेकी बात ही है।　　　　(विशेषण)
पूँजीपति निरन्तर श्रमिकोंका पेट काटते हैं।　　　　(क्रिया)
सब बच्चोंको किसी प्रकार पेट काटकर पढ़ाया।　　　　(क्रियाविशेषण)

सिर आँखोंपर होना (आदरणीय होना)

उसका सबके सिर आँखोंपर होना मोहनको अच्छा नहीं लगता।　　　　(संज्ञा)
सबके सिर आँखोंपर होनेकी चर्चा सुनकर वह अचानक
सबतक आगया।　　　　(विशेषण)
आप मेरे सिर आँखोंपर हैं।　　　　(क्रिया)

३ ६ ४ २　तत्कालीन वातावरणपर आधारित वाग्पद्धतियाँ

गुड़ गोबर कर देना (काम बिगाड़ना)

अच्छे भले कामका गुड़ गोबर कर देना महामूर्खता है।　　　　(संज्ञा)

यदि उसने पिछला इन्तिहान गुप्त किया तो गुड गोबर
 कर देनेकी बात ही है। (विशेषण)

सारा काम ठीक-ठीक हो रहा था पर रामने झगडा करके
 गुड गोबर कर दिया। (क्रिया)

पहले दरसे आया फिर अपनी मूर्खतासे गुड गोबर करके चलता बना।
 (क्रियाविशेषण)

नमक मिर्च लगाना (बढ़ा-चढ़ाकर कहना)

कुछ व्यक्तियोंको नमक मिर्च लगाना खूब आता है। (संज्ञा)

नमक मिर्च लगानेवाली स्त्रियोंसे दूर रहना चाहिए। (विशेषण)

झगडेकी बात बताते हुए उसने खूब नमक मिर्च लगाई। (क्रिया)

वह सीधी सी बातको भी नमक मिर्च लगाकर कहता है। (क्रियाविशेषण)

मैदान मारना (जीतना)

इस युद्धमें मैदान मारना कठिन लगता है। (संज्ञा)

मैदान मारने वाली सेना दूसरी है इसमें तो शक्ति नहीं है। (विशेषण)

अब क्या मुश्किल है बस मैदान मार लिया। (क्रिया)

जलती आगमें पानी डालना (शान्ति स्थापित करना)

झगडा बढनेमें देर नहीं लगती जलती आगमें
 पानी डालना कठिन होता है। (संज्ञा)

रुपयेकेलिए होनेवाले झगडोंमें अशोकने रुपया देकर जलती
 आगमें पानी डालनेका काम किया। (विशेषण)

३ ६ ८ ३ चेतन जगतपर आधृत वाक्पद्धतियाँ

दुम दबाकर भागना (कायरतापूर्वक भागना)

अधिक शक्तिशालीके सामने दुम दबाकर भागना अच्छा नहीं है। (संज्ञा)

उनका कोई भरोसा नहीं दुम दबाकर भागनेवाले व्यक्ति है। (विशेषण)

सिपाहियोंको देखते ही चोर दुम दबाकर भाग गए। (क्रिया)

बिल्लीके आनेपर एक चूहा दुम दबाकर भागता हुआ दिखाई दिया।
 (क्रियाविशेषण)

कान खडे होना (सावधान हो जाना)

एक बार शक हानपर हमशा कान खडे होना गलत नही। (सज्ञा)
ऐसी स्थितिम कान खडे हानकी बात अनुचित नही। (विशेषण)
दरवाजेम खुसर फुसर सुनकर उसके कान खडे हो गए। (क्रिया)

उडती चिडिया पहचानना (दखत ही पहचान लेना)

उडती चिडिया पहचाननेकेलिए अनुभवी होना चाहिए। (सज्ञा)
उडती चिडिया पहचाननेवाला व्यक्ति धोखा नही खाता। (विशेषण)
वह तो उडती चिडिया पहचानता है। (क्रिया)
उडती चिडिया पहचानते हुए भी चुप रहा। (क्रियाविशेषण)

३ ६ ४ ४ अमूर्त पदार्थोपर आधृत वाक्पद्धतिया

हवा हो जाना (अदृश्य होना)

कहते ही हवा हो जाना कोई खेल नही है। (सज्ञा)
उसके हवा हो जानेकी बात विश्वासके लायक नही है। (विशेषण)
बातकी बातमे वह हवा हो गया। (क्रिया)

मीन मेख करना (दोष निकालना)

उसे केवल एक काम रह गया है मीन मेख करना। (सज्ञा)
हर समय मीन मेख करनकी आदत अच्छी नही है। (विशेषण)
तुम व्यर्थ ही दूसरके कामम मीन मेख कर रहे हो। (क्रिया)
उसने मीन मेख करके देख लिया कि इस कामम
कोई स्थायी लाभ नही है। (क्रियाविशेषण)

३ ६ ४ ५ स्वभाव, रीति-रिवाज और अधविश्वासपर आधृत वाक्पद्धतियाँ

अगर मगर करना (तर्क करना)

हर समय अगर मगर करना ठीक नही। (सज्ञा)
अगर मगर करनकी कोई बात नही। (विशेषण)
वह व्यर्थ ही अगर मगर करता रहा। (क्रिया)

इतनी सी बातपर अगर मगर करता थक गया। (क्रियाविशेषण)

चरण छूना (विशेष रूपसे सम्मानित करना)

मा बापके चरण छूने चाहिए। (सज्ञा)
शिवानी चरण छूने वाली लडकी नहीं है। (विशेषण)
मोहनने गुरुजीको देखतेही चरण छुए। (क्रिया)
गुरुजीके चरण छूकर कहा। (क्रियाविशेषण)

घीके दिए जलाना (खुशी मनाना)

शुभअवसर आनेपर घीके दिए जलाना जरूरी ही है। (सज्ञा)
किसीकी विपदामे दूसरेकी घीके दिए जलानेकी बात
अमानुषिक ही कही जाएगी। (विशेषण)
ख्रुश्चेवके पदच्युत होनेपर चीनमे घीके दिए जलाए गए। (क्रिया)

सिरसे कफन बाधना (मरनेकेलिए तयार रहना)

सिरसे कफन बाधना बहुत आसान है। (सज्ञा)
मैनिक सिरसे कफन बाधे बठा है। (विशेषण)
मैंने तो अब सिरसे कफनबाध लिया है। (क्रिया)
जिन्होने सिरसे कफन बाधकर देखा है वे मौतकी
हकीकतको जानते हैं। (क्रियाविशेषण)

ईदका चाद होना (दर्शनदुर्लभ व्यक्ति)

ईदका चाद होना क्या कोई शानकी बात है। (सज्ञा)
तुम्हारे ईदका चाद होनेकी बात सब दोस्तोकी
जबानपर मुद्दत तक चढी रही। (विशेषण)
अब तो वह ईदका चांद हो गया है। (क्रिया)
तुमने ईदका चाँद होकर देख लिया। (क्रियाविशेषण)

श्रीगणेश करना (शुभारम्भ करना)

आज नये व्यापारका श्रीगणेश करना ठीक नहीं है। (सज्ञा)
पुस्तकका श्रीगणेश करनेवाले दिन वह बहुत प्रसन्न था। (विशेषण)
मैंने कामका श्रीगणेश कर दिया है। (क्रिया)

गांधीजी व्यक्तित्वने इस सुन्दर वाक्यकी यों गणेश करके लिखा दिया है कि जहाँ गान्धी होता है वहाँ कुछ भी असम्भव नहीं है। (क्रियाविशेषण)

बीड़ा उठाना (प्रतिज्ञा करना)

अब मुझे काम समाप्त करनेका बीड़ा उठाना है। (संज्ञा)
भीषण कार्यके लिए बीड़ा उठानेकी प्रथा राजपूत क्षत्रियोंका उज्ज्वल पक्ष कही जायगी। (विशेषण)
मैंने शत्रुओंको हरानेका बीड़ा उठा लिया है। (क्रिया)
वस्तर वर्षकी आयुमें भी जानतेका बीड़ा उठाकर उसने यह सिद्ध कर दिया कि अभी उसमें पानी है। (क्रियाविशेषण)

३ ६ ४ ६ इतिहास कल्पना और परम्परापर आश्रित वाक्पद्धतियाँ

विभीषण होना (धोखेबाज होना)

देश भक्तोंकी भीड़में स्वार्थ विभीषण होना कोई अर्थ नहीं रखता। (संज्ञा)
हर स्थानपर विभीषण होते हैं उनसे सावधान रहिए। (क्रिया)

शेख चिल्ली होना (शेखी मारना)

शेखचिल्ली होनेसे काम नहीं हो जाएगा। (संज्ञा)
मणिक एकदम शेखचिल्ली हो गया है। (क्रिया)

३ ६ ४ ७ एकपदीय वाक्पद्धतियाँ

नाचना (हर्षित होना)

छोटीसी बातपर इतना नाचना अच्छा नहीं। (संज्ञा)
पास ही तो हुए हो इतनी नाचनेकी बात तो है नहीं। (विशेषण)
जरा सी सफलतापर इतना नाच रहे हो। (क्रिया)
हमने परीक्षामें उत्तीर्ण छात्रोंको बेहद नाचते हुए देखा। (क्रियाविशेषण)

गाँठना (स्थापित करना)

सभीसे दोस्ती गाँठना उचित नहीं है। (संज्ञा)
उसे केवल दोस्ती गाँठनेका काम आता है। (विशेषण)
जरूरत होती है तो हरएकसे दोस्ती गाँठता है। (क्रिया)

वाक्पद्धतिके उपयुक्त निर्वचनसे उनकी प्रयोगमूलक गतिका बोध हो जाता है। जितनी अर्थमूलक प्रभविष्णुता वाक्पद्धतियोंके द्वारा सम्भव है उतनी उनका व्याख्यापरक किसी भी सुगठित सरचनाके द्वारा सम्भव नहीं है।

३ ७ कहावतें या लोकोक्तियाँ

जनसाधारणकी विशेष अर्थमें रूढ अथवा परम्परागत उक्तियोंको कहावतें या लोकोक्तियाँ कहा जाता है। ये जनसाधारणके दैनिक अनुभवों और कार्य व्यापारोंपर आधृत होती हैं। इनके मूलमें कोई विशेष घटना या ठोस विचार रहता है। यदि कोई कहावत एकाधिक घटनाओं और स्थितियोंपर लागू हो सकती है तो निश्चय ही उसकी जीवनावधि चिरकालिक होती है। कहावतें भाषाका अंग बनकर उसे नई अभिव्यंजना और अर्थवत्ता प्रदान करती हैं। इन कहावतोंके अनेक प्रयोजन हैं—जैसे देना अचेतन पदार्थोंको चेतना प्रदान करना अमूर्त भावोंको मूर्त रूप देना और रूपकात्मक बोध जागृत करना।

निर्धारण और सामान्यीकरण कहावतोंकी मुख्य विशेषता है। निर्धारण द्वारा कहावतमें निश्चित सत्य अथवा तथ्य एवं निश्चयात्मक रूप ग्रहण करता है। यही निश्चयित रूप लोकमानसके सहज बोधसे सम्बद्ध होनेके कारण अनायास लोक स्वीकृति प्राप्त कर सामान्यीकृत हो जाता है। कहावतोंको चार वर्गोंमें रखा जा सकता है।

३ ७ १ धार्मिक-काल्पनिक और ऐतिहासिक तथ्योंकी ओर सकेत करनेवाली कहावतें

इस वर्गकी कहावतोंके मूलमें कोई कथा रहती है। कथा या इतिहासके ज्ञान के अभावमें कहावतका महत्त्व समझना असम्भव है। **घरका भेदी लंका ढाए** कहावतके मूलमें यह ऐतिहासिक तथ्य छिपा है कि रावणके बन्धु विभीषणने ही घरका रहस्य बताकर लंकाका सर्वनाश किया। सामान्य अर्थ निकला—अपनोंके द्वारा ही घरका नाश होता है। **अंगूर खट्टे हैं** कहावतके मूलमें लोमडीकी लघु कथा है। किस प्रकार अंगूर न पानेपर उन्हें खट्टे कहकर लोमडीने सन्तोष किया था। अर्थ हुआ—अप्राप्यको व्यर्थ एवं हानिकारक कहकर सन्तोष करना। **अंधेर नगरी चौपट राजा टके सेर भाजी टके सेर खाजा** कहावतके मूलमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्रका एक नाटक है जो अन्याय और अज्ञानपूर्ण सरकारकी ओर संकेत करता है। सामान्य अर्थ हुआ—अन्याय एवं अज्ञानपूर्ण परिस्थितियोंमें सब उल्टा ही होता है। **आंखोंकी सुइयाँ रह गई** कहावतके मूलमें उस राजकुमारी

पोथा घना + बाज घना।
नई नई मुसलमानी + अल्लाह अल्लाह पुकार।

बाह्यन्द्रिय + मन केन्द्रिय
गा न नान + आँगन टेढा।

बाह्यन्द्रिय + बाह्यन्द्रिय
खोदा पहाड + निकली चुहिया।
घर मजदूरी + ना चूरी।

२७६२ वाक्यमूलक

साधारण वाक्य

देखिए ऊँट किस करवट बैठता है।
झूठके पाँव नही होते।
ताली एक हाथसे नही बजती।
पाँचो उगलियाँ बराबर नही होती।
तैराक ही डूबते है।
अकेला चना भाड नही फोड सकता।
अपने घरमे कुत्ता भी शेर होता है।
काठकी हडिया बार बार नही चढती।
खरबूजको देखकर खरबूजा रग बदलता है।
दूरके ढोल सुहावने होते है।
आखाकी सुइया रह गइ।
सावनके अधको हरा ही हरा सूझता है।

मिश्र वाक्य

जो गरजते है + सो बरसते नहा।
अब पछताय होत क्या + जब चिडिया चुग गइ खेत।
जहा भील होगी + वही पानी मरेगा।
कोयल होय न ऊजली + नौ मन साबुन लाय।
काम प्यारा है + चाम प्यारा नही।

जसी आग खाआगे+वसे अँगार उगलाग ।
पीतलकी नथनीप इतना गुमान+मानकी हानी चन्ती अममान ।

सयुक्त वाक्य

न नौमन तेल होगा+न राधा नाचेगी ।
सूप वाले सो वाले+छननी भी बोले+जिमम बहत्तर छेद ।
सच्चा जाए रोता जाए+झूठा जाए हसता आए ।
आसमानस गिरा+खजूरम अटका ।
न कुत्ता देखेगा+न भौंकेगा ।
मेरा पिया घर नहीं+मुझे किमीका डर नहीं ।
मेरा पेट हाऊ+मैं न दूगा काऊ ।

३७६३ वाक्याश+वाक्य

हाथ परका काहिली+मुहम मूछें जाए ।
चमगादडके मेहमान+मियाँ उल्टे ही लटकते हैं ।

३७६४ वाक्य+वाक्याश

गगाका आना था+भगीरथके सिर जस ।
हाथीके दाँत खानके और होते है+दिखानेके और ।

कहावताम एक निश्चित तारतमिक व्यवस्था होती है । सामान्यतया उ
दो अग होते हैं । दूसरा अग पहलका आश्रित अथवा पूरक अथवा व्याख
होता है ।

३८ उद्देश्य-विधेय

प्रत्यक वाक्यम प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपमे उद्देश्य और विधेय विद्यमान रह
उद्देश्य वाक्यका आधार है विधेय उद्देश्यके बारेम किया गया कथन है ।

३८१ उद्देश्य

कारक-वाक्य विन्यास और वाच्य वाक्य विन्यास शीपकाके अतगत उ
और क्रियाके अन्वयका पर्याप्त विवेचन हो चुका है । प्रस्तुत विषयके विवे
लिए सक्षेपम कह सकते हैं कि कतृवाच्यम कर्ता उद्देश्य होता है कमव
कम वाक्यका उद्देश्य होता है । कतृकमवाच्यम कत भाव और कमभाव

तुम्हारे बोरत, क्या महँगे थे। (संज्ञा सर्वनाम)

कर्मवाच्य

मैंने लकड़ी रखी है यह। (संज्ञा, सर्वनाम)
उसने फल खाए हैं ये। (संज्ञा, सर्वनाम)

३.८.१३ एकाधिक पद—उद्देश्य

वाक्य में एकाधिक उद्देश्य आने पर क्रिया की स्थिति अनिश्चित हो जाती है। एकाधिक पुंलिंग उद्देश्य होने पर क्रिया पुंलिंग बहुवचन में रहती है और एकाधिक स्त्रीलिंग उद्देश्य होने पर स्त्रीलिंग बहुवचन में। पुंलिंग और स्त्रीलिंग दोनों के उद्देश्य होने पर क्रिया या तो अंतिम पद के अनुरूप रहती है या पुंलिंग बहुवचन में।

कर्तृवाच्य

राम और कृष्ण अवतार हैं। (संज्ञा+संज्ञा)
चीनी और शहद दोनों मीठे हैं। (संज्ञा+संज्ञा)
खिलौने और पुस्तकें रखी हैं। (संज्ञा+संज्ञा)
रानी और कुमुद हँस रही हैं। (संज्ञा+संज्ञा)
राम, लक्ष्मण और सीता वन गए। (संज्ञा+संज्ञा+संज्ञा)
मणि और संगीता, अध्यापिकाएँ अच्छा पढ़ाती हैं। (संज्ञा+संज्ञा)
मैं और तुम जाएँगे। (सर्व०+सर्व०)
यह और तुम आ रहे हो। (सर्व०+सर्व०)
कल हम, तुम और वे सब चलेंगे। (सर्व०+सर्व०+सर्व०)
मैं और मालिनी बहुत पढ़ चुके हैं। (सर्व०+संज्ञा)
सुंदरी और आप कब आ रही हैं? (संज्ञा+सर्व०)
अच्छे और बुरे सभी पड़ते हैं। (विशेषण→विशेष्य+विशेषण→विशेष्य)
पढ़ना और लिखना दोनों जरूरी हैं। (क्रियार्थक संज्ञा+क्रियार्थक संज्ञा)

कर्मवाच्य

उसने साइकिल और गाड़ी खरीदी। (संज्ञा+संज्ञा)
मैंने कुत्ते और घोड़े देखे। (संज्ञा+संज्ञा)
हमसे काम और बात नहीं हुई। (संज्ञा+संज्ञा)

इकाईमें निहित होते हैं अतः कर्ता, कर्म ही उद्देश्य होता है। किन्तु भाववाच्यमें कर्ता या कर्म कोई भी वाक्यका उद्देश्य नहीं होता अतः क्रियाके मूलमें निहित अमूर्त, अव्यक्त भाव ही उद्देश्य होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्रथम तीन वाच्योंमें क्रिया उद्देश्यके अनुरूप होती है तथा भाववाच्यमें क्रियाका रूप अपरिवर्तित रहता है और उद्देश्य अकथित रहता है। वाक्योंमें उद्देश्य—पद, उद्देश्य-द्वय, एकाधिक पद तथा वाक्यांश सभी रूपोंमें रहता है।

३.८.११ पद—उद्देश्य

कर्तृवाच्य

चन्दर प्रायः पुस्तकें पढ़ता रहता है।	(संज्ञा)
तुम सदैव झूठ बोलते हो।	(सर्वनाम)
निर्धन निरन्तर अत्याचारके विरुद्ध जूझ रहे हैं।	(विशेषण→विशेष्य)
जीना आसान नहीं है।	(क्रियार्थक संज्ञा)

कर्मवाच्य

तुमने पुस्तक पढ़ी है।	(संज्ञा)
उससे तुम देखे गए।	(सर्वनाम)
हमने यह देखा है।	(सार्वनामिक विशेषण→विशेष्य)
मैंने अपराधी पकड़े हैं।	(विशेषण→विशेष्य)
मैंने हँसना सीखा है।	(क्रियार्थक संज्ञा)

कर्तृ-कर्मवाच्य

कपड़े सूख रहे हैं।	(संज्ञा)
रोना बन्द हो गया।	(क्रियार्थक संज्ञा)

३.८.१२ उद्देश्य द्वय

वाक्यमें जब एक ही वस्तु या व्यक्तिसूचक उद्देश्य पदोंका पृथक्-पृथक् प्रयोग होता है तब उसे उद्देश्य-द्वय संज्ञासे अभिहित किया जाता है।

कर्तृवाच्य

अपनी शक्ति पहचानी है यह।	(संज्ञा सर्वनाम)

तुम्हारे दोस्त क्या कहते थे। (सज्ञा सर्वनाम)

कर्मवाच्य

मैंने लड़की देखी है वह। (सज्ञा सर्वनाम)
उन्होंने फल खाए हैं वे। (सज्ञा सर्वनाम)

३ ८ १ ३ एकाधिक पद—उद्देश्य

वाक्यमे एकाधिक उद्देश्य आनेपर क्रियाकी स्थिति अनिश्चित हो जाती है। एकाधिक पुल्लिग उद्देश्य होनेपर क्रिया पुल्लिग बहुवचनमे रहती है और एकाधिक स्त्रीलिंग उद्देश्य होनेपर स्त्रीलिंग बहुवचनमे। पुल्लिग और स्त्रीलिंग दोनोके उद्देश्य होनेपर क्रिया या तो अन्तिम पदके अनुरूप रहती है या पुल्लिग बहुवचन-मे।

कर्तृवाच्य

राम और कृष्ण अवतार हैं।	(सज्ञा+सज्ञा)
चीनी और शहद दोनो मीठे हैं।	(सज्ञा+सज्ञा)
खिलौने और पुस्तकें रखी हैं।	(सज्ञा+सज्ञा)
रानी और सुमन हँस रही हैं।	(सज्ञा+सज्ञा)
राम, लक्ष्मण और सीता वनको गए।	(सज्ञा+सज्ञा+सज्ञा)
मणि और सगीता प्राध्यापिकाएँ अच्छा पढाती हैं।	(सज्ञा+सज्ञा)
मैं और तुम जाएँगे।	(सर्व०+सर्व०)
वह और तुम आ रहे हो।	(सर्व०+सर्व०)
कल हम तुम और वे सब चलेंगे।	(सर्व०+सर्व०+सर्व०)
मैं और शालिनी बहुत पढ चुके हैं।	(सर्व०+सज्ञा)
सुन्दरी और आप कब आ रही हैं ?	(सज्ञा+सर्व०)
अच्छे और बुरे सभी पढते हैं।	(विशेषण→विशेष्य+विशेषण→विशेष्य)
पढ़ना और लिखना दोनो जरूरी हैं।	(क्रियार्थक सज्ञा+क्रियार्थक सज्ञा)

कर्मवाच्य

उन्होंने साइकिल और गाडी खरीदी।	(सज्ञा+सज्ञा)
बच्चेने कुत्ते और घोड़े देखे।	(सज्ञा+सज्ञा)
हमसे काम और बात नहीं हुई।	(सज्ञा+सज्ञा)

रामने परीक्षाम साहस और बुद्धि दिखाई। (सज्ञा+सज्ञा)
हमने पिकनिकके लिए रोटी फल दूध और चाय रख ली थी। (सज्ञा+सज्ञा+सज्ञा+सज्ञा)
मैंने एक अच्छा साथी और मित्र पाया है। (सज्ञा+सज्ञा)
उन्होंने बुद्धि दयालुता स्नेह उदारता ईमानदारी आदि सब गुण पाये हैं। (सज्ञा+सज्ञा+सज्ञा+सज्ञा+सज्ञा)
अध्यापकने पढ़ना और लिखना सिखाया। (क्रियार्थक सज्ञा+क्रियार्थक सज्ञा)

३८१४ वाक्यांश—उद्देश्य

त वाच्य

वह बुद्धिमान सुशील लडका पढ रहा है। (सज्ञावाक्यांश)
कोई कोई काम कर रहे हैं। (सर्वनामवाक्यांश)
घर कितना बडा होना चाहिए ?
जितना बडा हो बेहतर रहेगा। (विशेषणवाक्यांश)
खेलते हुए बालक भाग गए। (सज्ञावाक्यांश)
पढते लिखते छात्र अच्छे लगते हैं। (सज्ञावाक्यांश)
स्कूलमें मूर्ख विद्यार्थी और बुद्धिमान विद्यार्थी सब पढ़ते हैं। (एकाधिक सज्ञावाक्यांश)

कर्मवाच्य

मैंने सोनेकी त्रिकोणात्मक आकृतिवाली घडी खरीदी। (सज्ञावाक्यांश)
उन्होंने कई भाषाओंके साहित्य पढे हैं। (सज्ञावाक्यांश)
शशिने बहुत बडा उत्तरदायित्व ले लिया है। (सज्ञावाक्यांश)
सबने लडनेकी तैयारी कर ली है। (सज्ञावाक्यांश)
मैंने कमरेमें टूटी तस्वीरें और फटी पुस्तकें देखीं। (एकाधिक सज्ञावाक्यांश)

क्त कर्मवाच्य

दिल्ली जानेवाली गाडी छूट रही है। (सज्ञावाक्यांश)
स्कूलका काम हो चुका है। (सज्ञावाक्यांश)
पानी बरसना और बिजली चमकना बन्द हो गया है। (एकाधिक सज्ञावाक्यांश)

विशेष—भाववाच्यमे उद्देश्य अकथित रहता है अत उद्देश्यका विवेचन करते हुए तीन वाच्योंको ही लिया गया है।

३ ८ २ विधेय

वाक्यकी वह इकाई विधेय कहलाती है जो उद्देश्यके बारेमे कुछ कहती है। क्रिया विधेयका मुख्य अंग है। सभी वाच्योंके वाक्योंमे विधेय रहता है। उद्देश्य सूचक इकाईको छोडकर शेष अंश विधेय कहलाता है। विधेय पद एकाधिक पद, वाक्यांश सभी रूपोंमे रहता है।

३ ८ २ १ पद—विधेय

कर्तृवाच्य

ईश्वर है।	(क्रिया)
वह आया।	(क्रिया)

कर्मवाच्य

पत्र भेजे।	(क्रिया)
रोटियां खाई।	(क्रिया)

कर्तृ कर्मवाच्य

पानी बरसा।	(क्रिया)
धोती सूखी।	(क्रिया)

विशेष—कोई एक पद भाववाच्यमूलक वाक्यमे विधेय नहीं हो सकता।

३ ८ २ २ एकाधिक पद—विधेय

कर्तृवाच्य

मैं किताब लाया। (कर्म + क्रिया)

मां बच्चेको टबमे साबुनसे नहीं नहलाती।

(कर्म + अधि० + करण + क्रि० वि० + क्रिया)

कर्मवाच्य

मैने प्रदर्शनी देखी । (कर्ता+क्रिया)

आपने उनसे बैकमे रुपया जमा लिया । (कर्ता+अपा०+अधि०+क्रि०वि०+क्रिया)

राधाने डाकसे पत्र भेजे । (कर्ता+करण+क्रिया)

क्त कर्मवाच्य

गाडी स्टेशनपर रुकी । (अधि०+क्रिया)

पानी मैदानमे बरसा । (अधि०+क्रिया)

भाववाच्य

हमने उन्हें बुलाया । (कर्ता+कर्म+क्रिया)

उन्होने लडकोको मारा । (कर्ता+कर्म+क्रिया)

३८२३ वाक्यांश/पद—विन्यय

क्त वाच्य

मैं अपनी नयी किताब बडे मनोयोगसे पढता हूँ ।
(सवांश—कर्म+सवांश—करण+क्रिवांश)

वह उसीका एक छन्द प्राय गुनगुनाया करती है ।
(सवांश—कर्म+क्रि०वि०+क्रिवांश)

तुम मेरे पत्रोका जवाब बहुत ही जल्दी लिख भेजते हो ।
(सवांश—कर्म+क्रि०वि०+क्रिवांश)

कर्मवाच्य

उस व्यक्तिने अपना अमूल्य नाटक किसी बडे आलोचकको नहीं दिखाया ।
(सवांश—कर्ता+सवांश—गौ० कर्म+क्रि०वि०+क्रिया)

मेरे मनन सदा आग्रहसे,विस्मयसे मुझसे यह बात पूछी है ।
(सवांश—कर्ता+क्रि०वि०+करण+करण+करण+क्रिवांश)

क्त कर्मवाच्य

खडी फसल सूखती है । (क्रिवांश)

आँधी चलना ब द हो गया। (क्रिवाश)

भाववाच्य

हमारे हृदयने सब बातोको स्वीकार कर लिया है।
(सवाश—कता+सवाश—कम+क्रिवाश)

सब लडकोसे अब चला नहीं जा रहा।
(सवाश—कर्ता+नि०वि+क्रि०वि०+क्रिवाश)

मैने तुम्हें प्यार किया है। (कर्ता+कम+क्रिवाश)

३ ८ २ ८ विधेय-पूरक

कुछ वाक्याम कता, कम आदि रहते हुए भी वाक्य अधूरा रहता है। एसी क्रियाएँ अपूण क्रियापद कहलाती ह। एसी स्थितिम अथ प्रतीतिके लिए जो पद या वाक्याश आते है, उन्हें विधेय पूरक कहते हैं।

सरिता डाक्टर हो गई। (स०—पूरक+क्रिवाश)
यह लडका साहसी है। (वि०—पूरक+क्रिया)
यह पुस्तक बडी उपयोगी लग रही है। (वि०—पूरक+क्रिवाश)
राम गोवि दका भाई है। (सवाश—पूरक+क्रिया)
य बातें कहनी नहीं हैं। (क्रियाथक सना—पूरक+क्रि०वि०+क्रिया)
उसम काबलियतका होना अवश्यम्भावी है।
(सवाश—पूरक+क्रि०वि०+क्रिया)

३ ८ २ ९ विधेय-योग

पूण विधेयवाला क्रियाके साथ कभी विधय याग भी आत ह। य विधय याग—विधेय सना, विधेय विशषण या विधेयमूलक वाक्याश हात है। ये विधेयक्रियास पूव, विधेयक्रियाके पश्चात और उद्देश्य तथा विधेय क्रियाके मध्यम आ सकत हैं।

विधेयक्रियापूव

यह अपने मनका राजा था।
मैं कलवाली बात मानता हूँ।
राजा मनसे उदार है।
यह सबकी मदद करनेके लिए तयार एक अच्छा पडोसी है।

विधेयक्रियापश्चात

वह चिडियाकी भाँति थी—सदव चहकती फुदकती।

वे एक सहृदय अध्यापक हैं—अपने विद्यार्थियोकेलिए सदव सन्नद्ध।

उद्देश्य और विधेयक्रियाके मध्य

मैं जी भरकर हँसा हूँ।

तुमने पुस्तक भली प्रकार नही पढी।

वे बुलबुलें चहचहानेवाली कहा गई?

कारण विधि और प्रयोजन आदिकेलिए विधय-यागके रूपम कुछ वाक्याश या उपवाक्य भी आते है।

तुम्हे जीवित रहना है बहादुरकी तरह। (विधि)

मौत आती है उसकी जो कायर होता है, बुजदिल होता है। (कारण)

मुझ जीना है क्योंकि मै महत्त्वाकाक्षी हू। (प्रयाजन)

वाक्यकी व्याख्या अथवा वस्तुस्थिति बोधके रूपम विधय याग प्रयुक्त होतहै। एस प्रयोग प्रधान उपवाक्यके पहल या बादम आत है। कभी कभी मुख्य उपवाक्य के उद्देश्य और क्रियाके मध्य भी आ जाते है।

जसा आपको मालूम है हम यह काम तत्काल समाप्त नही कर सकत। (पूर्व)

हम यह काम जसा कि देखनेसे पता लगता है जानस पहले समाप्त नही कर सकत। (मध्य)

वह भारतीय नही है जसा कि उसके आकार प्रकारसे पता लगता है। (पश्चात)

प्यार एक विरासत है, एक एसी विरासत जसा कि मै कहता हू जो कभी नही मिटती। (उपवाक्य मध्य)

आपकी बातें जसा कि जाहिर है बडी दिलचस्प होती है। (मुख्यवाक्य मध्य)

निष्कष रूपम कहा जा सकता है कि हिन्दी वाक्याके गठनपनम उद्देश्य और विधेयका महत्त्व असदिग्ध है।

४

विश्लेषणात्मक वाक्य-विन्यास

खडीय तत्त्व

विश्लेषण और संश्लेषण सापेक्षिक प्रयोग हैं। संश्लेषणात्मक दृष्टिसे समीक्षा करते समय वाक्यान्तर्गत संश्लेषणात्मक प्रक्रियापर ही ध्यान केन्द्रित रहा है, फिर भी स्थान-स्थानपर विश्लेषणात्मकताकी ओर संकेत किया गया है। इस प्रकारका प्रयास मूलतः संश्लेषणात्मक अध्ययनको स्पष्ट करनेके लिए ही हुआ है।

विश्लेषण, विज्ञानकी अनिवार्यता है। विश्लेषणात्मक अध्ययनमें अध्येताकी मुख्य दृष्टि यह रहती है कि नियोजक-तत्त्वोंकी प्रकृति और प्रवृत्तिको समझकर उसके सहयोगमें बने पूर्णको उसके वास्तविक रूपमें समझा जाए। जैसे शरीर-विज्ञानमें शल्यक प्रक्रिया शरीरके पूर्ण ज्ञानका एक महत्त्वपूर्ण साधन है वैसे ही भाषामें वाक्यके पूर्ण ज्ञानके लिए उसके प्रत्येक अवयवको विश्लिष्ट करना अनिवार्य है। प्रस्तुत अध्ययनमें विश्लेषणमूलक योजनाको ध्यानमें रखते हुए अध्ययन किया गया है।

व्यक्त चिन्तनके मूलमें अव्यक्त बीज चिन्तन रहता है। जैसे-जैसे आन्तरिक चिन्तन अव्यक्त रूपसे अपनी शाखा प्रशाखाओंका प्रसार करता है वैसे-ही-वैसे वाक्यके रूपमें व्यक्त चिन्तन भी सतत विस्तार पाता है। भाषाके बीजवाक्योंके सब अवयवोंका विस्तार दिखाया गया है। तदुपरान्त वाक्यकी अन्य विश्लेषणमूलक योजनाओं क्रम, सक्रियता, मैत्री, व्यवस्था, निकटस्थ-अवयव तथा रूपान्तरणका अध्ययन किया गया है। ये सब विश्लेषणमूलक अध्ययनके खडीय-तत्त्व हैं।

भाषा-योजनाके कुछ ऐसे सतत सक्रिय एवं महत्त्वपूर्ण तत्त्व भी निरन्तर पाए जाते हैं जिन्हें भाषायन स्वीकृत विविध स्थानमें मिला है। सुर, सुरक्रम, बलाघात तथा विराम आदि ऐसे ही प्रतिखडीय-तत्त्व हैं। इन तत्त्वोंको ध्वनि विचार की अपेक्षा वाक्य विचारकी दृष्टिसे अधिक महत्त्व है क्योंकि ये अर्थमूलक ऐसी

बालक सोता ही है।

बालक सोता मात्र है।

बालक सोता भी तो है।

क्रमिक एकदिक क्रियाविस्तार (←)

बालक सोता है।

बालक सो जाया करता है।

बालक पढ़ते पढ़ते भी सो जाया करता है।

बालक लेटे हुए पढ़ते पढ़ते भी सो जाया करता है।

बालक पलंगपर लेटे हुए पढ़ते पढ़ते भी सो जाया करता है।

बालक अपने कमरेमें पलंगपर लेटे हुए पढ़ते-पढ़ते भी सो जाया करता है।

बालक रोज रातको अपने कमरेमें पलंगपर लेटे हुए पढ़ते पढ़ते भी सो जाया करता है।

बालक दूध पीकर रोज रातको अपने कमरेमें पलंगपर लेटे हुए पढ़ते पढ़ते भी सो जाया करता है।

क्रमिक द्विदिक क्रियाविस्तार (←|→)

बालक सोता है।

बालक रोज सोता ही है।

बालक रोज रातको सोता भी तो है।

बाधित क्रियाविस्तार (←( )—|—→)

बालक सोता है।

बालक रोज माँके पास सोता भी है।

बालक रोज रातको अपनी माँके पास सोता भी तो है।

४ १ २ बीजवाक्य—बीजपद (उद्देश्य+पूरक+क्रिया)

महेन्द्र+ब्राह्मण+है।

४ १ २ १ पूरकविस्तार

महेन्द्र ब्राह्मण है।

महेन्द्र तेजस्वी ब्राह्मण है।

महेन्द्र गौरवर्ण तेजस्वी ब्राह्मण है।

महेन्द्र सदाचारी गौरवर्ण तेजस्वी ब्राह्मण है।

महेन्द्र ज्ञानी सदाचारी गौरवर्ण तेजस्वी ब्राह्मण है।

महेन्द्र धार्मिक ज्ञानी सदाचारी गौरवर्ण तेजस्वी ब्राह्मण है।

महेन्द्र उच्चकुलका धार्मिक ज्ञानी सदाचारी गौरवर्ण तेजस्वी ब्राह्मण है।

महेन्द्र बनारसके उच्चकुलका धार्मिक ज्ञानी सदाचारी गौरवर्ण तेजस्वी ब्राह्मण है।

४ १ ३ बीजवाक्य—बीजपद (कर्ता+समानाधिकरण+क्रिया)

सरोज,+प्राध्यापिका+आई।

४ १ ३ १ समानाधिकरणविस्तार

सरोज प्राध्यापिका आई।

सरोज हिन्दीकी प्राध्यापिका आई।

सरोज अच्छा पढ़ानेवाली हिन्दीकी प्राध्यापिका आई।

सरोज कालिजमें अच्छा पढ़ानेवाली हिन्दीकी प्राध्यापिका आई।

सरोज दिल्लीके कालिजमें अच्छा पढ़ानेवाली हिन्दीकी प्राध्यापिका आई।

सरोज भारतकी राजधानी दिल्लीके कालिजमें अच्छा पढ़ानेवाली हिन्दीकी प्राध्यापिका आई।

४ १ ४ बीजवाक्य—बीजपद (कर्ता+कर्म+क्रिया)

मैं+मकान+देखता हूँ।

४ १ ४ १ कर्मविस्तार

मैं मकान देखता हूँ।

मैं बिकाऊ मकान देखता हूँ।

मैं सातमंजिला बिकाऊ मकान देखता हूँ।

बालक सोता ही है।

⟶

बालक सोता मात्र है।

⟶

बालक सोता भी तो है।

⟶

क्रमिक एकदिक क्रियाविस्तार (←)

बालक सोता है।

बालक सो जाया करता है।

←——

बालक पढ़ते पढ़ते भी सो जाया करता है।

←————

बालक लेटे हुए पढ़ते पढ़ते भी सो जाया करता है।

←——————

बालक पलंगपर लेटे हुए पढ़ते पढ़ते भी सो जाया करता है।

←————————

बालक अपने कमरेमें पलंगपर लेटे हुए पढ़ते पढ़ते भी सो जाया करता है।

←——————————

बालक रोज रातको अपने कमरेमें पलंगपर लेटे हुए पढ़ते-पढ़ते भी सो जाया करता है।

← — — — — — — — — — —

बालक दूध पीकर रोज रातको अपने कमरेमें पलंगपर लेटे हुए पढ़ते-पढ़ते भी सो जाया करता है।

←————————————

क्रमिक द्विदिक क्रियाविस्तार (←|→)

बालक सोता है।

बालक रोज सोता ही है।

←— | —→

बालक रोज रातको सोता भी तो है।

←——— | ———→

बाधित क्रियाविस्तार (←(   )— | —→)

बालक सोता है।

बालक रोज मां के पास सोता भी है।

←(   )— | —→

बालक रोज रातको अपनी मां के पास सोता भी तो है।

←——(   )— | ——→

४ १ २ बीजवाक्य—बीजपद (उद्देश्य+पूरक+क्रिया)

महेन्द्र+ब्राह्मण+है।

४ १ २ १ पूरकविस्तार

महेन्द्र ब्राह्मण है।
महेन्द्र तेजस्वी ब्राह्मण है।
महेन्द्र गौरवण तेजस्वी ब्राह्मण है।
महेन्द्र सदाचारी गौरवण तेजस्वी ब्राह्मण है।
महेन्द्र ज्ञानी सदाचारी गौरवण तेजस्वी ब्राह्मण है।
महेन्द्र धार्मिक ज्ञानी सदाचारी गौरवण तेजस्वी ब्राह्मण है।
महेन्द्र उच्चकुलका धार्मिक ज्ञानी सदाचारी गौरवण तेजस्वी ब्राह्मण है।
महेन्द्र बनारसके उच्चकुलका धार्मिक ज्ञानी सदाचारी गौरवण तेजस्वी ब्राह्मण है।

४ १ ३ बीजवाक्य—बीजपद (कर्ता+समानाधिकरण+क्रिया)

सरोज,+प्राध्यापिका+आई।

४ १ ३ १ समानाधिकरणविस्तार

सरोज प्राध्यापिका आई।
सरोज हिन्दीकी प्राध्यापिका आई।
सरोज अच्छा पढ़ानेवाली हिन्दीकी प्राध्यापिका आई।
सरोज कालिजमें अच्छा पढ़ानेवाली हिन्दीकी प्राध्यापिका आई।
सरोज दिल्लीके कालिजमें अच्छा पढ़ानेवाली हिन्दीकी प्राध्यापिका आई।
सरोज भारतकी राजधानी दिल्लीके कालिजमें अच्छा पढ़ानेवाली हिन्दीकी प्राध्यापिका आई।

४ १ ४ बीजवाक्य—बीजपद (कर्ता+कर्म+क्रिया)

मैं+मकान+देखता हूँ।

४ १ ४ १ कर्मविस्तार

मैं मकान देखता हूँ।
मैं बिकाऊ मकान देखता हूँ।
मैं सतमंजिला बिकाऊ मकान देखता हूँ।

शशि छोटी बहन सुमनको साडी देती है।
शशि शैतान छोटी बहन सुमनको साडी देती है।
शशि सुन्दर सा शैतान छोटी बहन सुमनको साडी देती है।
शशि गौरवर्णा सुन्दर सी शैतान छोटी बहन सुमनको साडी देती है।
शशि नीली आँखोवाली गौरवर्णा सुन्दर सी शैतान छोटी बहन सुमनको साडी देती है।
शशि अपनी नीली आँखोवाली गौरवर्णा सुन्दर सी शैतान छोटी बहन सुमनको साडी देती है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बीजवाक्योंके सब अगोका विस्तार सभव है। ये वाक्य भाषाके आधार है। इनसे भाषाका मूल ढाचा स्पष्ट हो जाता है।

४२ पद-विस्तार

विस्तारमूलक प्रवृत्तिका निर्देशन वैसे तो बीजवाक्यके अन्तर्गत किया जा चुका है फिर भी प्रस्तुत विश्लेषणमे वाक्यान्तर्गत पदोका विस्तार दिखाना अभिप्रेत है।

४२१ कर्तृ वाच्य—कर्ताप्रयोग

४२११ सज्ञा

राम जाता है। (एक कर्ता)
राम लक्ष्मण और सीता जाते है। (एकाधिक कर्ता)

४२१२ सर्वनाम

मैं जाता हूँ। (एक कर्ता)
वह, तू और मैं जाएँगे। (एकाधिक कर्ता)

४२१३ विशेषण → विशेष्य

बडा जाता है। (एक कर्ता)
बडे, छोटे सब जाते हैं। (एकाधिक कर्ता)

४२१४ कर्ताविस्तार

लडका जाता है।
सुन्दर लडका जाता है।
वह सुन्दर लडका जाता है।

कालिजमे पढ़नेवाला वह सुंदर लडका जाता है।
दिल्ली कालिजमे पढनेवाला वह सुंदर लडका जाता है।
तुम्हारा दिल्लीके कालिजमे पढनेवाला वह सुंदर लडका जाता है।

४२२ कर्तृवाच्य—कर्मप्रयोग

४२२१ सना

मुकुल दूध पीता है। (एक कम)
मुकुल दूध चाय और काफी पिया करता है। (एकाधिक कम)

४२२२ सर्वनाम

मुकुल यह देखता है। (एक कम)
मुकुल यह और वह देखता है। (एकाधिक कम)

४२२३ विशेषण→विशेष्य

मालिनी ठंडा पीती है। (एक कम)
मालिनी ठंडा और गर्म पीती है। (एकाधिक कम)

४२२४ कर्मविस्तार

मुकुल दूध पीता है।
मकुल गर्म दूध पीता है।
मकुल सारा गर्म दूध पीता है।
मुकुल यह सारा गर्म दूध पीता है।
मुकुल चीनी मिला हुआ यह सारा गर्म दूध पीता है।
मकुल सब उबलनेवाला चीनी मिला हुआ यह सारा गर्म दूध पीता है।

४२३ कर्तृवाच्य—क्रियाप्रयोग

४२३१ क्रिया

मल्लिका पढ़ती है। (एक क्रिया)
मल्लिका पढ़ती और लिखती है। (एकाधिक क्रिया)

४२३२ क्रियाविस्तार

मालिनी सोता है।
मालिनी कमरेमें सोता है।
मालिनी अपने कमरेमें सोती है।
मालिनी रातको अपने कमरेमें सोती है।
मालिनी रोज रातको अपने कमरेमें सोती है।
मालिनी पढ़नेके बाद रोज रातको अपने कमरेमें सोता है।

४२४ कर्मवाच्य—कर्मप्रयोग

४२४१ संज्ञा

मैंने लड़की देखी। (एक कर्म)
मैंने लड़की और लड़का देखा। (एकाधिक कर्म)

४२४२ सर्वनाम

चन्दरने यह देखा। (एक कर्म)
चन्दरने यह और वह देखा। (एकाधिक कर्म)

४२४३ विशेषण→विशेष्य

हमने मोटा देखा। (एक कर्म)
हमने मोटे और पतले देखे। (एकाधिक कर्म)

४२४४ कर्मविस्तार

मैंने लड़की देखी।
मैंने सुन्दर लड़की देखी।
मैंने वह सुन्दर लड़की देखी।
मैंने दिल्लीकी वह सुन्दर लड़की देखी।
मैंने भारतकी राजधानी दिल्लीकी वह सुन्दर लड़की देखी।

४२५ कर्मवाच्य—कर्ताप्रयोग

४२५१ संज्ञा

शेखरने पुस्तक लिखी। (एक कर्ता)

रजत और शेखरने पुस्तक लिखी। (एकाधिक कर्ता)

४२५२ सर्वनाम

मैंने ग्रंथ पढ़े। (एक कर्ता)
तुमने और मैंने ग्रंथ पढ़े। (एकाधिक कर्ता)

४२५३ विशेषण→विशेष्य

मोटेने रोटी खाई। (एक कर्ता)
मोटे और छोटेने रोटी खाई। (एकाधिक कर्ता)

४२५४ कर्ताविस्तार

शेखरने पुस्तक लिखी।
प्रतिभासम्पन्न शेखरने पुस्तक लिखी।
महती प्रतिभासम्पन्न शेखरने पुस्तक लिखी।
बुद्धिमान महती प्रतिभासम्पन्न शेखरने पुस्तक लिखी।
परिश्रमी बुद्धिमान महती प्रतिभासम्पन्न शेखरने पुस्तक लिखी।
उस परिश्रमी बुद्धिमान महती प्रतिभासम्पन्न शेखरने पुस्तक लिखी।

४२६ भाववाच्य—कर्तृप्रयोग

४२६१ संज्ञा

रामसे चला गया। (एक कर्ता)
राम और श्यामसे चला गया। (एकाधिक कर्ता)

४२६२ सर्वनाम

मुझसे चला गया। (एक कर्ता)
तुमसे और मुझसे चला गया। (एकाधिक कर्ता)

४२६३ विशेषण→विशेष्य

बड़ेसे चला गया। (एक कर्ता)
बड़े और छोटेसे चला गया। (एकाधिक कर्ता)

४२६४ कर्ताविस्तार

बच्चेसे बैठा गया।

छोटे बच्चेसे बैठा गया।

शैतान छोटे बच्चेसे बैठा गया।

उस शैतान छोटे बच्चेसे बैठा गया।

हरसमय खेलनेवाले उस शैतान छोटे बच्चेसे बैठा गया।

४२७ भाववाच्य—कर्मप्रयोग

४२७१ संज्ञा

राजाने सिपाहीको देखा। (एक कर्म)

राजाने सिपाही और सेनापतिको देखा। (एकाधिक कर्म)

४२७२ सर्वनाम

राजाने इसे देखा। (एक कर्म)

राजाने इसे और उसे देखा। (एकाधिक कर्म)

४२७३ विशेषण→विशेष्य

राजाने बड़ीको देखा। (एक कर्म)

राजाने बड़ी और छोटीको देखा। (एकाधिक कर्म)

४२७४ कर्मविस्तार

मैंने पुस्तकको देखा।

मैंने बड़ी पुस्तकको देखा।

मैंने हिन्दीकी बड़ी पुस्तकको देखा।

मैंने कॉलेजमें हिन्दीकी बड़ी पुस्तकको देखा।

मैंने अपने कॉलेजमें हिन्दीकी बड़ी पुस्तकको देखा।

मैंने केवल अपने कॉलेजमें हिन्दीकी बड़ी पुस्तकको देखा।

कर्तृकर्मवाच्यमें कर्ता कर्म, क्रिया आदिका विस्तार उसी प्रकार होता है जिस प्रकार कर्तृवाच्य और कर्मवाच्यमें। अतः यहाँ उसे पिष्टपेषण मात्र समझकर छोड़ दिया गया है। बीजवाक्य विवेचनमें पदोंका विस्तार दिखा दिया गया है

पुष्कल मात्रा में किया जा चुका है। विस्तारसम्बन्धी विवेचन वाक्यका ऋजु विकासमूलक अध्ययन होता है। वाक्यके सभी प्रधान नियोजक पदोंका विस्तार सम्भव है।

४ ३ क्रम

हिन्दीमें क्रमका विशेष महत्त्व है। वाक्यान्तर्गत महत्त्वपूर्ण सार्थक पदों, वाक्यांशों तथा उपवाक्योंका व्याकरण सम्मत स्थानान्तरण विशिष्ट प्रयोजन-सम्मत होता है। स्थानान्तरणकी दृष्टिसे हिन्दी अत्यन्त लचीली भाषा है। उद्देश्य अथवा कर्ता और विधेयांश वक्ता अथवा लेखकके मन्तव्यानुरूप परस्पर एक-दूसरेका स्थान लेनेमें सक्षम है। इस दृष्टिसे क्रियापद सर्वाधिक स्थिर अंश है। क्रमके सम्बन्धमें एक बात सर्वथा निश्चित है कि केवल अर्थमूलक पदांशोंका ही स्थानान्तरण होता है। इसका अभिप्राय यह है कि केवल सार्थक घटक ही अर्थग्रहण अपना सामान्यरूपेण निश्चित स्थान छोड़ते हैं। संस्कृतमें क्रमका कोई प्रयोजन नहीं है। विभक्ति प्रत्यययुक्त होनेके नाते इस भाषामें कोई भी सिद्ध अर्थमूलक घटक कहीं भी आ सकता है। अन्वय द्वारा प्रत्येक स्थानमें उसका एक ही अर्थ रहता है। इस प्रसंगमें यह विशेष रूपसे ज्ञातव्य है कि वाक्यमें प्रयुक्त शब्दका कोषगत अथवा लाक्षणिक एवं व्यंग्यार्थ मूलतः वही रहता है। प्रयोक्ताकी मानसिक स्थितिके अनुरूप मात्र उसके भावबोधमें अन्तर आ जाता है।

४ ३ १ साधारण वाक्यमें पदक्रम और वाक्यांशक्रम

४ ३ १ १ कर्ता+क्रिया

कर्तृवाच्य और कर्तृकर्मवाच्यके वाक्योंमें कर्ता ही उद्देश्य होता है।

मैं गया। — कर्ता (उ०) क्रिया

गिलास टूट गया। — उ० क्रिया

यदि इन वाक्योंमें पदों और वाक्यांशोंका स्थानान्तरण हो जाए तो ये विधानार्थकके स्थानपर प्रश्नार्थक हो जाते हैं।

गया+मैं? — क्रिया कर्ता (उ०)?

टूट गया+गिलास? — क्रिया उ०?

भाववाच्यमें कर्ता उद्देश्य नहीं होता भाव ही उद्देश्य होता है। इस प्रकारके वाक्योंमें क्रियाके आदि अवस्थामें आजानेसे वाक्य प्रश्नार्थक, संशयात्मक अथवा विस्मयात्मक हो जाता है।

तुमसे चला गया।	करण क्रिया
चला गया+तुमसे ?, ,, !	क्रिया करण

सम्बोधन और विस्मयादिबोधक अव्यय प्राय वाक्यके प्रारम्भमे आते हैं। लेकिन कभी-कभी इनका स्थान वाक्यान्तमे भी होता है। ऐसी दशामे अभिव्यक्ति की तीव्रतामे कमी आ जाती है।

श्याम ! इधर आओ।	सम्बोधन क्रि० वि० क्रिया
इधर आओ+श्याम !	क्रि०वि० क्रिया सम्बोधन
हाय ! अब क्या होगा ?	विबो० क्रि०वि० क्रि०वि क्रिया
अब क्या होगा+हाय !	क्रि०वि० क्रि०वि० क्रिया विबो०

४ ३ १ २ कर्ता+समानाधिकरण+क्रिया

समानाधिकरण पद सदैव मुख्यपदके तत्काल बाद आता है अर्थात मुख्यपद और समानाधिकरण सूचक पदका क्रम एक-सा रहता है। पदक्रमके अन्तर्गत जब इनका स्थानान्तरण होता है तो ये एक इकाईके रूपमे रहते हैं।

सिलिया, चमारिन चली गई।	कर्ता समा० क्रिया
चली गई+सिलिया, चमारिन।	क्रिया कर्ता समा०

४ ३ १ ३ कर्ता+पूरक+क्रिया

ईश्वर सर्वव्यापक है।	कर्ता पूरक क्रिया
ईश्वर है+सर्वव्यापक।	कर्ता क्रिया पूरक
सर्वव्यापक+ईश्वर है।	पूरक कर्ता क्रिया
सर्वव्यापक है+ईश्वर।	पूरक क्रिया कर्ता
है ईश्वर+सर्वव्यापक।	क्रिया कर्ता पूरक
है सर्वव्यापक+ईश्वर।	क्रिया पूरक कर्ता

४ ३ १ ४ कर्ता+कर्म+क्रिया

कर्तृ वाच्य

लडका स्कूल जाता है।	कर्ता (उ०) कर्म क्रिया
स्कूल+लडका जाता है।	कर्म कर्ता (उ०) क्रिया
जाता है लडका+स्कूल।	क्रिया कर्ता (उ०) कर्म
जाता है स्कूल+लडका।	क्रिया कर्म कर्ता (उ०)

लड़का जाता है+स्कूल।
स्कूल जाता है+लड़का।

कर्ता (उ०) क्रिया कर्म
कर्म क्रिया कर्ता (उ०)

कर्मवाच्य

मैंने रोटी खाई।
रोटी+मैंने खाई।
खाई+मैंने रोटी।
खाई रोटी+मैंने।
रोटी खाई+मैंने।

कर्ता कर्म (उ०) क्रिया
कर्म (उ०) कर्ता क्रिया
क्रिया कर्ता कर्म (उ०)
क्रिया कर्म (उ०) कर्ता
कर्म (उ०) क्रिया कर्ता

भाववाच्य

नादिरशाहने दिल्लीको लूटा।
दिल्लीको+नादिरशाहने लूटा।
लूटा नादिरशाहने+दिल्लीको।
लूटा दिल्लीको+नादिरशाहने।
नादिरशाहने लूटा+दिल्लीको।
दिल्लीको लूटा+नादिरशाहने।

कर्ता कर्म क्रिया
कर्म कर्ता क्रिया
क्रिया कर्ता कर्म
क्रिया कर्म कर्ता
कर्ता क्रिया कर्म
कर्म क्रिया कर्ता

४ ३ १ ५ कर्ता+गौणकर्म+मुख्यकर्म+क्रिया

वे हम ज्ञान देते हैं।
वे ज्ञान+हम देते हैं।
वे ज्ञान देते हैं+हम।
वे हम देते हैं+ज्ञान
वे देते हैं ज्ञान+हम।
वे दे
हम
हम
हम
हम
हम
हम+
ज्ञान वे
ज्ञान हम

कर्ता गौ०कर्म मु०कर्म क्रिया
कर्ता मु०कर्म गौ०कर्म क्रिया
कर्ता मु०कर्म क्रि म
कर्ता गौ०कर्म
कर्ता क्रिया मु०
कर्ता क्रिया गौ
गौ०कर्म कर्ता
गौ०कर्म मु०
गौ०कर्म क्रिया
०कर्म क्रिया
कर्म कर्ता
मु०

नान व दते हैं+हम।	मु०कम कर्ता क्रिया गौ०कम
ज्ञान+हम दते है वे।	मु०कम गौ०कम क्रिया कर्ता
नान दत हैं वे+हम।	मु०कम क्रिया कर्ता गौ०कम
नान दत है हम+वे।	मु०कम क्रिया गौ०कम कर्ता
देते है हम+व नान।	क्रिया गौ०कम कर्ता मु०कम
दते हैं वे+हमे नान।	क्रिया कर्ता गौ०कम मु०कम
दते हैं व+नान हम।	क्रिया कर्ता मु०कम गौ०कम
दते हैं हम नान+व।	क्रिया गौ०कम मु०कम कर्ता
दते हैं नान+व हम।	क्रिया मु०कम कर्ता गौ०कम
दत ह नान हम+व।	क्रिया मु०कम गौ०कम कर्ता

४३१६ कर्ता+कर्म+कमपूरक+क्रिया

राजान पुत्रका युवराज बनाया।	कर्ता कम कमपू० क्रिया
राजान युवराज+पुत्रका बनाया।	कर्ता कमपू० कम क्रिया
राजान पुत्रका बनाया+युवराज।	कर्ता कम क्रिया कमपू०
राजान युवराज बनाया+पुत्रका।	कर्ता कमपू० क्रिया कम
राजान बनाया+पुत्रका युवराज।	कर्ता क्रिया कम कमपू०
राजान बनाया युवराज+पुत्रका।	कर्ता क्रिया कमपू० कम
पुत्रका+राजान युवराज बनाया।	कम कर्ता कमपू० क्रिया
पुत्रका राजान बनाया+युवराज।	कम कर्ता क्रिया कमपू०
पुत्रका युवराज+राजान बनाया।	कम कमपू० कर्ता क्रिया
पुत्रका युवराज+बनाया राजाने।	कम कमपू० क्रिया कर्ता
पुत्रका बनाया युवराज+राजान।	कम क्रिया कमपू० कर्ता
पुत्रका बनाया राजान+युवराज।	कम क्रिया कर्ता कमपू०
युवराज+राजान पुत्रका बनाया।	कमपू० कर्ता कम क्रिया
युवराज राजाने बनाया+पुत्रका।	कमपू० कर्ता क्रिया कम
युवराज पुत्रका+राजाने बनाया।	कमपू० कम कर्ता क्रिया
युवराज+पुत्रका बनाया राजान।	कमपू० कम क्रिया कर्ता
युवराज बनाया+राजाने पुत्रका।	कमपू० क्रिया कर्ता कम
युवराज बनाया+पुत्रका राजान।	कमपू० क्रिया कम कर्ता
बनाया राजान+पुत्रका युवराज।	क्रिया कर्ता कम कमपू०
बनाया राजान युवराज+पुत्रका।	क्रिया कर्ता कमपू० कम

लडका जाता है + स्कूल।	कर्ता (उ०) क्रिया कर्म
स्कूल जाता है + लडका।	कर्म क्रिया कर्ता (उ०)

कर्मवाच्य

मैंने रोटी खाई।	
रोटी + मैंने खाई।	कर्ता कर्म (उ०) क्रिया
खाई + मैंने रोटी।	कर्म (उ०) कर्ता क्रिया
खाई रोटी + मैंने।	क्रिया कर्ता कर्म (उ०)
रोटी खाई + मैंने।	क्रिया कर्म (उ०) कर्ता
	कर्म (उ०) क्रिया कर्ता

भाववाच्य

नादिरशाहने दिल्लीको लूटा।	कर्ता कर्म क्रिया
दिल्लीको + नादिरशाहने लूटा।	कर्म कर्ता क्रिया
लूटा नादिरशाहने + दिल्लीको।	क्रिया कर्ता कर्म
लूटा दिल्लीको + नादिरशाहने।	क्रिया कर्म कर्ता
नादिरशाहने लूटा + दिल्लीको।	कर्ता क्रिया कर्म
दिल्लीको लूटा + नादिरशाहने।	कर्म क्रिया कर्ता

४३१५ कर्ता + गौणकर्म + मुख्यकर्म + क्रिया

वे हम ज्ञान देते हैं।	कर्ता गौ०कर्म मु०कर्म क्रिया
वे ज्ञान + हम देते हैं।	कर्ता मु०कर्म गौ०कर्म क्रिया
वे ज्ञान देते हैं + हम।	कर्ता मु०कर्म क्रिया गौ०कर्म
वे हम देते हैं + ज्ञान।	कर्ता गौ०कर्म क्रिया मु०कर्म
वे देते हैं ज्ञान + हम।	कर्ता क्रिया मु०कर्म गौ०कर्म
वे देते हैं + हम ज्ञान।	कर्ता क्रिया गौ०कर्म मु०कर्म
हम + वे ज्ञान देते हैं।	गौ०कर्म कर्ता मु०कर्म क्रिया
हम ज्ञान + वे देते हैं।	गौ०कर्म मु०कर्म कर्ता क्रिया
हम देते हैं वे + ज्ञान।	गौ०कर्म क्रिया कर्ता मु०कर्म
हम देते हैं ज्ञान + वे।	गौ०कर्म क्रिया मु०कर्म कर्ता
हम वे देते हैं + ज्ञान।	गौ०कर्म कर्ता क्रिया मु०कर्म
हम + ज्ञान देते हैं वे।	गौ०कर्म मु०कर्म क्रिया कर्ता
ज्ञान वे + हम देते हैं।	मु०कर्म कर्ता गौ०कर्म क्रिया
ज्ञान हम + वे देते हैं।	मु०कर्म गौ०कर्म कर्ता क्रिया

ज्ञान वे देते हैं+हम ।	मु०कम कर्ता क्रिया गौ०कम
ज्ञान+हम देते हैं वे ।	मु०कम गौ०कम क्रिया कर्ता
ज्ञान देते हैं वे+हम ।	मु०कम क्रिया कर्ता गौ०कम
ज्ञान देते हैं हम+वे ।	मु०कम क्रिया गौ०कम कर्ता
देते हैं हम+वे ज्ञान ।	क्रिया गौ०कम कर्ता मु०कम
देते हैं वे+हमें ज्ञान ।	क्रिया कर्ता गौ०कम मु०कम
देते हैं वे+ज्ञान हम ।	क्रिया कर्ता मु०कम गौ०कम
देते हैं हम ज्ञान+वे ।	क्रिया गौ०कम मु०कम कर्ता
देते हैं ज्ञान+वे हम ।	क्रिया मु०कम कर्ता गौ०कम
देते हैं ज्ञान हम+वे ।	क्रिया मु०कम गौ०कम कर्ता

८ ३ १ ६ कर्ता+कर्म+कर्मपूरक+क्रिया

राजाने पुत्रको युवराज बनाया ।	कर्ता कम कमपू० क्रिया
राजाने युवराज+पुत्रको बनाया ।	कर्ता कमपू० कम क्रिया
राजाने पुत्रको बनाया+युवराज ।	कर्ता कम क्रिया कमपू०
राजाने युवराज बनाया+पुत्रको ।	कर्ता कमपू० क्रिया कम
राजाने बनाया+पुत्रको युवराज ।	कर्ता क्रिया कम कमपू०
राजाने बनाया युवराज+पुत्रको ।	कर्ता क्रिया कमपू० कम
पुत्रको+राजाने युवराज बनाया ।	कम कर्ता कमपू० क्रिया
पुत्रको राजाने बनाया+युवराज ।	कम कर्ता क्रिया कमपू०
पुत्रको युवराज+राजाने बनाया ।	कम कमपू० कर्ता क्रिया
पुत्रको युवराज+बनाया राजाने ।	कम कमपू० क्रिया कर्ता
पुत्रको बनाया युवराज+राजाने ।	कम क्रिया कमपू० कर्ता
पुत्रको बनाया राजाने+युवराज ।	कम क्रिया कर्ता कमपू०
युवराज+राजाने पुत्रको बनाया ।	कमपू० कर्ता कम क्रिया
युवराज राजाने बनाया+पुत्रको ।	कमपू० कर्ता क्रिया कम
युवराज पुत्रको+राजाने बनाया ।	कमपू० कम कर्ता क्रिया
युवराज+पुत्रको बनाया राजाने ।	कमपू० कम क्रिया कर्ता
युवराज बनाया+राजाने पुत्रको ।	कमपू० क्रिया कर्ता कम
युवराज बनाया+पुत्रको राजाने ।	कमपू० क्रिया कम कर्ता
बनाया राजाने+पुत्रको युवराज ।	क्रिया कर्ता कम कमपू०
बनाया राजाने युवराज+पुत्रको ।	क्रिया कर्ता कमपू० कम

लडका जाता है + स्कूल।	कर्ता (उ०) क्रिया कर्म
स्कूल जाता है + लडका।	कर्म क्रिया कर्ता (उ०)

कर्मवाच्य

मैंने रोटी खाई।	कर्ता कर्म (उ०) क्रिया
रोटी + मैंने खाई।	कर्म (उ०) कर्ता क्रिया
खाई + मैंने रोटी।	क्रिया कर्ता कर्म (उ०)
खाई रोटी + मैंने।	क्रिया कर्म (उ०) कर्ता
रोटी खाई + मैंने।	कर्म (उ०) क्रिया कर्ता

भाववाच्य

नादिरशाहने दिल्लीको लूटा।	कर्ता कर्म क्रिया
दिल्लीको + नादिरशाहने लूटा।	कर्म कर्ता क्रिया
लूटा नादिरशाहने + दिल्लीको।	क्रिया कर्ता कर्म
लूटा दिल्लीको + नादिरशाहने।	क्रिया कर्म कर्ता
नादिरशाहने लूटा + दिल्लीको।	कर्ता क्रिया कर्म
दिल्लीको लूटा + नादिरशाहने।	कर्म क्रिया कर्ता

४३१५ कर्ता + गौणकर्म + मुख्यकर्म + क्रिया

वे हम ज्ञान देते हैं।	कर्ता गौ०कर्म मु०कर्म क्रिया
वे ज्ञान + हम देते हैं।	कर्ता मु०कर्म गौ०कर्म क्रिया
वे ज्ञान देते हैं + हम।	कर्ता मु०कर्म क्रिया गौ०कर्म
वे हम देते हैं + ज्ञान।	कर्ता गौ०कर्म क्रिया मु०कर्म
वे देते हैं ज्ञान + हम।	कर्ता क्रिया मु०कर्म गौ०कर्म
वे देते हैं + हम ज्ञान।	कर्ता क्रिया गौ०कर्म मु०कर्म
हम + वे ज्ञान देते हैं।	गौ०कर्म कर्ता मु०कर्म क्रिया
हम ज्ञान + वे देते हैं।	गौ०कर्म मु०कर्म कर्ता क्रिया
हम देते हैं वे + ज्ञान।	गौ०कर्म क्रिया कर्ता मु०कर्म
हम देते हैं ज्ञान + वे।	गौ०कर्म क्रिया मु०कर्म कर्ता
हम वे देते हैं + ज्ञान।	गौ०कर्म कर्ता क्रिया मु०कर्म
हम + ज्ञान देते हैं वे।	गौ०कर्म मु०कर्म क्रिया कर्ता
ज्ञान वे + हम देते हैं।	मु०कर्म कर्ता गौ०कर्म क्रिया
ज्ञान हम + वे देते हैं।	मु०कर्म गौ०कर्म कर्ता क्रिया

नान व दत हैं+हम।	मु०कम कर्ता क्रिया गौ०कम
ज्ञान+हम देते हैं व।	मु०कम गौ०कम क्रिया कर्ता
नान देत हैं व+हम।	मु०कम क्रिया कर्ता गौ०कम
नान देत हैं हम+वे।	मु०कम क्रिया गौ०कम कर्ता
दत है हम+व नान।	क्रिया गौ०कम कर्ता मु०कम
दते हैं वे+हम नान।	क्रिया कर्ता गौ०कम मु०कम
दत हैं वे+नान हम।	क्रिया कर्ता मु०कम गौ०कम
दत हैं हम नान+वे।	क्रिया गौ०कम मु०कम कर्ता
दते हैं नान+वे हम।	क्रिया मु०कम कर्ता गौ०कम
दत हैं नान हम+व।	क्रिया मु०कम गौ०कम कर्ता

८३१६ कर्ता+कर्म+कर्मपूरक+क्रिया

राजाने पुत्रको युवराज बनाया।	कर्ता कम कमपू० क्रिया
राजाने युवराज+पुत्रको बनाया।	कर्ता कमपू० कम क्रिया
राजाने पुत्रको बनाया+युवराज।	कर्ता कम क्रिया कमपू०
राजाने युवराज बनाया+पुत्रको।	कर्ता कमपू० क्रिया कम
राजाने बनाया+पुत्रको युवराज।	कर्ता क्रिया कम कमपू०
राजाने बनाया युवराज+पुत्रको।	कर्ता क्रिया कमपू० कम
पुत्रको+राजाने युवराज बनाया।	कम कर्ता कमपू० क्रिया
पुत्रको राजाने बनाया+युवराज।	कम कर्ता क्रिया कमपू०
पुत्रको युवराज+राजाने बनाया।	कम कमपू० कर्ता क्रिया
पुत्रको युवराज+बनाया राजाने।	कम कमपू० क्रिया कर्ता
पुत्रको बनाया युवराज+राजाने।	कम क्रिया कमपू० कर्ता
पुत्रको बनाया राजाने+युवराज।	कम क्रिया कर्ता कमपू०
युवराज+राजाने पुत्रको बनाया।	कमपू० कर्ता कम क्रिया
युवराज राजाने बनाया+पुत्रको।	कमपू० कर्ता क्रिया कम
युवराज पुत्रको+राजाने बनाया।	कमपू० कम कर्ता क्रिया
युवराज+पुत्रको बनाया राजाने।	कमपू० कम क्रिया कर्ता
युवराज बनाया+राजाने पुत्रको।	कमपू० क्रिया कर्ता कम
युवराज बनाया+पुत्रको राजाने।	कमपू० क्रिया कम कर्ता
बनाया राजाने+पुत्रको युवराज।	क्रिया कर्ता कम कमपू०
बनाया राजाने युवराज+पुत्रको।	क्रिया कर्ता कमपू० कम

बनाया पुत्रका + राजाने युवराज।	क्रिया कर्म कर्ता कर्मपू०
बनाया पुत्रको युवराज + राजाने।	क्रिया कर्म कर्मपू० कर्ता
बनाया युवराज + पुत्रको राजाने।	क्रिया कर्मपू० कर्म कर्ता
बनाया युवराज राजाने + पुत्रको।	क्रिया कर्मपू० कर्ता कर्म

४ ३ १ ७ कर्ता + करण + क्रिया

मैंने हाथस खाया।	कर्ता करण क्रिया
मैंने खाया + हाथस।	कर्ता क्रिया करण
हाथसे + मैंने खाया।	करण कर्ता क्रिया
हाथस खाया + मैंने।	करण क्रिया कर्ता
खाया मैंने + हाथस।	क्रिया कर्ता करण
खाया हाथस + मैंने।	क्रिया करण कर्ता

४ ३ १ ८ कर्ता + अपादान + क्रिया

बच्चा छतस कूदा।	कर्ता अपादान क्रिया
बच्चा कूदा + छतस।	कर्ता क्रिया अपादान
छतस + बच्चा कूदा।	अपादान कर्ता क्रिया
छतस कूदा + बच्चा।	अपादान क्रिया कर्ता
कूदा बच्चा + छतस।	क्रिया कर्ता अपादान
कूदा + छतस बच्चा।	क्रिया अपादान कर्ता

४ ३ १ ९ कर्ता + अधिकरण + क्रिया

वह कमरम गया।	कर्ता अधिकरण क्रिया
वह गया + कमरम।	कर्ता क्रिया अधिकरण
कमरम + वह गया।	अधिकरण कर्ता क्रिया
कमरम + गया वह।	अधिकरण क्रिया कर्ता
गया वह + कमरम।	क्रिया कर्ता अधिकरण
गया कमरम + वह।	क्रिया अधिकरण कर्ता

वाक्य	क्रम
डाकूने छुरेसे मारा+सेठको ।	कर्ता करण क्रिया कर्म
डाकूने छुरेसे+सेठको मारा ।	कर्ता करण कर्म क्रिया
डाकूने मारा+छुरेसे सेठको ।	कर्ता क्रिया कर्म करण
डाकूने मारा+सेठको छुरेसे ।	कर्ता क्रिया कर्म करण
सेठको+डाकूने छुरेसे मारा ।	कर्म कर्ता करण क्रिया
सेठको डाकूने मारा+छुरेसे ।	कर्म कर्ता क्रिया करण
सेठको+छुरेसे डाकूने मारा ।	कर्म करण कर्ता क्रिया
सेठको छुरेसे मारा+डाकूने ।	कर्म करण क्रिया कर्ता
सेठको मारा+डाकूने छुरेसे ।	कर्म क्रिया कर्ता करण
सेठको मारा+छुरेसे डाकूने ।	कर्म क्रिया करण कर्ता
छुरेसे सेठको+डाकूने मारा ।	करण कर्म कर्ता क्रिया
छुरेसे+सेठको मारा डाकूने ।	करण कर्म क्रिया कर्ता
छुरेसे डाकूने+सेठको मारा ।	करण कर्ता कर्म क्रिया
छुरेसे डाकूने मारा+सेठको ।	करण कर्ता क्रिया कर्म
छुरेसे मारा सेठको+डाकूने ।	करण क्रिया कर्म कर्ता
छुरेसे मारा+डाकूने सेठको ।	करण क्रिया कर्ता कर्म
मारा डाकूने छुरेसे+सेठको ।	क्रिया कर्ता करण कर्म
मारा डाकूने सेठको+छुरेसे ।	क्रिया कर्ता कर्म करण
मारा सेठको+डाकूने छुरेसे ।	क्रिया कर्म कर्ता करण
मारा सेठको+छुरेसे डाकूने ।	क्रिया कर्म करण कर्ता
मारा छुरेसे+सेठको डाकूने ।	क्रिया करण कर्म कर्ता
मारा छुरेसे+डाकूने सेठको ।	क्रिया करण कर्ता कर्म

४ ३ १ १ १ कर्ता+अपादान+कर्म+क्रिया

वाक्य	क्रम
तुमने उनसे रुपया लिया ।	कर्ता अपादान कर्म क्रिया
तुमने रुपया+उनसे लिया ।	कर्ता कर्म अपादान क्रिया
तुमने उनसे लिया+रुपया ।	कर्ता अपादान क्रिया कर्म
तुमने+रुपया लिया उनसे ।	कर्ता कर्म क्रिया अपादान
तुमने लिया+उनसे रुपया ।	कर्ता क्रिया अपादान कर्म
तुमने लिया रुपया+उनसे ।	कर्ता क्रिया कर्म अपादान
उनसे+तुमने रुपया लिया ।	अपादान कर्ता कर्म क्रिया
उनसे तुमने लिया+रुपया ।	अपादान कर्ता क्रिया कर्म

है └लड़का┘ └सुन्दर┘।	क्रिया उ० पूरक
└दशरथका┘ └पुत्र┘ है।	उ० (वि०+स०) क्रिया
└पुत्र┘ └दशरथका┘ है।	उ० पूरक क्रिया
└पुत्र┘ है └दशरथका┘।	उ० क्रिया पूरक
└दशरथका┘ है └पुत्र┘।	बलान्वित वि० क्रिया उ०
है └दशरथका┘ └पुत्र┘।	क्रिया वि० उ०
है └पुत्र┘ └दशरथका┘।	क्रिया उ० पूरक
└हँसते हुए┘ └बच्चेने┘ कहा।	वि० कर्ता क्रिया
└बच्चेने┘ └हँसते हुए┘ कहा।	कर्ता क्रि० वि० क्रिया
└बच्चेने┘ कहा └हँसते हुए┘।	कर्ता क्रिया क्रि० वि०
└हँसते हुए┘ कहा └बच्चेने┘।	क्रि० वि० क्रिया कर्ता
कहा+└हँसते हुए बच्चेने┘।	क्रिया वि० कर्ता
कहा └हँसते हुए┘+└बच्चेने┘।	क्रिया क्रि० वि० कर्ता
कहा └बच्चेने┘ └हँसते हुए┘।	क्रिया कर्ता क्रि० वि०
पढ़नेवाले └लड़के┘ पढ़ते है।	वि० कर्ता क्रिया
पढ़ते है └पढ़नेवाले┘ └लड़के┘।	क्रिया वि० कर्ता
पढ़ते है └लड़के┘ └पढ़नेवाले┘।	कर्ता वि०
└लड़के┘ └पढ़नेवाले┘ पढ़ते है।	कर्ता समानाधिकरण क्रिया
└लड़के┘ पढ़ते हैं └पढ़नेवाले┘।	कर्ता क्रिया बलान्वित वि०
यह तुम्हारी घड़ी है।	मध्य० उ० (वि०+स०) क्रिया
यह घड़ी+तुम्हारी है।	उ० (वि०+स०) पूरक क्रिया
तुम्हारी+ यह है।	उ० (वि०+स०) पूरक क्रिया
तुम्हारी+यह घड़ी है।	वि० उ० (वि०+स०) क्रिया
घड़ी तुम्हारी+यह है।	उ० वि० वि० क्रिया
घड़ी यह+तुम्हारी है।	उ० वि० वि० क्रिया
घड़ी है तुम्हारी+यह।	उ० क्रिया वि० वि०
घड़ी है+यह तुम्हारी।	उ० क्रिया वि० वि०
घड़ी तुम्हारी है+यह।	उ० वि० क्रिया वि०
है यह+तुम्हारी घड़ी।	क्रिया मध्य० उ० (वि०+स०)
है+यह तुम्हारी घड़ी।	क्रिया मध्य० उ० (वि०+स०)
है तुम्हारी+यह घड़ी।	क्रिया वि० उ० (वि०+स०)
है तुम्हारी घड़ी+यह।	क्रिया उ० (वि०+स०) मध्य०

है यह घडी+तुम्हारी।	क्रिया उ० (वि०+स०) सव०
है घडी+यह तुम्हारी।	क्रिया उ० सव० वि०
है घडी तुम्हारी+यह।	क्रिया उ० वि० सव०

४ ३ २ २ अविच्छेद्य वाक्यांश (विशेषण+विशेष्य)

⌞अच्छे लडके⌟ ⌞चले गए।⌟	सवांश क्रियांश
⌞चले गये⌟+⌞अच्छे लडके।⌟	क्रियांश सवांश
⌞तुम्हारा विश्वास⌟ ⌞किया था।⌟	सवांश क्रियांश
⌞किया था⌟+⌞तुम्हारा विश्वास।⌟	क्रियांश सवांश
⌞एक सेर दूध⌟ ⌞मिला।⌟	सवांश क्रिया
⌞मिला⌟+⌞एक सेर दूध।⌟	क्रिया सवांश
⌞पढा लिखा आदमी⌟ ⌞है।⌟	सवांश क्रिया
⌞है⌟+⌞पढा लिखा आदमी।⌟	क्रिया सवांश
⌞हँसते-खेलते बच्चे⌟ ⌞चले गये।⌟	सवांश क्रियांश
⌞चले गये⌟+⌞हँसते-खेलते बच्चे।⌟	क्रियांश सवांश
⌞पानीका एक लोटा⌟ ⌞रख देना।⌟	सवांश क्रियांश
⌞रख देना⌟+⌞पानीका एक लोटा।⌟	क्रियांश सवांश

⌞मैं⌟+⌞कन्नौजके राजमार्गके चौकमें⌟ ⌞गया।⌟ कर्ता
× × सवांश क्रिया

⌞मैं⌟+⌞गया⌟ ⌞कन्नौजके राजमार्गके चौकमें।⌟
× × कर्ता क्रिया सवांश

⌞कन्नौजके राजमार्गके चौकमें⌟+⌞मैं⌟ ⌞गया।⌟
× × सवांश कर्ता क्रिया

⌞कन्नौजके राजमार्गके चौकमें⌟+⌞गया⌟ ⌞मैं।⌟
× × सवांश क्रिया कर्ता

⌞गया⌟ ⌞मैं⌟+⌞कन्नौजके राजमार्गके चौकमें।⌟
× × क्रिया कर्ता सवांश

⌞गया⌟ ⌞कन्नौजके राजमार्गके चौकमें⌟+⌞मैं।⌟
× × क्रिया सवांश कर्ता

⌞मैंने⌟ ⌞अच्छे-से अच्छे लडके⌟ ⌞इस कालिजमें देखे हैं।⌟
× × कर्ता उ० (वि०+स०) क्रिया

प्रश्नमूलक वाक्योंको लिया जा रहा है जिनमें प्रश्नमूलक क्रियाविशेषणोंका योग होता है। क्या, कब, कैसे, क्यों कहाँ आदि प्रमुख प्रश्नमूलक क्रियाविशेषण हैं क्या जब क्रियाके ग र ग द र [illegible] मध्यम आता है तब वाक्यकी प्रश्नमूलकता समाप्त हो जाती है।

४ ३ ५ १ क्या

└क्या┘+तुम्हारे पिता देहली└जा रहे हैं┘?
└क्या┘+देहली+तुम्हारे पिता└जा रहे हैं┘?
देहली+└क्या┘+तुम्हारे पिता └जा रहे हैं┘?
तुम्हारे पिता+└क्या┘+देहली└जा रहे हैं┘?
तुम्हारे पिता+देहली└जा रहे हैं┘+└क्या┘?
देहली+तुम्हारे पिता └क्या┘ └जा रहे है┘।[1]
तुम्हारे पिता+देहली └क्या┘ └जा रहे हैं┘।[2]
└क्या┘+तुम+कॉलिजम+└पढ़ रहे हो┘?
└क्या┘+कॉलिजम+तुम+└पढ़ रहे हो┘?
तुम+└क्या┘+कॉलिजम+└पढ़ रहे हो┘?
तुम+कॉलिजम+└पढ़ रहे हो┘+└क्या┘?
कॉलिजम+└क्या┘+तुम└पढ़ रहे हो┘?
तुम+कॉलिजम+└क्या┘ └पढ़ा रहे हो┘?[3]

विशेष—१ और २ वाक्योंमें वक्ताके मनका उपेक्षा भाव ध्वनित हो रहा है। ३ इस वाक्यमें एक भाव ताहीनता अथवा उपेक्षाका है दूसरे भावानुसार प्रश्न तो है लेकिन मौलिक प्रश्नसे सर्वथा भिन्न पढ़ाए जानेवाले विषयके सम्बन्धमें जिज्ञासा है। प्रश्नमूलक वाक्योंमें प्रश्नसूचक अव्ययोंके स्थानांतरण से वाक्यके मूल अर्थमें अन्तर नहीं आता अन्तर मात्र बलका रहता है।

४ ३ ५ २ क्यों

आप+इतना+└क्यों┘└पढ़ते हैं┘?
आप+└क्यों┘+इतना+└पढ़ते हैं┘?
आप+└पढ़ते└क्यों┘हैं┘+इतना?
आप+└क्यों┘└पढ़ते हैं┘+इतना?
इतना+आप+└क्यों┘└पढ़ते हैं┘?

इतना + ⌊ पढ़ते क्या ⌋ हैं ⌋ + आप ?
इतना + ⌊ क्या ⌋ आप + ⌊ पढ़ते हैं ⌋ ?
⌊ क्या ⌋ + आप + इतना ⌊ पढ़ते हैं ⌋ ?
⌊ क्या ⌋ + इतना + ⌊ पढ़ते हैं ⌋ + आप ?
⌊ क्या ⌋ + आप + ⌊ पढ़ते हैं ⌋ + इतना ?
⌊ क्या ⌋ + इतना + आप + ⌊ पढ़ते हैं ⌋ ?
⌊ क्या ⌋ ⌊ पढ़ते हैं ⌋ + इतना + आप ?
⌊ क्या ⌋ ⌊ पढ़ते हैं ⌋ + आप + इतना ?
⌊ पढ़ते ⌋ ⌊ क्या हैं ⌋ + आप + इतना ?
⌊ पढ़ते ⌈ क्या ⌉ हैं ⌋ + इतना + आप ?
⌊ पढ़ते ⌈ इतना क्या ⌉ हैं ⌋ + आप ?
⌊ पढ़ते ⌈ आप क्या ⌉ हैं ⌋ + इतना ?

४ ३ ५ ३ कैसे

⌊ वे ⌋ + ⌊ कैसे ⌋ ⌊ जाएँगे ⌋ ?
वे + ⌊ जाएँगे ⌋ ⌊ कैसे ⌋ ?
⌊ कैसे ⌋ ⌊ जाएँगे ⌋ + वे ?
⌊ कैसे ⌋ + वे ⌊ जाएँगे ⌋ ?
⌊ जाएँगे ⌋ ⌊ कैसे ⌋ + वे ?
⌊ जाएँगे ⌋ + वे ⌊ कैसे ⌋ ?

४ ३ ५ ४ कहाँ

तुम + ⌊ कहाँ ⌋ ⌊ जाओगी ⌋ ?
तुम + ⌊ जाओगी ⌋ ⌊ कहाँ ⌋ ?
⌊ कहाँ ⌋ + तुम ⌊ जाओगी ⌋ ?
⌊ कहाँ ⌋ ⌊ जाओगी ⌋ + तुम ?
⌊ जाओगी ⌋ ⌊ कहाँ ⌋ + तुम ?
⌊ जाओगी ⌋ + तुम ⌊ कहाँ ⌋ ?

४ ३ ५ ४ कब

वह + ⌊ कब ⌋ ⌊ पढ़ेगा ⌋ ?
वह + ⌊ पढ़ेगा ⌋ ⌊ कब ⌋ ?

⌊कब⌋ वह + ⌊पढ़ेगा⌋ ?
⌊कब⌋ ⌊पढ़ेगा⌋ + वह ?
⌊पढ़ेगा⌋ ⌊कब⌋ + वह ?
⌊पढ़ेगा⌋ + वह ⌊कब⌋ ?

उपर्युक्त प्रयोगोंमें प्रश्नमूलक अव्ययोंको छोड़कर अन्य साधक पदोंके स्थानान्तरणकी वे ही सम्भावनाएँ हैं, जिनका उल्लेख विधानार्थक वाक्योंके अन्तर्गत हो चुका है। स्पष्ट है कि प्रश्नमूलक वाक्योंके मूल भावमें कोई अन्तर नहीं आया है। अन्तर मात्र प्रयोजनकी तीव्रताका है।

४ ३ ६ निषेधार्थक

हिन्दीमें निषेधात्मक क्रियाविशेषण तीन हैं न, नहीं और मत। मतका प्रयोग केवल निषेधात्मक आदेशके लिए होता है। न और नहीं सभी प्रकारके वाक्योंमें आते हैं। अनिखडीय-तत्त्वोंके योगसे न अथवा नहीं कहीं प्रश्नमूलक बन जाते हैं, कहीं पुष्ट्यर्थ प्रयुक्त होते हैं। कभी-कभी कथोपकथनमें पूर्वकथनकी पुष्टि करानेके हेतु नहीं अथवा न का प्रयोग प्रश्नार्थक होता है। दोहरे निषेधात्मक प्रयोगोंसे स्वीकारात्मक अथवा बोध होता है। लेकिन कहीं-कहीं दोहरे निषेधात्मक प्रयोग अर्थमूलक वक्तव्यकी पुष्टि करते हैं। इनमेंसे अधिकांशका उल्लेख संरचनात्मक अर्थमूलक तत्त्व शीर्षकके अन्तर्गत किया जा रहा है।

४ ३ ३ १ न

वह + घर न गया।	निषेधात्मक
वह + घर गया न ?	प्रश्नार्थक
वह + न गया + घर।	निषेध तथा खेदका भाव
वह + गया न + घर।	निषेधात्मकता समाप्त घर जानेका निश्चय
वह + न घर गया	अपूर्ण कथन—किसी अन्य समान निषेधकी आकांक्षा
वह गया + घर न ?	प्रश्नमें केवल घर चले जानेकी जिज्ञासा
घर + वह न गया।	निषेधात्मक
घर + वह + गया न।	घर जानेका निश्चय
घर + न गया + वह।	निषेधात्मक
घर + गया न वह ?	प्रश्नार्थक
घर + न वह गया	निषेध तथा अन्य आकांक्षा तथा भेद कि और कोई भी नहीं गया

न वह+घर गया — निषेध तथा यह कि और भी कहीं नहीं गया
न गया+वह घर। — निषेधात्मक
गया न+वह घर। — समर्थन तथा पूर्व अनुमान सही होनेका भाव
गया न+घर वह। — समर्थन तथा पूर्व अनुमान सही होनेका भाव

४ ३ ६ २ नहीं

वह+नहीं आएगा। — सामान्य निषेध
वह+आएगा नहीं। — निषेधकसाथ, न आनेपर बल
नहीं आएगा+वह? — प्रश्नमूलक
नहीं+वह आएगा। — निषेध समाप्त, आनेपर बल
आएगा नहीं+वह? — प्रश्नमूलक

जब क्रियार्थक संज्ञा क्रिया अथवा क्रियावाक्यांशके रूपमे प्रयुक्त होती है, तब न, नहीं निषेधात्मक न रहकर सुझाव अथवा आदेशमूलक हो जाते है।

वहां तुम+न जाना।
तुम्हें वहां+नहीं जाना है।

४ ३ ६ ३ मत

मुझे+मत रोको। — मत रोको+मुझे।
मुझे+रोको मत। — रोको मत+मुझे।

उपर्युक्त विवेचनसे स्पष्ट है कि हिन्दीमें निषेधात्मक अर्थमें सर्वाधिक नहीं का प्रयोग होता है। मत का प्रयोग अपेक्षाकृत सीमित है। प्रयोगकी दृष्टिसे न की स्थानान्तर स्थितियाँ संरचना एवं अर्थवत्ताकी दृष्टिसे बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

४ ३ ७ उपवाक्य क्रम

मिश्रवाक्यों और संयुक्तवाक्योंमें पाए जानेवाले अधीन प्रधान तथा सहयोगी उपवाक्य साधारण वाक्य ही होते हैं। अधीन उपवाक्योंके कि, जो, जिस आदि प्रयोगोंको छोड़ देनेपर वह साधारण वाक्य रह जाते हैं। यही स्थिति सहयोगी उपवाक्योंकी है। संयोजक तत्त्वोंको निकाल देनेपर ये भी साधारण वाक्य रह जाते हैं। इसी स्थितिमें मिश्रवाक्यों और संयुक्तवाक्योंके पद क्रमका विश्लेषण करना निष्प्रयोजन सा होगा। यहाँ हमारा अभिप्रेत उपवाक्योंके स्थानान्तरण स्थान तक सीमित है।

४३७१ मिश्रवाक्य

मैंन व आखें दखी हैं जिनम भावाका अपार समुद्र लहराता है।
जिनम भावाका अपार समुद्र लहराता है, मैंन वे आखें दखी हैं।

मैंन उससे कह दिया कि तुम मेहनतसे पढा करो।
तुम मेहनतसे पढा करो मैंन उससे कह दिया।

हमन निश्चय किया है कि हम अभी बहुत कुछ करना है।
हम अभी बहुत कुछ करना है हमन निश्चय किया है।

उपयुक्त उदाहरणोंसे प्रतीत होता है कि मिश्रवाक्योंम उपवाक्योंके क्रम परिवतनसे अथम कोई उल्लेख्य अन्तर नहीं आता। यह अवश्य है कि कि से आरम्भ होनेवाले अधीन सनाउपवाक्य जब प्रारम्भम आते हैं तब उनमसे कि का लोप हो जाता है और मुख्य उपवाक्यसे पूव अद्धविराम ( ) लग जाता है।

४३७२ सयुक्तवाक्य

तुम अब आए हो और मैं जा रहा हूँ।
मैं जा रहा हूँ और तुम अब आए हो।

मैंन जीवन भर विषपान किया है इसलिए विषका ताप मुझे झुलसानम असमथ रहा है।
विषका ताप मुझे झुलसानमे असमथ रहा है क्योंकि मैंन जीवन भर विषपान किया है।

मैंन अपन मनकी बात कह दी है लेकिन उसका मनन मौन मुझे दुविधाम डाल देता है।
उसका मनन मौन मुझे दुविधाम डाल देता है यद्यपि मैंन अपन मनकी बात कह दी है।

या वह आएगा या म जाऊँगा।
या मैं जाऊँगा या वह आएगा।

न वह+घर गया	निषेध तथा यह कि और भी कहीं नहीं गया
न गया+वह घर।	निषेधात्मक
गया न+वह घर।	समर्थन तथा पूर्व अनुमान सही होनेका भाव
गया न+घर वह।	समर्थन तथा पूर्व अनुमान सही होनेका भाव

४ ३ ६ २ नहीं

वह+नहीं आएगा।	सामान्य निषेध
वह+आएगा नहीं।	निषेधके साथ 'न आने' पर बल
नहीं आएगा+वह ?	प्रश्नमूलक
नहीं+वह आएगा।	निषेध समाप्त, आनेपर बल
आएगा नहीं+वह ?	प्रश्नमूलक

जब क्रियार्थक संज्ञा क्रिया अथवा क्रियावाक्यांशके रूपमें प्रयुक्त होती है, तब न नहीं निषेधात्मक न रहकर सुझाव अथवा आदेशमूलक हो जाते हैं।

वहाँ तुम+न जाना।
तुम्हें वहाँ+नहीं जाना है।

४ ३ ६ ३ मत

मुझे+मत रोको।
मुझे+रोको मत।
मत रोको+मुझे।
रोको मत+मुझे।

उपर्युक्त विवेचनसे स्पष्ट है कि हिन्दीमें निषेधात्मक अर्थमें सर्वाधिक नहीं का प्रयोग होता है। मत का प्रयोग अपेक्षाकृत सीमित है। प्रयोगकी दृष्टिसे न की अवान्तर स्थितियाँ संरचना एवं अर्थवत्ताकी दृष्टिसे बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

४ ३ ७ उपवाक्य क्रम

मिश्रवाक्यों और संयुक्तवाक्योंमें पाए जानेवाले अधीन प्रधान तथा सहयोगी उपवाक्य साधारण वाक्य ही होते हैं। अधीन उपवाक्योंके कि जो, जिस आदि प्रयोगोंको छोड़ देनेपर वह साधारण वाक्य रह जाते हैं। यही स्थिति सहयोगी उपवाक्योंकी है। संयोजक तत्त्वोंको निकाल देनेपर ये भी साधारण वाक्य रह जाते हैं। ऐसी स्थितिमें मिश्रवाक्यों और संयुक्तवाक्योंके पद क्रमका विश्लेषण करना पिष्टपेषणमात्र ही होगा। यहाँ हमारा अभिप्रेत उपवाक्योंके स्थानान्तरण निर्धारण तक सीमित है।

४ ३ ७ १ मिश्रवाक्य

मैंने वे आँखें देखी हैं जिनमें भावोंका अपार समुद्र लहराता है।
जिनमें भावोंका अपार समुद्र लहराता है, मैंने वे आँखें देखी हैं।

मैंने उससे कह दिया कि तुम मेहनतसे पढ़ा करो।
तुम मेहनतसे पढ़ा करो, मैंने उससे कह दिया।

हमने निश्चय किया है कि हमें अभी बहुत कुछ करना है।
हमें अभी बहुत कुछ करना है हमने निश्चय किया है।

उपर्युक्त उदाहरणोंमें प्रतीत होता है कि मिश्रवाक्योंमें उपवाक्योंके क्रम परिवर्तनसे अर्थमें कोई उल्लेख्य अन्तर नहीं आता। यह अवश्य है कि किसी आरम्भ होनेवाले अधीन संज्ञाउपवाक्य जब प्रारम्भमें आते हैं तब उनमेंसे कि का लोप हो जाता है और मुख्य उपवाक्यमें पूर्व अर्द्धविराम ( ) लग जाता है।

४ ३ ७ २ संयुक्तवाक्य

तुम अब आए हो और मैं जा रहा हूँ।
मैं जा रहा हूँ और तुम अब आए हो।

मैंने जीवन भर विषपान किया है इसलिए विषका ताप मुझे झुलसानेमें असमर्थ रहा है।
विषका ताप मुझे झुलसानेमें असमर्थ रहा है क्योंकि मैंने जीवन भर विषपान किया है।

मैंने अपने मनकी बात कह दी है लेकिन उसका सतत मौन मुझे दुविधामें डाल देता है।
उसका सतत मौन मुझे दुविधामें डाल देता है यद्यपि मैंने अपने मनकी बात कह दी है।

या वह आएगा या मैं जाऊँगा।
या मैं जाऊँगा या वह आएगा।

उपयुक्त उदाहरणामे रुपकान्तगत क्रम विपर्यय और वचनकी दृष्टिस अंतिम सदस्यका प्रभावित होना स्पष्ट है।

वाक्य विन्यासम क्रमका महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राय सभी प्राचीन और अर्वाचीन अध्ययनम इस दृष्टिसे वाक्यकी परीक्षा होती रही है। वास्तवम क्रमका विवेचन भाषाम पाए जानेवाले व्यतिक्रमका विवेचन है। अत हम इसको वाक्यका व्यतिक्रममूलक अध्ययन ही मानत है।

४ ४ निकटस्थ अवयव

रुपान्तरणमूलक भाषाआम वाक्य विचारकेलिए निकटस्थ अवयवमूलक अध्ययन अनिवाय है। किसी निश्चित क्रमम स्वीकृत पद श्रृखला मात्र वाक्य नही है। वाक्यम परस्पर सम्बद्ध पद निकटस्थ भी हो सकते हैं और दूरस्थ भी। वाक्यकी अन्त सघटनाके बोधकेलिए इन पदाका निकटस्थ अवयवमूलक अध्ययन किया जा रहा है। भाषाके सहज प्रयागाम व्याकरणिक नियमाका उतना ध्यान नही रहता जितना यह प्रयास हाता है कि अपने मन्तव्यका अधिक स अधिक बोध गम्य एव प्रभावशाली बनाया जाय। इस प्रयासम वाक्यका सामान्य स्वीकृत-क्रम भग हो जाता है तथा निकटस्थ अवयव एक दूसरसे इतने दूर जा पडते है कि बिना उनके परस्पर सम्बन्ध स्थापनके अर्थसगतिका प्रश्न ही नही उठता। इस दृष्टिसे यह अध्ययन वाक्यकी सक्रिय इकाइयोकी परस्पर-योजनापर बल देता है। भाषाम दो प्रकारके वाक्य पाये जात है।

४ ४ १ बीजवाक्य

भाषामे लघु और दीर्घ सभी वाक्योम यह व्यवस्था सक्रिय रहती है। बीज वाक्य विस्तार योजनाकेद्वारा दीर्घ वाक्य बन जात है तथा दीर्घ वाक्योंके विस्तार के निराकरणसे बीजवाक्यके रूपम आ जाते है। इस प्रकार भाषाके सभी वाक्योका निकटस्थ अवयवमूलक अध्ययन आन्तरिक-योजनाको स्पष्ट करता है।

४ ४ २ अबीजवाक्य

अनुपातमें अबीजवाक्य बहुत कम होते है। ये सामान्यतया दो प्रकारके है। कुछ अबीजवाक्योका सरचनात्मक अस्तित्व सर्वथा स्वतन्त्र होता है तथा इनसे बातचीतका प्रारम्भ होता है। ये वाक्य विस्मय-बोधक होते हैं। लोकोक्तियाँ और मुहावरे भी इसी प्रकारके वाक्य है किन्तु इनम कथनका प्रारम्भ नहीं होता। दूसरे प्रकारके अबीजवाक्य अपूर्ण या न्यूनमूलक वाक्य है। इनके विषयमे कहा जाता

न तुम आए न तुम्हारा पत्र आया।
न तुम्हारा पत्र आया न तुम आए।

और या न आदि प्रयोगों से समागत जो संयुक्तवाक्य बनते हैं उनमें उप वाक्यों के परस्पर स्थानान्तरण से न तो रचना में कोई अन्तर आ पाता है और न ही अर्थ में कोई अन्तर आता है। बल्कि गन्ध का थोड़ा-सा अन्तर अवश्य पड़ जाता है।

इन संयोजक तत्वों के अतिरिक्त इसलिए, लेकिन, आदि के प्रयोग से जो संयुक्त वाक्य बनते हैं उनमें उपवाक्यों के स्थानान्तरण से संयोजक तत्वों में अन्तर पड़ जाता है और रचना संयुक्त के स्थान पर मिश्र हो जाती है।

मैंने जीवन भर विषपान किया है इसलिये विष का ताप मुझे झुलसाने में असमर्थ रहा है।
विष का ताप मुझे झुलसाने में असमर्थ रहा है क्योंकि मैंने जीवन भर विष पान किया है।

मैंने अपने मनकी बात कह दी है लेकिन उसका सतत मौन मुझे दुविधा में डाल देता है।
उसका सतत मौन मुझे दुविधा में डाल देता है यद्यपि मैंने अपने मनकी बात कह दी है।

४ ३ ८ विशेष—रूपकात्मक प्रयोग

हिन्दी के समासवाक्यांशों की स्वीकृत परम्परा विशेषण विशेष्यमूलक है। जब यह क्रम बदल जाता है तब विशेषण अपना अभिधान छोड़कर सामान्यतया पूरक बन जाता है लेकिन रूपका मक प्रयोगों में विशेषण विशेष्य के बाद में आता है। यद्यपि अलंकार शास्त्र में उसका अभिधान उपमान है, तथापि वह होता है विशेषण ही। इस प्रकार हिन्दी का विशेषण—विशेष्यमूला सिद्ध प्रवृत्ति में रूपक प्रयोगों का विकल्प मानना समीचीन है। हिन्दी में वचनका प्रभाव विशेषण विशेष्य क्रम में अन्तिम सदस्य विशेष्य पर पड़ता है। रूपकात्मक प्रयोगों में भी वचनका प्रभाव हिन्दी की सामान्य प्रवृत्ति के अनुरूप अन्तिम सदस्य पर ही पड़ता है।

मैं आराध्य के चरणकमल की वन्दना करती हूँ।
मैं आराध्य के चरणकमलों की वन्दना करता हूँ।
मुखकमल समीप मजे थे दो रसिक मधुप पुरन्दर।
मुखकमलों के पास नयनभ्रमर मँडरा रहे थे।

उपर्युक्त उदाहरणोंमें रूपान्तरगत क्रम विपर्यय और वचनकी दृष्टिसे अन्तिम सदस्यका प्रभावित होना स्पष्ट है।

वाक्य विज्ञानमें क्रमका महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राय सभी प्राचीन और अर्वाचीन अध्ययनोंमें इस दृष्टिसे वाक्यकी परीक्षा होती रही है। वास्तवमें क्रमका विवेचन भाषामें पाए जानेवाले व्यतिक्रमका विवेचन है। अत हम क्रमको वाक्यका व्यतिक्रममूलक अध्ययन ही मानते हैं।

४४ निकटस्थ अवयव

रूपान्तरणमूलक भाषाओंमें वाक्य विचारके लिए निकटस्थ अवयवमूलक अध्ययन अनिवार्य है। किसी निश्चित क्रममें स्वीकृत पद शृंखला मात्र वाक्य नहीं है। वाक्यमें परस्पर सम्बद्ध पद निकटस्थ भी हो सकते हैं और दूरस्थ भी। वाक्यकी अन्त संघटनाके बोधके लिए इन पदोंका निकटस्थ अवयवमूलक अध्ययन किया जा रहा है। भाषाके सहज प्रयोगोंमें व्याकरणिक नियमोंका उतना ध्यान नहीं रहता जितना यह प्रयास होता है कि अपने मन्तव्यको अधिक से अधिक बोधगम्य एवं प्रभावशाली बनाया जाय। इस प्रयासमें वाक्यका सामान्य स्वीकृत-क्रम भंग हो जाता है तथा निकटस्थ अवयव एक दूसरेसे इतने दूर जा पड़ते हैं कि बिना उनके परस्पर सम्बन्ध स्थापनके अर्थसंगतिका प्रश्न ही नहीं उठता। इस दृष्टिसे यह अध्ययन वाक्यकी सक्रिय इकाइयोंकी परस्पर-योजनापर बल देता है। भाषामें दो प्रकारके वाक्य पाये जाते हैं।

४४१ बीजवाक्य

भाषाके लघु और दीर्घ सभी वाक्योंमें यह व्यवस्था सक्रिय रहता है। बीज वाक्य विस्तार योजनाके द्वारा दीर्घ वाक्य बन जाते हैं तथा दीर्घ वाक्योंके विस्तार के निराकरणसे बीजवाक्यके रूपमें आ जाते हैं। इस प्रकार भाषाके सभी वाक्योंका निकटस्थ अवयवमूलक अध्ययन आन्तरिक-योजनाको स्पष्ट करता है।

४४२ अबीजवाक्य

अनुपातमें अबीजवाक्य बहुत कम होते हैं। ये सामान्यतया दो प्रकारके है। कुछ अबीजवाक्योंका संरचनात्मक अस्तित्व सर्वथा स्वतन्त्र होता है तथा इनसे बातचीतका प्रारम्भ होता है। ये वाक्य विस्मय बोधक होते हैं। लोकोक्तियाँ और मुहावरे भी इसी प्रकारके वाक्य है किन्तु इनमें कथनका प्रारम्भ नहीं होता। दूसरे प्रकारके अबीजवाक्य अपूर्ण या लोपमूलक वाक्य हैं। इनके विषयमें कहा जाता

है कि शेष-तत्त्व स्वयं ही समझे जा सकते है। इस प्रकारके वाक्य, वाक्य-योजनाके अन्तर्गत ही आते हैं पर इन्हें बीजवाक्योंके समान विस्तारमूलक प्रवृत्तिके प्रतिनिधि नहीं माना जा सकता। इन अबीजवाक्योंका अर्थ प्रसंगसे ही स्पष्ट हो पाता है, ये एकाकी रूपमें प्रयुक्त होनेपर निरर्थक सिद्ध होते हैं।

हाय राम।	(विस्मयमूलक)
आँख लगना।	(मुहावरा)
एक अनार सौ बीमार।	(लोकोक्ति)
क्या मैं ।	(अपूर्ण)
अच्छा ( ) लाओ।	(लोपमूलक)

उपर्युक्त सभी अबीजवाक्य किसी-न किसी प्रसंगकी अपेक्षा कर रहे है। न ये सार्थक हैं और न भाषाके आधारभूत बीजवाक्योंके समान विस्तार और सर्वाचकी इनमें कोई संभावना है। ये अबीजवाक्य पर्याप्त मात्रामें भाषामें प्रयुक्त होते हैं।

निकटस्थ अवयवमूलक अध्ययन वाक्यके आधारभूत अवयवों, पदोंके पारस्परिक सम्बन्धकी ओर संकेत करता है। वाक्य-योजनामें निकटस्थ अवयव तीन प्रकारके है।

४.४.४ तीन वर्ग

४.४.४.१ एकाधिक निकटस्थ अवयव

ये अवयव शब्द भेदकी दृष्टि से एक ही कोटिके होते है। इस प्रकारके अवयव भाषामें अपेक्षाकृत कम होते हैं।

राड साड सीढी-सन्यासी इनसे बचे तो सेवे कासी।

भूल गये रंग रास, भूल गये छकडी
तीन चीज याद रही नून तेल लकडी

४.४.४.२ विकीर्ण निकटस्थ अवयव

सामान्यतया एक ही क्रममें आनेवाले अवयवोंका संश्लेषणात्मक भाषाओंमें बाहुल्य होता है। हिन्दीमें विशेषण विशेष्य पूर्वापर क्रममें आते हैं। मुख्यक्रिया और सहायक क्रियाएँ पूर्वापर क्रममें आती हैं। ये भाषाके सकीर्ण निकटस्थ अवयव है। पर, भाषाओंमें विकीर्ण निकटस्थ अवयवोंका पूर्ण अभाव नहीं होता।

राम घर जा तो रहा है।
मोहन जा तो तेजी से रहा था।

इन उदाहरणोंमें जा ▭ रहा है, जा ▭ ▭ रहा था विकीर्ण निकटस्थ अवयव हैं।

८४४ ३ युगपत् निकटस्थ अवयव

कतिपय निकटस्थ अवयव साथ-साथ दिखाई देते हैं, लेकिन सुरकम या विराम-योजनाके कारण वे अलग अलग निकटस्थ अवयवमूलक रचनाओंकी सृष्टि कर सकते हैं। उदाहरणार्थ—देखो मत जाओ।

इस वाक्यको दो प्रकारसे रखा जा सकता है—

देखो मत जाओ।

देखो मत, जाओ।

पहले वाक्यमें मत जाओ निकटस्थ अवयव है, इसके विपरीत दूसरेमें देखो मत निकटस्थ अवयव है।

अनुकूल वर्गके वाक्योंमें कुछ संकेतक इकाइयाँ भी होती हैं। हिन्दीमें पाए जानेवाले समुच्चयबोधक अव्यय—यथा, और या, अथवा तथा आदि संकेतक हैं, जिनके योगमें सहयोगी निकटस्थ अवयवमूलक इकाइयोंका निर्माण होता है।

हिन्दी वाक्य विचारमें इस प्रकारके अध्ययन विधियोंका अत्यधिक महत्त्व है। आजकी वाक्य रचना भावों और विचारोंकी तीव्रता तथा उनकी सहजताकी तदनुरूप अभिव्यक्ति देनेकी ओर प्रयत्नशीला है। ऐसी स्थितिमें मनमतत्त्वके स्वाभाविक रूपकी रक्षाके लिए संकीर्ण व्याकरणिक पद्धतिका पालन संभव नहीं हो सकता। कभी कभी कर्ता अथवा उद्देश्य अपनी-अपनी क्रियाओं तथा अन्य अवयवोंसे बहुत दूर पड़ते हैं और क्रियाविशेषण क्रियाओंसे निरन्तर हटते चले जाते हैं। इस प्रकारकी विच्छेदात्मक प्रवृत्तियोंके कारण अध्ययनमें बड़ी कठिनाई होती है। निकटस्थ अवयवमूलक अध्ययन इस दृष्टिसे बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस अध्ययनकी दो प्रविधियाँ संभव हैं। बीजवाक्य क्रमसे विस्तारको सकोचकर निकाला जाये तथा प्रस्तुत वाक्यमें निहित निकटस्थ अवयवोंकी सांसर्गिकताका निर्देश किया जाय। दूसरे प्रकारकी अध्ययन प्रविधि सबद्धभाषा योजनाको समझनेके लिए अधिक उपादेय है।

४४५ विधियाँ

८४५ १ प्रथम प्रविधि

पद-समूहको अवयवोंमें रखनेका मुख्य आधार संयोग (cohesion) है।

सयोगसे अभिप्राय है—पद समूहके लिए अनुकल्प रूप (substitute) एकाकी पद रखना। इस अनुकल्प विधानमे वाक्य रचना पूर्ववत अपरिवर्तित रहता है।

साहित्यका	विद्यार्थी	अनेयकी	पुस्तक	पढ़ता है।
विद्यार्थी		पुस्तक		पढ़ता है।
	विद्यार्थी			पढ़ता है।

साहित्यका विद्यार्थी का अनुकल्प विद्यार्थी है और प्रत्येककी पुस्तकें पढ़ता है का अनुकल्प है—पुस्तकें पढ़ता है पुन पुस्तकें पढ़ता है का अनुकल्प पढ़ता है—है। यही अनुकल्पन विधान है जिसके द्वारा बड से-बडे वाक्यको लघु बीजवाक्यो मे घटाया जाता है।

४४५ २ द्वितीय प्रविधि

इस पद्धतिमे निकटस्थ अवयवोकी सार्थिकताकी दिशाका निर्देश किया जाता है। अधीन सहयोगी वाह्यकेन्द्रक तथा असम्बद्धता सूचित करनेवाले चिह्न इस प्रकार है—

अधीनता > < सहयोगिता ⇌

वाह्यकेन्द्रिकता × असम्बद्धता ∟ ⌟

इस प्रविधिसे कुछ वाक्योका निकटस्थ अवयवमूलक अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

४४६ सीमाए

इसकी भी अपनी सीमाए है। कही कही निकटस्थ अवयवमूलक वाक्य विश्लेषणात्मक योजनासे भी अर्थ स्पष्ट नही होता। उदाहरणकेलिए हम दो वाक्य लेते है—

सन् १९५५ से लडाई शुरु हुई।

पाकिस्तानसे लडाई शुरु हुई।

इस प्रकारके वाक्योमे निकटस्थ अवयवमूलक अध्ययन बहुत सहायक नहीं हो सकता क्योकि बीजवाक्य दोनो स्थितियोमे समान निकलता है। किन्तु अर्थकी दृष्टिसे ये दोनों वाक्य एकदम भिन्न है। प्रथम वाक्यमे स्पष्ट है कि सन १९६५से [illegible] वाचक क्रियाविशेषण है तथा उसमे सना लुप्त है। दूसरे वाक्यमे पाकिस्तानसे सेना है तथा अर्थ है कि पाकिस्तानके साथ युद्ध हुआ। इन दोनो वाक्योमे

बड़ी फीकी, बड़ी बेजान, बड़ी बनावटी लगती हैं ये कविताएं।
बड़ी फीकी
,
बड़ी बेजान
,
बड़ी बनावटी
लगती हैं
ये कविताएं
कुलीन घरानेका भव्य व्यक्तित्ववाला, हंसमुख, विनम्र और सभ्य लड़का आया।
कुलीन घरानेका
,
भव्य व्यक्तित्ववाला
,
हंसमुख
,
विनम्र
और
सभ्य
लड़का
आया
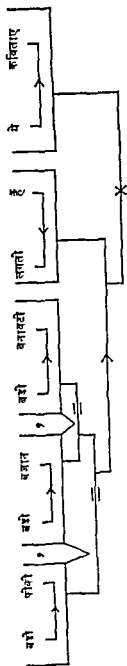
मेरा
भाई
प्रतिदिन
पेडकी
वेचता
है
पुस्तक
है
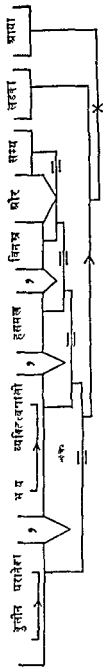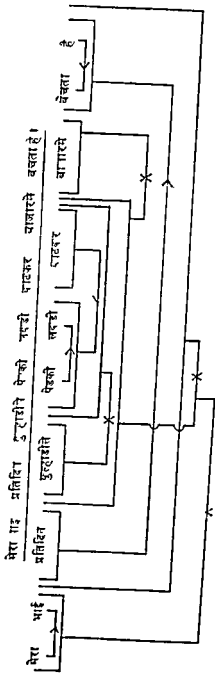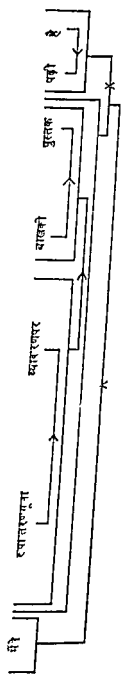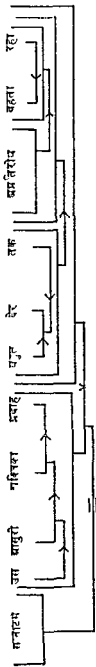
सन्नाटमे उस आसुरी गर्जिता प्रवाह बहुत देर तक अप्रतिरोध बहता रहा ।
पर अब स्वीकार करता हूँ मैंने तुम्हें प्यार किया है ।
मैने क्या अपराध किया चदर कि तुम्हारा स्नेह खो बैठी ।
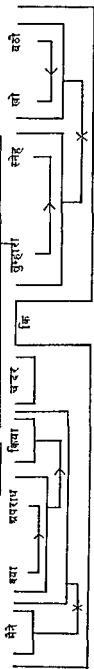
घर पर ही म रहता है।
मैं घण्टेभर ही मे आ जाऊगा।
इसका यह अभिप्राय था कि परसर्गोंके प्रयोगके पूर्व नामपदोंकी अवस्थिति वाक्यकी सामान्य व्यवस्था है।

४ ५ ३ -ने परसर्ग

हिन्दीमें ने परसर्गयोगसे कर्मवाच्य तथा भाववाच्यमूलक वाक्य बनते हैं। इसके साथ सज्ञाओंके विकारी रूप ही आते हैं उत्तम और मध्यपुरुषवाचक सर्वनामोंमें हम तू तुम आप आदि अविकारी रूपों तथा अन्यपुरुष विकारी रूपोंके साथ ही ने का योग होता है। इन प्रयोगोंकी परसर्गमूलक स्थिति वाक्यके आदिमें होती है।
उसने पुस्तक पढ़ी।
लड़केने बात कही।
मैंने कहा।

४ ५ ४ परसर्गवत् प्रयोग

परसर्गवत प्रयुक्त अन्य प्रयोगोंके पूर्व के अथवा रे अनिवार्यत आते है।
उनके द्वारा काम हुआ।
तुम्हारे साथ चलता है।

४ ५ ५ क्रियापद

४ ५ ५ १ सयोगमूलक क्रियाएँ

परसर्गोंका सम्बन्ध केवल नामपदोंसे ही नहीं है आख्यातपद भी इससे शासित है। सयोगमूलक क्रियाओंमें सहायक क्रिया निश्चय ही मुख्य क्रियाके बाद आती है।
वह हँसता है।
हम पढ़ते हैं।

४ ५ ५ २ सयुक्त क्रियाएँ

इसी प्रकार सयुक्त क्रियाओंमें भी मुख्यक्रिया सहायकक्रियाके पूर्व रहती है।
मैं रोज पढा करता हूँ।
तुम हमेशा लड़ते रहते हो।

४ ५ ६   विशेषण+सज्ञा

विशेषण विशेष्यके पूव आता है पूरक और समानाधिकरण वादम ।
वह बडा आदमी है ।
उसने काला घोडा खरीदा ।

४ ५ ७   सज्ञा+विशेषण→पूरक

वह आदमी बडा है ।
घोडा काला है ।

४ ५ ८   सज्ञा+समानाधिकरण

महेन्द्र प्राध्यापक है ।

४ ५ ९   क्रियाविशेषण

क्रियाविशेषण निश्चय ही क्रियाके पूव रहता है ।
घोडा तेज दौडता है ।
बच्चा हसता हुआ जाता है ।

४ ५ १०   कृदन्त

जब कृदन्त क्रियाका काय करते हैं तब वे वाक्यके अन्तम आते हैं । सज्ञा आदि के पूव आनेपर ये विशेषण होते हैं और इनका स्थान विशेषण विशेष्य क्रमानुसार निश्चित होता है ।
यही आदमी खोया हुआ था ।
खोया हुआ आदमी यही था ।

४ ५ ११   मिश्रवाक्य

मिश्रवाक्योम प्रधान उपवाक्य अधीन उपवाक्यके पूव आता है और प्रधान तथा अधीन उपवाक्य प्राय कि अव्यय द्वारा जुडते हैं । यह स्थिति तभी बनती है जब प्रधान उपवाक्य या तो कथन होता है या किसी स्थितिविशेषका द्योतक ।
⌊ मैंने चाहा था ⌋ ⌊ कि काम जल्दी पूरा हो जाए । ⌋
⌊ जिसे लडको मैं देखती हूँ ⌋ ⌊ उसके तनाममे मेरा बराबरका साभा है । ⌋
यह ध्यातव्य है कि व्यवस्था कोई ऐसी पद्धति नहीं है जिसका व्यापक रूपसे

प्रत्यय प्रकारकी सम्भावनाए लक्ष्य किया जा रहा है।

४६ मैत्री

वाक्यमे व्यवस्था अनिवार्य है। इसी व्यवस्थाके फलस्वरूप पारस्परिक सम्बद्धता सम्भव होती है। प्रत्येक व्यवस्थाके लिए योजक-तत्वोमे मैत्रीकी अपेक्षा है। बिना मैत्रीके आन्तरिक व्यवस्था प्राप्त नहा हो सकती और बिना व्यवस्थाके व्यवस्थेयके सहज अस्तित्वका प्रश्न ही नही उठता। रूपान्तरणशीला भाषाओमे योजक-तत्वोके बीच इस प्रकारकी मैत्री पर्याप्त महत्त्वपूर्ण है। हिन्दीमे यह मैत्री जहाँ एक ओर विशेषण और सज्ञाओसे बने हुए वाक्याशोमे देखी जाती है वहाँ दूसरी ओर उद्देश्य और विधेयमे भी पाई जाती है।

आजकी हिन्दी भाषामे भावाभिव्यक्ति अथवा व्यक्ति स्वातन्त्र्यके नामपर जो अव्यवस्था दिखाई पड रही है वह कई दृष्टियोसे चिन्त्य है। सबसे बडी चिन्ता का विषय यह है कि मैत्री निर्वाहके अभावमे भाषाका सहज उद्देश्य ही धूमिल होता जा रहा है। 'शैली' नामपर अस्पष्टता और भ्रामकता फल रही है। हिन्दीकी व्याकरण-सम्मत मैत्रीका निरूपण करनेके उपरान्त आधुनिक गद्यमे पाए जाने वाले मैत्रीमूलक अभावोका सकेत करके तज्जनित भ्रान्तियो एव अस्पष्टताओ की ओर सकेत किया जा रहा है।

४६१ उद्देश्य—विधेय मैत्री

वाक्यान्तर्गत उद्देश्य और विधेयकी वचन लिंग-पुरुषपरक मैत्री होती है।

४६११ वचनपरक

एकवचन उद्देश्य—एकवचन क्रिया

⌞लडका⌟ ⌞जाता है।⌟

→

मैने ⌞उसका घोडा⌟ ⌞देखा है।⌟

→

⌞बहिन⌟ अपने भाईके साथ ⌞जाती है।⌟

→

⌞शिक्षक⌟ लडकोके साथ फिल्म ⌞देखता है।⌟

→

└जन समुदाय┘ └जा रहा है।┘
→

मैंने └भीड┘ └देखी है।┘
→

उनमेंसे └कोई┘ └नहीं जा रहा है।┘
→

भारतके धावकोंमेंसे └कोई भी┘ उल्लेख्य स्थान प्राप्त └न कर सका।┘
→

बहुवचन उद्देश्य—बहुवचन क्रिया

└घोडे┘ └दौडते हैं।┘
→

└राम, गोविन्द और मोहन┘ └जाते हैं।┘
→

तुमने राजाके └हाथी┘ └देखे हैं।┘
→

उनमेंसे └कुछ┘ हमारी ओर └हैं।┘
→

भारतीय सम्राटोंमेंसे └कुछके नाम┘ स्वर्णाक्षरोंमें └लिखे जाएंगे।┘
→

४ ६ १ २ लिंगपरक

पुल्लिंग उद्देश्य—पुल्लिंग क्रिया

└लडका┘ └जाता है।┘
→

└आदमी┘ └जाते हैं।┘
→

मैंने └भले आदमी┘ └देखे हैं।┘
→

राजाने └सुन्दर भवन┘ └बनवाया।┘
→

प्रत्येक प्रकारकी संरचनामें लक्ष्य किया जा सके।

४६ मैत्री

वाक्यमें व्यवस्था अनिवार्य है। इसी व्यवस्थाके फलस्वरूप पारस्परिक सम्बद्धता सम्भव होती है। प्रत्येक व्यवस्थाके लिए योजक-तत्वोंमें मैत्री अपेक्षा है। बिना मैत्रीके आन्तरिक व्यवस्था प्राप्त नहीं हो सकती और बिना व्यवस्थाके व्यवस्थेयके सहज अस्तित्वका प्रश्न ही नहीं उठता। रूपान्तरणशील भाषाओंमें योजक-तत्वोंके बीच इस प्रकारकी मैत्री पर्याप्त महत्वपूर्ण है। हिन्दीमें यह मैत्री जहाँ एक ओर विशेषणों और संज्ञाओंसे बने हुए वाक्यांशोंमें देखी जाती है वहाँ दूसरी ओर उद्देश्य और विधेयमें भी पाई जाती है।

आजकी हिन्दी भाषामें भावाभिव्यक्ति अथवा व्यक्ति स्वातन्त्र्यके नामपर जो अव्यवस्था दिखाई पड़ रही है वह कई दृष्टियोंसे चिन्त्य है। सबसे बड़ी चिंता का विषय यह है कि मैत्री निर्वाहके अभावमें भाषाका सहज उद्देश्य ही धूमिल होता जा रहा है। शैलीके नामपर अस्पष्टता और भ्रामकता फल रही है। हिन्दीकी व्याकरण-सम्मत मैत्रीका निरूपण करनेके उपरान्त आधुनिक गद्यमें पाए जाने वाले मैत्रीमूलक अभावोंका संकेत करके तज्जनित भ्रान्तियों एवं अस्पष्टताओं की ओर संकेत किया जा रहा है।

४६ १ उद्देश्य—विधेय मैत्री

वाक्यान्तर्गत उद्देश्य और विधेयकी वचन लिंग-पुरुषपरक मैत्री होती है।

४६ ११ वचनपरक

एकवचन उद्देश्य—एकवचन क्रिया

⌊बच्चा⌋ ⌊जाता है।⌋

→

मैंने ⌊उसका भाषण⌋ ⌊सुना है।⌋

→

⌊चन्द्रिका⌋ सदा मार्ग साथ ⌊जाता है।⌋

→

⌊शिकार⌋ सम्भवतः साथ शिष्य ⌊लाया है।⌋

→

⌊जन समुदाय⌋ ⌊जा रहा है।⌋
→

मैंने ⌊भीड़⌋ ⌊देखी है।⌋
→

उनमेंसे ⌊कोई⌋ ⌊नहीं जा रहा है।⌋
→

भारतके धावकोंमेंसे ⌊कोई भी⌋ उल्लेख्य स्थान प्राप्त ⌊न कर सका।⌋
→

बहुवचन उद्देश्य—बहुवचन क्रिया

⌊घोड़े⌋ ⌊दौड़ते हैं।⌋
→

⌊राम, गोविन्द और मोहन⌋ ⌊जाते हैं।⌋
→

तुमने राजाके ⌊हाथी⌋ ⌊देखे हैं।⌋
→

उनमेंसे ⌊कुछ⌋ हमारी ओर ⌊हैं।⌋
→

भारतीय सम्राटोंमेंसे ⌊कुछके नाम⌋ स्वर्णाक्षरोंमें ⌊लिखे जाएंगे।⌋
→

४६१२ लिंगपरक

पुल्लिंग उद्देश्य—पुल्लिंग क्रिया

⌊लड़का⌋ ⌊जाता है।⌋
→

⌊आदमी⌋ ⌊जाते हैं।⌋
→

मैंने ⌊मन आत्मा⌋ ⌊देखे हैं।⌋
→

राजाने ⌊सुन्दर भवन⌋ ⌊बनवाया।
→

स्त्रीलिंग उद्देश्य—स्त्रीलिंग क्रिया

⌊ छात्राएँ ⌋ ⌊ पढ़ती है। ⌋
→

मुगल सम्राटाने ⌊ लाल पत्थरका इमारतें ⌋ ⌊ बनवाइ ⌋
→

उसने ⌊ विदुषी महिलाएँ ⌋ ⌊ दखी ह। ⌋
→

४ ६ १ ३ पुरुषपरक

एकवचन

⌊ मैं ⌋ जाता ⌊ हूँ। ⌋
→

⌊ तू ⌋ जाता ⌊ है। ⌋
→

⌊ वह ⌋ जाता ⌊ है। ⌋
→

⌊ मैं ⌋ जा ⌊ ऊँ ⌋ गा।
→

⌊ तू ⌋ जा ⌊ ए ⌋ गा।
→

⌊ वह ⌋ जा ⌊ ए ⌋ गा।
→

बहुवचन

⌊ हम ⌋ जाते ⌊ हैं। ⌋
→

⌊ तुम ⌋ जाने ⌊ हो। ⌋
→

⌊ वे ⌋ जाने ⌊ है। ⌋
→

⌊ हम ⌋ जा ⌊ एँ ⌋ गे।
→

∟तुम⌋ जा∟ओ⌋ग। -ओ
→
∟वे⌋ जा∟एँ⌋गे। एँ
→
∟मैं और तुम⌋ जाते ∟है।⌋ एँ
→
∟वह और मैं⌋ जाते ∟हैं।⌋ एँ
→
∟हम और तू⌋ च∟लें⌋ग। एँ-
→

जब पुरुषवाची सर्वनाम पार्थक्यवाची या के साथ आते हैं, तब क्रिया पहले पुरुषवाची प्रयोगके अनुरूप होती है।

वह या ∟मैं⌋ जा∟ऊँ⌋गा। या तो वह या ∟मैं⌋ जा∟ऊ⌋गा।
→ →
मैं या ∟तुम⌋ जा∟ओ⌋ग। या तो मैं या ∟तुम⌋ जा∟ओ⌋ग।
→ →
हम या ∟तू⌋ जा∟ए⌋गा। या तो हम या ∟तू⌋ जा∟ए⌋गा।
→ →
तू या ∟हम⌋ जा∟एँ⌋ग। या तो तू या ∟हम⌋ जा∟एँ⌋ग।
→ →

या तो या वाले प्रयोगों में जब पूरे वाक्य आते हैं, तो अलग-अलग पुरुषों के अनुरूप क्रियाएँ आती हैं।

या तो ∟वह⌋ गलतीपर ∟है⌋ या ∟मैं⌋ गलतीपर ∟हूँ।⌋
→ →
या तो ∟हम⌋ गलतीपर ∟है⌋ या ∟तुम⌋ गलतीपर ∟हो।⌋
→ →

पुरुषवाची सर्वनामोंके साथ जब समानाधिकरण प्रयुक्त होता है तब क्रिया का लिंग अथवा वचन पुरुषके अनुरूप होता है।

∟मैं⌋ तुम्हारा स्वामी—आज्ञा ∟देता हूँ।⌋
→
∟हम⌋ तुम्हारे सेवक—अपनी सेवाएँ अर्पित ∟करते है।⌋
→

⌊ वह ⌋ तुम्हारी मा—वह ⌊ रही है । ⌋
→

४ ६ २ विधेयपूरक

विधेय पूरक लिंग और वचन उद्देश्य लिंग और वचनके अनुरूप रहते हैं। क्रियाके लिंग और वचन भी तद्वत् होते हैं।

⌊ लडके ⌋ ⌊ होनहार ⌋ ⌊ सिद्ध हो रहे है । ⌋
→ →

⌊ लडकियाँ ⌋ ⌊ अच्छी ⌋ ⌊ सिद्ध हो रही है । ⌋
→ →

⌊ वे सब ⌋ ⌊ प्रवीण ⌋ ⌊ लग रहे है । ⌋
→ →

४ ६ ३ विशेषण—विशेष्य मैत्री

वचन लिंगगत (अविकारी)

अच्छा लडका अच्छी लडकी
अच्छे लडके अच्छी लडकियाँ

वचन लिंगगत (विकारी)

अच्छे लडकेने अच्छी लडकीने
अच्छे लडकोने अच्छी लडकियोने

विशेष—विशेषण विशेष्यगत मैत्री तभी संभव है जब एकवचन विशेषण विशेष्यमे पुरुष विभक्ति आ तथा स्त्री विभक्ति ई का योग हो।

४ ६ ४ संज्ञा—क्रियाविशेषण मैत्री

⌊ लडकी ⌋ ⌊ दौडती हुई ⌋ आई ।
→

मैंने ⌊ पुस्तक ⌋ मेजपर ⌊ पडी ⌋ देखी ।
→

४ ६ ५ पद मैत्रीसे रहित प्रयोग

वह/यह करते है ।
वह/यह जाएग ।

वह और यह एकवचनमूलक सवनाम हैं। अत, नियमानुसार इनके साथ क्रिया भी तद्वत ही आनी चाहिए। लेकिन रचनाआम सवनाम तो एकवचनके रहते है, क्रियाएँ आदरार्थकके नामपर बहुवचनकी प्रयुक्त होती है जसा कि उपयुक्त उदाहरणोसे ज्ञात होता है। एसे प्रयोगोस हिन्दीकी व्याकरणिक व्यवस्थाका व्याघात पहुँचता है। यह त्रुटि उसी प्रकारकी है जसी अहिन्दी भाषियोस होती ह।

हम जाता है।

तुम जाता है।

अत व्यक्ति-स्वातन्त्र्य और अनुभूतिके नामपर इनकी उपक्षा नही की जानी चाहिय।

यद्यपि म वहा गया किन्तु मन किसीसे कुछ कहा नही।

हिन्दीम बडे बडे सिद्ध लखकोंकी रचनाआम इस प्रकारकी असमीचीन सरचनाए पाइ जाती है। यह भूल उसी प्रकारकी है जिस प्रकारकी अग्रेजीको Though और But की। यद्यपि के साथ तथापि या तो भी का प्रयोग होना चाहिय, क्योकि जो ध्वनि यद्यपि म रहती है, उसकी मैत्रीका तथापि तो भी म निर्वाह होता है, किन्तु परन्तु का प्रयोग समीचीन नही कहा जा सकता।

मैं तुमस क्षमा मागते मनाते गिडगिडाते हार गया हूँ।

इस वाक्यका अन्वय करनके उपरान्त इस तीन स्वतन्त्र वाक्योम रखकर व्याकरणिक दृष्टिस पाइ जानेवाली असंगतिकी ओर सकेत किया जा रहा है।

मैं तुमस क्षमा माँगते हार गया हूँ।

मैं तुमस मनाते हार गया हूँ।

मैं तुमसे गिडगिडाते हार गया हूँ।

सरचनाकी दृष्टिस तीनो वाक्योम दोष है। मत्री और व्यवस्थाकी दृष्टिस इनक रूप इस प्रकार होन चाहिए।

मैं तुमसे क्षमा मागता () हार गया हूँ।

मैं तुम्ह मनाता () हार गया हूँ।

मैं तुम्हारे सामने गिडगिडाता () हार गया हूँ।

सूत्र रूपम कह सकत है।

माँगत (अशुद्ध) माँगता ( ) (शुद्ध)

तुमसे मनाते (अशुद्ध) तुम्ह मनाता ( ) (शुद्ध)

तुमस गिडगिडाते (अशुद्ध तुम्हारे सामने गिडगिडाता ( ) (शुद्ध)

पति-पत्नी अनायास एक-दूसरेके प्रति कुछ थोडा-सा विरक्त हो जाते हैं।

पति-पत्नी एक-दूसरेके प्रति कुछ थोडा-सा विरक्त हो जाते हैं।

पति पत्नी एक दूसरेके प्रति थोड़ा-सा विरक्त हो जाते हैं।
पति पत्नी एक दूसरेके प्रति थोड़ा सा विरक्त हैं।
पति-पत्नी थोड़ा सा विरक्त हैं।

उपयुक्त उदाहरणमें थोड़ा सा चिन्त्य प्रयोग है। हिन्दीमें आकारान्त विशेषण बहुवचनमूलक अविकारी विशेष्य अथवा एकवचनमूलक विशेष्यके साथ आकारान्तके स्थानपर एकारान्त हो जाते हैं। विरक्त अकारान्त है, इसलिए इसके एकवचन और बहुवचन रूपमें कोई अन्तर नहीं आयेगा लेकिन बहुवचनकी क्रिया होनेके नाते तथा उद्देश्य (पति-पत्नी)के साथ सम्बद्ध होनेके कारण विरक्त बहुवचनका प्रयोग है, इसलिए विशेषण (अकारान्त) का लिंग वचन-परिवर्तन हिन्दीके नियमानुसार थोड़े से होना चाहिए न कि थोड़ा सा।

हम उस रूमालको हिला रहे थे और चप्पल बीच हवामें ऊपर नीचे झूलती थी।

उपयुक्त संयुक्त वाक्यमें एक ही प्रसंग है। रूमालमें चप्पलें बंधी हुई हैं चप्पलें हवामें झूल रही हैं। यदि रूमाल हिलनेमें निरन्तरता है तो चप्पलोंके झूलनेमें भी नैरन्तर्य होना चाहिए। प्रस्तुत उदाहरणमें पहले उपवाक्यसे कार्यके भूतकालमें नैरन्तर्यका बोध हो रहा है जब कि दूसरे उपवाक्यमें कार्यकी समाप्ति ध्वनित होती है यह काल-सम्बन्धी असंगति है। वास्तवमें प्रयोग यह होना चाहिए था—

हम उस रूमालको हिला रहे थे और चप्पलें बीच हवामें ऊपर नीचे झूल रही थीं।

सूत्र रूपमें कहा जा सकता है।

∟ हिला रहे थे ⌟	∟ झूलती थी। ⌟ (अशुद्ध)
∟ हिला रहे थे ⌟	∟ झूल रही थी। ⌟ (शुद्ध)

व्याकरणिक व्यवस्थासे मुक्त प्रयोग वहीं स्वीकार्य हो सकते हैं जहाँ वे तर्क पर आधृत हों तथा भाषाकी जीवन्तताको बनानेमें सहायक हों। इसके अतिरिक्त नवीन प्रयोगोंके लिए कोई अवकाश नहीं है।

वाक्यकी सन्निध इकाइयोंकी मैत्री अनिवार्य है चाहे वे पद हों चाहे वाक्यांश या उपवाक्य। मैत्री वाक्य-योजनाकी दृष्टिसे निश्चय ही अनिवार्य है।

४७ पदसक्रियतामूलक वाक्य-रचना

हिन्दी वाक्यका विवेचन विश्लेषण परम्परागत व्याकरणकी मान्यताओंके अनुरूप होता रहा है। वाक्यान्तर्गत पदोंकी सापेक्ष व्याख्या होती रही है। पद वा व्याख्यामें पदोंकी स्थिति-सापेक्ष नामोंका उल्लेख कर दिया जाता रहा है।

भाषाविज्ञानसे प्रभावित होकर क्रम, मन्त्री व्यवस्था निकटस्थ अवयव आदि पद्धतियासे भी अध्ययन हुआ है। ये सब व्याकरणिक और भाषावैज्ञानिक पद्धतिया एक दूसरेकी पूरक है। किन्तु भाषाकी जीवन्तताका इनमेसे किसी भी पद्धतिमे महत्त्व नही मिला। भाषामे प्रयुक्त पद, वाक्याश उपवाक्य आदि निष्क्रिय एव निष्प्राण तत्त्व नही है। इन सबमे अलग-अलग और एक साथ मिलकर एक सजीवता एव सक्रियता रहती है।

परम्परासे अलग वाक्यकी आवश्यकताका महत्त्व सिद्ध करनेके लिए निम्नलिखित प्रयोग लिए जा रहे है। इनसे भाषाकी जीवन्तताके रहस्यका कुछ सकेत मिल सकता है।

धनसे ही कलाका आरम्भ होता है।

भौतिकता प्रधान इस युगमे धन ही सर्वोपरि शक्ति है।

उसने अपना सब धन नगर की शिक्षा-सस्थाओको दे दिया।

परम्परागत व्याकरणकी दृष्टिसे धन सज्ञा है। उपर्युक्त तीनो वाक्यामे भी यह सज्ञाकी ही भाति प्रयुक्त है। प्रथम वाक्यमे धन करण है द्वितीयमे उद्देश्य तथा तृतीयमे मुख्य-कर्म। इस प्रकार धन एक अधीन प्रयोग है तथा विभिन्न सक्रियता मूलक तत्त्वोपर अवलम्बित है। अत परम्परासे अलग सक्रियताके आधारपर वाक्यका अध्ययन नितान्त अपेक्षित हो गया है। हिन्दी वाक्यका प्रस्तुत अध्ययन इसी दृष्टिसे किया जा रहा है।

४ ७ १ सक्रियता

इस दृष्टिसे वाक्यका आधार उसकी योजक इकाइया हैं जिन्हे स्वतन्त्र और परतन्त्र दो वर्गोमे रखा जा सकता है। इन इकाइयोके अतिरिक्त सक्रिय तत्त्वोका परीक्षण भी इस अध्ययन प्रविधिके अन्तर्गत अनिवार्य है।

४ ७ १ १ स्वतन्त्र इकाइयाँ

भाषावैज्ञानिक दृष्टिसे स्वतन्त्र इकाइयाँ वे हैं जो वाक्यमे आदि मध्य आदि अवस्थाओमे कही भी आ सकती हैं। वाक्यान्तर्गत स्थान ग्रहणकी इस स्वतन्त्रतासे वाक्यके मौलिक अर्थमे किसी प्रकारका अन्तर नही आता।

मैं कल अपना काम समाप्त कर लूँगा।

कल मैं अपना काम समाप्त कर लूगा।

अपना काम मैं कल समाप्त कर लूगा।

मैं अपना काम कल समाप्त कर लूगा।

उपर्युक्त चारों वाक्योंमें कलके स्थानान्तरणके उपरान्त भी अर्थमें कोई अन्तर नहीं आया है। आज, कल, सदैव, नित्य आदि अनेक ऐसे तत्त्व है, जिन्हें हम स्वतन्त्र इकाई कह सकते हैं।

इनके अतिरिक्त अविकारी एवं विकारी पुरुषवाचक सर्वनाम भी स्वतन्त्र इकाइयोंके समान प्रयुक्त होते हैं।

वह आज यात्रा करेगा।
आज वह यात्रा करेगा।
तुम एक घण्टेमें लौट आना।
एक घण्टेमें तुम लौट आना।
उससे मुझे कोई लाभ नहीं।
मुझे उससे कोई लाभ नहीं।

४७१२ परतन्त्र इकाइयाँ

परतन्त्र इकाइयाँ एकाकी प्रयुक्त नहीं हो सकती। इनके प्रयोग हेतु किसी न किसी सक्रिय इकाईकी आवश्यकता पड़ती है।

गाँवमें एक बुड्ढा आदमी रहता था।

उपर्युक्त प्रयोगमें गाँव परतन्त्र इकाई है क्योंकि सक्रिय इकाई मेंके अभावमें इसके इस विशिष्ट प्रयोगकी सम्भावना ही नहीं हो सकती। हम यह नहीं कह सकते कि गाँव एक बुड्ढा आदमी रहता था। स्पष्ट है कि सक्रिय इकाइयोंके प्रयोग बिना पदसिद्धि नहीं हो सकती।

जब परतन्त्र इकाई सक्रिय इकाईके योगसे प्रयोगके योग्य बनती है तब वह समूची सिद्धि स्वतन्त्र इकाइयोंके रूपमें परिणत हो जाती है। इसका उल्लेख स्वतन्त्र इकाई शीर्षक अन्तर्गत किया जा चुका है।

४७२ सक्रिय इकाइयाँ

हिन्दी वाक्य रचनामें सक्रिय इकाइयाँ वे हैं जो परतन्त्र इकाइयोंको प्रयोगार्ह योग्य बनाती हैं तथा वाक्योंके निर्माणमें सहायक होकर उन्हें स्वतन्त्र इकाई बनानेमें योग देती हैं। [illegible] सभी परसर्ग सक्रिय इकाइयाँ हैं। [illegible] [illegible], -आ-ईआ, आदि [illegible] अधिकारवाची [illegible] का निर्माण होता है। ये सक्रिय इकाइयाँ आसन्न वाला कड़ियाँ हैं।

राजाकी राजधानी दिल्ली था।
दिल्ली राजाकी राजधानी था।

तुम्हारे घरमें चार कमरे हैं।
चार कमरे तुम्हारे घरमें हैं।
वह अपना काम कर रहा है।
अपना काम वह कर रहा है।
मेजके पास घड़ी रखी है।
घड़ी मेजके पास रखी है।

४७३ शून्य रूपान्तर

सक्रिय इकाइयाँ शून्य रूपान्तरकी भाँति भी प्रयुक्त होती हैं।
वह स्कूल जाता है।
मैं अपनी पुस्तक पढ़ता हूँ।

उपर्युक्त प्रयोगोंमें स्कूल और पुस्तकमें शून्य रूपान्तरोंका योग है। व्याख्याकी दृष्टिसे यह कहा जा सकता है कि स्कूल—स्कूलको तथा पुस्तक—पुस्तकको समझना चाहिए।

स्वतन्त्र और परतन्त्र इकाइयोंके सम्बन्धमें यह भी जानना है कि वाक्यांशमें सक्रिय इकाईके अतिरिक्त जो पद होता है वह अलगसे विचार करनेपर परतन्त्र प्रतीत होता है लेकिन जब वाक्यांश एक स्वतन्त्र इकाईके रूपमें रखा जाता है तब पूरा वाक्यांश ही स्वशासित हो जाता है। जब हम किसी बड़े वाक्यमें आनेवाले छोटे वाक्योंको एक स्वतन्त्र इकाईके रूपमें स्वीकार करते हैं तो निश्चय ही वाक्यगत वाक्यांश भी स्वतन्त्र इकाई है। इस प्रकार परतन्त्र और स्वतन्त्र इकाइयाँ सापेक्ष हैं निरपेक्ष नहीं। अन्तर यही है कि कुछ सदा स्वतन्त्र हैं और कुछ इकाइयोंकी कोटिका निर्णय सन्दर्भसे होता है।

४८ रूपान्तरण

हिन्दीमें रूपान्तरण दो प्रकारसे सम्भव है—संरचनात्मक और अर्थमूलक। संरचनात्मक रूपान्तरणमें अभिप्रेत अपरिवर्तित रहता है, लेकिन अर्थमूलकमें संरचनात्मक प्रकृति तो अपरिवर्तित रहती है किन्तु अर्थ बदल जाता है। प्रत्यक्ष-कथन संरचनात्मक रूपान्तरणके निदर्शन हैं।

४८११ ऋजु

(सामान्य) —उसने मुझसे कहा— तुम मूर्ख हो।
वह सोच रहा था— मैं नाटकोंकी दुनियासे लौट रहा हूं।
(प्रश्न) —उसने मुझसे पूछा— तुम क्या चाहते हो ?
(इच्छा) —मैंने उससे कहा— तुम्हें यह काम कर लेना चाहिये।
(विस्मय) —मैंने उससे पूछा— अच्छा ! तुम जा रहे हो।
(आदेश) — मैंने तुमसे कहा— तुम अभी चले जाओ।
(निषेध) —मैंने उससे कहा— तुम अभी मत जाओ।

उपर्युक्त सभी उदाहरणोंमें सूचक और सूचित दो अलग अलग वाक्योंकी भांति प्रयुक्त हैं। इस प्रकारकी स्वतन्त्र रचनाओंका अध्ययन पर्याप्त विस्तारके साथ किया जा चुका है। लेकिन वक्रकथनमें कुछ संरचनात्मक परिवर्तन होते हैं। वक्रकथनमें या तो वक्ता स्वयं अपने पूर्वकथनको यथावत प्रस्तुत न करता हुआ इसपद्धतिका प्रयोग करता है या कोई अन्य व्यक्ति सूचितांशको वक्रकथनके रूपमें प्रस्तुत करता है। हिन्दी भाषामें वक्रकथन पद्धति उसी प्रकारकी नहीं है जिस प्रकारकी अंग्रेजीमें है। अंग्रेजीमें सूचक कथनमें सम्बोधित पुरुषकी छायामें सूचित कथनका पुरुष निश्चित होता है। साथ ही सूचक कथनका काल सूचित कथनके कालका निश्चय करता है। हिन्दीमें यह सब नहीं होता। इसमें तो केवल सूचक और सूचित कथन कि अव्ययके द्वारा जुड़ जाते हैं तथा इस प्रकार सूचित कथन अपना स्वतन्त्र अस्तित्व छोड़कर सूचक कथनका आश्रित बन जाता है। सामान्यतया यह संज्ञाउपवाक्यका रूप ग्रहण कर लेता है। यह रूपान्तरण पद्धति सभी प्रकारके वाक्योंपर समान रूपसे लागू होती है।

४८१२ वक्र

(सामान्य कथन) उसने मुझसे कहा कि तुम मूर्ख हो।
वह सोच रहा था कि मैं नाटकोंकी दुनियासे लौट रहा हूं।
(प्रश्न) उसने मुझसे पूछा कि तुम क्या चाहते हो ?
(इच्छा) मैंने उससे कहा कि तुम्हें यह काम कर लेना चाहिए।
(विस्मय) मैंने उससे विस्मयके साथ पूछा कि क्या वह जा रहा है।
(आदेश) मैंने उससे कहा कि तुम अभी जाओ।
(निषेध) मैंने उससे कहा कि तुम अभी मत जाओ।

कभी कभी ऐसा भी होता है कि अंग्रेजी रचनाके प्रभावानुसार सूचक कथनमें

सम्बोधित पुरुष ही सूचित कथाका पुरुष हो जाता है।

उसे अनुभव हो रहा था कि मैं नाटककी दुनियासे लौट रहा हूँ।

(हिन्दी-रचना-पद्धति)

उसे अनुभव हो रहा था कि वह नाटककी दुनियासे लौट रहा है।

(अंग्रेजी हिन्दी रचना-पद्धति)

अंग्रेजी प्रभाव हिन्दीपर पुरुष परिवर्तन तक ही सीमित है। क्रियामें जो परिवर्तन होता है वह पुरुषके अनुरूप ही होता है। उपर्युक्त उदाहरणोंमें 'मैं हूँ' का प्रयोग है दूसरे में 'वह है' का प्रयोग है। इसीलिए इस रूपान्तरण को अंग्रेजी हिन्दी रचना-पद्धतिपर स्वीकार किया गया है। निश्चित रूपसे रचनामें सूचित कथाका वक्र रचनाओंमें वही रहता है जो ऋजु रचनाओंका होता है।

८ ८ १ ३ सीमान्तिक विराम

ऋजुकथनाके दो स्वतन्त्र वाक्योंके बीच सीमान्तिक विराम होता है। इसे दो खड़ी रेखा (॥) के द्वारा दिखाया जा रहा है। वक्रकथनामें विराम अपेक्षाकृत कम लम्बा होता है। इसे कि के पूर्व एक खड़ी रेखा (।) के द्वारा अंकित किया जा रहा है।

ऋजु ⌊उसे अनुभव हो रहा था⌋[1] ⌊ मैं नाटककी दुनियासे लौट रहा हूँ। ⌋

= ⌊१⌋ ॥ ⌊२⌋ #

वक्र ⌊उसे अनुभव हो रहा था⌋[1] ⌊(कि) वह नाटककी दुनियासे लौट रहा है।⌋[2]

= ⌊१⌋ । ⌊२⌋ #

⌊उसे अनुभव हो रहा था⌋[1] ⌊(कि) मैं नाटककी दुनियासे लौट रहा हूँ।⌋[2]

= ⌊१⌋ । ⌊२⌋ #

४ ८ २ अर्थमूलक

हिन्दीमें अर्थमूलक रूपान्तरण क्रियाके विस्तारसे सम्बद्ध है। जहाँ यह विस्तार संयुक्तवाक्य योगसे होता है वहीं वह मुक्त रूपतत्त्वके योगसे। इस प्रकारके विस्तारमें वही मुख्य क्रिया निष्पन्न होता है जो संयुक्त क्रिया और वही मुख्य अथवा संयुक्त क्रियाका क्रियाविशेषणमूलक विस्तार होता है।

४८२१ पद्धति

सामान्यतया हिन्दीमें अथमूलक रूपान्तरण निम्नलिखित पद्धतिपर होता है।
सामान्य विधान सूचना विस्मय → रह + ता है।
प्रश्न → रह + ता है ? (क्या कब कौन कहाँ क्या कैसे आदि)
निषेध → रह + ता है। (नहीं)
इच्छा, आज्ञा, सुझाव → रह + ए।
संकेत → रह + ता तो होता।
चेतावनी ध्यानाकर्षण → रह + ना चाहिए।
सन्देह → रह + आ हो/होगा।
निम्नलिखित वाक्यमें अथमूलक रूपान्तरण दिखाया जा रहा है।
सामान्य—वह लक्ष्य प्राप्तिके हेतु कार्य संलग्न रहता है।
सूचना—वह लक्ष्य प्राप्तिके हेतु कार्य-संलग्न रहता है।
विधान—वह लक्ष्य प्राप्तिके हेतु कार्य संलग्न रहता है। (प्रसंगसे ज्ञात)
विस्मय—वह लक्ष्य प्राप्तिके हेतु कार्य संलग्न रहता है।
प्रश्न—(क्या) वह लक्ष्य प्राप्तिके हेतु कार्य-संलग्न रहता है?
निषेध—वह लक्ष्य प्राप्तिके हेतु कार्य-संलग्न नहीं रहता है।
इच्छा—वह लक्ष्य प्राप्तिके हेतु कार्य संलग्न रहे।
आज्ञा—वह लक्ष्य प्राप्तिके हेतु कार्य संलग्न रहे।
सुझाव—वह लक्ष्य प्राप्तिके हेतु कार्य संलग्न रहे।
संकेत—वह लक्ष्य प्राप्तिके हेतु कार्य-संलग्न रहता तो अच्छा होता।
चेतावनी या ध्यानाकर्षण—उसे लक्ष्य प्राप्ति हेतु कार्य संलग्न रहना चाहिये।
सन्देह—वह लक्ष्य प्राप्तिके हेतु कार्य संलग्न रहा हो/होगा।

अथमूलक रूपान्तरणमें भाव अथवा प्रयोजनमें महत्त्वपूर्ण अन्तर आ जाता है। यह बात निश्चित पद्धतिका अध्ययन करनेसे स्पष्ट हो जाता है। भाव अथवा प्रयोजनको व्यक्त करनेका कोई सामान्य विधान लेखन प्रक्रियामें नहीं है। जब इनका श्रोतासे उच्चारण होता है तब वक्ता अतिखंडीय अथमूलक ध्वनियोंका प्रयोग करता है।

४६ रूपान्तरणमूलक पद्धति

बीजवाक्य और निकटस्थ अवयव शीर्षकके अन्तर्गत यह स्पष्ट किया जा चुका है कि भाषामें कुछ आधारभूत बीजवाक्य और कुछ अबीजवाक्य पाए जाते हैं। अबीजवाक्य मात्रामें कम होते हैं तथा प्रयोक्ता अपने परिवेशमें प्रचुर प्रयोगसे स्वयं ही अबीजवाक्योंकी बारीकियां जान लेता है।

बीजवाक्य भाषाके आधार हैं। भाषा शिक्षणमें इनका योगदान सर्वाधिक है। ये वाक्योंकी संरचनाको स्पष्ट करते हैं। इन बीजवाक्योंका विस्तार भी हो सकता है और इनका रूपान्तरण भी सम्भव है। सामान्य कथनमूलक बीजवाक्य कुछ खण्डीय अथवा अतिखण्डीय तत्त्वोंके योगसे निषेधमूलक प्रश्नमूलक विस्मयमूलक आदि अनेक प्रकारके वाक्योंमें रूपान्तरित हो जाते हैं।

राम वहां जाता है।

राम वहां नहीं जाता।

राम वहां जाता है ?

राम वहां जाता है !

प्रस्तुत वाक्योंमें प्रथम वाक्य एक सामान्य कथनमूलक बीजवाक्य है। नहीं, ?, ! आदि खण्डीय और अतिखण्डीय तत्त्वोंके योगसे यह बीजवाक्य निषेध प्रश्न और विस्मयसूचक वाक्योंमें रूपान्तरित हो गया है।

प्रत्येक बीजवाक्यमें संज्ञावाक्यांश और क्रियावाक्यांश अनिवार्य हैं। संज्ञा वाक्यांशोंमें कर्ता मुख्य कर्म गौण कर्म करण अपादान, अधिकरणसूचक सक्रिय इकाइयां आती हैं तथा क्रियावाक्यांशोंमें क्रियाएं तथा क्रियाविशेषण आते हैं। सर्व प्रथम वाक्यांशोंके आधारपर संक्षिप्त और दीर्घ साधारण वाक्योंका विवेचन किया जा रहा है (४६१)। इसके बाद मिश्र (४६२) और संयुक्त-वाक्योंका (४६३) विश्लेषण है।

प्रारम्भिक अवस्थामें वक्ता साधारण वाक्योंमें ही अपना मन्तव्य व्यक्त करता है। धीरे धीरे प्रयोग क्षमता बढ़नेके साथ-साथ मिश्र एवं संयुक्त वाक्योंका प्रयोग भी बढ़ जाता है। निस्सन्देह एकाधिक साधारण वाक्योंकी अपेक्षा मिश्र या संयुक्त वाक्यमें कही हुई बातका प्रभाव अधिक होता है। इस बात को ध्यानमें रखकर साधारण वाक्य→मिश्रवाक्य (४६४) तथा साधारण वाक्य→संयुक्त वाक्य (४६५) उपशीर्षकोंके अन्तर्गत पहले एकाधिक साधारण वाक्योंका अलग अलग विश्लेषण किया गया है। इसके बाद उन्हीं साधारण वाक्योंके मिश्र या संयुक्तमें रूपान्तरित हो जानेके बाद उस पूर्ण अर्थवानके मिश्र या संयुक्त वाक्यका

विश्लेषण दिखाया गया है। इस विश्लेषणसे यह स्पष्ट हो जाता है कि कोई भी मन्तव्य एकाधिक साधारण वाक्योंमें बटकर व्यक्त होनेपर उतना पूर्ण और प्रभाव शाली नहीं रहता जितना एक मिश्र या संयुक्त वाक्यमें। साधारण वाक्यके बाद आनेवाला विराम अभिव्यंजना क्षमता और वक्तव्यकी तीव्रतापर भी एक विराम लगा देता है जिससे प्रभाव निश्चय ही घट जाता है।

इस विश्लेषणमें अन्तिम वाक्य (४६६) एकाधिक मिश्र तथा संयुक्त वाक्यों से मिलकर बना है। यह वाक्य उन दीर्घ वाक्योंका सूचक है जो अपनी तीव्रता और प्रभावकी रक्षा हेतु विराम-योजनासे दूर रहते है। यदि यह वाक्य छ साधारण वाक्योंमें लिख दिया जाए तो वक्ताका अभिप्राय स्पष्ट नहीं हो पाएगा। उसके वक्तव्यका प्रभाव और तीव्रता समाप्त हो जाएगी तथा श्रोताका प्रमुख उद्देश्य अधूरा रह जाएगा। वक्ताका अभिप्राय अपेक्षित रूपमें प्रेषित नहीं हो पाएगा।

४६१ साधारण वाक्य
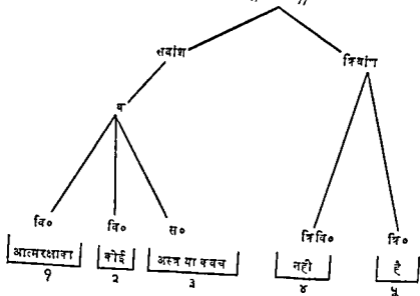
आदमियोंको बहुत पीटा गया।
वा०
क्रियांश
क्रिवि०
बहुत
पीटा गया
१
२
3
रामने रावणको मारा।
वा०
क्रियांश
क्रि०
मारा
१
२
३

आत्मरक्षाका कोई अस्त्र या कवच नहीं है।

\# वा० #

सवांश — विधांश

क

वि० वि० स० — विवि० वि०

आत्मरक्षाका | कोई | अस्त्र या कवच | नहीं | है

१ २ ३ ४ ५

दूसरी बात एक दूसरे प्रयोगसे नेपालमें मालूम हो सकी।

सितार दौरान भरा ज्यादा भुलाव भागाआवी और था।

रोशनीकी किरणें दस पाँच आँगनमें आ गई हैं।

रोशनीकी किरणें दबे पाँव आँगनमें आ गई है।
वा०
सर्वांश
क्रियांश
क
ख
सवांश
क्रियांश
वि०
स०
स०
वि०
स०
संयुक्रि०
सहाक्रि०
रोशनीकी
१
किरणें
२
आँगनमें
३
दबे
४
पाँव
५
आ गई
६
है
७

४६२ मिश्र वाक्य

कोई समय था जब वनानिकोंकी बोलती भी इन प्रश्नोंसे बन्द हो जाती थी।

\# वा० ∨ वा० #

सवाश क्रिवाश — सवाश क्रिवाश

वि० स० क्रि० — वि० सवाश — वि० स० — संयुक्रि० सहाक्रि०

कोई	समय	था	जब	वनानिकोंकी	बोलती भी	इन	प्रश्नोंसे	बन्द हो जाती	थी
१	२	३	∨	४	५	६	७	८	९
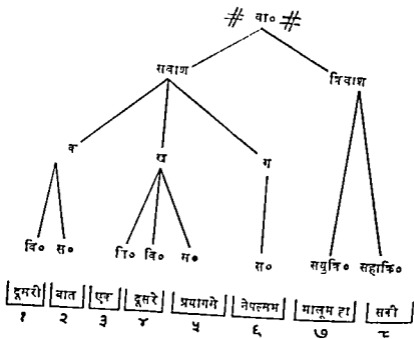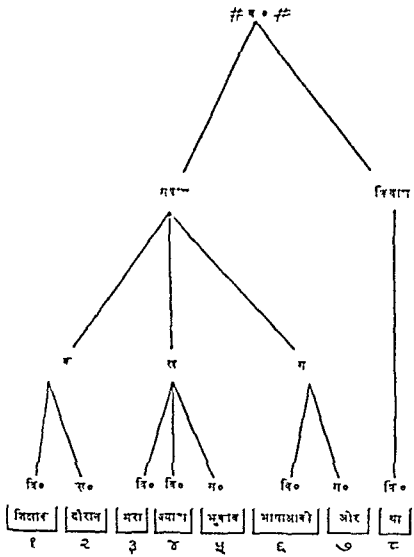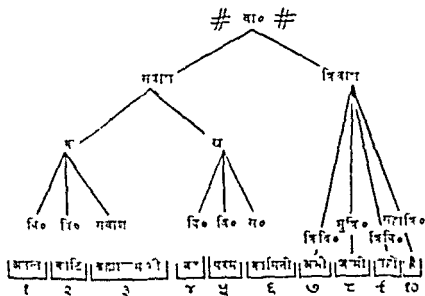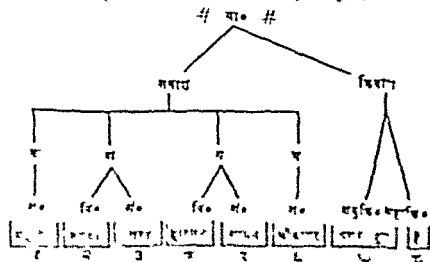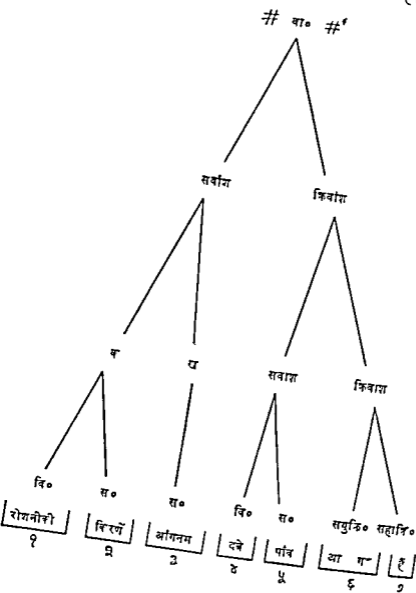
४६३ संयुक्त वाक्य

ऊपर आसमानमें तारे हैं और नीचे दूर तक समुद्र दिखाई पड़ता है।
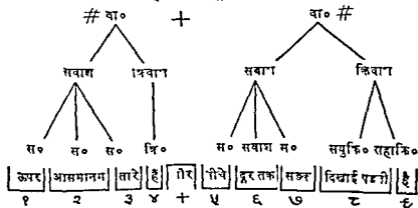
४६४ साधारण वाक्य→मिश्रवाक्य
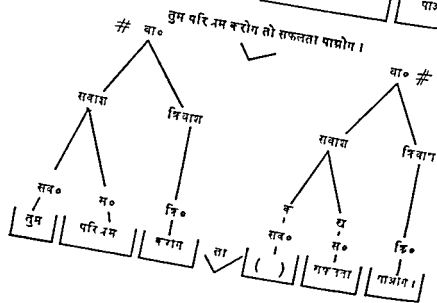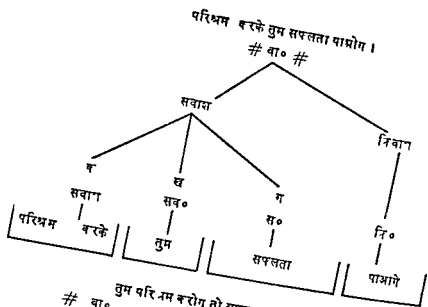
४६५ साधारणवाक्य→संयुक्तवाक्य

उसने पाठशालामें जाकर अध्यापकसे प्रार्थना की थी।

वह पाठशालामें गया और उसने अध्यापकसे प्रार्थना की थी।

वे देहली गए हैं। वहाँ वे चार दिन ठहरेंगे।

वे देहली गए हैं, जहाँ वे चार दिन ठहरेंगे।

४.६.६ संयुक्तवाक्य (एकाधिक
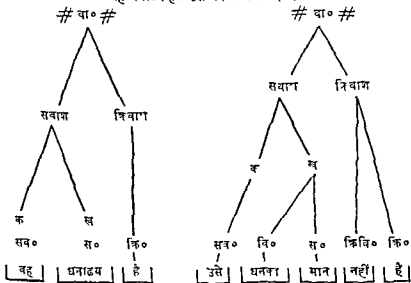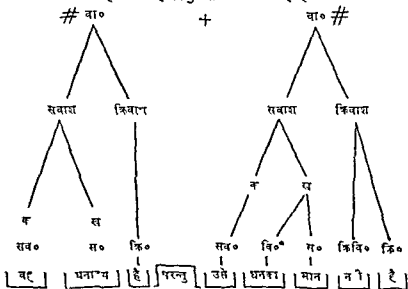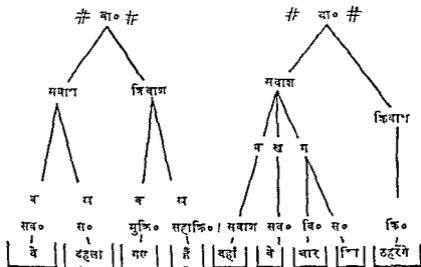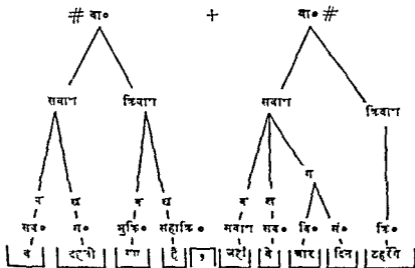
साधारण एवं मिश्रवाक्य)

करवट लेकर ज्यादा देर लेट नहीं पाता क्योंकि
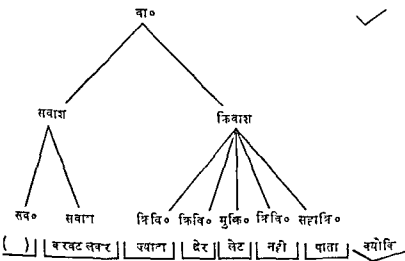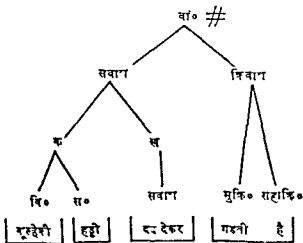
वा०

सवांश क्रियांश

सर्व० सवांश क्रिवि० क्रिवि० मुक्रि० क्रिवि० सहाक्रि०

( ) | करवट लेकर | ज्यादा | देर | लेट | नहीं | पाता | क्योंकि

कूल्हे की हड्डी दर्द देकर गड़ती है।

५.११ सुर विधान

हिन्दीका सुर विधान, स्वर-नियमोंमें पाई जानेवाली विभिन्नताकी दृष्टिसे १ से लेकर ४ तक अवस्थित रहता है। यदि स्तरकी स्थितिको २ के द्वारा व्यक्त किया जाए तो ३ और ४ को आरोहमूलक और १ को अवरोहमूलक कहना समीचीन होगा।

५.१२ सीमान्तिक रेखाएँ

सीमान्तिक रेखाएँ सुर-योजनाके अनुरूप निर्मित होती हैं। एक ही प्रकारकी संरचनाओंमें प्रयोजनकी दृष्टिसे सुर-योजना भिन्न होनेपर भिन्न सुर रेखाएं बनती हैं। तू चला वाक्यको लेकर सीमान्तिक रेखाओंकी परिवर्तनमूलक निर्मितियां अंकित किया जा रहा है।

२ २
तू चला। (सामान्य कथन) — — = #
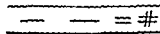
२ ३
तू चला? (प्रश्न) — — + #
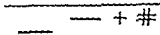
३ २
तू चला (विस्मय) — — + #
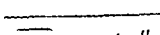
२ ३
तू चला (खेद) — — + #
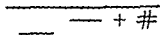
दूसरे और चौथे वाक्योंकी सामान्तिक रेखाओंमें स्थूल दृष्टिसे कोई भेद नहीं है। लेकिन सूक्ष्म दृष्टिसे देखनेपर इनमें परिणतिमूलक भेद देखा जा सकता है। दूसरा वाक्य प्रयोजनकी दृष्टिसे प्रश्नमूलक है चौथा खेदमूलक। दूसरेमें सुर २ से ३ पर पहुँचकर कुछ रुककर विरामकी स्थितिपर पहुँचा है, चौथेमें भी सुर २ से ३ पर पहुँचा है। लेकिन यहाँ ३ की स्थिति देर तक बनी रहकर विरामकी स्थितिपर पहुँची है। विरामकी स्थितिसे पूर्व ठहरावकी स्थिति अन्तमें अवरोहमूला हो गई है जिसे योगके चिह्न (+) के बाद ऋणके चिह्न (—) के द्वारा अंकित किया गया है।

सुरमूलक दृष्टिसे

प्रथम / २→२=#
द्वितीय / २→३+#
तृतीय / ३→२+#
चतुर्थ / २→३+—#

नीचे कतिपय अन्य उदाहरण लेकर निदीम सुरकी स्थितिको देखनका प्रयत्न किया जा रहा है।

२ २ ३ ४
हरि घर गया ?

—— + #
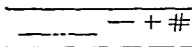
संरचनात्मक रूपमें यह वाक्य कथनमूलक है, लेकिन प्रयोजनकी दृष्टिसे यह वाक्य प्रश्नमूलक है। ऐसी स्थितियोंको विशिष्ट ही माना जा सकता है सामान्य नहीं। प्रस्तुत उदाहरणमें स्तरीय दृष्टि घर तक है अर्थात सुरकी दृष्टिसे हरि और घर समान स्तरपर है, गया क्षिप्रतर सुर है। इस प्रकार उक्त उदाहरणमें हरि और घर सुरात्मक दृष्टिसे एक परिवृत्तमें है, गया दूसरेमें।

२ ३ ४ १
हरि घर गया ?
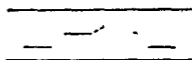
इस उदाहरणमें हरिपर स्तरीय सुर है। यह वाक्य आरोही सुरमूलक है हरिकी अपेक्षा घरपर सुर क्षिप्रतर और गयाके ग पर क्षिप्रतम है। या तक पहुँच कर सुर अवरोहमूली होकर परिणतिके समय १ पर पहुँच गया है। इस वाक्यमें विस्मय-समन्वित प्रश्न है।

२ ३ २ १ १ १ १ १ १
'मैं करता हूँ', मोहनने कहा।

—||—————#
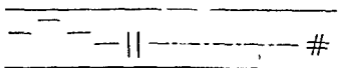
इस उदाहरणमे पहले उपवाक्यका अन्तिम सुर-स्तर ही अगले उपवाक्यमे अवरोहमूलक हो गया है।

२ २२ ३ २ २ ३ २ १
मोहनने कहा "मैं करता हूँ।"

—— —— —— ¯¯ ——|| —— ¯¯ —— —— #
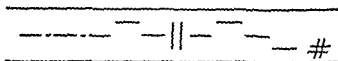
इस वाक्यमे पहले उपवाक्यका अन्तिम सुर-स्तर दूसरे वाक्यके प्रथम सुर-स्वर तक प्रसरित है। आगे उसमे अपेक्षाकृत अधिक क्षिप्रता आ गई है, जो तुरन्त अवरोही होकर अन्तमे १ पर आकर परिणतिको पहुच गई है।

२ २ ३ २ ३ ३ २ १ ४ ३ २ २ १
तुम्हारेलिये ! जी चाहता है सब कुछ कर डालू।
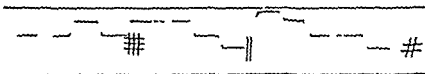
इस उदाहरणमे भावावेशमूलक विभिन्न स्थितियाँ हैं। वाक्याशो और उपवाक्योकी इस सरचनामे प्रथम वाक्याशमे स्नेहमूलक सम्बोधन है। इसमे लिए के आदि भागपर अपेक्षाकृत क्षिप्रतर सुर है जो अपेक्षित उतारके कारण स्तरीय सुर पर आ गया है। दूसरे उपवाक्यमे एकाक्षरी पद जी पर सुर फिर क्षिप्रतर होकर चाहता के आदि भाग चाह तक जाकर स्तरपर आ गया है। है तक पहुँचते-पहुँचते यह अवरोही होकर स्तरीय-सुरसे भी नीचे पहुँच गया है। तीसरे वाक्याश सब कुछ मे सब पर सुर क्षिप्रतम हो गया है, तदुपरान्त कुछ पर अवरोही होता हुआ अन्तिम वाक्याशके कर पर स्तरीय होकर डालू के आदि भाग तक प्रसरित होता हुआ लूँ पर पहुँचकर स्तरसे भी नीचे पहुँच परिणतिको प्राप्त होकर समाप्त हो गया है। सुर की विभिन्न सापेक्षिक स्थितियाँ और क्षेत्रगत वविध्यको दिखानेकेलिए ही यह वाक्य लिया गया है। हिन्दी भाषामे ऐसी अनेक स्थितियाँ सम्भव है। सुर परिवर्तन क्षेत्र अनुभूति एव विचारणाका अनेकताके कारण विविधतापूर्ण है लेकिन क्षिप्रतम स्थिति ४ तककी ही सम्भावित है। गिरते गिरते वह १ तक भी आ जाती है।

विचारणीय बात यह है कि सामान्यतया सुर स्तरसे शुरू होते हैं। ये मध्यम क्षिप्रतर अथवा क्षिप्रतम विशिष्ट स्थितियाम ही सम्भव हैं। उपान्त्यम क्षिप्रतर अथवा क्षिप्रतम स्थिति सम्भव बनी रहती है। सहायक क्रियाओ तक पहुँचते पहुँचते सुरकी स्थिति स्तरसे भी नीचे चली जाती है। यदि वह १ तक नही पहुँचती है तो अवरोहमूला हो परिणतिको प्राप्त अवश्य हो जाती है। उक्तिके अन्तम दीर्घ स्वरमूलक अक्षर प्राय अवरोही हो जाते हैं। प्रश्न अथवा विस्मय अथवा तीक्ष्ण सन्देहकी स्थितिम ही इसके विपरीत स्थिति देखनेको मिलती है।

५२ हिन्दी-वाक्य और बलाघात

बलाघात भी एक अतिखडीय औद्भूति है। वक्ताके अभिप्रायसे अनुप्राणित होकर बलाघात सामान्य भाषाम एक नया अर्थ भर देता है।

हिन्दीमे बलाघात दो प्रकारका पाया जाता है—**शब्दान्तर्गत अक्षरमूलक, वाक्यान्तर्गत शब्दमूलक।** प्रस्तुत अध्ययन हिन्दी वाक्यसे सम्बद्ध है, अत यहा वाक्योंमे पाए जानेवाले बलाघातपर विचार करना ही अभिप्रेत है।

५२१ सुर और बलाघात

सुर और बलाघातम अत्यन्त सूक्ष्म अन्तर है। सुरम आरोह अवरोहमूलक सम्बन्ध निर्वाहपर विशेष बल दिया जाता है, बलाघातमे शब्द विशेषपर अधिक बल दिया जाता है अर्थात बलाघातम स्वर-तन्त्रियोम खिचाव आ जाता है। सुरमूलक स्थितिम स्वर-तन्त्रियोम उदात्त, अनुदात्त स्वरितके अनुरूप लचीलापन रहता है। उदाहरण देकर मन्तव्यको स्पष्ट किया जा रहा है।

रा́म सडकपर जा रहा है।

इस वाक्यम **राम** पर बलाघात होनेसे **सडकपर कौन जा रहा है** ?—प्रश्नका उत्तर मिल रहा है। इसके विपरीत यदि हम बल जा रहा पर दें तो—**राम सडक पर क्या कर रहा है** ? प्रश्नका उत्तर मिलेगा—

राम सडकपर जा रहा́ है।

५२२ वाक्यान्तर्गत बलाघात

हिन्दीम **वाक्यान्तर्गत बलाघात** तीन प्रकारके पाए जाते हैं—**प्राथमिक' द्वितीय तृतीय।**

हिन्दीम प्राथमिक बलाघात प्राय दो उपवाक्योंके संयोजक-तत्त्वोम पाया

जाता है।

रामने जाते ही कहा कि मैं नहीं जाऊँगा।

गोविन्दसे कह दो कि वह इधर न आए।

राम जानेको तैयार बैठा है पर जा ही नहीं सकता।

सामान्यतया हिन्दीमें बलाघात संज्ञापद और क्रियापदपर रहता है। संयोजक तत्त्वोंपर पाया जानेवाला यह बलाघात विशेष स्थितिमूलक है।

५ २ ३ एकपदीय वाक्य

बलाघात एक शब्द वाले वाक्योंमें भी पाया जाता है।

राम।

ठहरो।

५ २ ४ नाटकीय सम्वाद

नाटकोंमें जब कथन उत्तेजनात्मक होता है तब बलाघातका पर्याप्त महत्त्वपूर्ण स्थान रहता है।

अम्बिका ग्रामके लोग उसे उतना नहीं जानते जितना मैं जानती हूँ।

मैं उससे घृणा करती हूँ।

मल्लिका माँ।
अम्बिका कैसी विचक्षणता है!

निक्षेप विचक्षणता?

ऐसी स्थितिमें बलाघात प्राथमिक रहता है क्योंकि द्वितीय अथवा तृतीयके साथ किसी प्रकारकी सापेक्षताका प्रश्न नहीं रहता।

वाक्यके प्रथम बलाघातसे निश्चय ही एक विशेषता आ जाती है। भाषाकी

यह विशेष औत्भूति बोलनेमें ही नहीं, लिखित भाषामें भी बलाघात चिह्न देकर स्पष्ट की जा सकती है।

५.३ हिन्दी-वाक्य और सुरक्रम

सुरक्रम एक वाग्मूला औदभूति है। वक्ता और रचनाके बीच एक सापेक्षिक सम्बन्ध होता है। किसी भी एक रचनाको वक्ताकी मन स्थितिके अनुरूप वाणीके माध्यमसे विभिन्न प्रकारसे प्रस्तुत किया जा सकता है। इस विविध प्रस्तुतीकरणमें सुरक्रमका विशिष्ट महत्त्व होता है। अर्थमूलक होनेके नाते वाक्य विचारान्तर्गत इसका अपना महत्त्व है।

५.३.१ सुरक्रमके प्रकार

क्रम पर विचार करते हुए कहा जा चुका है कि वाक्य अथवा वाक्यांशमें पदका स्थान अर्थसापेक्ष होता है। यदि क्रममें ही परिवर्तन हो जाए, तो बिना भिन्न मन स्थितिके ही पद-योजनामें सुरक्रममूलक अन्तर आ जाता है। इस प्रकार हिन्दीमें दो प्रकारका सुरक्रम पाया जाता है। एकका सम्बन्ध वक्ताकी बदलती हुई मन स्थितिसे होता है। इस स्थितिमें क्रमम परिवर्तन अथवा अपरिवर्तनसे कोई अन्तर नहीं आता। दूसरेका सम्बन्ध क्रमान्तरसे होता है। इसमें वक्ताकी मन स्थितिका महत्त्व गौण होता है क्रम स्वयं निर्णायक होता है। हम दोनों प्रकारके उदाहरण लेकर हिन्दीकी इस महत्त्वपूर्ण औदभूतिका चित्रित करनेका प्रयास कर रहे हैं।

५.३.१.१ क्रमान्तर और सुरक्रम

आप पुस्तक पढ़ लें। #
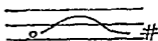
पुस्तक आप पढ़ लें। #

क्या करोगे ?। #
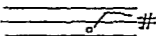
करोगे क्या ? #
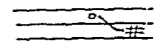
५ ३ १ २ वक्ताकी मन स्थिति और सुरक्रम

वक्ताकी मन स्थितिके अनुसार कुछ वाक्योंमें अर्थाश्रित सुरक्रमसूचक भिन्नता

पाई जाती है।

आइय पधारिय ! (प्रार्थनामूलक)
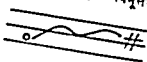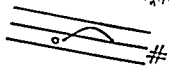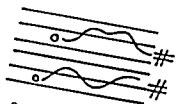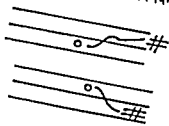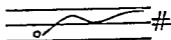
काम करिय। (आदेशमूलक)
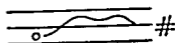
गधका बच्चा। (अपशब्द)
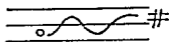
उसका बुरा हो। (अभिशापमूलक)
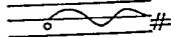
खुश रहो। (वरदानमूलक)
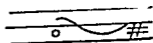
५ ३ २: एकपदीय वाक्य

एकपदीय वाक्योंमे भी सुरक्रमके द्वारा विभिन्न अर्थोंकी योजना सम्भव हो सकती है।

अच्छा (सहज स्वीकृति)
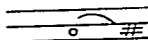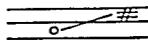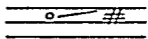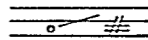
अच्छा (सन्देह)

अच्छा? (प्रश्न)

अच्छा! (विस्मय)

हिन्दीमे पाई जानेवाली सुरक्रममूलक भौदृमुद्रिकी ओर संकेत करनेके

पश्चात् यह कहना समीचीन प्रतीत होता है कि हिन्दी भाषा इस दृष्टिसे बड़ी समृद्ध है। अर्थ विच्छित्तिकी दृष्टिसे गुरुत्वमूलक अर्थभेदोंके पाने जानेवाले अर्थ वैविध्यके मूल्यांकनके लिए हिन्दीमें बहुत अवकाश है।

५ ४ हिन्दी वाक्य और विराम

वाक्यके अन्तर्गत अर्थ-बोधमूलक सीमान्तों अथवा संकेतोंका होना अनिवार्य है। ये सीमान्त अथवा संकेत ध्वनि-सापेक्ष होते हैं। वस्तुत ये सीमान्त अथवा संकेत ही विराम हैं। विराम दो प्रकारके होते हैं—सीमान्तिक और योगमूलक।

५ ४ १ सीमान्तिक विराम

स्थूल रूपसे सीमान्तिक विराम तीन प्रकारके होते हैं—स्तरीय निम्नाभिमुख और उच्चाभिमुख। स्तरीय विरामसे अपूर्ण कथनका बोध होता है इसके बाद लगता है कि कुछ कथ्य शेष है। निम्नाभिमुख विरामके पश्चात निरन्तर हल्की होती हुई ध्वनि प्रसंगके एक पूर्ण अंशकी समाप्तिका बोध कराती है। उच्चाभिमुख विराममें निरन्तर तेज होती हुई ध्वनिसे प्रसंगके एक अंशकी परिसमाप्तिका बोध होता है।

५ ४ १ १ स्तरीय विराम

स्तरीय विरामके चार भेद हो सकते हैं—वाक्यके भीतर किसी पद अथवा वाक्यांशके समानाधिकरण अथवा व्याख्यापरक वाक्यांशसे पूर्व आनेवाला अल्प विराम, दो समकक्षीय अथवा समान स्तरवाले वाक्यों अथवा उपवाक्योंके बीचमें आनेवाला अपेक्षाकृत दीर्घविराम पूर्ववर्ती वाक्यमें स्पष्ट न होनेवाले अर्थको विस्तारके साथ अभिव्यक्त करनेवाले वाक्य अथवा उपवाक्यसे पूर्व आनेवाला अपेक्षाकृत दीर्घतर विराम भावावेशके चरमपर पहुँचकर व्याकरणिक दृष्टिसे अपूर्ण वाक्यके बाद आनेवाला विराम। पहला स्तरीय सीमान्तिक विराम लिखित भाषामें ( ) के द्वारा दूसरा ( ) के द्वारा तीसरा ( ) के द्वारा और चौथा (—या—) के द्वारा व्यक्त किए जाते हैं। इस प्रसंगमें द्रष्टव्य यह है कि इन सब प्रकारके स्तरीय सीमान्तिक विरामोंके पश्चात प्रसंगगत पूर्णताकी दृष्टिसे अर्थकी आकांक्षा बनी रहती है।

विरामोंको निम्नांकित रूपोंमें सूचित किया जा रहा है—

(,)=।, (,)=।।, ( )=।।।, (—या—)=।।।।, ( )=v

स्तरीय विराम

⌊पुतपर एक दीया था⌋¹, ⌊पर यहां तो ठीक है⌋।¹ १।२#
⌊शेखरको एक ओर पहरा देनेकेलिए नियुक्त किया गया⌋¹
⌊युवकको दूसरी ओर⌋।¹ १।।२#
⌊आप कहते⌋¹ ⌊बनता है⌋¹, ⌊जमा रहा है⌋¹,
⌊फिर या शरमानेसे लाभ भी कुछ नहीं था⌋।¹ १।।२।३।४#
⌊दिन छिपे तक लौट आऊँगा⌋¹—⌊घबराना मत⌋।¹ १।।।२ #
⌊स्वीकार तो अब भी नहीं किया⌋¹—⌊पर आज
समझ गई⌋¹ ⌊मैं⌋³ ⌊क्लासें आगे चली गई हूँ⌋¹ ।
१।।।२v३v४v #

५ ४ १ २ निम्नाभिमुख विराम

निम्नाभिमुख विराम प्रश्नमूलक अथवा विस्मयमूलक वाक्योंको छोड़कर अन्य सब प्रकारके वाक्योंकी परिसमाप्तिपर पाया जाता है। इस विरामकी उपस्थितिपर वाक्यकी अन्तिम ध्वनि निरन्तर धीमी होते होते विलीन हो जाती है।

⌊मेरे विचारमें बहुत बड़ी तृप्ति मिलती है⌋।¹
(सामान्य कथन) १# ↘
⌊वह चार-पांच दिन घरसे नहीं निकला⌋।¹ (निषेधमूलक) १# ↘
⌊अभी यह काम समाप्त करना होगा⌋।¹ (आदेशमूलक) १# ↘
⌊मैं जीवित रह सकूंगा⌋।¹ (सन्देहमूलक) १# ↘
⌊मैं चाहता हूँ⌋¹ कि ⌊तुम एक महिमामयी (इच्छामूलक)
विदूषी बनो।⌋।² १/२# ↘

५ ४ १ ३ उच्चाभिमुख विराम

उच्चाभिमुख विराम सामान्यतया दो प्रकारके वाक्योंमें पाया जाता है—प्रश्नमूलक एवं विस्मयमूलक। इस विरामकी उपस्थितिपर अन्तिम ध्वनि उच्चसे उच्चतर होती हुई विलीन हो जाती है।

⌊इस प्रशान्तिमें⌋¹, ⌊सिमटे हुए आलोकमें भी⌋¹
⌊चीत्कार है⌋?¹ ⌊क्या क्रन्दन है⌋¹ १।२।।३।४# ↗
⌊बहुत ऊँची कल्पना है!⌋¹ ⌊लिख चुके क्या⌋?¹ १# ↗ २# ↗

५४२ योगमूलक विराम

योगमूलक विराम वाक्यांशकी सीमाओंके भीतर आते हैं। इस प्रकारके विरामोंका अर्थ-बोधकी दृष्टिसे वही महत्त्व है जो वाक्यांशोंका वाक्यमें होता है। इस विरामके कारण पद विच्छिन्न होकर विकारी पदका अभिधान ग्रहण कर लेते हैं। योगमूलक विराम चिह्न + है।

पद	विकारीपद	
नलकी	└नल┘' + └की┘' →	१ + २
पालकी	└पाल┘' + └की┘' →	१ + २
ढोलकी	└ढोल┘' + └की┘' →	१ + २
धोखा	└धो┘' + └खा┘' →	१ + २

५४३ अनुच्छेदमूलक विराम

वाक्य पूर्णकी आंशिक पूर्ण इकाई है। इन आंशिक पूर्ण इकाइयोंके योगसे वृहद अंश अनुच्छेदकी संरचना होती है। इन वृहद अंशोंके योगसे पूर्णकी रचना संभव होती है। पूर्णके नियोजक इन वृहदंशोंके बीच भी विराम होता है। वाक्यके भीतर जिस प्रकार आकांक्षामूलक विराम होता है उसी प्रकारका विराम अनुच्छेदोंके बीच होता है। कालक्षेपकी दृष्टिसे अनुच्छेदोंके बीच आया हुआ यह विराम वाक्यके भीतर आए हुए विरामसे अपेक्षाकृत दीर्घकालिक होता है। अर्थकी दृष्टिसे यह स्तरीय, निम्नाभिमुख एवं उच्चाभिमुख हो सकता है। विचारक्रम जब विस्मय और प्रश्नमूलक नहीं होता तब यह प्रकृत्या स्तरीय होता है। जहाँ निष्कर्ष अपेक्षित होता है वहाँ निम्नाभिमुख होता है और जब विस्मय एवं प्रश्नकी संभावनाएँ होती हैं तब उच्चाभिमुख होता है। इन विरामोंको हम निम्नलिखित चिह्नों द्वारा अंकित कर रहे हैं।

अनुच्छेदमूलक स्तरीय (॥)

अनुच्छेदमूलक निम्नाभिमुख

अनुच्छेदमूलक उच्चाभिमुख

५ ४ ३ १ अनुच्छेदमूलक स्तरीय विराम

└ मुझे इनको देखकर उन नेताओंकी बात याद आती है जो इसी प्रकार जमानेका रुख नहीं पहचानते और जब तक नई पीढ़ीके लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं ┘।[1]

└ मैं सोचता हूँ कि पुरानोंकी यह अधिकारलिप्सा क्यों नहीं समय रहते साव धान हो जाती। ┘[1]
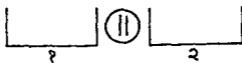
५ ४ ३ २ अनुच्छेदमूलक उच्चाभिमुख

└ शिरीषकी मस्तीको देखो। लेकिन अनुभवने मुझे बताया है कि कोई किसीकी नहीं सुनता! मरने दो! ┘[1]

└ कालिदास वजन ठीक रख सके थे क्योंकि वे अनासक्त योगीकी स्थिर प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमीका हृदय पा चुके थे। ┘[1]

└ तब यह सोचकर कि दादियके विनोद भाव भी जानकर वह तो मैं ही लिया जाएगा उसने कह दिया था, 'अभी काफ़ी है।' किन्तु नानीने फिर वही

प्रश्न पूछनेपर उसने कहा था— क्या ? ⌋[१]

⌊ 'आप आगे पढ़ेंगे नहीं ?" ⌋[२]
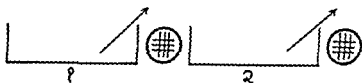
⌊ क्या स्वाधीनता दी थी निणयकी ? क्या दाना सूक्तामें महानुभूतिका वचन दिया था ? ⌋[१]

⌊ उसे याद आया कि उसने क्या लिखा था यह मामला शशिका है शशिके अतिरिक्त किसीका भी नहीं और इसमें परामर्श भी किसीका ग्राह्य नहीं है ⌋।[१]
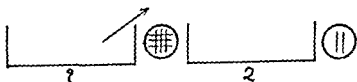
५ ४ ३ ३ अनुच्छेदमूलक निम्नाभिमुख

⌊ फूल हो या पेड़ वह अपने आपमें समाप्त नहीं है वह किसी अन्य व्यक्तिको दिखानेके लिए उठी हुई अंगुली है वह इशारा है। ⌋[१]

⌊ शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूतकी भाँति मेरे मनमें एसी तरंग जगा देता है जो ऊपरकी ओर उठती रहती है। शिरीष वायुमण्डलसे रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर हो सका था। मैं जब जब शिरीषकी ओर देखता हूं तब तब हूक उठती है—हाय, वह अवधूत आज कहाँ है। ⌋[२]

⌊ यह सिलसिला मैं कभी नहीं तोड़ सकता क्योंकि मैं उनकी कद्र किया करता हूँ, और इससे मुझे प्रेरणा हिम्मत और हौसला मिलता है। मेरी रम

आकांक्षाकी पुष्टिके लिए और भारतकी संस्कृतिको श्रद्धांजलि भेंट करनेके लिए मैं यह दरख्वास्त करता हूँ कि मेरी भस्मकी एक मुट्ठी इलाहाबादके पास गंगामें डाल दी जाए, जिससे कि वह उस महासागरमें पहुँचे जो हिन्दुस्तानको घेरे हुए है।⌋¹

⌊मेरी भस्मके बाकी हिस्सेका क्या किया जाए? मैं चाहता हूँ कि इसे हवाई-जहाजमें ऊँचाईपर ले जाकर बिखेर दिया जाए उन खेतोंपर जहाँ भारतके किसान मेहनत करते हैं ताकि वह भारतकी मिट्टीमें मिल जाए और उसीका अंग बन जाए।⌋²

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि विराम भाषाकी एक महत्त्वपूर्ण अनुभूति है। भाषाकी सब इकाइयोंमें इसकी सत्ता विद्यमान है।

६
हिंदी सरचनामे अर्थ

व्याकरणोम जो शब्द भेद सम्बन्धी विभाजन है,
एव उपयोगी नही है क्योकि प्रसग भेदसे शब्दोके धम
किसी निश्चित भेदके रूपम स्वीकार करना समीचीन
सज्ञा और क्रिया सर्वाधिक महत्त्वपूण है। इनके
सम्बन्ध तथा पारस्परिक सम्बन्ध अथकी दष्टिसे
उपवाक्य आदिम जो प्रसगानुरूप अथ विच्छित्ति '
विश्लेषणकी दष्टिस उल्लेख्य है। पदासे लेकर वा
अथ नही होते जो उनके अलग अलग कोषगत अथ

६ १ निजी और सार्व

मैं आपस मिलता हूँ।

मैं आपसे चार बजे मिल रहा हूँ।

उपयुक्त दोनो वाक्योम मिल का प्रयोग हुआ
दूसरा सावजनिक।

शिक्षकोके शिष्ट मण्डलने प्रधानमन्त्रीसे भेंट की

यह लेखनी मुझे भेंटमे मिली है।

दवीको भेंट चढानी है।

यहाँ भेंट के तीन प्रयोग है पहले प्रयोगम भेंट
और तीसरे प्रयोगोम भेंट का प्रयोग सवथा निजी अ

वह इस मकानम रहा है।

वह उस मकानम जा रहा है।

वह जा रहा है।

उपयु क्त प्रयागाम रहा की तीन भिन्न स्थितिया हैं ।

रह् धातुमे निष्पन्न पद रहनेके अथम प्रयुक्त होने है । यह पहले प्रयोगमे सुरक्षित है । इमसे ध्वनित होता है कि वह इस मकानमे रह चुका है। दूसरे प्रयोगम जा रहा है वाक्याशमे रहा है का प्रयाग बिल्कुल भिन्न है। इसम रहनेकेलिए जानेका भाव है जबकि रहा अपने आपम भूतकालिक कृदन्त है। इसी प्रकार तीसरे प्रयागमे समूचे वाक्याश जा रहा है म रहा का अथ बिल्कुल लुप्त हो गया है । इस प्रकारकी अथविच्छित्तिया सरचनामूलक हैं। पद और वाक्याशमूलक उपयु क्त औदभूनियाकी सरचनाके परिप्रेक्ष्यम समीक्षा की जा रही है ।

६ २ एकाकी पद

अपन जीकी बात है ।

पुत्रको देखकर मा जो उठी ।

उपयु क्त प्रथम वाक्यम जी मनकी (सनाकी) भाति प्रयुक्त हुआ है । दूसरे वाक्यम जी प्राणवान होनेके अथम आया है । दोनो प्रयोगोम ध्वन्यात्मक अथवा रूपात्मक दष्टिसे कोई अन्तर नहीं है । लेकिन सरचनात्मक भेदके कारण दोनाम अन्तर आ गया है । इस प्रकारके अनक उदाहरण लिए जा सकते हैं—

भगवानके दशन नित्य होते हैं ।	(निजी)
अब आपके दशन कब होगे ।	(सामाजिक)
गावर भुनियाक साथ भाग गया ।	(निजी)
वह डरकर भाग रहा है ।	(सामाजिक)
वह उसका प्रेमी है ।	(निजी)
वह बडा प्रेमी है ।	(सामाजिक)

उपयु क्त उदाहरणाम हमन एकाकी पदाके निजी और सामाजिक प्रयोगके रूपाकी ओर सकेत किया है ।

६ २ १ प्रयोगान्तगत एकाकी व्याकरणिक पद

एकाकी पदाकी प्रयागान्तगत व्याकरणिक सरचनाम अयमूलक स्थितियाँ इस प्रकार हैं ।

६२११ संज्ञा→विशेषण

बड़ा गधा आदमी है।
अपनेको हरिश्चन्द्र राजा समझता है।
अभी तुम बालक राजनीतिज्ञ हो।

६२१२ सर्वनाम→संज्ञा

उसमें बड़ी मैं आ गई है।

६२१३ सर्वनाम→विशेषण

वह लड़का नहीं आया।
उस दिन कोई नहीं पढ़ा।

६२१४ विशेषण→संज्ञा

तुम्हारी तो बात ही क्या, मैंने बड़े बड़े देखे हैं।
आप हमारे बुजुर्ग हैं।

६२१५ संज्ञा→क्रियाविशेषण

वह शीघ्रतासे चला गया।
मैं तेजीसे भागा।

६२१६ वर्तमानकालिक कृदन्त→विशेषण

चलती चाकी देखकर दिया कबीरा रोय।
मैं उड़ती चिड़िया पहचानता हूँ।

६२१७ वर्तमानकालिक कृदन्त→क्रियाविशेषण

गाड़ी चलती जा रही है।
जट निरन्तर उड़ता जा रहा है।

६२१८ भूतकालिक कृदन्त→विशेषण

गया समय हाथ नहीं आता।
आँखों देखी ( ) मानता हूँ कानों सुनी ( ) नहीं।

६ २ १ ९ भूतकालिक कृदन्त→क्रियाविशेषण

मैं तुम्हे देखा करता हूँ।
पूर्णिमाको समुद्रमे ज्वार उठा करता है।

६ २ १ १० क्रियार्थक सज्ञा→सज्ञा

मुझे उसका देखना अच्छा लगता है।
वह किसीका खाना पसन्द नहीं करता।

६ २ १ ११ क्रियार्थक सज्ञा→विशेषण

वह जानी-पहचानी मूरत पुन दिखाई न दी।
अनजाने व्यक्तिका कोई विश्वास नही।

६ ३ समस्त पद

अपनी देख रेख बनाए रखना।
मेरा हर बातका लेखा-जोखा रखना तुम्हारा अधिकार है।
मेरी उठ-बठ अपने समान व्यक्तियोंके साथ है।

उपयुक्त प्रयोगोमें देख रेख, लेखा-जोखा, उठ-बठ नामपदमूलक प्रयोग हैं। इनका समष्टिगत अर्थ योजक तत्त्वोंके व्यष्टिगत अर्थसे भिन्न है। पहले प्रयोगमे देख रेख का अर्थ है ख्याल रखना दूसरे प्रयोगमे लेखा-जोखा का सम्बन्ध हिसाब रखनेसे नही वरन काम धन्धेका पूरा विवरण रखनेसे है। तीसरे प्रयोगमे उठ-बठ का सम्बन्ध उठने-बठनेकी क्रियासे नही है वरन परिचय अथवा मेल से है।

६ ४ वाक्यांश

६ ४ १ सज्ञामूलक

कौआ और मनुआकी मिली भगत है।
उसका जीवन एक खुली पुस्तक है।

उपयुक्त प्रयोगोमे मिली भगत का सम्बन्ध मेल और भक्ति से नही है इस प्रयोगसे किसी षडयन्त्रकी गध आती है। इसी प्रकार खुली पुस्तक प्रयोग इस बातका सकेत कर रहा है कि उसके जीवनमें कोई रहस्यात्मकता नही है तथा उसका अन्तर्बाह्य सर्वथा एक समान है।

६४२ क्रियामूलक

उसने गिर-पड़कर दसवीं कक्षा पास कर ली।

वह ले देकर किनारेपर पहुँचा।

मुसीवतके दिन हँस-खेलकर गुजार देने चाहिए।

रो धोकर पीछे पड़ गई कि मुझे भी साथ ले चलो।

उपयुक्त प्रयोगोंमें गिर-पड़कर ले देकर, हँस-खेलकर और रो धोकर क्रिया मूलक प्रयोग है। इनका समष्टिगत अर्थ योजक-तत्त्वोंके व्यष्टिगत अर्थोंमें भिन्न है। पहले प्रयोगमें गिर-पड़कर का अर्थ है किसी प्रकारसे, दूसरे प्रयोगमें ले देकर से तात्पर्य है जैसे तैसे, तीसरे प्रयोगमें हँस-खेलकर का अर्थ है प्रसन्नता पूर्वक और अन्तिम प्रयोगमें रो धोकर से अभिप्राय है कभी दुखी होकर कभी प्रार्थना करके। ये विशिष्ट अर्थान्वित प्रयोग रचनात्मक दृष्टिसे पूर्वकालिक कृदन्त बना रहे हैं, परन्तु इनके मुख्य नियोजक-तत्त्व अपना मौलिक अर्थ खोकर एक नवीन अर्थका प्रतिपादन कर रहे हैं।

इस प्रकार, ये सभी प्रयोग संरचनात्मक अर्थमूलक योजक तत्वोंके हैं इनमें अर्थमूलकताका प्राधान्य है तथा ये रूढ व्याकरणिक स्थितिसे भिन्न हैं। ऐसे प्रयोगोंसे भाषामें अपेक्षित सजीवता और प्रभविष्णुता आ जाती है तथा भाषाका मूलभूत प्रयोजन सिद्ध हो जाता है।

६५ कालगत अर्थमूलक संरचनाएँ

हिन्दी संरचनामें कालगत अर्थमूलक तात्त्विक योजनाएँ भी पाई जाती हैं।

मैंने वह कार्य अभी समाप्त किया है।

इस वाक्यमें समाप्त किया है भूतका प्रयोग है। अभी तात्कालिक वर्तमान द्योतक है। लेकिन इन दोनोंके एक साथ आनेसे तत्काल कार्य समाप्त करनेकी सूचना देना मुख्य अभिप्रेत है। यद्यपि अभी निकटतम वर्तमानका द्योतक है तथापि यहाँ इसका प्रयोग भूतान्वितिकी दृष्टिसे ही हुआ है।

मैं यह काय बम कल ही खत्म करता हूँ।

इस वाक्यमे खत्म करता हू व्याकरणिक दृष्टिम वतमानकालिक प्रयाग है लेकिन इसका अथ भविष्यकालिक है। सम्पूण वाक्यका अर्थ है मैं कल (तक) यह काम अवश्य कर लूगा। न यहा बस का अथ हो चुका अथवा समाप्त है न करता हू का अथ वतमानम करना है।
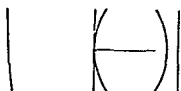
मैं आज आपके मकानपरतीन बार जा चुका हूँ पर आपस भेंट न हो सकी।

इस वाक्यम पहला प्रयाग जा चुका हू व्याकरणिक दृष्टिस पूणभूतका प्रयाग है जिमस निकटतम भूतम क्रियाकी समाप्तिका अथ निकलता है। पर साथ ही यह अथ भी ध्वनित है कि प्रयागान्तगत काई आकाक्षा है जा दाय भागम पूरी हुई है। वाक्यके दूसर भागम हो सकी शुद्ध भूतकालिक प्रयोग है। लेकिन इसका अथ सवथा वतमानकालिक है।

भूत० वत० भवि०

१

2
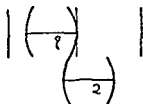
मैं दिन भर रोता रहा हूँ।

इस वाक्यम रोता रहा हूँ म भूतसे काय आरम्भ होकर वतमान तक चल आनेका भाव निहित है। रहा का प्रयाग नैरन्तयका अथ देता है। लकिन इस प्रयागसे निकटतम वतमानम काय समाप्तिका अथ व्यजित है।
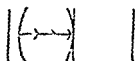
अब मुझे आप बहुत अच्छे लगने लगे।

इस वाक्यमें लगने लगे व्याकरणिक दृष्टिसे भूतकालिक प्रयोग है लेकिन अर्थ में आनेसे लगते हैं या लग रहे हैं अर्थ व्यंजित हो रहा है।
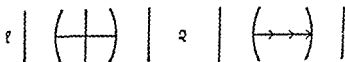
मैं परसों जा रहा हूँ।

इस वाक्यमें जा रहा हूँ व्याकरणिक दृष्टिसे निरन्तरताबोधक वर्तमानकाल का प्रयोग है लेकिन परसों के आ जानेसे यह प्रयोग भविष्यकालमें होनेवाली क्रियाके पूर्व निश्चयका बोध करा रहा है।
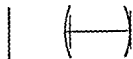
तुम्हें मैं जन्म जन्मान्तरसे जानता हूँ।

इस वाक्यमें जानता हूँ व्याकरणिक दृष्टिसे वर्तमानकालिक है लेकिन अर्थ की दृष्टिसे यह रचना सुदूर भूतसे वर्तमान तकका अर्थ दे रही है अर्थात् मैं जन्म जन्मान्तरसे जानता चला आ रहा हूँ। इस प्रकार प्रस्तुत प्रयोग संरचनात्मक दृष्टिसे भिन्न होते हुए भी नैरन्तर्य बोधक है।

मैं बताता हू कि मैं रातको क्या करता हू ।

इस वाक्यमे बताता हूँ व्याकरणिक दृष्टिसे वतमानकालिक है किन्तु निरट तम भविष्यमे काय सम्पन्न होनेकी सूचना दे रहा है। इसी वाक्यके परार्द्ध मे करता हूँ प्रयोग व्याकरणिक दृष्टिसे वतमानकालिक है लकिन इससे स्वभाव अथवा रोजदिन कायक्रमका बोध होता है। इसमे भूतकालसे चले आनवाली निरन्तरताके बोधके साथ-साथ भविष्यमे भी उस कायके होते रहनेकी सम्भावना अभिव्यजित है।
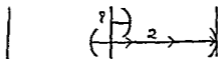
अभी यह काम करना होगा।

इस वाक्यमे करना होगा व्याकरणिक दृष्टिसे भविष्यकालका बोधक है लेकिन सरचनात्मक दृष्टिसे वतमानमे ही काम समाप्त करनेका आदेश इसमे निहित है।
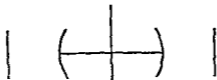
मैंने अंग्रेजी पढ़ी है और अब भी पढ़ता हूँ।

इस वाक्यके पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दो भाग हैं । पूर्वार्द्ध मे पढ़ी है क्रियासे व्याकरणिक दृष्टिसे वतमानकालका बोध होता है किन्तु सरचनात्मक दृष्टिसे

भूतकालमें कार्य सम्पन्न होगा। उत्तरार्द्धमें भी पढ़ता है प्रयोग व्याकरणिक दृष्टिसे वर्तमानकालिक प्रयोग है किन्तु संरचनात्मक दृष्टिसे इससे भविष्यका बोध होता है।

मैं अब जाऊँगा।

इस वाक्यमें जाऊँगा व्याकरणिक दृष्टिसे भविष्यकालकी क्रिया है किन्तु संरचनात्मक दृष्टिसे वर्तमानमें कार्य होनेकी ओर संकेत है।

इस प्रकारकी विशिष्ट कालगत अर्थ विच्छित्तिसे हिन्दीकी अभिव्यंजना शक्ति को विशेष बल मिला है।

६.६ विशेष प्रयोग

यहाँ कतिपय अन्य संरचनात्मक विशेषताओंका उल्लेख किया जा रहा है जिनमें व्याकरणिक दृष्टिसे नियोजक तत्त्वोंका समष्टिगत अर्थ कुछ भी हो लेकिन संरचनात्मक दृष्टिसे इनका अर्थगतमूल्य भिन्न ही होता है। जीवनमें अभिशाप, वरदान, अपशब्द (गालियाँ) आदि प्रयोगोंका अपना अलग महत्त्व है। इन सभीके नियोजक तत्त्वोंका एकार्थक अथवा व्याकरणिक अर्थ कुछ भी हो, इनका संरचनात्मक अर्थ भिन्न होता है।

६.६.१ अभिशाप

उसका बुरा हो।
वह अन्धा कोढ़ी हो।

उपयु क्त प्रयागाम **बुरा अच्छा** का विपरीत अथ रखनेवाला नही है। यदि हम उसका **अच्छा हो** प्रयाग करें ता वह अभिशापके विपरीत वरदानका प्रयाग नही बन पाएगा। साथ ही वह काई प्रयाग ही नही हागा। यहा **बुरा हो** म उसके लिए जो भी **अशुभ हो सकता है** वह सब कुछ निहित है। ऐसी स्थितिम **बुरा हो** प्रयाग सरचनात्मक अथमूलक तत्त्वाकी दष्टिसे सशक्त प्रयाग है। इसी प्रकार दूसरे प्रयाग **वह अधा कोढी हो** म **अधा** और **कोढी** प्रयाग निहित दयाभावसे रहित है अर्थात अधे एव कोढी व्यक्तिकेलिए मनम जो सवदना होनी है वह नही है। वरन अभिशाप देकर अधत्व और कुष्टत्व जनित पीडाकेलिए आकाक्षा है। व्याकरणिक दष्टिसे शुद्ध प्रयोग होना वह अधा भी हा जाए और काढी भी हा जाए लेकिन इस प्रयागम उस प्रकारकी तीव्रता न होती जा उपयु क्त अभिशापमूलक प्रयागमे पाई जाती है।

६ ६ २ अपशब्द

उल्लूका पट्ठा
गधेका बच्चा

उपयु क्त अपशब्द अपना मौलिक अथ खा उठे हैं। प्रथम दा प्रयागाम लक्षित व्यक्तिपर काई प्रभाव नही पडता, वरन क्रमश गुरु और पिताका उल्लू और गधे की उपाधिस विभूषित किया जाता है। पट्ठे और बच्चे के साथ उल्लू और गधे का व्यक्तिगत सम्बध नही रहता। इसके अतिरिक्त सम्बाधित व्यक्ति न ता अभिधात्मक दृष्टिसे उल्लू नामक पक्षीका पट्ठशिष्य हाता है और न गधे सज्ञक पशुका वत्स। लाक्षणिक प्रयागामे सरचनाम निहित अथ ही बदल जाता है।

६ ६ ३ वरदान

जुग जुग जियो बेटा!
दूधो-नहाओ पूतों फलो।

इन प्रयोगाम प्रथमम लक्षित व्यक्तिके दीर्घायुष्यकी कामना है और दूसरेम सब प्रकारसे सुखी और सम्पन्न हानेकी। न तो वरदाताका अभिप्राय अक्षरश यह होता है कि वह पौराणिक युग-सम्बधी कल्पनाका साकार करना चाहता है न यह कि सम्बद्ध व्यक्ति दूधमे नहाए और पूतासे फल। इसमे नहाना और पूतोंसे फलना लाक्षणिक प्रयाग हैं जिनम सुख और समृद्धिमूलक अथ व्यजित होता है। यदि हम वरदानके उत्तराद्ध पर विचार करें ता रचनाकी दष्टिम इसम हम अथ-सम्बधी दोष दिखाई पडता है। यह प्रयाग व्याकरणिक दृष्टिसे शुद्ध हाते

भूतकालमें कार्य सम्पन्न होनेका। उत्तरार्द्धमें अब भी पढ़ता है प्रयोग व्याकरणिक दृष्टिसे वर्तमानकालिक प्रयोग है, लेकिन संरचनात्मक दृष्टिसे इससे निरन्तरताका बोध होता है।

मैं अब जाऊँगा।

इस वाक्यमें जाऊँगा व्याकरणिक दृष्टिसे भविष्यकालकी क्रिया है किन्तु संरचनात्मक दृष्टिसे वर्तमानमें कार्य होनेकी ओर संकेत है।

इस प्रकारकी विशिष्ट कालगत अर्थ विच्छित्तिसे हिन्दीकी अभिव्यंजना शक्ति को विशेष बल मिला है।

६.६ *विशेष प्रयोग*

यहाँ कतिपय अन्य संरचनात्मक विशेषताओंका उल्लेख किया जा रहा है जिनमें व्याकरणिक दृष्टिसे नियोजक तत्त्वोंका समष्टिगत अर्थ कुछ भी हो लेकिन संरचनात्मक दृष्टिसे इनका अर्थगतमूल्य भिन्न ही होता है। जीवनमें अभिशाप, *वरदान अपशब्द (गालियाँ) आदि प्रयोगोंका अपना अलग महत्त्व है।* इन सभीके नियोजक तत्त्वोंका एकान्तिक अथवा व्याकरणिक अर्थ कुछ भी हो इनका संरचनात्मक अर्थ भिन्न होता है।

६.६.१ अभिशाप

उसका बुरा हो।
वह [illegible] कोढ़ी हो।

उपर्युक्त प्रयोगोंमें **बुरा अच्छा** का विपरीत अर्थ रखनेवाला नहीं है। यदि हम उसका **अच्छा हो** प्रयोग करें तो वह अभिशापके विपरीत वरदानका प्रयोग नहीं बन पाएगा। साथ ही वह कोई प्रयोग ही नहीं होगा। यहाँ **बुरा हो** में उसके लिए जो भी **अशुभ हो सकता है** वह सब कुछ निहित है। ऐसी स्थितिमें **बुरा हो** प्रयोग सर्वनामात्मक अर्थमूलक तत्त्वकी दृष्टिसे सशक्त प्रयोग है। इसी प्रकार दूसरे प्रयोग वह **अन्धा कोढ़ी हो** में **अन्धा** और **कोढ़ी** प्रयोग निहित दयाभावसे रहित हैं अर्थात् अन्ध एवं कोढ़ी व्यक्तिके लिए मनमें जो सवेदना होती है वह नहीं है। वरन् अभिशाप देकर अन्धत्व और कुष्टत्व जनित पीड़ाके लिए आकांक्षा है। व्याकरणिक दृष्टिसे शुद्ध प्रयोग होगा वह अन्धा भी हो जाए और कोढ़ी भी हो जाए, लेकिन इस प्रयोगमें उस प्रकारकी तीव्रता न होगी जो उपर्युक्त अभिशापमूलक प्रयोगमें पाई जाती है।

६ ६ २ अपशब्द

उल्लूका पट्ठा
गधेका बच्चा

उपर्युक्त अपशब्द अपना मौलिक अर्थ खो बैठे हैं। प्रथम दो प्रयोगोंमें लक्षित व्यक्तिपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, वरन क्रमश गुरु और पिताको उल्लू और गधे की उपाधिमें विभूषित किया जाता है। पट्ठे और बच्चे के साथ उल्लू और गधे का व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं रहता। इसके अतिरिक्त सम्बोधित व्यक्ति न तो अभिधात्मक दृष्टिसे उल्लू नामक पक्षीका पट्टशिष्य होता है और न गधे मनक पशुका वत्स। लाक्षणिक प्रयोगोंमें सर्वनाम निहित अर्थ ही बदल जाता है।

६ ६ ३ वरदान

जुग जुग जियो बेटा!
दूधो-नहाओ पूतों फलो।

इन प्रयोगोंमें प्रथममें लक्षित व्यक्तिके दीर्घायुष्यकी कामना है और दूसरेमें सब प्रकारसे सुखी और सम्पन्न होनेकी। न तो वरदाताका अभिप्राय अक्षरश यह होता है कि वह पौराणिक युग सम्बन्धी कल्पनाको साकार करना चाहता है न यह कि सम्बद्ध व्यक्ति दूधसे नहाए और पूतोंसे फले। इसमें नहाना और पूतोंसे फलना लाक्षणिक प्रयोग है जिनसे सुख और समृद्धिमूलक अर्थ व्यंजित होता है। यदि हम वरदानके उत्तरार्द्ध पर विचार करें तो रचनाकी दृष्टिसे इसमें हमें अर्थ सम्बन्धी दोष दिखाई पड़ता है। यह प्रयोग व्याकरणिक दृष्टिसे [illegible]

६ ८ ५ साधारण वाक्य→मिश्रवाक्य

जब साधारण वाक्यमे निहित अर्थको व्यक्त करनेके लिए मिश्र अथवा संयुक्त वाक्योंकी रचना होती है, तब मूलमे निहित भाव अथवा विचारकी छाया मात्र रह जाती है। वहाँ मूल अर्थ यथावत अभिव्यक्त नही हो पाता।

उससे दिल्ली जाने को कह देना। (साधारण)

उससे कह देना कि वह दिल्ली चला जाए। (मिश्र)

साधारण वाक्योमे जो अर्थ निहित है वह पूर्णरूपेण उससे बने मिश्रवाक्यमे नही आ पाया है।

तुम्हारे लिए इतना पढना उचित नही। (साधारण)

तुम्हारे लिए यह उचित नही है कि तुम इतना पढो। (मिश्र)

इन प्रयोगोमे मूलभूत अर्थ एक होते हुए भी अर्थमूलक पूर्ण समानता नही है। पहले प्रयोगमे इतना पढनेके अनौचित्यकी ओर सकेत है, दूसरे प्रयोगमे 'यह उचित नहीं है', पर विशेष बल है।

६ ८ ६ संयुक्त वाक्य→मिश्रवाक्य/साधारणवाक्य

तुमने कहा और वह चला गया।

मैं बैठा और तुम उठ खडे हुए।

उपर्युक्त संयुक्त वाक्योंको मिश्र अथवा साधारण वाक्योमे रूपान्तरित किया जा सकता है। पहले वाक्यको इस तरह रखा जाए तो वह क्रमश मिश्र और साधारणका रूप ग्रहण कर लेगा।

ज्योही तुमने कहा त्योही वह चला गया। (मिश्र)

तुम्हारे कहते ही वह चला गया। (साधारण)

ज्योही मैं बैठा त्योही तुम उठ खडे हुए। (मिश्र)

मेरे बैठते ही तुम उठ खडे हुए। (साधारण)

इन संरचनामूलक रूपान्तरोमे अर्थमूलक भेद स्पष्ट है।

६ ८ ७ परस्पर सम्बन्धहीन व्यवस्थावाले वाक्य

हिन्दीमे अर्थमूलक दृष्टिसे एक अन्य प्रकारके प्रयोग भी पाए जाते हैं इन्हे परस्पर सम्बन्धहीन व्यवस्थावाले वाक्य कहा जा सकता है। इस तरहके प्रयोग सहज अनुभूतिकी सहज अभिव्यक्तिके लिए बड़े महत्त्वपूर्ण होते हैं।

धरम रहना—यह मुश्किल कैसे हो सकेगा?

मैं उसे भूल जाऊँ यह कसे हो सकता है।

इन प्रयोगाम बडी शक्ति है। ध्वनित हानवाल अथ निषधात्मक सकल्पका वोध करा रह है।

सरचनाम अथमूलक तत्वाका व्याकरणेतर याजना हि॒दी-वाक्यका एक महत्त्वपूण तथ्य है। इस प्रकारकी याजनासे यह ध्वनित है कि शब्दभेदगत विभाजन उपकल्पित और प्रयागान्तगत है। अत यह आवश्यक प्रतीत हाता है कि व्याकरणकी उपलब्धियाका अधिक युक्ति युक्त पुनराख्यान हो।

७
विशेष रचनाएँ

भाषाका मुख्य प्रयोजन परस्पर विचार विनिमय है। सामान्य प्रचलित रचनाओंके अतिरिक्त भाषामें कुछ विशेष प्रकारके प्रयोग भी पाए जाते हैं। ये प्रयोग भाषाकी बोधगम्यता और प्रभविष्णुतामें बाधक नहीं होते। अपनी बातको वक्ता कभी ऐसे अपूर्ण वाक्योंमें कहता है जिनमें वाक्यके सभी अनिवार्य तत्त्व प्रत्यक्ष रूपमें नहीं होते, कभी उसके वाक्योंमें स्पष्टीकरणके लिए कुछ अधिक शब्दोंका प्रयोग होता है। पूर्वग्रहण और समानाधिकरण जैसी विशिष्ट रचनाएँ भी वक्ता अपने मन्तव्यको सुबोध बनानेके लिए प्रयोगमें लाता है। भाषामें एक अन्य प्रक्रिया कार्य करती है। प्रयोक्ता अपनी मानसिक स्थितिके अनुरूप धारा-वाहिक रूपसे प्रयोग करता है। बदलती हुई मन स्थितिके साथ व्यक्त भाषामें भी कभी स्वीकार और कभी अस्वीकारके भाव व्यक्त होते हैं। इस उलझी मन स्थितिमें वक्ताका अन्तिम निर्णय निश्चित करनेका प्रयास भी किया गया है। लोप, परिहार्य प्रयोग पूर्वग्रहण समानाधिकरण और मीमांसाके शीर्षकके अन्तर्गत भाषाकी इन विशेष रचनाओंका विवेचन किया जा रहा है।

७ १ लोप

लोपमूलक रचनाएँ स्पष्ट करती हैं कि व्याकरणिक व्यवस्थाकी अपेक्षा सामाजिक बोधगम्यतापर भाषा अधिक निर्भर है। कुछ वाक्य देखनेमें एक-एक पदके रूपमें होते हैं। ये लोपमूलक वाक्य होते हैं। वाक्यके अनिवार्य तत्त्व इनमें अदृश्य रूपसे विद्यमान रहते हैं। लोपकी दो प्रकृतियाँ हैं।

७ १ १ लोपकी प्रकृतियाँ

हिन्दीमें कुछ लोपमूलक प्रयोग स्वत अनुमित होते हैं और कुछ प्रसंगानुमित।

७ १ १ १ स्वत अनुमित

हटो । (तुम)
उठो । (तुम)
बठो । (तुम)
जाऊँ । (मैं)
रुकोगी । (तुम)
बधाई । (तुमको/आपको)

७ १ १ २ प्रसगानुमित

हा ।
नही ।
अच्छा ।
सच ।
झूठ ।

य सभी एकपदीय वाक्य प्रसगानुमित ह ।

हा—सुरक्रममूलक हानपर विधान प्रश्न विस्मय सन्देह आदि कोई भी अथ दे सकते है । इसकी अथमूलक स्थिति प्रसगपर निभर है ।

नहीं—एक आर जहाँ यह सामान्य निषधमूलक है वहा दूसरी आर वक्ताके अपन कथनकी पुष्टिके लिए भी हा सकता है ।

अच्छा—इसकी स्थिति उसी प्रकारकी है जिस प्रकारकी हा की है ।

सच—इसम विस्मय और प्रश्नमूलक भाव हैं । साथ ही यह प्रयोग सहज स्वीकृतिमूलक भी हो सकता है । इसका एकप्रयोग प्रश्नकर्तके मनमे उठे सन्देह अथवा सशयके निवारणाथ भी सम्भव है ।

झूठ—इसकी स्थिति सच जसी है । इन दोनोम वही अन्तर है जो विरोधी भाववाले शब्दोम हाना अनिवाय है ।

उपयु क्त विवरणसे स्पष्ट है कि एक एक पदवाल वाक्याका सम्बन्ध एका धिक प्रसगास जुडा है । एसी स्थितिम प्रसगबाध अनिवाय है अर्थात् जब-तक प्रसगका निश्चय नहीं हा जाता तब तक इन वाक्याके सही अर्थोंका अनुमान सम्भव नही है । इसीलिए य प्रयोग प्रसगानुमित एकपदीय प्रयोग हैं ।

७ १ २ सन्निध्यमूलक पद

हिन्दी वाक्य रचनाम सान्निध्यमूलक पदोंके प्रयोगसे भी अथ बोध सम्भव होता है। क्रिया लुप्त रहनेपर भी वाक्यके महत्त्वपूर्ण नामपदोंक प्रयोगसे ही सम्पूर्ण अथवा बोध हो जाता है।

सुमन कुर्ता।

एक टिकट कानपुर।

पहल वाक्यम प्रयोक्ताकी दृष्टिसे सुमन सम्बोध्य पद और कुर्ता अभिवाछित पद है। दूसरे वाक्यम अभिवाछित पद है—एक टिकट और कानपुर। पहल वाक्यका पूर्ण रूप होगा सुमन! मेरा कुर्ता लाओ। दूसरे वाक्यका पूर्ण रूप होगा बाबूजी! मुझे एक टिकट कानपुरका दीजिए। ये दोनों वाक्य विशेष प्रसगाम स्वत अनुमित हैं।

७ १ ३ व्याकरणिक लोप

लोपका विशिष्ट महत्त्व हिन्दी वाक्य रचनाम व्याकरणिक लोपोंकी दृष्टिसे है। लोपका प्रयोग वहीं विहित है जहाँ अर्थ बोधम किसी प्रकारकी कठिनाई न हो। यह तभी सम्भव है जब व्यक्त पद अथवा पदसमूह किसी बहुश्रुत अथवा बहुप्रयुक्त प्रयोगका भाग होता है। हिन्दीम बहुतसे व्याकरणिक लोप सम्भव है। ये व्याकरणिक लोप दो प्रकारके है—स्वत अनुमित और प्रसगानुमित।

७ १ ३ १ स्वत अनुमित

पद लोप

( ) कहते हैं कि आज वर्षा होगी। (ज्योतिषि)

( ) तुरन्त जाता हूँ। (मैं)

( ) चले जाओ। (तुम)

वह आया और ( ) गया। (वह)

वह ( ) बहुत पीता है। (शराब)

मैं ( ) बहुत पढ़ता हू। (किताबें)

अपनी ( ) कहो। (बात)

कौन ( ) ? (है)

दूरके ढोल सुहावने ( )। (होते हैं)

हरि वाला ( ) मोहन आया है। (कि)

( ) आप आज्ञा दें, तो एक बात कहूँ। (यदि)

परसग लोप

वह घर ( ) है। (पर)
क्ल रात ( ) नीन्द नही आई। (को म)
आखा ( ) दखी मानता हूँ काना ( ) सुनी नन्ी। (स) (स)

वाक्यांश लोप

मैं नैहनीका रहन वाला हूँ और आप ( ) ?
(वहाके रहन वाले हैं)
तुम जोरसे बात मक्ती हो पर वह ( ) नही ( )।
(जोरसे) (बोल सकता)

७ १ ३ २ प्रसगानुमित

पद लोप

( ) जा रहा है (मोहन व्न)
अभी ( ) पन्ेगा। (वह लडका)
मैंन ( ) खा ली। (रोटी न्वाई)
हमन ( ) पन् लिया। (पत्र ग्रथ)
( ) टून् लना। (गायका बकरीका)
क्या ? (चान्ति करगा कन्त ना है आदि)
किसकी ? (बनी है रन्ी है चनी है आन्ि)

सवादान्तगत पद लोप

क्या गोविन्द जाता है ?
हा ( ) जाता है।
तुम चलाग ?
हाँ ( ) चनूगा।
क्या जनता प्रसन्न है ?
नही ( ) प्रसन्न नहा है।
पढ़ना हा चुका ?
हाँ ( ) ना चुका।

सोना नहीं हो सका।
हाँ (   ) नहीं हो सका।
क्या घडी खरीदी है।
हाँ (   ) खरीदी है।
क्या गिलास टूट गया ?
हाँ (   ) टूट गया।
क्या लकडी कट रही है ?
हाँ (   ) कट रही है।

समस्त पद लोप

क्या अमीर गरीब सब खुश है ?
नहीं (   ) सब खुश नहीं है।
क्या आम-जामुन दोनो मीठे हैं ?
हा (   ) दोनो मीठे है।
तुमने धनी मानी देखे है ?
हा हमने (   ) देखे है।
प्याले प्लेट सब टूट गए ?
हा (   ) सब टूट गये।

वाक्यांश लोप

क्या पाँचो ही बुरे नौकर निकाल दिए गए ?
हा (   ) निकाल दिए गए।
उसकी करनी देखी है ?
हाँ (   ) देखी है।
कोई अपनोका बुरा सोचता है ?
नही कोई (   ) नही सोचता।
पुस्तकें पढनी बन्द कर दी हैं।
हाँ (   ) बन्द कर दी है।
तुमने जो कुछ देखा अनाविल भावसे प्रकट कर दिया ?
हा मैंने (   ) अनाविल भावसे प्रकट कर दिया।
क्या तुमने प्राणोंकी बाजी लगाकर देश रक्षाका व्रत लिया है ?
हाँ मैंने (   ) लिया है।

क्या सेनाका बढना रुक गया ?
हा ( ) रुक गया।
क्या खूब पढोगे ?
हा ( )।
कौन सबसे तेज भागा ?
मोहन ( )।

उपवाक्य लोप

उसने इतना पढा कि । (सज्ञा उपवाक्य)
जो कहोगे । (विशेषण उपवाक्य)
अगर मैं प्रधानमन्त्री होता तो । (क्रियाविशेषण उपवाक्य)

वाक्य लोप

वह कल जाएगा ?
हा ( )। (वह कल जाएगा।)
तुम्हे अभी चलना है।
अच्छा! ( )। (अभी चलता हूँ।)
तुम नही जा सकते।
क्यों? ( )। (मैं क्या नही जा सकता ?)

७ १ ४ अवशिष्ट पद

प्रश्नोत्तर या सवाद कालमे स्वतअनुमित और प्रसगानुमित लोपसे इतर एक दूसरे प्रकारका लोप विधान भी पाया जाता है। प्रश्नका उत्तर देते हुए वाक्यका सबसे महत्त्वपूर्ण पद ही अवशिष्ट रह जाता है।

कौन जा रहा है ?
मोहन!
आज क्या खाया ?
रसगुल्ला।
लडकी कैसी है ?
बहुत भली।
यह घडी किसकी है ?
मेरी।

हाथमें क्या है ?
पुस्तकें।

७.२ परिहार्य प्रयोग

७.२.१ अधिकशब्द प्रयोग

प्रयोजनानुरूप भाषागत प्रयोग भी अनेक होते हैं। जहाँ लोप हिन्दी भाषाकी विशेषता है वहाँ अधिकशब्द प्रयोग भी हिन्दीमें पाये जाते हैं। श्रोताकी संदिग्ध बोध-क्षमताके कारण वक्ता प्रायः ऐसा प्रयोग करता है।

हमारे गाँवमें जुलाहोंके बहुत घर हैं। कपास बहुत पैदा होती है न, इसीलिए जुलाहोंके बहुत घर हैं।

इस प्रयोगमें जुलाहोंके बहुत घर वाक्यांशकी द्विरुक्ति हुई है।

७.२.२ स्पष्टीकरण

जब प्रयोक्ताको ऐसा अनुभव होता है कि उसका मन्तव्य अभिवाञ्छित ढंगसे स्पष्ट नहीं हो रहा है तब वह पर्यायवाची शब्दोंका एकाधिक बार प्रयोग करता है। भावावेगमें अथवा बल देनेके लिए भी ऐसा होता है।

मेरा तुम्हारा सम्बन्ध अटूट है अर्थात् हम तुम सदा अभिन्न रहेंगे, एक रहेंगे।

मानकि दृष्टिसे ऐसे प्रयोगमें कोई अन्तर नहीं है। लेकिन प्रयोजनको अधिक बलके साथ व्यक्त करनेके हेतु इनकी आवश्यकता निर्विवाद है। ये प्रयोग अवरोहमूलक होते हैं।

७.२.३ अपशैली

असावधानताके कारण कभी-कभी कुछ ऐसे प्रयोग दिखाई पड़ते हैं जिन्हें अच्छा नहीं माना जा सकता।

वह बड़ा सज्जन आदमी है।

सायंकालके समय देर तक घूमना ठीक नहीं।

ऐसे प्रयोगोंमें अपशैली दृष्टिगत होते हैं। सज्जन कहनेके उपरान्त आदमी कहनेकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि सज्जनमें ही आदमीका भाव निहित है। इसी प्रकार सायंकाल कहनेके बाद समय कहनेकी कोई अपेक्षा नहीं है।

७ २ ४ अतिरिक्त प्रयोग

वलाघित शलीका एक स्वाभाविक साधन द्विरक्ति ह। कुछ क्रियाआम अथवा प्रयोगाम करण भाव अथवा मन्तव्य निहित रहता है। फिर भी हम बल दनेकेलिए इस प्रकारके प्रयाग अचतन भावस करते रहते ह।

मनस विचारो।
आखस देखो।
मुहस बालो।
कानसे सुनो।

इन सब प्रयागाम विचारा, दखा सुना, बालाम करण भाव छिप है। विचारना मनस ही हाता है दखना आखस बालना मुहस और सुनना कानस हाता है। इसलिए मन आख, कान, मुह अतिरिक्त प्रयोग हैं।

जब तक आना न हा कोई विद्यार्थी भीतर न आए सब बाहर रह।

तुम्ह वहाँ पहुचना है, पहुचोगे न !

इन प्रयोगाम ऐंटिक अश समानार्थी ह। व्याकरणिक दृष्टिस पहल प्रयागम भीतर न आए कहनेक उपरान्त बाहर रहें कहनकी कोइ आवश्यकता नही। इसी प्रकार दूसर प्रयागम पहुँचना है कहनके उपरान्त पहुँचोगे न अनावश्यक है किन्तु अपेक्षित प्रभावकी दृष्टिस य प्रयाग अनिवाय ह।

७ ३ पूर्वग्रहण

जस-जस व्याकरणकी सकीण प्राचीर ढहती जा रही है, वस-वस लाक मानसकी सहज चिन्तनपद्धति और तदवत अभिव्यजना शलियाका समावेश साहित्यमे ग्राह्य हाना जा रहा है। लाक कथाकाराक बाच एक विशिष्ट शला प्रचलित दिखाई पडती है। प्रत्यक श्राताका पूवकथनस परिचित करानकलिए लाक कथाकार पूवग्रहणमूलक पद्धतिका प्रयाग सहजभावस करता चला आ रहा है। सामान्यतया पूर्वोक्त वाक्यका उत्तराद्ध परवित वाक्यका पूर्वाद्ध बन जाता है।

वह जागता था दानिकी हँसीसे उस हँसीमे कुछ था जा चावा दता था।

अकला समाज ही नही जीवन आमूल दूषित है सब कुछ आमूल दूषित—

दूषित और सडा हुआ विरुद्ध लडनेकेलिए कुछ भी नहीं है।

उपयु क्त प्रयोगाम एटिक अश पूवग्रहणक हैं। इन प्रयोगास यह बात हा जाता है कि लेखकक मानसिक चिन्ता अथवा उद्वलाक मूलम कौनसा तत्त्व

क्रियाशील है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासोंका ग़लाम यह विशेषता निरन्तर बढ़ती जा रही है। अपक्षित प्रभाव और प्रयणीयनाकी दृष्टिसे यह शैली निश्चय ही विशेष महत्त्वपूर्ण है।

७ ४ समानाधिकरण

समानाधिकरणका प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा तथा पुरुषवाचक सर्वनामोंमें पाई जानेवाली अस्पष्टताके निवारणार्थ होता है। व्यावहारिक दृष्टिसे ये मुख्य पदके व्याख्या अथवा स्पष्टीकरणमूलक प्रयोग होते हैं। इनके प्रयोगसे भाषाके लाघव अथवा उसके कसावमें थोड़ी बहुत कमी भले ही आ जाए पर अभिप्राय स्पष्ट हो जाता है। निस्सन्देह भाषामें लाघव एवं कसावकी अपेक्षा है पर स्पष्टता के मूल्यपर नहीं। समानाधिकरणका प्रयोग अविकारी और विकारी—दोनों रूपोंमें होता है। अविकारी अथवा विकारी रूपमें प्रयुक्त होनेपर इसके साथ या तो विशेषक चिह्न आते हैं या वाला के वचन अथवा लिंगानुसार प्रयोग। विकारी और अविकारी दोनों रूपोंमें शून्यरूपतत्त्वका प्रयोग भी होता है।

इन तत्त्वोंका प्रयोग मुख्य पदके बाद होता है। कभी कभी मुख्य-पद एवं समानाधिकरण पदके बीच तो भी, ही आदि अव्यय भी आते हैं।

७ ४ १ अविकारी प्रयोग

७ ४ १ १ बद्ध रूपतत्त्व

मोहन—श्यामलालका यहाँ रहता है।
श्याम—कानपुरवाला कल आया था।

७ ४ १ २ शून्य रूपतत्त्व

गोविन्दा—धोबी इस मकानमें रहता है।
अशोक—पंडित यहाँ नित्य आते हैं।

७ ४ २ विकारी प्रयोग

७ ४ २ १ बद्ध रूपतत्त्व

रामलाल—इलाहाबादवालेने रपट लिखाई है।
श्याम—छतरपुरवालेसे मेरा सदेश कह देना।

७ ४ २ २ शून्य रूपतत्त्व

हमने अविनाश—प्रोफेसर घरपर देखे।
उन्होंने मधूलिका—अध्यापिका भेजी है।

७ ४ ३ बलात्मक

७ ४ ३ १ तो+अन्य विभेदक

गोविन्दा तो धोबीवाला है।
घर तो पुरानावाला है।

७ ४ ३ २ भी+सम्मिलन कर्ता

कलुआ भी नाईवाला है।
घर भी नयावाला है।

७ ४ ३ ३ ही+विभेदन कर्ता

मनोषा ही दिल्लीवाली है।
बबलू डबलू ही पढनेवाले हैं।

७ ५ मीमांसना

मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है। उसके चिन्तनमें एक क्रम रहता है भले ही व्यक्त चिन्तनमें क्रमका अभाव या असंगति दिखाई पड़े। चिन्तन क्रम-सापेक्ष होनेके कारण सम्बद्ध व्यक्तिके चरित्रके अनुरूप कभी सर्वथा एक दिशामें अग्रसर होता है, कभी उसकी गतिमें पुरोगामिता तथा पश्चगामिता रहती है। ऐसा भी होता है कि मनुष्य आत्म स्वीकृति और आत्म निषेधकी प्रवचनाके बीचसे अपनी वैयक्तिक चिन्तन धाराको अग्रसरित करनेका प्रयास करता है। कुछ भी हो उसके कथनमें उसके चिन्तनकी पूर्वावस्था और पश्चावस्थाके बीज विद्यमान रहते हैं। अभिव्यक्ति पक्षका सूक्ष्म-अध्ययन करनेसे उपयुक्त तथ्योंका निर्विकल्प प्रमाण मिल जाता है। वाक्य मनुष्यकी भाषागत अभिव्यक्तिका एक महत्त्वपूर्ण उपादान है। किसी प्रसंग विशेषमें पाए जानेवाले वाक्योंके अध्ययनसे उनमें निहित प्रेरक बीज-तत्त्वोंका बोध हो जाता है।

७ ५ १ कथनोंमें सम्बन्ध

सामान्यतया कथनोंमें पारस्परिक सम्बन्ध तीन प्रकारका होता है—परस्पर विरोधी, क्रममूलक और परस्परपूरक।

७ ५ १ १ परस्पर विरोधी

तुम वहाँ चले जाना। अच्छा मत जाना, अब सब बेकार है।

उसे आत्म-हत्या कर लेनी चाहिए। पर आत्माकी हत्या कब होती है, इस शरीरकी ही हत्या होती है।

उपर्युक्त दोनों प्रसंगोंमें एकाधिक वाक्य हैं। इनकी अन्तर्व्यवस्थापर ध्यान देनेसे यह तथ्य सामने आता है कि पहले वाक्यमें निहित अर्थका विरोध दूसरे वाक्यमें निहित अर्थसे हो रहा है। पहले उदाहरणमें चले पर बलाघातसे प्रयोक्ताकी अन्यमनस्कता प्रकट हो रही है। यद्यपि वाक्यमें निहित वाचक शब्दप्रतीकोंके रूढ़ अर्थसे ऐसा कुछ अर्थ नहीं निकलता जिसके आधारपर यह कहा जा सके कि दूसरा वाक्य पहले वाक्यसे निस्सृत वाक्य है अथवा पहले वाक्यके अर्थकी पूर्ति दूसरे वाक्यमें हो रही है। यही स्थिति दूसरे उदाहरणसे स्पष्ट हो रही है। पहले वाक्यमें आत्म-हत्या करनेके लिए सुझाव है लेकिन दूसरे वाक्यमें स्पष्ट यह कथन है कि आत्माकी हत्या नहीं होती। इस दृष्टिसे पहले सुझावमूलक कथनका दूसरे कथनमें विरोध हो रहा है। इन प्रसंगोंमें आत्महत्या पर विचार व्यक्त है। इसी बलाघातित प्रयोगमें ऐसा भाव निहित है जिसके आधारपर वक्ता अपने पूर्वकथनका विरोध करनेके लिए बाध्य है। इस प्रकार उसकी दूसरी उक्ति पहली उक्तिका निषेध करती है। लेकिन यह तथ्य विचारणीय है कि दोनों प्रसंगोंके पूर्वकथनोंमें परकथनोंके लिए संकेत है। ऐसी संरचनाओंके दो परिणाम होते हैं। या तो परस्पर विरोधी-कथनोंके परिणामस्वरूप निरन्तरताका अर्थ शून्यात्मक हो जाता है, या दोनोंमेंसे एक कथनका अर्थ सिद्ध ठहरता है। इन स्थितियोंको निम्नांकित सूत्र द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है—

हाँ + नहीं = ०
हाँ + नहीं = नहीं
नहीं + हाँ = हाँ

७ ५ १ २ क्रममूलक

वास्तवमें आत्महत्या हो ही नहीं सकती। यह शरीरकी हत्या होती है।

त्याग मापनेके लिए हरएक का **अपना-अपना** गज होता है। **यह गज होता है व्यक्तिका अपना त्याग या त्याग करनेकी क्षमता।**

जिस व्यक्तिका अन्तःकरण शुद्ध है उसकी अन्तरात्मामें **पुनीतभाव** संचित होते जाते हैं। **उनकी पुंजीभूत सुखानुभूतिमें** उसके व्यक्तित्वका सूक्ष्मरूप उसकी मृत्युके बाद पूर्णरूपसे निमज्जित होता है।

उपर्युक्त तीनों उदाहरणोंमें प्रथम वाक्यसे दूसरा वाक्य निकल रहा है। पहले वाक्योंमें ऐसे प्रेरकतत्त्व हैं जिनके प्रभावमें पश्चकथनोंकी सम्भावना हो रही है। ऐसी संरचनाओंमें स्थिति अर्थकी दृष्टिसे पुरोगामिता होती है। पहले उदाहरणमें आत्म-हत्याको अभिधामूलक निषेध दूसरे कथन **शरीरकी हत्या होती है** के लिए प्रेरकका कार्य करता है। यही स्थिति दूसरे और तीसरे प्रसंगोंमें है। दूसरे उदाहरणमें **अपना अपना गज होता है** प्रयोग प्रेरक है और **यह गज होता है— व्यक्तिका अपना त्याग** । कथन प्रेरित है। तीसरे उदाहरणमें पहले वाक्यमें आनेवाला वाक्यांश **पुनीत भाव** प्रेरक है और दूसरे वाक्यका मूल अर्थ-तत्त्व **उनकी (पुनीतभावोंकी) पुंजीभूत सुखानुभूतिमें उसके व्यक्तित्वका सूक्ष्मरूप** अंश प्रेरित हैं। इस प्रकारकी स्थिति निम्नांकित सूत्रके द्वारा दिखाई जा सकती है।

अ→ आ→ हां/नहीं

ऐसी संरचनाओंमें अर्थकी एक ही दिशा होती है। यह दिशा पूर्वकथनमें व्यक्त होकर अपनी प्रवृत्तिके अनुसार एक ही दिशामें बढ़ती चली जाती है।

७.५.१.३ परस्पर पूरक

कम्युनिस्ट तानाशाहीके शासनका सबसे बड़ा दावा यह है कि उनके देशमें **कोई भूखा नहीं मरता, कोई भीख नहीं मांगता और कोई बेकार नहीं है।**

व्यक्तिगत सम्बन्धोंके लिए **सिद्धान्तका खून नहीं किया जा सकता। जीवनसे सिद्धान्तका मूल्य कहीं अधिक है।**

परस्पर-पूरक कथनोंमें सजातीय शब्दावलीका प्रयोग होता है। इनके मूलमें यह भावना निहित होती है कि पूर्व कथनकी पुष्टि उसी प्रकारके कथनोंके द्वाराकी जाए। इन परस्पर-पूरक वाक्योंमें सम्बन्धका एक अन्तःसूत्र विद्यमान रहता है। पहले उदाहरणमें **कोई भूखा नहीं मरता** प्रयोग प्रेरक है। जब कोई भूखा नहीं मरता तो इसका अर्थ निकलता है कि उनके पास खानेका प्रचुर है। जिसके पास खानेका प्रचुर होता है उसके अभावग्रस्त होनेका प्रश्न भी नहीं उठता। भीख जैसे निकृष्ट कार्यको करनेकी फिर किसे आवश्यकता है। निश्चिन्त भी कार्य करते हैं

एकको भोजन मिलता होगा, यह अर्थ अगले वाक्य कोई प्रकार नहीं है से निकलता है। इस प्रकारसे वाक्य एक दूसरेके पूरक है। यही स्थिति दूसरे उदाहरणमें है। पहले वाक्यमें व्यक्तिगत सम्बन्धोंके ऊपर सिद्धान्तके महत्त्वको स्वीकारा गया है। अगले वाक्यमें सिद्धान्तके मूल्यको जीवनसे भी बढ़कर बताया गया है। इस प्रकार पहले कथनमें निहित अर्थकी पूर्ति एवं पुष्टि दूसरे कथनमें निहित अर्थसे हो रही है। इस स्थितिको इस प्रकार सूत्रबद्ध किया जा सकता है—

हाँ + हाँ → हाँ

नहीं + नहीं → नहीं

इनमें भी प्रयोजनकी दिशा पूर्व निश्चित होती है।

निष्कर्ष रूपमें कहा जा सकता है कि हिन्दीमें विशेष रचनाओंका अपना महत्त्व है। सामान्य स्वीकृत वाक्य रचनाके साथ ही ये विशेष रचनाएँ भी भाषामें उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। चाहे परिमाणकी दृष्टिसे ये अल्प ही हों किन्तु इनकी अपनी सत्ता है। कुछ प्रसंग और परिस्थितियाँ इस प्रकारकी हैं जिनमें ये विशेष वाक्य रचनाएँ ही सार्थक हैं, सामान्य वाक्य अभिप्रायको व्यक्त करनेमें समर्थ नहीं हो सकते या प्रभाव बनाए रखनेमें सक्षम नहीं होते। अतः भाषाके एक अविभाज्य अंशके रूपमें इन विशेष रचनाओंका महत्त्व असंदिग्ध है।

पर्यायवाची शब्द-तालिका

अन्त केन्द्रिक	Endocentric
अतिखण्डीय तत्व	Suprasegmental elements
अर्थनाभि	Semantic Nucleus
अधीनना	Subordination
अनुकल्प	Substitute
अबीज वाक्य	Non kernel Sentence
अवधि मापक	Time bound
अविच्छेद्य	Indivisible
असम्बद्धता	Paratactic
उच्चाभिमुख	Upward
उद्देश्य	Subject
उद्देश्य विधेय मैत्री	Subject Predicate Concordance
उपवाक्य क्रम	Clause order
एकता	Uniformity
केन्द्रिक	Centric
केन्द्रिकता	Centricity
खण्डीय तत्त्व	Segmental Elements
न्यूनतम सार्थक इकाई	Minimun meaningful Unit
निकटस्थ अवयव	Immediate Constituents
निम्नाभिमुख	Downward
पद क्रम	Word Order
पदस्तरीय	Word Level
प्रयाग	Usage
प्रेरक	Stimulant
प्रेरित	Stimulated

एकको भोजन मिलता होगा यह अर्थ अगले वाक्य कोई बेकार नहीं है से निकलता है। इस प्रकारसे वाक्य एक दूसरेके पूरक हैं। यही स्थिति दूसरे उदाहरणमें है। पहले वाक्यमें व्यक्तिगत सम्बन्धोंके ऊपर सिद्धान्तके महत्त्वको स्वीकारा गया है। अगले वाक्यमें सिद्धान्तके मूल्यको जीवनसे भी बढ़कर बताया गया है। इस प्रकार पहले कथनमें निहित अर्थकी पूर्ति एवं पुष्टि दूसरे कथनमें निहित अर्थसे हो रही है। इस स्थितिको इस प्रकार सूत्रबद्ध किया जा सकता है—

हाँ + हाँ → हाँ

नहीं + नहीं → नहीं

इनमें भी प्रयोजनकी दिशा पूर्व निश्चित होती है।

निष्कर्ष रूपमें कहा जा सकता है कि हिन्दीमें विशेष रचनाओंका अपना महत्त्व है। सामान्य स्वीकृत वाक्य रचनाके साथ ही ये विशेष रचनाएं भी भाषा में उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं। चाहे परिमाणकी दृष्टिसे ये अल्प भी हों लेकिन इनकी अपनी सत्ता है। कुछ प्रसंग और परिस्थितियाँ इस प्रकारकी हैं जिनमें ये विशेष वाक्य रचनाएँ ही सार्थक हैं सामान्य वाक्य अभिप्रायको व्यक्त करनेमें समर्थ नहीं हो सकते या प्रभाव बनाए रखनेमें सक्षम नहीं होते। अतः भाषाके एक अविभाज्य अंशके रूपमें इन विशेष रचनाओंका महत्त्व असंदिग्ध है।

पर्यायवाची शब्द-तालिका

अन्त केन्द्रिक	Endocentric
अनिखडीय तत्त्व	Suprasegmental elements
अर्थनाभि	Semantic Nucleus
अधीनता	Subordination
अनुकल्प	Substitute
अबीज वाक्य	Non kernel Sentence
अवधि सापेक्ष	Time bound
अविच्छेद्य	Indivisible
असम्बद्धता	Paratactic
उच्चाभिमुख	Upward
उद्देश्य	Subject
उद्देश्य विधेय मैत्री	Subject Predicate Concordance
उपवाक्य क्रम	Clause order
एकता	Uniformity
केन्द्रिक	Centric
केन्द्रिकता	Centricity
खंडीय तत्त्व	Segmental Elements
न्यूनतम सार्थक इकाई	Minimum meaningful Unit
निकटस्थ अवयव	Immediate Constituents
निम्नाभिमुख	Downward
पद क्रम	Word Order
पदस्तरीय	Word Level
प्रयोग	Usage
प्रेरक	Stimulant
प्रेरित	Stimulated

बलाघात	Stress
बद्ध रूपग्राम	Bound Morpheme
बाह्यकेन्द्रिक	Exocentric
बीज वाक्य	Kernel Sentence
भाषात्मक इकाई	Linguistic Unit
मैत्री	Concordance
रूपान्तरण	Transformation
रूपान्तरणमूलक	Transformational
रूपान्तरणमूलक पद्धति	Transformational method
वक्र कथन	Indirect Speech
व्यवस्था	Government
व्याकरणिक कोटि	Grammatical Category
व्यतिक्रम	Disorder
वाक्यपद्धति	Idiom
वाक्यांश	Phrase
वाक्यांश क्रम	Phrase order
वाक्यस्तरीय	Sentence level
विच्छेद्य	Divisible
विधेय	Predicate
विधेयपूरक	Predicate Complimentary
विधेय योग	Predicate Appositive
विराम	Juncture
विश्लेषणात्मक	Analytic
विशेषण	Modifier
विशेष्य	Attribute
विस्तार	Expansion
शून्य रूपतत्त्व	Zero Morpheme
संकेत	Signal
संकेतक	Marker
सक्रियता	Function
सक्रिय इकाइयाँ	Functional Units
सक्रियतामूलक	Functional

संरचनात्मक अर्थमूलक तत्त्व	Structural Semantic Components
संरचनात्मक	Structural
समास	*Compound*
संयोग	Cohesion
संश्लेषणात्मक	Synthetic
सहयोगिता	*Co Ordination*
स्तरीय	Level
स्वतंत्र रूपग्राम	Free Morphemes
सार्थक घटक	Meaningful Unit
सीमान्त	Boundry
सीमान्तिक रेखाएँ	Terminal Contours
सीमान्तिक विराम	*Terminal Juncture*
सुर	Pitch
सुर क्रम	Intonation
सुर रेखाएँ	Pitch Contours
सुर विधान	Pitch Scheme
सूचितांश	Reported Speech
ऋजु कथन	Direct Speech

पुस्तक-सूची

अग्रवाल रामेश्वर प्रसाद	बुन्देली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन
उदयभानुसिंह	महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग
ओझा दशरथ	हिन्दी गद्य संग्रह
कपिलदेव सिंह	ब्रजभाषा बनाम खडी बोली
कोतमिरे बलवंत लक्ष्मण	हिन्दी गद्य के विविध साहित्यरूपों का उद्भव और विकास
गार्सा द तासी	हिन्दुई साहित्य का इतिहास
गुप्त सुरेशचन्द्र	हिन्दी गद्य साहित्य
गुप्ता आशा	खडी बोली काव्य में अभिव्यंजना
गुलेरी चन्द्रधर शर्मा	पुरानी हिन्दी
गुरु कामताप्रसाद	हिन्दी व्याकरण
गौड राजेन्द्र सिंह	हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास
ग्रियर्सन अब्राहम जार्ज	हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास
	भारत का भाषा सर्वेक्षण
चटर्जी सुनीति कुमार	भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी
,,	ऋतम्भरा
	भारत की भाषाएं और भाषा सम्बन्धी समस्याएं
झा दीनबन्धु	लिंग वचन विचार
झा भोलानाथ	हिन्दी भाषा और साहित्य की भूमिका
टंडन प्रेमनारायण	ब्रजभाषा व्याकरण की रूपरेखा
	बीसवीं शती के पूर्व हिन्दी गद्य का विकास
तिवारी उदयनारायण	हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास
तिवारी भोलानाथ	भाषा विज्ञान
दुनीचन्द	हिन्दी व्याकरण
द्विवेदी महावीरप्रसाद	हिन्दी भाषा की उत्पत्ति

द्विवेदी, हजारीप्रसाद	हिन्दी साहित्य की भूमिका
,	हिन्दी साहित्य का इतिहास
नरूला शेरसिंह	हिंदी और प्रादेशिक भाषाओं का वैज्ञानिक इतिहास
नामवर सिंह	हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योग
नाहटा, अगरचन्द	हिन्दी भाषा की उत्पत्ति स्थान व समय
ब्रजरत्न दास	खड़ी बोली हिन्दी साहित्य का इतिहास
भगवद्दत्त	भाषा का इतिहास
भट्ट बद्रीनाथ	हिंदी
माहेश्वरी हीरालाल	राजस्थानी भाषा और साहित्य
मिश्रबंधु	मिश्रबंधु विनोद
मिश्र भगीरथ	हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास
मिश्र भगीरथ और शुक्ल, रामबिहारी	हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास
मिश्र शितिकंठ	खड़ी बोली का आंदोलन
लाल श्रीकृष्ण	आधुनिक साहित्य का विकास
वर्मा धीरेन्द्र	हिंदी भाषा का साहित्य
	हिंदी साहित्य कोश
वर्मा रामकुमार	हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास
वर्मा रामचन्द्र	अच्छी हिन्दी
वर्मा सत्यकाम	भाषा तत्त्व और वाक्यपदीय
वाजपेयी किशोरीदास	भारतीय भाषा विज्ञान
	हिन्दी शब्दानुशासन
वाजपेयी नन्ददुलारे	आधुनिक हिन्दी साहित्य
वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर	आधुनिक हिन्दी साहित्य
शर्मा जगन्नाथदास	हिंदी गद्यशैली का विकास
शर्मा पद्मसिंह	हिंदी उर्दू और हिन्दुस्तानी
शिवनाथ	हिन्दी कारकों का विकास
शिवप्रसाद सिंह	कीर्तिलता और अवहट्ट भाषा
शुक्ल रामचन्द्र	हिंदी साहित्य का इतिहास
,	चिन्तामणि प्रथम भाग
शास्त्री चतुरसेन	हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास
श्रीवास्तव हरिमोहन	मध्यकालीन हिन्दी गद्य
श्यामसुन्दरदास	भाषा विज्ञान

Curme G O — English Grammar
Collinson, W E — Some Recent Trends in Linguistic Theory with special reference to Syntactics
Chomsky Noam — Syntactic Structures
Carnap, Rudolf — Introduction to Semantics and Formalization of Logic
" — Logical Syntax
Fries Charles — The Structure of English
Giles P — A Manual of Comparative Philology
Grierson G A — Modern Vernacular Literature of Hindustani
Gune P D — An Introduction to Comparative Philology
Gardiner, A H — Speech and Language
Hockett Charles F — A Course in Modern Linguistics
Jesperson Otto — Language Its Nature Development and Origin
Philosophy of Grammar
A Modern English Grammar (Part VI VII)
Kachru Yamuna — An Introduction to Hindi Syntax
Kingdom Roger — The Groundwork of English Stress
The Groundwork of English Intonation
Kellogg S H — A Grammar of Hindi Language
Long K B — The Sentence and its Parts

Marchand Hans	The Categories and Types of Present Day English Word Formation
Nida Eugene	Morphology
	Outline of Descriptive Analysis
Potter Simeon	Modern Linguistics
Pike K L	Phonemics A Technique for Reducing languages to writing
Sandmann Manfred	Subject and Predicate
Scholberg N C	A Concise Grammar of Hindi Language
Sen Sukumar	Historical Syntax of Middle Indo-Aryan
	Comparative Grammar of Middle Indo Aryan
Scheurweghs G	Present Day English Syntax
Speijer J	Sanskrit Syntax
Srivastva D N	Syntax of the Voice in Hindi (Bulletin of the Philological Society of Calcutta Vol I, June 1960)
Sweet Henry	New English Grammar–Logical & Historical, Part II—Syntax
Stokoe H R	The Understanding of Syntax
Sharma Aryendra	A Basic Hindi Grammar
Verma Manindra K	A Synchronic Comparative Study of the Noun Phrase in English & Hindi (Unpublished)

Vendreys, J — Language A Linguistic Introduction to History

Whitney W D — Langnage and the Study of Language

, — Sanskrit Grammar

Whatmough Joshua — Language A Modern Synthesis

Woolner A C — History & Politics

वाक्यों के वर्णनात्मक विवेचन हेतु निम्नलिखित पुस्तकों/पत्र पत्रिकाओं/रचनाओं—कविता कहानी निबंध नाटक आदि में से कुछ अंश लिए गए हैं।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	ठेठ हिन्दी का ठाठ
अमृतराय	हाथी के दाँत (निबंध)
अमृतलाल नागर	बूँद और समुद्र
अतुल भारद्वाज	शहर (कविता)
आनन्दप्रकाश जैन	स्नेह की शर्त
इंशाअल्लाखाँ	रानी केतकी की कहानी
इलाचन्द्र जोशी	पर्दे की रानी
	विश्लेषण (निबंध)
उपेन्द्रनाथ अश्क	सूखी डाली (एकांकी)
उदयशंकर भट्ट	पर्दे के पीछे (एकांकी)
,,	सागर लहरें और मनुष्य
कमलेश्वर	तलाश (कहानी)
कन्हैयालाल मिश्र	सती
	प्रश्नोत्तर
कैलाश वाजपेयी	अस्तित्व बोध (कविता)
गुलाबराय	प्रभुजी मेरे औगुन चित न धरो (निबंध)
चतुरसेन शास्त्री	वैशाली की नगरवधू
,,	अंतस्तल
चंडीप्रसाद हृदयेश	पर्यवसान (कहानी)
जगमोहनसिंह ठाकुर	श्यामास्वप्न
जगदीशचन्द्र माथुर	भोर का तारा (एकांकी)
जयशंकरप्रसाद	आकाशदीप (कहानी)
,,	स्कन्दगुप्त
	कंकाल
	काव्य और कला तथा अन्य निबंध

जवाहरलाल नहरू	वसीयत
जगदीश चतुर्वेदी	मातमी चेहरे (कविता)
, ,	त्रास (कहानी)
जी० पी० श्रीवास्तव	विलायती उल्लू
,,	मर्दानी औरत
,,	गगा यमुनी
जन द्रकुमार	त्याग-पत्र
,, ,	सुनीता
,	साहित्य का श्रेय और प्रेय
दुष्यन्तकुमार	सूय का स्वागत (कविता)
देवकीन दन खत्री	च द्रकान्ता
देवे द्र सत्यार्थी	कला के हस्ताक्षर
, ,,	रेखाएँ बाल उठी
दवे द्र इस्सर	रेत और सम दर (कविता)
धमवीर भारती	गुनाहो का देवता
,	कनुप्रिया
,	अ धा युग
,	सात गीत वष
	मानवमूल्य और साहित्य
नग द्र	मरा व्यवसाय और साहित्य सजन (निब ध)
	साहित्य म आत्माभिव्यक्ति (निब ध)
नरेश मेहता	डूबते मस्तूल
नरे द्र धीर	टी हाउस के इम्प्रेशन (कविता)
, ,	कुण्ठा एक डिस्टॉशन (कविता)
नागाजु न	वरुण के बेटे
	रतिनाथ की चाची
निमल वर्मा	चीडा पर चादनी
,	जलती भाडी
नमिच द्र जन	साहित्य और नवीनता
प्रतापनारायण मिश्र	मनोयाग
प्रेमच द	गोदान

प्रेमचन्द	उपन्यास
फणीश्वरनाथ रेणु	परती परिकथा
बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन	संयोगिता स्वयंवर
बनारसीदास चतुर्वेदी	संस्मरण
बालमुकुन्द गुप्त	शिवशम्भु के चिट्ठे
बालकृष्ण भट्ट	नूतन ब्रह्मचारी (निबन्ध)
,, ,,	कल्पना (निबन्ध)
बेचन शर्मा उग्र	बलात्कार (कहानी)
,,	अपनी खबर (कहानी)
भगवतीप्रसाद वाजपेयी	सपना बिक गया
,, ,,	छलना
भगवतीचरण वर्मा	मैं और केवल मैं
,,	भूले बिसरे चित्र
,, ,,	चित्रलेखा
,, ,,	वह फिर नहीं आई
भदन्त आनन्द कौसल्यायन	दान (निबन्ध)
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	हिन्दी भाषा
,, ,,	नाटक
भारतभूषण अग्रवाल	समुद्र से वापिसी पर (कविता)
भुवनेश्वर	स्ट्राइक (एकांकी)
महावीरप्रसाद द्विवेदी	उपन्यास रहस्य
महादेवी वर्मा	अतीत के चलचित्र
,, ,,	स्मृति की रेखाएँ
,, ,,	शृंखला की कड़ियाँ
मनहर चौहान	असन्तुलन
माखनलाल चतुर्वेदी	अमीर इरादे गरीब इरादे
,, ,,	कच्चा रास्ता
,, ,,	साहित्य देवता
मिश्रबन्धु	हिन्दी नवरत्न
मोहन राकेश	कांपता हुआ दरिया (कहानी)
यशपाल	दादा कामरेड
,,	सिंहावलोकन

यशपाल

,

राधाकृष्णदास

रामप्रसाद निरंजनी

रामवृक्ष बेनीपुरी

रामकुमार वर्मा

,

रामकुमार 'भ्रमर

रांगेय राघव

राजेन्द्र यादव

राधिकारमणप्रसादसिंह

राहुल सांकृत्यायन

लल्लूजीलाल

लक्ष्मीनारायण मिश्र

लक्ष्मीनारायणलाल

,

विश्वनाथप्रसाद मिश्र

विष्णु प्रभाकर

विद्यापति

वियोगी हरि

वृन्दावनलाल वर्मा

श्यामसुन्दर श्रीवास्तव

शम्भुनाथ सक्सेना

शान्तिप्रिय द्विवेदी

शिवपूजन सहाय

श्री निवासदास

श्रीकान्त वर्मा

सन्त मिश्र

झूठा सच

मनुष्य के रूप

महाराणाप्रताप

भाषा योग वाशिष्ठ

अम्बपाली

माटी की मूरतें

सत्य का स्वप्न

दीप दान

मौन (कविता)

घरौंदे

शह और मात

राम रहीम

जय यौधेय

प्रेमसागर

मन्दिर की होली

बया का घोंसला और सांप

काल फूल का पौधा

हिन्दी का सामयिक साहित्य

मां (एकांकी)

निशिकान्त

फासिल इन्सान और

कीर्तिलता

श्रद्धा कण (निबंध)

मृगनयनी

रात एक स्केच (कविता)

निवेदन के आंसू

छायावाद का उत्कर्ष

देहाती दुनियां

वे भिन्न वे लोग

परीक्षा गुरु

झाडी

नासिकेतोपाख्यान

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना — क्या कह कर पुकारूँ
सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' — शेखर एक जीवनी (दोनों भाग)
" " " " — त्रिशंकु
आँगन के पार द्वार
सियारामशरण गुप्त — गोद
सुमित्रानन्दन पन्त — पल्लव (भूमिका)
" — गद्य-पथ
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' — अलका
" " " — प्रभावती
" — कुल्लीभाट
हजारीप्रसाद द्विवेदी — गतिशील चिन्तन (निबन्ध)
" " — बाणभट्ट की आत्मकथा
हरिकृष्ण 'प्रेमी' — विक्रमादित्य
हरिवंशराय बच्चन — जो समानधर्मा (कविता)

पत्र-पत्रिकाएँ

नागरी प्रचारिणी पत्रिका मालवीय शती विशेषांक
भाषा
धर्मयुग
हिन्दुस्तान (साप्ताहिक)
ज्ञानोदय
कल्पना
नई कहानियाँ
कहानी
भारतीय साहित्य
Indian Linguistics

इस पुस्तक की रचना में उपर्युक्त रचनाओं के अतिरिक्त निस्सन्देह कुछ अन्य कृतियों का योगदान भी रहा होगा जिसके लिए लेखिका आभारी है।